भाषा
वार्षिकी
2019

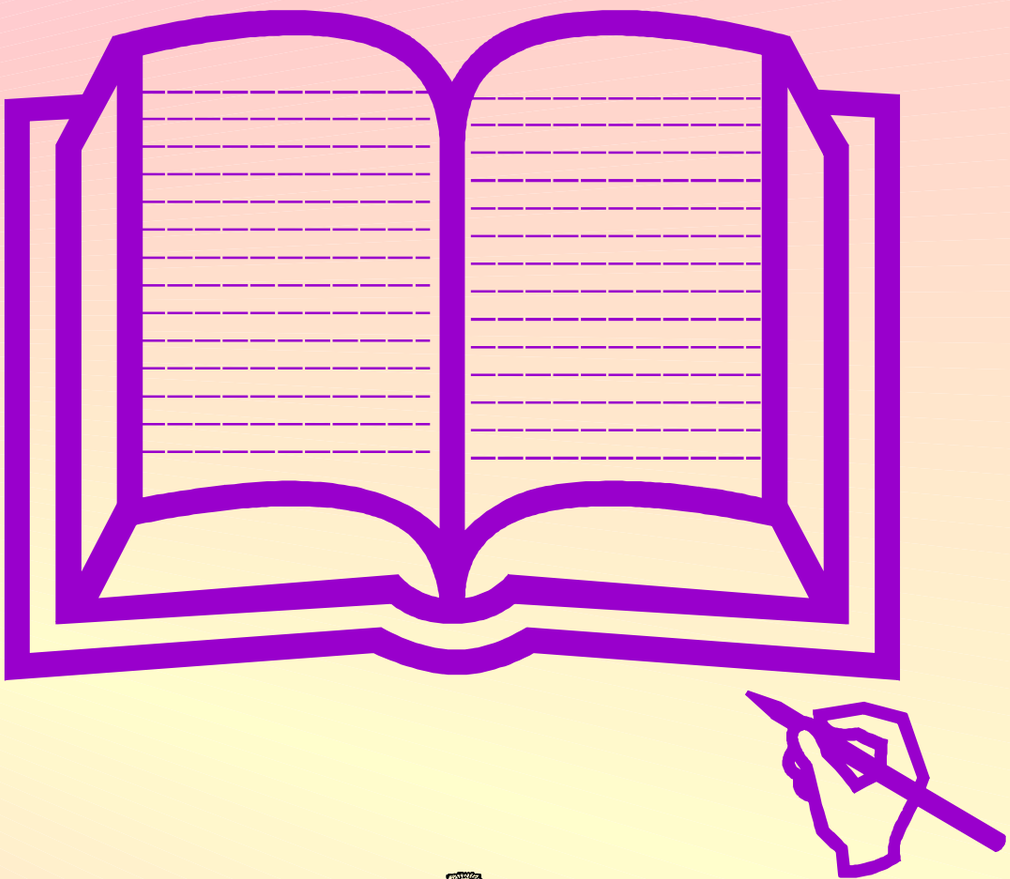

भाषा वार्षिकी 2019

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

भारत सरकार

भाषा

वार्षिकी

2019

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.chdpublication.mhrd.gov.in
www.chd.mhrd.gov.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com
दूरभाषः 011–26105211/12

ISSN 0523–1418

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रोफेसर रमेश कुमार पाण्डेय

परामर्श मंडल
प्रो. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'
डॉ. पी. ए. राधाकृष्णन
प्रो. ऋषभ देव शर्मा
प्रो. मंजुला राणा
प्रो. दिलीप कुमार मेधी
श्रीमती पद्मा सचदेव
श्री हितेश शंकर

संपादक
डॉ. राकेश कुमार

सह–संपादक
डॉ. किरण झा
श्रीमती सौरभ चौहान

प्रूफ रीडर
श्रीमती इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस,
दिल्ली - 110054
दूरभाष : 011-23817823/ 9689

वार्षिकी : 2019

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम सें 05

संपादकीय 07

लेख

1.	असमिया साहित्य	डॉ. अनुशब्द	9
2.	ओड़िया साहित्य	डॉ. अरुण होता	12
3.	उर्दू साहित्य	डॉ. जुबैदा एच. मुल्लाँ	18
4.	कन्नड साहित्य	डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'	26
5.	कश्मीरी साहित्य	डॉ. महाराजकृष्ण भरत 'मुसा'	35
6.	कोंकणी साहित्य	डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा	38
7.	गुजराती साहित्य	डॉ. वर्षा सोलंकी	51
8.	डोगरी साहित्य	ओम गोस्वामी	60
9.	तमिल साहित्य	डॉ. बी. संतोष कुमारी	70
10.	नेपाली साहित्य	ज्ञानबहादुर छेत्री	73
11.	पंजाबी साहित्य	प्रो. फूलचंद्र मानव	80
12.	बांग्ला साहित्य	डॉ. सुब्रत लाहिड़ी	87
13.	मराठी साहित्य	डॉ. दामोदर खड़से	93
14.	मलयालम साहित्य	डॉ. बी अशोक	102
15.	मैथिली साहित्य	डॉ. संगीता कुमारी	106
16.	संताली साहित्य	डॉ. रेखा	115
17.	संस्कृत साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	120
18.	सिंधी साहित्य	डॉ. सुरेश बबलाणी	129
19.	हिंदी आलोचना	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	137
20.	हिंदी उपन्यास	डॉ. तरसेम गुजराल	144

21.	हिंदी कहानी	प्रो. अवध किशोर प्रसाद	156
22.	हिंदी कविता	प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय	169
23.	हिंदी ग़ज़ल	डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना	175
24.	हिंदी नाटक एवं रंगमंच	डॉ. अनुराग सिंह चौहान	183
25.	हिंदी निबंध एवं लेख :	डॉ. विदुषी शर्मा	195
26.	हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य	डॉ. सी. जय शंकर बाबु	201
27.	हिंदी बाल साहित्य	डॉ. पुष्पेंद्र कुमार शर्मा	217
28.	हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य	डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त	223
29.	हिंदी विज्ञान साहित्य	डॉ. शिवगोपाल मिश्र डॉ. बलराम यादव	228
	संपर्क सूत्र		240

निदेशक की कलम से

जिस प्रकार भारतीय भाषाओं की मध्यमणि के रूप में हिंदी विराजती है उसी प्रकार यह कहा जा सकता है कि संविधान स्वीकृत भारतीय भाषाओं का रचना संसार ज्ञान की लड़ियों के रूप में वार्षिकी पत्रिका में शोभायमान होता है। साहित्य जिस प्रकार देश, काल की सीमा के परे अपनी अमिट छाप छोड़ता है उसी प्रकार भाषा और साहित्य का समाज और राष्ट्र के प्रति व्यापक सरोकार भी निहित होता है। अकिंचन से विराट को रूपाकार देता हुआ साहित्य सदैव अपनी गति से जहाँ विकासशील प्रतीत होता है वहीं उसके गर्भ में भविष्य की असीम संभावनाओं का स्रोत संचित रहता है। जो अपनी गुरुता के साथ निरंतर प्रगतिगामी होता है। विज्ञान और कला मानव विकास की प्रक्रिया में प्रारंभ से ही अपनी भूमिका निभाते हैं। जहाँ विज्ञान संसार को गतिशीलता प्रदान कर विभिन्न रहस्योद्घाटन करता है वहीं कला उसको आत्मसात् करने का ठहराव प्रस्तुत करती है और वहीं प्रारंभ होता है प्रकृति के अप्रतिम विराट स्वरूप का साक्षात्कार।

सारी दुनिया ईश्वर की ही अद्वितीय रचना है और हमारा देश भारतवर्ष उसका एक सुंदर अंश। जिस प्रकार ईश्वर ने संपूर्णता के साथ भारतभूमि में अपनी दिव्यता प्रदान की वह हमें वास्तव में अचंभित करता है, यही वह भूमि है जहाँ ऋतुएँ अठखेलियाँ करती हैं, वेदों की ऋचाओं के दर्शन होते हैं और यहीं कालिदास का यक्ष मेघ से संवाद करता है, संदेश प्रेषित करता है।

यही वह भूमि है जहाँ शकुंतला के वियोग का दंश पशु-पक्षी और लताएँ भी अनुभव करती हैं। कला जब साहित्य के रूप में अपना रूपाकार पाती है तब वह सार्वभौम स्वरूप का साक्षात्कार कराती है। पूर्व में अरुणाचल, जहाँ अरुण अपनी लालिमा बिखेरता है और पश्चिम में अरब सागर अपनी चंचल तरंगों से आह्लादित करता है वहीं उत्तर में उत्तुंग शिखर हिमालय प्रहरी सा तना है, दक्षिण में हिंद महासागर अठखेलियाँ करता है। भारत में ही पूर्व का लालित्य असमिया, मणिपुरी, मैथिली भाषा साहित्य के माध्यम से अपना श्रेय स्थापित करता है। वहीं उत्तर के समृद्ध सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक परिवेश से कश्मीरी एवं डोगरी भाषाओं के माध्यम से हम लाभान्वित होते हैं। पश्चिम से गुजराती, पंजाबी, सिंधी आदि भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परंपरा का हमें साक्षात्कार होता है वहीं सुदूर दक्षिण की सभी भाषाएँ अपने शास्त्रीय ज्ञान गरिमा को समेटे हुए साहित्यिक, सांस्कृतिक सरोकारों से परिचित कराती हैं। उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम की समस्त भारतीय भाषाएँ अपने अनूठे साहित्यिक आस्वाद से वार्षिकी पत्रिका में अपना उपयुक्त स्थान पाती हैं। वर्ष भर की साहित्यिक उपलब्धियों की समग्र, समेकित जानकारी सभी भाषा-भाषी रचनाकार एवं समीक्षक अपने लेखकीय सामर्थ्य से उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करने में अपना योगदान देते हैं।

साहित्य की विविध विधाएँ सभी भाषाओं में निरंतर प्रगतिगामी एवं अन्वेषी होती हैं। नित्य नवीन संकल्पनाओं को साहित्य में रूपाकार प्राप्त होता है और देश भर के कोने-कोने से उपलब्ध प्रकाशकीय जानकारी को एक ही स्थान पर उपलब्ध करने में लेखक जिस समर्पण से सन्नद्ध होते हैं वह वास्तव में स्तुत्य है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के इस महत्वपूर्ण प्रकाशन को सफल एवं सार्थक बनाने में संविधान स्वीकृत अखिल भारत की समस्त भाषाओं के रचनाकार योगदान देते हैं।

वर्ष 2019 की वार्षिकी पत्रिका सुविज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। अधिकांश भारतीय भाषाओं के वर्ष भर के भाषाई सर्वेक्षणपरक आलेखों को इस अंक में समेटने का

प्रयास किया गया है। कुछ एक भाषाओं के आलेख संबंधित भाषा की लेखकीय निजी व्यस्तता के कारण प्राप्त नहीं हो पाए।

इसके लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय का भाषा परिवार निरंतर प्रयत्नशील और सक्रिय है ताकि आगामी वार्षिकी के अंक में इन भाषाओं के आलेख भी समाहित हो पाएँ। वार्षिकी के इस अंक को पूर्णता प्रदान करने में संलग्न सभी लेखकों के योगदान के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। भविष्य में भी सभी साहित्यकारों का सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहेगा। इसी आकांक्षा और विश्वास के साथ यह अंक आप सभी विज्ञ पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

रमेश कुमार पाण्डेय

प्रोफेसर रमेश कुमार पाण्डेय

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

साकार, दिव्य, गौरव विराट्,

पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिम–किरीट!

मेरे भारत के दिव्य भाल!

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

संपादकीय

सप्तद्वीप नवखंड आर्यावर्त भारतवर्ष की संस्कृति-अनोखी और विरल है। स्वाधीनता संग्राम का अलख जगाना हो अथवा हिंदी की लौ प्रदीप्त करनी हो या भक्ति की प्रेममय रसधारा की आनंदमयी और पावन लोकानुभूति, चतुर्दिक से निर्झरिणी स्वरूप भारतीय मनीषा अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में अग्रणी रहती है। जिस प्रकार 'भक्ति द्रविड़ उपजी लाए रामानंद परगट कियो कबीर ने सप्तद्वीप नवखंड' उसी भाँति पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की लौ साहित्य के स्वरूप में परस्पर संचरित और प्रदीप्त होती है। वहीं भाषा जब निज भाषा के स्वरूप में होती है तो उसकी उन्नति सब उन्नति को मूल हो जाती है जैसा कि हिंदी के पुरोधा साहित्यकार भारतेंदु के शब्दों में हम पाते हैं। इस उक्ति का मर्म उस समय जितना प्रासंगिक था उतना ही महत्वपूर्ण वर्तमान में भी है। उसका अभिप्रेत वर्तमान में भी उतना ही शुभ्र और धवल है जितना उस दौर में था। यही होता है किसी भी भाषा का अंतर्निहित सामर्थ्य। जिस प्रकार भाषा किसी भी संस्कृति और सभ्यता की संवाहिका होती है उसी प्रकार भाषा जब साहित्य के अथाह-संसार को समेटे हुए अपनी अनंत यात्रा की ओर प्रशस्त होती है तब उसका प्रदाय अनंत एवं अद्वितीय होता है। भाषा के इस महीन ताने-बाने को भविष्य की संतति तक प्रेषित करने में साहित्य की विभिन्न विधाएँ अपने लालित्य से सौंदर्य की श्री वृद्धि करती हैं। महात्मा गांधी का यह कथन जिस राष्ट्र की अपनी राष्ट्र भाषा नहीं वह राष्ट्र गूंगा है, ध्रुव सत्य है। राष्ट्र की वाणी जब जन-जन की वाणी बनकर शस्य श्यामल भूमि पर लहराती है तब धान और गेंहूँ की बालियों का सौंदर्य कवि की कल्पना को मुखर और भास्वर बनाता है। वहीं जब देश की आन-बान की रक्षा का प्रश्न हो तो देश के प्रहरी का लहू उत्तेजित हो कह उठता है- 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है'। अंग्रेजों का जुल्म जब हद की सीमा पार कर जाता है तब देश के वीर अपने माथे पर कफन बाँध कह उठता है- 'मेरा रंग दे बसंती चोला' अर्थात् भाषा का सामर्थ्य जहाँ जीने का अर्थ बताता है वहीं चट्टान सदृश चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा प्रदान करता है। संपूर्ण मानवता को एकसूत्र में पिरोने में भाषाई संप्रेषणीयता अपनी भूमिका निभाती है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की प्रतिष्ठित पत्रिका 'वार्षिकी' भाषा और साहित्य की इन्हीं असीम संभावनाओं की पड़ताल करते हुए भारत के सभी क्षेत्रों से वहाँ की भाषा में पिरोए सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना को सब तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाती है। पूरे वर्ष में संविधान स्वीकृत सभी भाषाओं की विभिन्न विधाओं में हुए अवदान और योगदान का सर्वेक्षणपरक आलेख वार्षिक पत्रिका में अपना स्थान बनाते हैं। वार्षिकी के रूप में एक ही पत्रिका में संपूर्ण भारतीय साहित्य का रसास्वादन किया जा सकता है। यह कार्य जहाँ काफी श्रमसाध्य है वहीं अतुलनीय भी है। इस महत्वपूर्ण कार्य को साकार करने हेतु समस्त भाषा के लेखकों, साहित्यकारों का साहित्यानुराग और कठिन परिश्रम इस यात्रा को पूरा करने में अपना योगदान देते हैं। निदेशालय का भाषा परिवार 'वार्षिकी' से जुड़े सभी लेखकों, साहित्यकारों के प्रति अपना आभार प्रकट करता है और भविष्य में परस्पर ऐसे सहयोग की आकांक्षा करता है। संविधान स्वीकृत सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य और हिंदी की विविध विधाओं के वर्ष भर के शोधपरक आलेख की प्रस्तुति के साथ 'वार्षिकी' का नवीनतम अंक मर्मज्ञ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का सर्देव स्वागत रहेगा।

(डॉ. राकेश कुमार)

हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों।

— वासुदेवशरण अग्रवाल

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

— मैथिलीशरण गुप्त

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

— देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

— कमलापति त्रिपाठी

1

असमिया साहित्य

डॉ. अनुशब्द

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की शृंखला में असम प्रांत की असमिया भाषा भी अन्यतम है। चर्यापद काल से ही असमिया भाषा और साहित्य मणिकोंवर गीत, फूलकोंवर गीत, बैलेड, मालिता, डाक वचन, तंत्र-मंत्र आदि मौखिक साहित्य से समृद्ध और सराबोर रहा है। वैष्णव पूर्व युग में शंकरदेव और माधवदेव की साहित्य कला ने असमिया भाषा और साहित्य की नींव को सुदृढ़ बनाया। ब्रजावली भाषा का प्रयोग साहित्य के क्षेत्र में सापेक्षिक रूप से अधिक होने लगा। 19वीं सदी तक आते-आते असमिया भाषा और साहित्य में आहोम राजाओं का जीवनी मूलक गद्य साहित्य भी विकसित होने लगा और इस इतिहास लेखन की कला को 'बुरंजी' कहा गया। आधुनिक असमिया भाषा और साहित्य का विकास-क्रम 19वीं सदी से आरंभ हुआ और इसी क्रम-विकास के तहत असमिया साहित्य में छायावादी आंदोलन का रहस्यवादी स्वर भी धीरे-धीरे गूँजने लगा। आधुनिक असमिया भाषा और साहित्य की रूपरेखा 'जोनाकी' मासिक पत्रिका की भावभूमि में ही विकसित हुई। स्वाधीनता के बाद असमिया भाषा और साहित्य विषयों की विविधता से सुसज्जित एवं समृद्ध हुआ। नारी-चेतना, सामाजिकता, राष्ट्रीयता, देश वत्सलता, यथार्थवादिता आदि विषयों ने असमिया साहित्य को और सुदृढ़ बनाया। असमिया साहित्य तत्कालीन सामाजिक चेतना को भी अपने में पूरी शिद्दत के साथ समेटे हुए है। समय बदला, युग बदला, पाठक एवं कवि समाज का दृष्टिकोण भी बदला। इसी विकास-क्रम में असमिया साहित्य भी समाज के विभिन्न आयामों को लेकर प्रवाहमयी बना। आज का असमिया साहित्य मार्क्सवाद, समाजवाद, प्रगतिवाद, अस्तित्ववाद, भाववाद, यथार्थवाद आदि के भावबोध को समेटे हुए प्रगतिशील साहित्य है। उसकी गति एवं प्रभावशीलता निरंतर अग्रसर तथा विकसित हो रही है।

सन् 2019 असमिया भाषा और साहित्य के लिए गौरवमय एवं समृद्धशाली रहा। शंकरदेव और माधवदेव के वैष्णव साहित्य से लेकर भूपेन हजारिका के मानवतावादी साहित्य तक असमिया साहित्य सदा ही विकासमान रहा। उल्लेखनीय है कि असमिया भाषा में 2018 तक पचपन साहित्यकारों को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। डॉ. कृष्णकांत हैंडिक, स्नेह देवी, कविन फूकन को मरणोपरांत साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया था। 2019 में नवकुमार हैंडिक ने संस्कृत के कल्हण की 'राजतरंगिणी' का अनुवाद 'राजतरंगिणी' शीर्षक से करके साहित्य अकादमी के अनुवाद पुरस्कार को प्राप्त किया। नवकुमार हैंडिक ने कल्हण की 'राजतरंगिणी' का जो अनुवाद किया है उसमें अनुवाद-कला की परिसीमाओं एवं प्रवृत्तियों को ध्यान

में रखा गया है। स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की एकात्मकता को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत साहित्य के अमूल्य ग्रंथ कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' को असमिया भाषा में रूपायित करने से असमिया साहित्य और भाषा भी समृद्ध हुई है। बाल साहित्य वर्ग में श्वामिन नसरीन को 'मिलि, अमिया आरू एखन नदी' कहानी संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्वामिन नसरीन की 'मिलि, अमिया आरू एखन नदी' कहानी संग्रह बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। इसमें बालक की मानसिक अंत:क्रियाओं, व्यक्ति और समाज के अंत:संबंध में बालक की मन:स्थिति, बाल अवचेतन की क्रियाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण आदि पहलुओं को ध्यान में रखा गया है। श्वामिन नसरीन वर्तमान में असम के जोरहाट जिले के जगन्नाथ बरुवा महाविद्यालय में असमिया विभाग में अध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं। इस ग्रंथ के अलावा उन्होंने 'अन्य माजुली अनन्य माजुली', 'सुरुजमुखी स्वप्न विचार' आदि जैसी मौलिक रचनाओं का भी सृजन किया है। इसी वर्ष संजीव पॉल डेका को 'एई पिने की आसे' कहानी संग्रह के लिए साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार प्राप्त हुआ। साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार प्राप्त संजीव पॉल डेका वर्तमान में तेजपुर विश्वविद्यालय के असमिया विभाग में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने 2011 में मुनिन बरकटकी सम्मान, 2015-16 में भारतीय परिषद सम्मान भी प्राप्त किया। 'स्वर्णलता रायर आर्हि तिरुता' और 'अन्यान्य रचना' उनके संपादन में प्रकाशित कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं। उनकी 'एई पिने की आसे' कहानी संग्रह में भूमंडलीकरण के दौर में बाजार केंद्रित समाज-व्यवस्था के खोखले स्वरूप तथा असमिया ग्रामीण जीवन प्रणाली में बाजार के कुप्रभाव को दर्शाया गया है। इसमें बाजारवाद की कुपरिणति, शोषित निम्न मध्यम वर्ग की दयनीय दास्तान को भी उजागर किया गया है। वर्ष 2019 में ही उपन्यास के क्षेत्र में जयश्री गोस्वामी महंत को उनके उपन्यास 'चाणक्य' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 2018 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री सम्मान से भी सम्मानित किया था। उनका 'चाणक्य' ऐतिहासिक पात्र है। चाणक्य के व्यक्तित्व पर ही उनके उपन्यास की कहानी आधारित है। इसमें मगधराज घनानंद के वंश के पतन को दर्शाया गया है। विवेच्य उपन्यास में ऐतिहासिक पात्र 'चाणक्य' के जीवन को आधार बनाया गया है।

2019 असमिया साहित्य के लिए समृद्धि का काल रहा। साहित्य की विविध विधाओं में नई-नई रचनाओं के आगमन से कला और विषयवस्तु के स्तर पर नितांत मौलिक रचनात्मक प्रतिमानों की स्थापना हुई। कविता के क्षेत्र में अंकुर रंजन फूकन की व्यंजनांत महत्वपूर्ण रचना है। इस काव्य संग्रह के लिए उन्हें 2019 का 25वाँ 'मुनिन बरकटकी साहित्य सम्मान' प्राप्त हुआ। इसी तरह खंजना शर्मा की 'पानीर दुवार', दीपक सूत्रधार की 'रातिर रेल', मनहरी बायन की 'नलीनाक्ष तुमि मोर विचार पति', जगजीत डेका की 'हात खनि आईर', दिगंत सैकिया की 'माटिर मुख', द्विजेन कुमार दास की 'मेघ घोरा', विदिशा बुढ़ागोहाईं की 'साधुकथार सुवाली जनी' आदि प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं। ऐसा नहीं है कि पद्य विधा ही समृद्धशाली रही, वर्ष 2019 गद्य साहित्य के लिए भी खास महत्वपूर्ण रहा। नीलिमा आकाश कश्यप की 'लाज' (आत्मकथा), रास्ना पालक का 'उभति रदर बाटेरे' (उपन्यास) तथा 'बेलिविहीन कपालर रदघाई मानुहजनी' आदि ने असमिया गद्य साहित्य के भंडार को समृद्ध बनाया। इसके अलावा कवि निवेनंद दास पटवारी की 'डाईंगर पुहरत', पंकज गोविंद मेधि की 'रंगा हाहि', 'नीला सौरभर', 'उत्तर आधुनिकतार घा', दीपक कुमार बरकाकति की 'हृदयालता', गोविंद कुमार खाउंड की 'बगी', इंद्राणी शर्मा का 'अर्णव', 'आस्था और जेइचि', मृणाल कुमार गोगोई की 'अनाहत', अनुराधा शर्मा पुजारी की 'नयन तरा', सत्य रंजन बोरा की 'इस्लाम आरू कुरानर कलंकित कथाबूर' प्रमुख गद्य-रचनाएँ हैं। सत्य रंजन बोरा की यह बहुत चर्चित पुस्तक है। इसके साथ ही संजीव शर्मा की 'बौद्धिक संत्रास', हिमंत विश्व शर्मा की 'भिन्न मत अभिन्न मत' भी गद्य क्षेत्र की महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। इसमें मनुष्य के बौद्धिक जगत को टटोलने वाले महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं एवं सामाजिक व्यवस्था के विविध आयामों की व्याख्याएँ दर्शाई गई हैं। अरूपा पतंगिया

कलिता की 'पानी गाभिनी आरू अन्यान्य', प्रशांत कुमार दास की 'मृण्मयी भेनाछ', मनालिशा सैकिया की 'पानीर पालक', तपन दास का 'गल्प गुच्छ', रत्ना भराली तालुकदार का 'नदीर बुकुत काटि रोवा आंगुली', हेमंत शर्मा की 'प्लास्टिकर पृथिवी', सिद्धार्थ पर्ण सैकिया की 'बेकार्फ', शर्मिष्ठा प्रीतम की 'पराण निगरे', अरुचि कश्यप का 'नै खन एटियाँ दुरैत', मृणाल कलिता की 'रिप' तथा 'मुन्नमी हतर शेष नोहोवा काहिनी' आदि भी असमिया साहित्य की वर्ष 2019 की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। शांतनु कौशिक बरुवा की 'भूगोलर नजना कथाबूर' एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें इसिहास के गर्भ में छिपे हुए नए-नए तथ्यों को उजागर किया गया है। इस्माइल हुसैन की 'होमेन बरगोहाई आरू ढकुवाखाना' पुस्तक के माध्यम से असम के प्रसिद्ध साहित्यकार होमेन बरगोहाई के व्यक्तित्व और कृतित्व को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है तथा होमेन बरगोहाई के जन्मस्थान लखीमपुर के ढकुवाखाना इलाके का शब्दचित्र उकेरा गया है। इसी क्रम में आगे हम यह भी देखते हैं कि अनुराधा दत्त की 'आरिवा', अलकेश कलिता का 'निष्फल उत्सव' तथा राजीव बोरा की 'असमिया कविता की आलच विलच' भी महत्वपूर्ण गंथ हैं। इसमें असमिया कविता के क्रम-विकास पर प्रकाश डाला गया है। समकालीनता के दौर में असमिया कविता पर आने वाले संकटों को भी इसमें दर्शाया गया है। मूल रूप से कहें तो इसमें असमिया कविता के विकासशील इतिहास के उत्थान-पतन को मुखरित किया गया है।

मयूर बोरा की 'असमियात्वर ज्योति', ज्ञान पुजारी की 'मणिमुग्ध अन्य जीवन आरू अन्य रचना', अरविंद राजखोवा की 'असमिया विज्ञान साहित्य' (संपादित) आदि भी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्ष 2019 असमिया साहित्य एवं असम की भाषा एवं संस्कृति के लिए बहुत ही खास सिद्ध हुआ। 2019 में ही 25 जनवरी को भारत सरकार ने असम के प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, गायक एवं कद्दावर सामाजिक-राजनीतिक सेवक डॉ. भूपेन हजारिका जी को भारत रत्न से विभूषित किया। इसी वर्ष 29 जनवरी को नगेन सैकिया को साहित्य अकादमी का फेलो सम्मान प्राप्त हुआ। इसी साल मनोरंजन बोडो और अंकुरंजन फूकन को मुनिन बरकटकी साहित्य पुरस्कार से भी नवाजा गया। कमल कुमार मेधि के काव्य ग्रंथ 'ए देश कारागार' ने भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई के 'स्वराजोत्तर असम 1947- 2019' के अंग्रेजी संस्करण का प्रकाशन भी असमिया साहित्य जगत की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह वर्ष असमिया भाषा और साहित्य के लिए करुणाजनक भी रहा। विशिष्ट कहानीकार पार्थविजय दत्त का निधन, युवा लेखिका तूलिका सैकिया की मृत्यु, विशिष्ट उपन्यासकार पूरवी बरमुदै की मृत्यु, विशिष्ट लेखिका तथा डिब्रूगढ़ मनोहरी देवी कन्या महाविद्यालय की अध्यापिका रत्ना दत्त की मृत्यु, विशिष्ट लेखिका तथा हैंडिक महाविद्यालय की पूर्व अध्यक्ष सनेही बेगम की मृत्यु, प्रगतिशील लेखक हरिन महंत की मृत्यु, बोडो साहित्य सभा के पूर्व सभापति तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म की मृत्यु असमिया समाज, संस्कृति, भाषा और साहित्य के लिए अपूरणीय क्षति साबित हुई।

बहरहाल, असमिया भाषा और साहित्य के लिए वर्ष 2019 काफी महत्वपूर्ण रहा। असमिया साहित्य के इतिहास में सफलता और समृद्धि के कई सारे नए अध्याय तो जुड़े लेकिन कुछ प्रमुख साहित्यकारों के देहावसान ने साहित्य के विकास-क्रम की रफ्तार को शिथिल भी बनाया।

– सी 93, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय कैंपस, तेजपुर, नपाम, असम-784028

❑❑❑

2

ओड़िया साहित्य

डॉ. अरुण होता

ओड़िशा कला, संस्कृति और स्थापत्य प्रेमी राज्य है। इसकी भाषा ओड़िया को शास्त्रीय भाषा का गौरव प्राप्त है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि ओड़िया साहित्य समृद्ध है। इस समृद्धि के मूल में ओड़िया साहित्य के पाठकों की बड़ी भूमिका है। ओड़िया में साहित्य के पाठकों की संख्या अन्य भारतीय भाषाओं की पाठक-संख्या से तुलनात्मक रूप में अधिक है। बड़ी संख्या में पुस्तकें खरीदी और पढ़ी जाती हैं। इसलिए अन्य भाषाओं की पुस्तकों की तुलना में ओड़िया में प्रकाशित पुस्तकें बहुत ही कम कीमत में उपलब्ध होती हैं। ओड़िया भाषियों का यह पुस्तक प्रेम साहित्य संसार में प्रशंसनीय है।

कभी ओड़िया में चंद प्रकाशक हुआ करते थे। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के चलते ओड़िया में भी तमाम प्रकाशन गृह हज़ारों पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं। पत्र-पत्रिकाएँ भी बड़ी मात्रा में निकल रही हैं। वर्षभर में ओड़िया साहित्य की प्रकाशित पुस्तकों से गुजरना किसी के लिए संभव प्रतीत नहीं होता है। बस उसका सर्वेक्षण किया जा सकता है। इसलिए इस आलेख में ओड़िया साहित्य में विविध विधाओं की चंद पुस्तकों की चर्चा की जा रही है। ये पुस्तकें चर्चित रही हैं। इस चयन में कुछ महत्वपूर्ण कृतियों का नामोल्लेख तक का अभाव परिलक्षित किया जा सकता है। बहरहाल, 2019 में प्रकाशित ओड़िया साहित्य की गति और प्रकृति के संबंध में एक सामान्य जानकारी देने का प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

'गोटे पागलि झिअर प्रेम कहानी' (एक पगली लड़की की प्रेम कहानी) रुनु मोहंती का एक गद्य संकलन है जिसमें कहानी, कविता और जीवनी आदि विधाओं का सुंदर मेल है। इससे रचनाकार के अनुभवों और उसके जीवन-जगत को जानने और समझने का अवसर मिलता है। इसमें रचनाकार की साफ़गोई और अद्भुत साहस के साथ कहने की शक्ति स्पष्ट देखी जा सकती है। ओड़िया साहित्य में ऐसी साहसिकता के साथ लिखी गई रचनाएँ बहुत कम होंगी, मेरी जानकारी में नहीं के बराबर है। रुनु मोहंती मूलतया कवयित्री हैं। उनके कई कविता संग्रह आ चुके हैं। चर्चित भी हुए हैं। इनमें से 'बाजे झिअ', 'राधा नोलियानी', 'सहज सुंदरी 'उल्लेखनीय हैं। 'सहयात्रिनी' उनका यात्रावृतांत है। विज्ञजनों की संगोष्ठी में आलोच्य पुस्तक में निहित साहसिकता तो दूर की बात, अपने मन के भावों को उन्मुक्त रूप से व्यक्त कर पाने में भी बहुत कम रचनाकार सफल होते हैं। रुनु का साहस ऐतिहासिक है। इसलिए उन्हें 'ओड़िया की अमृता प्रीतम' कहा गया है। पुस्तक के प्रथम निबंध 'गोटे पागलि झिअर प्रेम कहानी' में रुनु मोहंती लिखती हैं- "किसी बनी-बनाई राह पर चलना मुझे

पसंद नहीं है, तमाम कांटेदार, ऊबड़-खाबड़ बारूदी रास्ते, भूकंप प्रदेश, सर्पों से भरा इलाका पार करना पड़ा है। एक हाथ में प्रेम का झंडा तो दूसरे में प्रेमी संत का हाथ थामे आगे बढ़ती रही।" प्रेम की संतुष्टि और अतृप्त भाव ने उनकी रचनाशीलता को किस हद तक प्रभावित किया है, इसकी अभिव्यक्ति 'मो जीवन मो जातक' निबंध में मिल जाती है- "सच है कि मुझे ज्यादा प्रेम नहीं मिला, इसलिए मैंने अधिक प्रेम कविताएँ लिखी हैं। जैसे तलहटी में रहने वाला व्यक्ति सागर किनारे की उद्दाम कामना करता है।" इस पुस्तक से गुजर कर रुनु के जीवन और सृजन का सुंदर परिचय मिलता है। इसमें निहित आवेग और अनुभव की प्रखर धारा उनकी रचनाधर्मिता को विशिष्ट बनाते हैं। हृदय के भावों की सहज अभिव्यक्ति इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है। लेखक ने पुस्तक के अंतिम लेख 'जमानबंदी' में स्पष्ट लिखा है- "सत्य है कि हृदय अत्यंत विचलित होता है, कभी यह गुलाब का बाग बन जाता है तो कभी महाभारत का मैदान। लेकिन है यह परम विश्वासी। लिखने के दौरान मैं हृदय की बात ही कहूँगी।" स्त्री विमर्श की दृष्टि से भी इसका पाठ किया जा सकता है-- एक औरत कहाँ रहे? अपने मर्द के प्रेमहीन संसार में या पराए मर्द की प्यारभरी दुनिया में?" कहा जा सकता है कि स्त्री जीवन को शिद्दत के साथ अंकित करने वाली इस पुस्तक को ओड़िया साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त होगा।

चितरंजन चिरंजित के 'सेतु' और 'साइकल' उपन्यासों में सामान्य जन की आवाज़ और उसके संघर्ष को आधार बनाया गया है। 'सेतु' में धर्मपद को अपना आदर्श मानने वाला शिक्षित युवा चिन्मय की संघर्ष गाथा है। सेतु के निर्माण होने के बाद युगों से अंधकार में रहने वालों को सभ्यता का प्रकाश मिलेगा। लेकिन सेतु के निर्माण हेतु किसी भी स्तर से पहल नहीं होती है। राजनेता अपना लाभ उठाते रहते हैं। सेतु के निर्माण में चिन्मय की भूमिका को उपन्यास में रेखांकित किया गया है। दूसरे उपन्यास 'साइकल' में औद्योगिकीकरण के दौर में विस्थापितों के दर्द को कथा सूत्रों में पिरोया गया है। औद्योगिक समय में आम जन के स्वप्न का प्रतीक है साइकिल। उपन्यासकार ने इसकी प्रतीकात्मकता को स्पष्ट करते हुए लिखा भी है- "दो पहियों पर खड़ी मशीन का नाम साइकिल नहीं है। यह जीवन की एक शाखा है। यह शाखा जितनी फलेगी-फूलेगी जीवन का उतना विकास होगा।" दोनों उपन्यासों में समय के अनुसार कथा और पात्रों का संयोजन पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ने में सफल है।

समकालीन ओड़िया काव्य संसार में फनी मोहंती बहुचर्चित नाम है। पिछले लगभग पचास वर्षों से काव्य सृजन और सारस्वत साधना में निमग्न फनी मोहंती की पचीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ओड़िया साहित्य अकादमी सहित साहित्य अकादमी, दिल्ली से सम्मानित इस कवि के रचना जगत का केंद्रीय तत्व प्रेम है। ओड़िया कविता में प्रेम और रोमांटिक विषाद पर लिखने वालों में इनकी कोई तुलना नहीं है। ललित और मधुर शब्द-प्रयोग, भावों के अनुरूप कोमल पदविन्यास, छलकते हुए प्रेम की अभिव्यक्ति आदि विशेषताओं से युक्त इस कवि की कविताएँ पाठकों को बार-बार लुभाती रही हैं। उनके 'अधागढ़ा अधा वर्णमालारे' कविता संग्रह में उपर्युक्त विशेषताएँ देखी जा सकती हैं।

कवि विपिन नायक की बयालीस नई कविताओं का संग्रह 'अपुस्तक' है। इन कविताओं में कवि की सौंदर्य चेतना प्रतिफलित हुई है। कवि की मान्यता है कि सामाजिक मनुष्य और काव्य के नायक में सबसे बड़ा अंतर होता है बंधन से मुक्ति के लिए किए गए प्रयास को लेकर। कवि के शब्दों में- *तुम्हारे जादुई छड़ी के स्पर्श से/ काला बकरा बन गया मैं/ उजाड़ दी पूरी उमर/ तेरे मंत्रित फूलों की माया/ कब लौटाएगी मेरी गुजरी आयु?* प्रेम की सहज और नैसर्गिक अभिव्यक्ति ने कवि को विशिष्टता प्रदान की है। इस संग्रह की 'निर्माण' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा सकती हैं- *मैं उसकी पूजा करता हूँ/ चूँकि वह मेरे अंदर कुछ व्योम व्याकुलताएँ भरकर/ अतल गहराई में ईश्वर को जन्म दे चुकी है/ मैं उसे गढ़ता हूँ/ चूँकि वह मुझे गढ़ चुकी होती है।"* विपिन नायक की कविताओं के बारे में निस्संदेह कहा जा सकता है कि शब्दों की नीरवता को उजागर करते हुए भावों और आवेगों की संवेदना एवं जिज्ञासा

उत्पन्न करने में समर्थ कविताएँ हैं। तमाम बिंबों के प्रयोग से उनकी कविताएँ अधिक मर्मस्पर्शी हो उठी हैं।

ओड़िया कविता में 'धाडिकिया कविता' यानी पंक्तिभर की कविता लिखने में उत्पल मोहंती को विशेष महत्व प्राप्त है। उनका कविता संग्रह 'आंटीबायोटिक' ओड़िया में प्रथम प्रयास है। भावहीनता और संवेदनहीनता के वायरस को पाठकों के हृदय से निकाल भगाने में यह संग्रह सफल होगा, ऐसा उनके पाठकों का मानना है।

कवयित्री जयंती विश्वास बहुरिया का कविता संग्रह 'मुँ मो सहित' (मैं अपने साथ) भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है। यद्यपि यह जयंती का प्रथम कविता संग्रह है तथापि इसमें उनके आगामी भविष्य की स्वर्णिम आभा विद्यमान है। सहज-सरल शब्द प्रयोग और उपयुक्त भाव-भूमि ही उनकी कविता का मूल आधार है। सामाजिक मूल्यबोध और जीवन जगत में स्त्री जीवन के स्वर इसमें निनादित हैं। वैयक्तिकता से निर्वैयक्तिकता की यात्रा जयंती की कविता की मूलभूत विशेषता है। तीन दशक पहले लेखन करने वाली यह कवयित्री अचानक जैसे कहीं खो गई थी। लेकिन उनके पुनः लेखकीय सक्रियता पाठक-समाज में नई आशा और भरोसा का संचार करती है।

गोपीनाथ बाग सुपरिचित आलोचक हैं। इधर उनका 'ककरे काँ' शीर्षक कविता संग्रह प्रकाशित होकर चर्चित हुआ है। इस पुस्तक में हाशिये के समाज की निःशब्दता को वाणी दी गई है। इसमें 'सूखवासी', 'संबारु', 'द्रोण', 'बूडबक का सवाल', 'उत्तराधिकार', 'उससे पूछो' आदि छियालिस कविताएँ संकलित हैं। दलित, पीड़ित और उपेक्षित जन के प्रति कवि की संवेदनशीलता कविता प्रेमियों को आह्लादित करती है।

शरत कुमार दाश की पहली पुस्तक 'चित्रलेखा' के प्रकाशन के पश्चात् उनकी दूसरी काव्य कृति 'शब्दस्रोत' में शब्द, व्यजंना और ललित कविता की धारा प्रवाहित है। इस पुस्तक की भावाभिव्यक्ति को पाठकों ने खूब सराहा है। गीतात्मकता और सरल शब्दों के संयोजन से कवि अपनी विशिष्टता प्रतिपादित करता है। इस संग्रह में इक्यावन कविताएँ समाहित हैं।

ओड़िशा की एक समृद्ध उपभाषा कोशली है। पश्चिम ओड़िशा में न केवल यह संपर्क भाषा है बल्कि इस उपभाषा में प्रभूत मात्रा में साहित्य-सृजन भी हो रहा है। उदाहरण के तौर पर कवि हलधार नाग की 'काव्यांजलि' दो खंडो में प्रकाशित है। इसमें सम्मिलित कोशली कविताओं का सही अंग्रेजी अनुवाद भी किया गया है। दोनों खंडों में प्रकाशित कविताओं में वैविध्य है। मिथकीय संदर्भों से युक्त कविताओं के साथ समकालीन जनजीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं का भी चित्रण किया गया है। सबसे बड़ी खूबी यह है कि इन कविताओं में अत्यंत सहज और सरल ढंग से जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है।

अरुण कुमार त्रिपाठी ओड़िया के चर्चित कवि हैं। पेशे से गणित के अध्यापक हैं। पिछली शताब्दी के नब्बे के बाद की ओड़िया कविता में इस कवि का विशेष स्थान है। उनकी कविताओं में प्रतिकूल समय की मौजूदगी के साथ-साथ सकारात्मक जीवनबोध और सामाजिक जिज्ञासा का मधुर समन्वय परिलक्षित होता है। यंत्रणा की परिधि को पार करते हुए व्यापक जनहित के प्रति जीवनपरक कवि दृष्टि उन्हें अपने समकालीन कविता संसार में विशिष्ट बनाती है। यह कवि आत्ममुग्धता के दौर में ठोस यथार्थ की ज़मीन पर टिके रहने का संकल्प करता है। अपने समय और समाज की तमाम विसंगतियों, घटनाओं, दुर्घटनाओं से मुठभेड़ करते हुए यही कवि अपने जीवनानुभवों को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास करता है। 'मेघकु चिठी, 2002', 'आहत, 2005', 'बर्षाभिजा शोषमाने, 2015 (बारिश से भीगीं प्यासें)' आदि कविता संग्रहों के पश्चात् कवि का अद्यतन कविता संकलन है 'धूसर नायकर कविता' अर्थात् मटमैले नायक की कविता। इस कविता संग्रह में कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता, निम्नवर्गीय जीवन के प्रति संवेदनशीलता, कवि प्राण की बेचैनी, प्रश्नाकुलता तथा प्रतिबद्धता आदि के साथ नवनिर्माण का संकल्प विद्यमान है।

संजय कुमार मिश्र ओड़िया साहित्य का एक सुपरिचित नाम है। मौजूदा दौर के प्रखर कवि और कथाकार के रूप में आपको जाना जाता है। उनके रचना संसार में समय और जीवन का शिद्दत के साथ

अंकन हुआ है। हाल में प्रकाशित उनका उपन्यास 'दादन सुंदरी' बहुचर्चित रहा। कई भारतीय भाषाओं में इस औपन्यासिक कृति का अनुवाद भी हो चुका है। उनका अद्यतन कहानी संग्रह 'साप पेटर आकाश' (साँप के पेट का आकाश) है। इसने ओड़ियो कहानी के पाठकों का मन लुभाया है। विषय-विन्यास, भाषा और शिल्प, संवेदना और अभिवयक्ति की दृष्टि से ये कहानियाँ अत्यंत उच्चकोटि की हैं।

पवित्र पाणिग्राही की कहानी पुस्तक 'श्रेष्ठ गल्प' में उनकी चुनिंदा तेइस कहानियों का संकलन है। पूर्वदीप्ति शैली में लिखित इनकी कई कहानियाँ बहुत चर्चित रही हैं। जहाँ अतीत को साकार और जीवंत बनाने की कोशिश रहती है। पाठकों के औत्सुक्य और उत्कंठा को बनाए रखने में भी यह कहानीकार समर्थ रहा है। इस पुस्तक में ऐसी ही एक कहानी है 'आकस्मिक'। इस कहानी में वर्षा के साथ आदिकंठ की अचानक मुलाकात होती है। इसी तरह 'भाइंच कोली' कहानी की नायिका वाणी की इच्छा और अभीप्साओं के बहाने सुखद अतीत की स्मृतियों का चित्रण हुआ है। अपने दुखद समय को अतीत के सहारे कुछ सुखमय बनाने का प्रयास लेखक की कथा दृष्टि का परिचायक है। हृदय की अतल गहराई में छिपे जीवन सत्य को उद्घाटित करने में यह कहानीकार सफल रहा है। कथा कहने का ढंग इतना रोचक है कि पाठक कहानी से जुड़ता और बंधता चला जाता है। यह पवित्र पाणिग्राही की कथाधर्मिता का मूल वैशिष्ट्य है।

ओड़िया कथा संसार में देवव्रत मदनराय प्रसिद्ध हैं। 'प्रियंकरी' शीर्षक कहानी संग्रह 2019 में प्रकाशित हुआ है। किसी भी मनुष्य के मन को जानना अथवा उसकी हृदय की गहराई में छिपे भावों को पढ़ पाना बहुत सहज नहीं होता है। लेकिन चरित्र के अंदर झाँकने का उत्साह कथाकार का होता है जो उसकी कहानी को नया मोड़ प्रदान करता है। इस पुस्तक की 'प्रियंकरी' शीर्षक कहानी के माध्यम से उपर्युक्त कथन की पुष्टि की जा सकती है। इस कहानी की चुलबुली नायिका सुनंदा के हृदय में दुख भी हो सकता है, ऐसा कथा नायक ने कभी कल्पना तक नहीं की थी। लेकिन जब सुनंदा का दुख उजागर होता है तो नायक को स्मरण हो आती हैं अपनी माँ द्वारा अक्सर कही गई वे बातें- "क्या है इस घर में? कौन सा सुख दिया है तुम्हारे पिता ने?" कहानी के नायक को तब कुछ समझ में नहीं आता था। लेकिन सुनंदा के जीवन को अचानक इस रूप में पाकर उसे सब कुछ बोधगम्य हुआ।

ओड़िया साहित्य को समृद्ध करने वाली अनेक प्रसिद्ध कहानियों को लेकर अतुल बल के संपादन में 'कालजयी ओड़िया क्षुद्रगल्प' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई है। यह संकलन ओड़िया कहानी की विकास यात्रा का परिचायक है। साथ ही नई पीढ़ी के कथाप्रेमियों के लिए ओड़िया की कालजयी कहानियों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली पुस्तक साबित हो सकती है। संकलनकर्ता ने अपनी परिपक्व समझ और निष्पक्षता का परिचय दिया है। फ़कीर मोहन सेनापति की 'रेवती', लक्ष्मीकांत महापात्र की 'बूढ़ा शंखारी', गोदावरीश महापात्र की 'मागुनीर शगड' (मंगनी की बैलगाड़ी), भगवती चरण पाणिग्राही की 'शिकार, जैसी कालजयी कहानियों के साथ परवर्ती कालखंड के शीर्षस्थ कहानीकारों-- नंदकिशोर बल, गोदावरीश मिश्र, राजकिशोर पटनायक, सुरेंद्र मोहंती, अखिलमोहन पटनायक, किशोरी चरण दास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कहानियों को संकलित किया है। प्रारंभ में संकलित कहानियों पर एक विवेचनात्मक लेख शामिल किया गया है। इससे पुस्तक की उपयोगिता अधिक सिद्ध होती है। पुस्तक के अंतिम भाग में संकलित कहानियों के लेखकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पुस्तक में संकलित तीस कहानियों के चयन और गुणवत्ता के संबंध में पाठक पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं।

यशस्वी कथाकार अर्चना नायक का 'अद्यतन' कहानी संग्रह 'सुमनि चउरा' में अठारह कहानियाँ हैं। उनकी कथा का आयतन मिट्टी से आकाश तक व्याप्त है। उनकी कहानियों की कथावस्तु, वर्णन शैली, प्रभावी शब्द संयोजन, निराली अभिव्यक्ति आदि को पाठक बहुत अधिक पसंद करते हैं। इस संग्रह की खूबी यह है कि कथाकार ने समय-समय पर ग्रामीण जीवन पर आधारित जो कहानियाँ लिखी थीं, उनका एकत्र संकलन हुआ है। इससे रचनाकार की

ग्रामीण जनजीवन पर कथादृष्टि का परिचय मिलता है। दूसरी खूबी यह है कि इन कहानियों में कथाकार का जीवनानुभव पूरी तरह से अभिव्यक्त हुआ है। न केवल गाँव से प्रेम करने वाले बल्कि अन्य सभी वर्गों के पाठक इसका रसास्वादन कर सकेंगे।

कहानीकार सत्य मिश्र की बीस कहानियों का संकलन 'मिछ रास्तार सत' (झूठ की राह पर सच) है। इस संग्रह की 'बाटी अवधान' कहानी की जितनी प्रशंसा की जाए, कमतर साबित होगी। रेवती और उसके पति चिंतामणि के माध्यम से पारिवारिक जीवन के अविस्मरणीय चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। मनुष्य के मन की विचित्रताओं को रहस्य के माध्यम से उद्‌घाटित करने का सफल प्रयास दिखाई पड़ता है। संग्रह की पहली कहानी 'मिछ सत' (झूठ सच) में भी रहस्य की खोज परिलक्षित होती है। साधारण प्रतीत होने वाली घटनाओं अथवा पात्रों के माध्यम से असाधारण कथा का सृजन करना कहानीकार सत्य मिश्र का मूल वैशिष्ट्य है। दैनन्दिन जीवन की मामूली घटनाओं को उकेरते हुए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियों का सुंदर चित्रण हुआ है।

अमृता प्रीतम की 'एक थी सारा' में कवयित्री सारा शगूफ़ता की कविता विस्फोटक जीवन पर आधारित है। इस कृति का ओड़िया में अनुवाद प्रसिद्‌ध कवि, कथाकार, पत्रकार, निबंधकार अनुवादक कुमार हसन ने 'जणे थिला सारा' के नाम से किया है। चार-चार बार के असफल विवाह, बेटे की मृत्यु पर कफ़न तक मयस्सर न होना, तथाकथित रचनाकारों का उन्हें वेश्या की दृष्टि से देखना और राजनीति से उत्पन्न घोर निराशा ने उन्हें सृजनशीलता का खाद-पानी मुहैया कराया है। चंद शब्दों में कहें तो सारा कविता के मंटो हैं। अनुवादक ने अमृता प्रीतम की पुस्तक का अनुवाद करते हुए चुनौती भरा काम किया है। जहाँ सारा का हृदय हो, उसका अनुवाद किसी भी भाषा में कर पाना आसान नहीं होता है। कुमार हसन की यह अनूदित कृति मूल का भरपूर आस्वाद प्रदान करती है। इसलिए इसे एक महत्वपूर्ण पुस्तक कहा जा सकता है।

ओड़िया साहित्य को विश्व साहित्य का सानिध्य प्रदान करने वालों में विलासिनी मोहंती की भूमिका महत्वपूर्ण है। देशी-विदेशी विभिन्न भाषाओं के अमर साहित्यकारों की श्रेष्ठ कृतियों का अनुवाद करते हुए ओड़िया के पाठकों को उन ग्रंथों से परिचय स्थापित करवाया है। इसी क्रम में विलासिनी ने ऑस्कर वाइल्ड (1854-1900) के विश्व प्रसिद्‌ध उपन्यास 'दी पिक्चर ऑफ कोरियन ग्रे' का अनुवाद 'आत्मच्छाया' शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इसे पाठकों ने बहुत अधिक सराहा है।

बांग्ला के अप्रतिम साहित्यकार सुनील गंगोपाध्याय के उपन्यास 'मनेर मानुष' का ओड़िया अनुवाद कवि सूर्य मिश्र ने' मनर मणिष' शीर्षक से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में प्रसिद्‌ध बाउल गायक लालन फ़कीर के जीवन दर्शन और सृजन को केंद्रित किया गया है उनकी खोज, जीवन-शैली आदि को कथा सूत्र में सुंदर ढंग से उपन्यासकार ने पिरोया है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में लालन फ़कीर के अवदान को भी इस पुस्तक में उजागर किया गया है। पुस्तक में लालन ने अपने शिष्य से जो कहा था, वह आज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है- "यह सच है कि पहले मैं हिंदू था, अब मुसलमान हूँ, ईसाई भी कह सकते हो। मैं धर्म को मानता हूँ, धर्म के भेद नहीं। जाति मानता हूँ जाति-भेद को नहीं।" उनके गीतों में व्याप्त लोक-परलोक, देह-आत्मा आदि के तमाम भावों के माध्यम से उपन्यासकार ने उनकी जीवन दृष्टि का जो अंकन किया है, अनुवादक ने प्रभावी ढंग से उसे अंकित किया है।

ओड़िया के प्रसिद्‌ध युवा कवि और आलोचक प्रमोद सर ने प्रसिद्‌ध साहित्यकार 'सीताकांत महापात्रंक श्रेष्ठ गद्‌यकृति' का संपादन किया है। कविता की नाईं गद्‌य में भी सीताकांत के अवदान को स्थापित करना इस पुस्तक का लक्ष्य प्रतीत होता है। इसमें उनके गद्‌य के विविध रंगों को उद्‌घाटित किया गया है। कविता की समीक्षा, कला-संस्कृति संबंधी चिंतन, भ्रमण के अनुभव, वक्तव्य आदि विषयों से संबंधित निबंधों का एक उम्दा संकलन प्रस्तुत किया गया है। सीताकांत की गद्‌य रचना की प्रकृति के बारे में संपादक का विचार है- "गद्‌य उनके सृजन का गंतव्य नहीं, गमन मात्र है। दिक् नहीं, केवल दिशा है। आलस्यरहित एक आग्रह है। स्वच्छंद और स्वतः

स्फूर्त अवश्य है। इसलिए उनके गद्य में कविता का स्पंदन अनसुना नहीं रह सकता है।" निबंध 'कवितार इलाका' में सीताकांत ने कविता की भाषा, शैली, कविता का अभिमान, काव्यपुरुष की व्याकुलता और संन्यास आदि विविध दिशाओं पर विचार किया है। इसी तरह 'विश्व साहित्य चर्चा' में यूरोपीय संस्कृति में मानवतावाद और अलवेयर काम्यु, सार्त के दर्शन, कला और जीवन, काफ़्का की धरती आदि की चर्चा की गई है। आदिवासी जीवन और संस्कृति पर सीताकांत की गहरी पकड़ है। इस विषय से संबंधित उनकी कई कविताएँ कवि की आदिवासी चिंता का प्रतीक हैं। प्रमोद सर ने इस पुस्तक में सीताकांत के आदिवासी जीवन से संबंधित लेख को शामिल करते हुए अपनी संपादकीय दृष्टि का उत्तम परिचय दिया है। आदिवासी संस्कृति के स्वरूप, आदिवासी संगीत, ओड़िया साहित्य में आदिवासी चेतना आदि पर उपर्युक्त निबंध में चर्चा की गई है। कहा जा सकता है कि सीताकांत की चिंता और चेतना, जीवन दर्शन और गद्य- सामर्थ्य को उद्घाटित करने में इस पुस्तक की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

ओड़िया कथा साहित्य और बौद्धिक जगत में विपिन बिहारी मिश्र की खास पहचान है। श्री मिश्र बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार हैं। बाल साहित्य, लोकप्रिय विज्ञान लेखक, कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार, आत्मकथाकार आदि के रूप में बहुचर्चित हैं। 'गोमती की अंतिम हसी', 'मृत्युशय्या का मानचित्र', 'एक दूसरा कुरुक्षेत्र' कहानी संग्रहों और 'सुनंदा की डायरी', 'गाँव का नाम सुजनपुर' जैसे उपन्यासों के लिए साहित्य संसार में काफी चर्चित हुए। गाँव का नाम सुजनपुर का अंग्रेजी अनुवाद बसंत कुमार त्रिपाठी ने किया है। यह अनुवाद सोलह अध्यायों में विभाजित है। इसमे ग्रामीण जीवन की विशेषताएँ और ग्रामीण यथार्थ का बखूबी चित्रण किया गया है। ग्रामीण जनजीवन, राजनीति, साहस और संघर्ष को उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद निश्चित तौर पर प्रशंसनीय है।

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर 'संभव' पत्रिका का एक विशेषांक प्रकाशित हुआ है। गांधी जी के जीवन, दर्शन, विचारधारा, हिंदुत्व संबंधी अवधारणा, स्वराज चिंता, आश्रम जीवन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका, सत्याग्रह, स्वदेशी और सर्वोदय आदि को आधार बनाकर पैंतीस गंभीर आलेख समाहित हैं। इन निबंधों में लेखकों के पारंपरिक विचार नहीं, नवीन दृष्टि का परिचय मिलता है। मसलन, ओम प्रकाश जगती के 'मिस्टर गांधी- कारपोरेट एक्ज़ीक्यूटिव' में कारपोरेट दुनिया के लिए गांधी जी कहाँ तक ग्रहणीय हैं, इसका विवेचन किया गया है। ओड़िया समाज में इस पुस्तक का महत्व स्वयं सिद्ध है।

'ओड़िशार अन्य जणे भीमभोई' (ओड़िशा का एक दूसरा भीमभई) पुस्तक में संतकवि भीमभोई और कोंधमाल की आशुकवि पूर्णमासी जानी की जीवनी और पदावली का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके लेखक हैं सुरेंद्र प्रसाद मोहंती। कवयित्री पूर्णमासी जानी भीमभोई की तरह कोंध संप्रदाय की गृहस्थ संत हैं। वे पूर्णतया निरक्षर हैं और कोंधमाल क्षेत्र में ताड़ीसरु बाई के नाम से परिचित हैं। भीमभोई और इस कवयित्री की जीवनी और पदावली की विस्तृत चर्चा के साथ दोनों के जीवन-जगत में प्राप्त समानताओं का भी उद्घाटन किया गया है। इस शोधपरक पुस्तक में प्रसंगतया आध्यात्मिक चेतना पर भी विचार किया गया है।

– 2 एफ, धर्मतल्ला रोड, कस्बा, कोलकाता- 700042

❑❑❑

3

उर्दू साहित्य

डॉ. जुबेदा एच. मुल्लाँ

हर नया साल प्रारंभ तो होता है, बड़े उत्साह, हर्ष व उल्लास के साथ, परंतु उसका समापन ढलती संध्या समान धुंधला होता है। हर बीता साल अपने पीछे एक इतिहास छोड़ जाता है जिसे हमारा साहित्य अपनी विभिन्न विधाओं के माध्यम से सुरक्षित रखता है। हर साल की तरह सन् 2019 का उर्दू साहित्य भी संपूर्ण वर्ष की साहित्यिक गतिविधियों को संजोकर रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। भले ही आज की पीढ़ी की रुचि पठन-पाठन में घटती जा रही है, किंतु फिर भी हमारे साहित्यकार अपने कर्तव्य से विमुख नहीं हैं। सालभर उनकी लेखनी क्रियाशील रहती है। सच्चा साहित्यकार वही होता है, जो बड़ी ईमानदारी के साथ अपनी भावानुभूति को साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करके खुद भी सुख पाता है और पाठकों को भी जागृत करता है, प्रेरित करता है तथा सत्कर्मों की ओर समाज को उन्मुख करता है।

सन् 2019 में उर्दू भाषा एवं उर्दू साहित्य में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। उर्दू भाषा ने आज के युग में विश्व की भाषाओं के साथ अपना संबंध स्थापित किया है। 'उर्दू सिर्फ़ मुसलमानों की भाषा है,' अंग्रेजों ने जो यह लेबल इस भाषा पर लगाया था, अब यह लेबल टूट चुका है। उर्दू बहुभाषी महान भारत देश की एक महिमामयी मधुर भाषा है, जिसका आकर्षण हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। उर्दू भारत में जन्मी भारत की पहचान है। यह दिलों को जोड़ने वाली प्यार व मोहब्बत की चाशनी से भरपूर एक सशक्त भाषा है, जो समयानुरूप अपने देश-वासियों को पुचकारती भी है और उन्हें ललकारने की शक्ति भी रखती है। इसमें बच्चों के नशोनुमा के गुण विद्यमान हैं। यह भाषा नवयुवकों को इश्क़ में शराबोर करने के साथ-साथ देश पर संकट के समय सिर पर कफन बाँधने के लिए प्रेरित करने में भी समर्थ है। उर्दू साहित्य में बुज़ुर्गों का अनुभव विद्यमान है। वस्तुतः उर्दू साहित्य हर अवस्था के लोगों के लिए प्रेम, त्याग, बलिदान एवं शूरवीरता का पाठ पढ़ाने वाला एक सशक्त एवं समृद्ध साहित्य है।

उर्दू भारत में जन्मी एक प्रगतिशील भाषा है, जो भारत के प्रत्येक राज्य में बोली, समझी और पसंद की जाती है। यह लगभग आठ-नौ सौ सालों से प्रगति की ओर अग्रसर है। भारत को समझने और समझाने की उत्तम कला उर्दू भाषा में है। अतः उर्दू भाषा भारत की आन-बान-शान है। हर साल की तरह सन् 2019 का उर्दू साहित्य बड़ा प्रभावपूर्ण एवं प्रेरणादायक रहा है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अतः बच्चों को जागरूक करना हमारे साहित्यकारों का

परम धर्म है। किसी भी भाषा का 'बाल साहित्य' एक अनमोल धरोहर है। सन् 2019 में बाल बोध को ध्यान में रखकर बड़ी सावधानी से उर्दू बालसाहित्य रचा गया है। इस वर्ष अनीसुल हसन सिद्दीखी की तीन पुस्तकें बाल जगत में उपलब्ध हैं, जो सौर्य मंडल के प्रति बच्चों का ज्ञानवर्धन करने के उद्देश्य से रची गई हैं। पहली पुस्तक का नाम 'कहकशाँ क्या है?', दूसरी पुस्तक 'चलो चाँद पर' बड़ी रोचक पुस्तक है और तीसरी पुस्तक का नाम 'फ़लकीयाती बस्ता' है, जिसमें सौर्य मंडल का ज्ञान उपलब्ध है। इन पुस्तकों में लेखक अनीसुल हसन सिद्दीखी ने बच्चों की रुचि एवं संप्रेषण का ध्यान रखते हुए अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बड़ी सफलता के साथ किया है। बच्चों के लिए रची गई इन तीनों पुस्तकों में बच्चों की रुचि का ध्यान रखते हुए रंगीन चित्रों के साथ कहकशाँ (आकाश गंगा), चंद्रमा की गतिविधियाँ तथा सौर्य मंडल का व्यापक ज्ञान प्रस्तुत किया गया है।

ख़ौमी उर्दू कौंसिल नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली उर्दू मासिक पत्रिका 'बच्चों की दुनिया' की एक ऐसी विख्यात पत्रिका है, जिसमें बच्चों की नशोनुमा का श्रेष्ठ 'बाल साहित्य' हर माह प्रकाशित होता है। आज के आधुनिक युग में विश्व की प्रत्येक दिशा में नवीन टेक्नोलॉजी की ध्वनि गूँज रही है। हमारे देश का प्रत्येक बच्चा प्रत्येक ज्ञान से लाभ उठाएगा, इसी उद्देश्य से 'बच्चों की दुनिया', सबसे ज़्यादा छपने वाली पत्रिका में आधुनिक टेक्नोलॉजी पर ज्ञानवर्धक सुंदर कविताएँ एवं लेख आदि भी प्रकाशित होते हैं। बच्चों की इस पत्रिका की विशेषता यह है कि महापुरुषों, नेताओं तथा महात्माओं की जन्म तिथि के शुभ अवसर पर उन महापुरुषों की गतिविधियों, कारनामों तथा उनकी शिक्षा को इस पत्रिका के माध्यम से आज के बच्चों का ज्ञान बढ़ाया जाता है। इस वर्ष औरंगाबाद में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय उर्दू भाषा अभिवृद्धि, नई दिल्ली की ओर से उर्दू मासिक पत्रिका 'बच्चों की दुनिया' महात्मा गांधी विशेषांक के रूप में प्रकाशित करके शहर की विख्यात सामाजिक संस्था 'रेड एंड लीड फाउंडेशन' ने लगभग 15 हज़ार प्रतियाँ उर्दू पाठशाला के विद्यार्थियों में वितरित की।

युवा पीढ़ी हमारे देश की शक्ति एवं संपत्ति है। अत: युवकों के मार्गदर्शन हेतु उर्दू में सतत पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। इस वर्ष अप्रैल 2019 में लखनऊ में मासिक उर्दू पत्रिका 'नया दौर' का युवकों के लिए लोकार्पण हुआ। इस वर्ष संपादक मुहम्मद सलीम के संपादन में एक बेबाक त्रैमासिक पत्रिका 'सिलसिला' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ है, जिसमें विभिन्न अनुभव एवं गतिविधियों को उजागर किया जाता है, ताकि हमारी युवा पीढ़ी प्रेरित हो सके। इस वर्ष नई दिल्ली में उर्दू मासिक पत्रिका 'जुर्म व सज़ा और तफ़तीश' का लोकार्पण हुआ। मुरादाबाद में पत्रकारिता के क्षेत्र में सालनामा (वार्षिकी) 'आइना उर्दू सहाफ़ात' का लोकार्पण हुआ, जिसमें पत्रिका के क्षेत्र में उर्दू का सालभर का लेखा-जोखा उपलब्ध रहता है।

25 मई, 2019 को औरंगाबाद में 'बच्चों की दुनिया' का विशेषांक वितरित किया गया, जिसमें 'जलियाँवाला बाग़' की उस दर्दनाक घटना का उल्लेख है, जो 13 अप्रैल 1919 में बैसाखी के विशेष त्योहार पर घटी थी। इस दुर्घटना में अंग्रेज़ों ने कई भारतीयों को मौत के घाट उतारा था। इस घटना के 100 साल पूर्ण होने के संदर्भ में आज के बच्चों को अंग्रेजों के अत्याचार और भारतवासियों के बलिदान को दर्शाने का उद्देश्य रहा है। इस वर्ष नई दिल्ली में मीडिया से जुड़े उर्दू के लेखक मनसूर सफ़दरी नख़वी की बच्चों के लिए लिखी गई पुस्तक 'हम तुम दोस्त हुए' का लोकार्पण हुआ, जिसमें लेखक ने इस सृष्टि के पंच तत्व हवा, पानी, आग, ज़मीन व आसमान का महत्व हमारे बच्चों को समझाया है और हिदायत दी है कि हमारे पर्यावरण को साफ सुथरा रखना चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण से प्रारंभ होने वाली बीमारियों और दुख व परेशानियों से भी अवगत कराया है। यह पुस्तक बच्चों और बड़ों के लिए भी एक अमूल्य वरदान है।

उर्दू हमारे भारत की संस्कृति एवं विरासत की संरक्षक भाषा है। उर्दू के वर्तमान साहित्यकार भूत के

साहित्यकारों के साहित्य को भावी साहित्यकारों को विरासत के रूप में प्रस्तुत करते हुए कई जीवनियों को इस वर्ष 2019 में लिखा है, जिनके नाम हैं- 'आग़ा हशर काशमीरी' लेखक याक़ूब यावर, 'देवेंद्र सत्यार्थी' लेखक अब्दस्समीअ, 'अली सरदार जाफ़री' लेखक उमर रज़ा, 'कौसर चाँद पुरी' लेखक रशीद अंजूम, 'अबूलकलाम आज़ाद एक हमगीर शक़्सीयत' लेखक रशीदुद्दीन ख़ान आदि।

विश्व की प्रत्येक मानक भाषा का अपना एक विशेष व्याकरण होता है। आज के दौर में नए प्रयोगों के साथ अस्मत जावीद ने उर्दू के व्याकरण को नया रूप देकर 'नई उर्दू ख़वाइद' नामक पुस्तक लिखी है, जिसका स्वागत सन् 2019 में हुआ है। अस्मत जावीद ने इस पुस्तक को चार भागों में विभाजित किया है। इस पुस्तक में उर्दू के उद्भव, विकास और उसके व्याकरण एवं शब्द भंडार के साथ गद्य-पद्य में प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

उर्दू पुस्तक मेला, वर्ष 2019

1. 'राष्ट्रीय उर्दू परिषद, नई दिल्ली' विश्व की एक ऐसी महत्वपूर्ण संस्था है, जो प्रारंभ से सतत उर्दू की प्रगति में प्रयत्नबद्ध है। उर्दू की प्रगति में इसकी गतिविधियाँ विश्वभर में उल्लेखनीय हैं। सन् 2019 में 24 अप्रैल से 30 अप्रैल तक भारत में पहली बार 'अबू ज़हबी किताब-मेला' का आयोजन किया गया, जिसमें उर्दू की कई किताबों को पाठकों के सामने लाया गया। 6 दिनों तक इस पुस्तक मेले को सफ़ल बनाने में राष्ट्रीय उर्दू परिषद के निदेशक शेख़ आखिल अहमद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस मेले का उद्घाटन भारत के सफ़ीर श्रीमान नवदीप सिंघ सूरी ने किया और मीडिया के सामने कहा- "उर्दू दुनिया की एक ऐसी भाषा है, जिसमें भावनाओं और आभास की बड़ी गुंजाइश है। यह भाषा अपनी मिठास की वज़ह से पूरी दुनिया में आदर की नज़र से देखी जाती है। यह केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि सही अर्थों में भारत की गंगा-जमुना मिली-जुली संस्कृति की तरजमानी (अनुवाद) भी है।"

2. सन् 2019 में 15 जून से 23 जून तक 9 दिन का कश्मीर में 'राष्ट्रीय उर्दू परिषद फ़रूग़े उर्दू ज़बान', नई दिल्ली की ओर से किताब मेले का आयोजन किया गया। कश्मीर में नौ दिनों का यह 'किताब मेला', भारत का 23वाँ किताब मेला था, जिसका आयोजन जन्नत स्वरूप श्रीनगर में विश्वविद्यालय की अल्लामा इक़बाल लायब्रेरी के सामने बड़े से मैदान में किया गया था। यह उर्दू साहित्य के आधुनिक इतिहास में अपना उल्लेखनीय महत्व रखता है। 15 जून, 2019 से 23 जून, 2019 तक हर दिन एक शानदार त्योहार की तरह मनाया गया, जिसमें हर क्षेत्र और हर तरह की पुस्तकों के विभिन्न प्रकार व आकार के स्टाल सजाए गए थे। इस पुस्तक मेले को सरकारी और ग़ैर सरकारी विद्वानों ने बहुत सराहा है। चूँकि उर्दू कश्मीर की सरकारी भाषा है, अतः इस पुस्तक मेले के माध्यम से देश-विदेश में उर्दू के महत्व को उजागर करना रहा है। 15 जून 2019 को इस किताब मेले का उद्घाटन कश्मीर के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जनाब फ़ारूक अब्दुल्लाह ने किया था। इस ऐतिहासिक एवं उल्लेखनीय पुस्तक मेले में उर्दू की सबसे अधिक पुस्तकें बेची गई हैं।

उर्दू साहित्य में पाठक गद्य से अधिक पद्य की ओर आकर्षित हैं, क्योंकि उर्दू एक सुंदर, मीठी, लचीली, तरल भाषा है, जो कर्ण मधुर ही नहीं पाठकों की सुरीली धड़कन है। इस वर्ष राँची में झारखंड के विख्यात उर्दू के शायर नसीर शायर अफ़सर के काव्य के आधार पर डॉ. मसऊद जामी की समीक्षात्मक पुस्तक 'नसीर अफ़सर फ़न और शक़्सीयत' का प्रभात प्रकाशन के एक समारोह में लोकार्पण हुआ। इस वर्ष दिल्ली में शकील शमसी की छह हज़ार उर्दू शब्दों का भंडार 'तल्लफ़ुज' नामक पुस्तक का विमोचन हुआ। अज़ीज़ नबील का दूसरा काव्य संग्रह 'आवाज़ के पर खुलते हैं' पाठकों को इस वर्ष की अनमोल देन है।

इस वर्ष मई में रामपुर में डॉ. उत्तहर मसऊद खान की समीक्षात्मक पुस्तक 'माकामिल' का पाठकों में स्वागत हुआ। 05 मई, 2019, औरंगाबाद में सैय्यदा-फ़ातिमा ज़हराह और डॉ. शफ़ीऊद्दीन नासिर की विज्ञान के आलेखों पर आधारित पुस्तक 'सांइस ख़ौस ख़िज़ाह' का विमोचन हुआ। अल्लाह का पवित्र कलाम 'क़ुरआन' अल्लाह के बंदों को एकेश्वर की उपासना के साथ समाज में मानवता, भाईचारा, प्रेम, हमदर्दी, मेल-मिलाप, एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करने का संदेश देता है। अल्लाह के इस

संदेश को दर्शाने वाली इस्लामी अध्ययन के प्राध्यापक ज़फ़रूल इस्लाम की नई पुस्तक 'कुरआने-करीम और अल्लाह के बंदों को नफ़ा रसानी' इस वर्ष की एक श्रेष्ठ पुस्तक है।

डॉ. मुहम्मद फैरोज़ दहलवी के संपादन में संपादित समीक्षात्मक पुस्तक 'हमारे ज़माने की दिल्ली' सन् 2019 की एक उत्तम देन है, जिसमें संपादक ने दिल्ली से संबंधित 16 ऐसे निबंधों को संकलित किया है, जो हमारी राजधानी दिल्ली की संपूर्ण दास्तान सुनाते हैं। यह पुस्तक नई पीढ़ी को दिल्ली के इतिहास, संस्कृति तथा सभ्यता के साथ-साथ दिल्ली के भूत को वर्तमान से जोड़ने की एक सराहनीय कड़ी भी है। दिल्ली को जानने के लिए यह पुस्तक एक उत्तम उपहार है। इस वर्ष दिल्ली के शाहीन बाग़ में 'उर्दू के इब्तदाई नावेलों में तहज़ीबी कशमकश की अक्कासी' नामक एक ऐसी पुस्तक का उर्दू विद्वानों ने विमोचन किया, जिसके लेखक का बहुत पहले देहांत हो चुका था। दिल्ली में हबीब सैफ़ी की शोधात्मक पुस्तक 'शौकत प्रदेसी फ़िक्र व फ़न के आइने में' का इस वर्ष पाठकों में स्वागत हुआ।

25 मई, 2019 को दरभंगा में डॉ. इमाम आज़म के संपादन में संपादित पुस्तक 'सहरे की अदबी मानवियत' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक में 235 कवियों के सहरे के गीत संगृहित हैं। सहरे के फूलों की तरह इस पुस्तक की महक भी उर्दू अदब को महका रही है। इस वर्ष मुंबई में कमाल अहम बलयावी की शायरी की पुस्तक 'तेरी तलब में' का लोकार्पण संपन्न हुआ। 17 जून, 2019 को जलाल पुर में युवा शायर हाशम रज़ा की पुस्तक 'मीराबाई उर्दू शायरी में' पाठकों में चर्चित है। समाज एवं समाज सेवा पर लेखक द्वय मुहम्मद शाहिद और अबू असामा द्वारा लिखी गई पुस्तक 'पेशावाराना सोशल वर्क' उर्दू साहित्य को सन् 2019 की एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति है। इस वर्ष पटना में पटना विश्वविद्यालय के सौ साल पूर्ण होने के उपलक्ष में उर्दू विभाग ने सद साला 'जरनल' का विशेषांक प्रस्तुत किया है, जो उर्दू साहित्य में 'मील का पत्थर' साबित हुआ है।

सन् 2019 में पाँचवीं राष्ट्रीय उर्दू कांफ्रेंस के शुभ अवसर पर नागपुर में डॉ. मुहम्मद अबुलकलाम की नई किताब 'उर्दू रस्मुल ख़त का इरतख़ा' का विमोचन हुआ। इस वर्ष डॉ. शकील अहमद की पुस्तक 'निशात क़लम' गद्य एवं पद्य पर प्रस्तुत 35 आलेखों का संग्रह है, जो दो भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में पद्य पर 18 निबंध संगृहित हैं और द्वितीय भाग में 17 गद्य पर आधारित निबंध हैं। इस वर्ष मुंबई में प्रो. मुहम्मद सलीम की कहानियों का संग्रह 'कुछ दर्द सिवा होता है' और हनीफ़ कैफ़ी की पुस्तक 'बचपन ज़िंदा है मुझमें' का लोकार्पण हुआ। उर्दू अदब के लिए अमरोह प्रसिद्ध शहर है। इस वर्ष अमरोह में महबूब हुसैन ज़ैदी के संपादन में संपादित पुस्तक 'शजर सायादार' और अमरोह के प्रसिद्ध शायर मिर्ज़ा अफ़सर हुसैन बेग की ग़ज़लों का संकलन 'लुत्फ़ ग़ज़ल' का विमोचन हुआ।

दिल्ली में बिहार के विख्यात शायर अब्दुल मजीद की नई पुस्तक 'दस्ते हुनर' का विमोचन हुआ। इस वर्ष मध्य प्रदेश के सरूज नामक शहर में यहाँ के मशहूर शायर व साहित्यकार डॉ. सैफ़ी सरूजी की 73वीं पुस्तक 'उर्दू नज्म' का इरतख़ाई सफ़र (प्रगति यात्रा) का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष 31 मार्च, इतवार की सुनहरी सुबह में मालेगाँव में राष्ट्रीय परिषद बराये फ़रूगे उर्दू की वित्तीय सहायता से अहमद उस्मानी के संपादन में निर्मित पुस्तक 'सफ़ीनारा दर्द व दाग़' पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष कामटी में एक साथ उर्दू की पाँच महत्वपूर्ण पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। उर्दू साहित्य के लिए यह विषय गर्व का है कि कामटी शहर धीरे-धीरे उर्दू भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में उर्दू पुस्तकों का केंद्र बनता जा रहा है। जहाँ उर्दू में ज्ञान-विज्ञान, पर्यावरण और आधुनिक ज्वलंत विषयों पर बहुत पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय परिषद बराए फ़रूगे़ उर्दू भाषा, नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से पर्यावरण, विख्यात व्यक्तित्व, गद्य-पद्य एवं बाल साहित्य पर प्रकाशित पाँच पुस्तकें पाठकों के सामने आई हैं, जिनके नाम हैं- 1. डॉ. रफ़ीक़. ए. एस. की पुस्तक 'मिट्ठी की आलूदगी', 2. मक़बूल अली अहमद वारसी की पुस्तक 'रौशन ख़ंदीलें', 3. वकील अंजूम का काव्य संकलन 'सकून-दिल', 4. बाल साहित्य पर शायर सुहेल आलम का बाल काव्य संग्रह 'लंगड़ा मच्छर' और 5. इमरान आसिफ़ का 'बच्चों की नज़्में'।

सन् 2019 में इक़बाल हसन आज़ाद का कहानी संग्रह 'पोरट्रेट' इस वर्ष का उत्तम कहानी संग्रह है, जिसमें उर्दू की तीस कहानियाँ संग्रहीत हैं। यह कहानियाँ वर्तमान भारतीय समाज का दर्पण सिद्ध हुई हैं। 'अब सुबह नहीं होगी' अबुल्लैस जावीद का चौथा कहानी संग्रह है, जिसमें कहानीकार ने अपने आस-पास के वातावरण को दर्शाया है। इसमें कुल चौदह कहानियाँ हैं, जो मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित हैं। इस वर्ष मेरठ में डॉ. इरशाद सयानवी की दूसरी समीक्षात्मक पुस्तक 'नई सदी का उर्दू अफ़साना' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष आधुनिक उर्दू के विख्यात साहित्यकार कौसर मज़हरी की समीक्षात्मक पुस्तक 'अरत्साम' पाठकों के लिए उपलब्ध है, जिसके आलेख तीन भागों में विभक्त हैं। यह कौसर मज़हरी की तीसरी पुस्तक है, जिसके प्रथम भाग में नौ आलेख संगृहीत हैं। इस भाग का शीर्षक 'रंग नस्र' है। इस भाग में उर्दू के विख्यात कवियों के काव्य के गहरे रंगों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें ग़ालिब, फ़िराग़, इक़बाल जैसे महान शायरों की शायरी पर आलेख संगृहीत हैं। दूसरा भाग 'रंग शायरी' है, जिसमें 24 आलेख संगृहीत हैं। इनमें पद्य की भाषा में कहानी का उल्लेख हुआ है। इन आलेखों की उर्दू भाषा में भारत की गंगा-जमुना संस्कृति का रूप झलकता है। इसमें दक्खनी उर्दू का ख़मीर भी पाया जाता है। पुस्तक का तीसरा भाग 'रंग फ़िक्शन' है, जिसमें कुल आठ आलेख हैं, जिनमें उर्दू की कहानियों और उपन्यासों की विस्तृत व्याख्या हुई है।

डॉ. अब्दुल ह्म का निबंध संग्रह 'इफ़्तकार की ख़ुशबू' सन् 2019 की एक उत्तम देन है। डॉ. अब्दुल ह्म उर्दू के उभरते हुए युवा साहित्यकार हैं। यह उनका तीसरा निबंध संग्रह है, जिसमें 16 निंबध संगृहीत हैं। निबंधकार ने इसमें उर्दू के उल्लेखनीय साहित्यकारों के प्रति 12 व्याख्यानों को भी प्रकाशित किया है, जो वर्तमान समाज के प्रति फ़िक्र (चिंतन) एवं फ़न (कला) पर रौशनी डालते हैं। इस वर्ष डॉ. निसार राही के संपादन में संपादित पुस्तक 'सारा शहर ग़ज़ल कहता है' (शीन-कॉफ़ निज़ाम, फ़न और शख़्सीयत) पाठकों में उपलब्ध है। इस उल्लेखनीय पुस्तक के छह अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संपादक ने शायरी (काव्य) दूसरें में गद्य, तीसरे में निज़ाम साहब के व्यक्तित्व, चौथे में साक्षात्कार, पाँचवें में एक भेंट की व्याख्या और छठे अध्याय में निज़ाम साहब के प्रति अन्य साहित्यकारों के विचार संगृहीत किए हैं। प्रो. ख़्वाजा मुहम्मद इक्रामुद्दीन के संपादन में संपादित पुस्तक 'मुलाक़ातें' इस वर्ष की एक उत्तम एवं सुंदर उर्दू पुस्तक है, जिसमें लेखक ने विख्यात साहित्यकारों के साक्षात्कारों को संगृहीत किया है।

इस वर्ष वाराणसी में क़तर से आए हुए उर्दू के विख्यात शायर इफ़्तख़ार राग़िब की पद्य पुस्तक 'कुछ और' का विमोचन हुआ। नई दिल्ली में डॉ. बिसमिल आरफ़ी की पद्य पुस्तक 'मेरे तसव्वर में रंग भर दो' का विमोचन हुआ। 12 जून, 2019 बुधवार के दिन पुणे में फ़ारसी के शायर शिराजी की फ़ारसी ग़ज़लों का उर्दू अनुवाद 'महरम अस्रार' का लोकार्पण हुआ। जनाब मुहम्मद हसना अशरफ़ी इस पुस्तक के अनुवादक हैं।

सन् 2019 में उर्दू साहित्य में असंख्य विख्यात जीवनियाँ भी पाठकों के लिए उपलब्ध हैं, जो मानवीयता का ज्ञान-भंडार सिद्ध हुई हैं। इस वर्ष राष्ट्रीय परिषद उर्दू ज़बान, नई दिल्ली की वित्तीय सहायता से प्रेम गोपाल मतल ने अपने पिताश्री गोपाल मतल की जीवनी प्रकाशित की है। गोपाल मतल उर्दू के विख्यात शायर और पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपनी खुद की एक उर्दू पत्रिका 'तहरीक' प्रारंभ की थी, जो उर्दू दुनिया में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। रशीद अंजूम द्वारा लिखी गई जीवनी 'कौसर चाँद पुरी' इस वर्ष की एक आर्दश जीवनी है।

इस वर्ष नाटककार खुरशीद नवाब का पाँच नाटकों का सग्रंह 'रौशन अंधेरे' उर्दू सहित्य जगत में आकर्षण का केंद्र सिद्ध हुआ है, जिसमें वर्तमान समाज के ज्वलंत मुद्दों पर नाटक प्रस्तुत किए गए हैं। नई दिल्ली में 07 जुलाई, 2019 को उर्दू की प्रगति के संदर्भ में सैय्यद ज़ियाउररहमान ग़ौसी की व्यंग्यात्मक पुस्तक 'गुबारे दिल' का विमोचन हुआ, जिसमें लेखक ने एक सच्चे सेवक के रूप में बड़ी बेबाकी के साथ

उर्दू से संबंधित सभी समस्याओं पर प्रकाश डाला है। यह बेबाक पुस्तक एक रिपोर्ताज के रूप में लिखी गई ऐतिहासिक सफ़रनामा है। इस वर्ष हैदराबाद में 18 जुलाई, 2019 को डॉ. नाहिदा सुल्ताना की शोधात्मक पुस्तक 'हैदराबाद में उर्दू शायरी का तनख़ीदी मुतालिया' का विमोचन हुआ। इस वर्ष अलीगढ़ में अलीगढ़ क्रिकेट के इतिहास पर लिखी गई पहली पुस्तक 'कोरड्राइव' का लोकार्पण हुआ, जिसके लेखक हैं इक्राम वासिस। इस कोरड्राइव पुस्तक में उन सभी खिलाड़ियों का उल्लेख एवं वर्णन हुआ है, जिन्होंने अलीगढ़ को क्रिकेट की दुनिया में पहचान दिलाई है। युवकों में यह पुस्तक अत्यंत चर्चित है। उर्दू के नामवर कहानीकार ज्ञानचंद्र केंथ का नक्षत्रों पर लिखित कहानी संग्रह 'दर्द के साए' इस वर्ष पाठकों में चर्चित रहा है।

सन् 2019 में प्रकाशित सैय्यद अहतशाम हुसैन की पुस्तक 'उर्दू अदब की तनख़ीदी तारीख़' उर्दू अदब के नए इतिहास का परिचय है। इस वर्ष प्रकाशित मुहम्मद हुसैन की समीक्षात्मक पुस्तक 'शफ़ीख़ फ़ातीमा शअरा और गिलाह सफ़ूराह' उर्दू की कवयित्रियों की कविताओं में अभिव्यक्त भावनाओं की व्याख्यात्मक पुस्तक है, जो इस वर्ष पाठकों में सराहनीय है। डॉ. हाफ़िज फ़रीद की 10 निबंधों की पुस्तक 'तक़रीज़ व तनख़ीद' इस वर्ष की उत्तम पुस्तक है, जिसमें वर्तमान परिस्थितियों पर ज्वलंत विषयों वाले निबंध संगृहीत हैं। इसमें साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित निबंध भी उपलब्ध हैं, जो कहानी, उपन्यास एवं शायरी की व्याख्या करते हैं। डॉ. अनवरूल हसन वस्तवी का निबंध संग्रह है, जिसमें 13 व्याख्यात्मक आलेख प्रस्तुत किए गए हैं, जो वास्तव में बिहार का एन्साइक्लोपिडिया है। यह निंबध संग्रह लेखक की बिहार से संबंधित जानकारी का दस्तावेज है। शायर डॉ. अब्बास रज़ानीर की पद्य पुस्तक 'आहट पाँचवें मौसम की' है, जो आधुनिक उर्दू शायरी का संग्रह है। इसमें श्रेष्ठ एवं प्रभावपूर्ण कविताओं को समाज के दर्पण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। डॉ. अब्दुल अज़ीज़ इरफ़ान की विख्यात ऐतिहासिक पुस्तक 'रोज़ा ताजमहल तारीख़ के आइने में' इस वर्ष की एक अनमोल देन है, जो ऐतिहासिक ज्ञानवर्धक पुस्तक है।

सितंबर 2019 में मुंबई में गुलबूटे ऑडिटोरियम में माननीय उर्दू लेखिका फ़रीदाह निसार अहमद का कथा संग्रह 'गोहर ख़ल्ज़म' का लोकार्पण हुआ, जिसमें महिला जगत से संबंधित कई कहानियों को प्रस्तुत किया गया है। इस वर्ष दिल्ली में उर्दू के विख्यात साहित्यकार तालिब रामपुरी का तीसरा काव्य संकलन 'मेरी कमाई' का लोकार्पण हुआ। औरगांबाद एक ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ इस वर्ष मराठी की एक ऐतिहासिक पुस्तक का उर्दू अनुवाद 'आसिफ़ जाही' प्रथम भाग का लोकार्पण हुआ। यह पुस्तक औरंगाबाद में आसिफ़ जाही साम्राज्य (हैदराबाद) के निज़ाम ऐतिहासिक कारनामों का विवरण प्रस्तुत करती है। उर्दू अनुवाद के रूप में इस पुस्तक को तीन लेखकों ने तरतीब दी है, जिनके नाम हैं- सरफ़राज अहमद शेख़, कलीम आज़ीम और सैय्यद वाज़। इस वर्ष बीदर नामक कर्नाटक राज्य के एक शहर में श्रीमान मंज़ूर विख़ार की हास्य व्यंग्यात्मक पुस्तक 'मुस्कराना मना है' का लोकार्पण हुआ। इस वर्ष प्रयागराज में डॉ. कहकशाँ इरफ़ान का शोध ग्रंथ 'अली सरदार जाफ़री, बहैसियत नसर निगार' पुस्तक रूप में पाठकों में उपलब्ध है।

प्रो. अब्दुल हख़ के संपादन में संपादित पुस्तक 'सूज़ व गदाज़ ज़िंदगी' सन् 2019 की पाठकों को एक उत्तम देन है, जो उर्दू साहित्य के आकाश पर एक देदिप्यमान नक्षत्र के समान उर्दू साहित्य के छात्रों का मार्गदर्शन करती है। इस पुस्तक की एक और विशेषता यह है कि उर्दू साहित्यिक ज़िंदगी का यह उतार-चढ़ाव दर्पण के समान स्पष्ट करती है। इस वर्ष की एक और उल्लेखनीय पुस्तक 'अदब अक्कास हयात' है, जिसके लेखक एम. आलम और संपादक एम. अशिफ़ हैं। इस पुस्तक में कुल 13 आलेख संगृहीत हैं, साथ में लेखक की विश्व यात्रा के संबंध में विवरणात्मक आलेख भी उपलब्ध हैं। संपादक ने इस पुस्तक में लेखक की ज़िंदगी के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला है कि वे एक आज़ादाना ज़िंदगी के मालिक थे और बड़े ज़िंदादिल तथा विशाल हृदद के व्यक्तित्व भी थे। लेखक गुलाम नबी कुमार के समीक्षात्मक निबंधों का संग्रह 'क़दीम-व-जदीद अदबियात' इस वर्ष की एक उत्तम साहित्यिक पुस्तक

है, जिसमें उर्दू साहित्य के प्राचीन एवं नए गद्य-पद्य साहित्य का उल्लेख हुआ है।

इस वर्ष इम्तियाज़ अज़र का प्रथम उपन्यास 'अलीपुर' पाठकों में उपलब्ध है। इसमें अलीपुर बस्ती का वातावरण प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में इम्तियाज़ अज़र ने अलीपुर के माध्यम से भारत की वास्तविकता पर प्रकाश डाला है। शायर डॉ. कलबहसन हज़ी की कहानियों का पहला कहानी संग्रह इस वर्ष का मनोरंजन से भरपूर कहानी संग्रह है। मूल रूप में शायर (कवि) होने के कारण लेखक ने अपनी कहानियों में शायरी के रंग बिखेरे हैं। इस श्रेष्ठ कहानी संग्रह की यह विशेषता है कि लेखक ने अन्य उर्दू के कवियों की कविताओं की पंक्तियों पर अपनी कहानियों के शीर्षक दिए हैं, जैसे संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक है 'किताब ज़ीस्त का एक वरक़' (पृष्ठ)। यह शीर्षक शायर जमील ज़हीर के निम्न शेर पर आधारित है।

उभर जाते हैं अलफ़ाज़ ख़ुद आहिस्ता-आहिस्ता,
किताब ज़ीस्त का कोई वरक़ सादा नहीं होता।।

हर साल की तरह सन् 2019 में भी कई 'सहरे के गीत' नामकरण के गीत, लोरियाँ, बिदाई, अलविदा के गीत और अन्य भाषाओं के अनूदित गीत भी लिखे गए हैं। चूँकि हमारा भारत एक बहुभाषी देश है, अतः भारतीय साहित्य में अनुवाद का अपना एक विशेष महत्व है। अनुवाद एक कला है। अनुवादक एक भाषा की किसी कृति या रचना का सूक्ष्म अध्ययन करने के उपरांत उसमें निहित भावनाओं को अन्य भाषा में अनुवाद करके एक कला के समान मूल रचना के रहस्यों का उद्घाटन करता है। अक्सर अनुवाद मूल रचना से अधिक निखरकर पाठकों के सामने उभरता है। इस वर्ष डॉ. समीना ताबश की अरबी से उर्दू में अनूदित पुस्तक 'मीज़ान नक़द' की उर्दू साहित्य में ख़ूब चर्चा है। 'मीज़ान नक़द' मीख़ाईल नईमा की अरबी समीक्षात्मक पुस्तक 'अलग़रबाल' का उर्दू अनुवाद है। 'अलग़रबाल' अरबी साहित्य में भी अत्यंत चर्चित साहित्यिक पुस्तक है, जिसमें गद्य-पद्य के साहित्यिक उसूलों पर प्रकाश डाला गया है। 'मीज़ान नक़द' के कुल 22 आलेख जोड़े गए हैं, जो 'छान-फटक' समीक्षा करते हैं। अर्थात् इसके आलेख प्रत्येक विषय को छान-फटक कर स्पष्ट और ठोस बात प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः लेखिका ने अरबी भाषा की एक अत्यंत ज्ञानवर्धक पुस्तक का उर्दू भाषा में अनुवाद करके उर्दू साहित्य में चार चाँद लगाए हैं।

सन् 2019 के अंत तक उर्दू साहित्य में असंख्य पुस्तकें पाठकों के कर कमलों में शोभायमान हैं, जैसे आज़मगढ़ में इस वर्ष डॉ. रवींद्र कुमार आस्थाना का काव्य संग्रह 'मैं पीड़ा का नील गगन हूँ' का लोकार्पण हुआ। पशुता से मानवता की ओर की यात्रा साहित्य के माध्यम से ही प्रारंभ होती है। इस संग्रह की कविताएँ व्यक्तिगत, सामाजिक तथा देश प्रेम की भावना से परिपूर्ण हैं। पटना में तलत परवीन का काव्य संग्रह 'अधूरे ख़्वाब' का विमोचन हुआ। पुरुष वर्ग के पक्ष में लिखा गया यह काव्य संग्रह अपने अंदाज का एक सुंदर काव्य संकलन है। कवि एक संवेदनशील प्राणी होता है। वह खंडन-मंडन में विश्वास नहीं रखता, अपितु दिल की गहराई से किसी की हिमायत करता है, जैसे डॉ. अल्लामा इक़बाल ने स्त्री के पक्ष मे कहा था कि 'वजूदे ज़न से है कायनात (सृष्टि) में रंग व बू (सुगंध)। उसी प्रकार तलत परवीन ने पुरुष वर्ग के पक्ष में कहा है कि "मर्द (पुरुष) के वज़दू के बिना स्त्री अधूरी है और उसके सपने अधूरे हैं।"

इस वर्ष हैदराबाद में डॉ. सैय्यद फ़ाज़िल हुसैन परवीज़ के आदर्शवादी लेखों का संग्रह 'सच ही तो है' का विमोचन हुआ। इस संग्रह के निबंध मानव जीवन में सच के महत्व को उजागर करते हैं। इस वर्ष के अंत में राष्ट्रीय परिषद फ़रूग़े उर्दू ज़बान नई दिल्ली से उर्दू भाषा पर प्रो. ज्ञानचंद जैन की पुस्तक 'आम-कसानियत', सैय्यद आबिद हुसैन की पुस्तक 'ख़ौमी तह्ज़ीब का मसला' तृतीय संस्करण, लेखिका सैय्यदाह की शोधात्मक पुस्तक 'उर्दू अदब में मज़मून का इरतख़ा', रशीद हसन की पुस्तक 'उर्दू इमला' का पाँचवा संस्करण और ताराचंद जैन की पुस्तक 'तशिख़े तहरीक आज़ादी हिंद प्रकाशित हुई है।

समग्र रूप से सन् 2019 का उर्दू साहित्य सतत विकास की ओर अग्रसर है। उर्दू साहित्य की सभी विधाएँ सक्रिय हैं। मीडिया एवं पुस्तक-मेलों के कारण उर्दू का परचम प्रतिवर्ष विश्वभर में फ़हरा रहा है। यह हम भारतवासियों के लिए गर्व का विषय है।

इस कथन में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि सन् 2019 में प्रकाशित उर्दू गद्य-पद्य की प्रत्येक रचना समकालीन चिंता एवं चेतना से परिपूर्ण भी है। अपनी साहित्यिक गतिविधियों द्वारा उर्दू साहित्य ने यह सिद्ध किया है कि भाषा का कोई धर्म नहीं होता। प्रत्येक भाषा का प्रयोग मानव हित एवं कल्याण की भावना से किया जाता है। साहित्यकार कभी अधर्मी नहीं होता। जब किसी रचना या कृति से किसी व्यक्ति या समाज को ठेस पहुँचती है तो वह रचना या कृति साहित्य से बहिष्कृत की जाती है। पीड़ा के गर्भ से साहित्य का जन्म हुआ है, अत: साहित्य में सदैव हित की भावना निहित होती है।

– 'बैतुल हाशमी' मकान नं. 152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक-580031

❑❑❑

4

कन्नड साहित्य

डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

भूमिका

2019 में प्रकाशित कन्नड कृतियाँ वैविध्यपूर्ण हैं। कुछ कृतियाँ तो मन में घर कर लेती हैं। इस प्रकार कृतियाँ पाठकों की जानकारी को विस्तार देती हैं। चार सौ से अधिक साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, साहित्येतर कृतियों की भी कमी नहीं। पाठकों की संख्या भी बढ़ रही है। साहित्यकार लक्ष्मीश तोलपाड़ी कहते हैं 'कि कभी-कभी निबंध, व्याख्यान, चिंतन लहरी संबंधी कृतियाँ भी सृजनशील बन जाती हैं।'

2019 में कन्नड साहित्यकार विशिष्ट प्रशस्ति/पुरस्कारों से नवाजे गए। इनमें उल्लेखनीय है साहित्य अकादमी से कन्नड साहित्यकार श्रीमती विजयम्मा को उनकी आत्मकथात्मक कृति 'कुदिएसरु' (उबलते दाल का पानी) के लिए 2019 का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

2019 में 'नृपतुंग' प्रशस्ति से कन्नड के प्रसिद्ध कवि श्री चेन्नवीर कणवि जी पुरस्कृत हुए ।

2019 का कुवेंपु भाषा भारती से गौरव प्रशस्ति चार विद्वानों को प्राप्त हुआ है। वे हैं श्री एस. आर. रामस्वामी, श्री प्रधान गुरुदत्त, श्री भालचंद्र जयशेट्टी और श्री आर. लक्ष्मीनारायण।

कन्नड साहित्य परिषद से 2019 की 'श्री विजय प्रशस्ति' डॉ. अप्पगेरे सोमशेखर तथा डॉ. मार्तंडप्पा कत्ति जी को प्रदान की गई।

कर्नाटक साहित्य अकादमी की 2018 और 2019 की गौरव प्रशस्ति पाँच साहित्यकारों को मिला , जिनके नाम हैं – उषा पी. रै, बाबू कृष्णमूर्ति, प्रो. के.जो. नागराजप्पा, प्रो. लक्ष्मण तेलगावि और वीरण्णा राजूर।

कविता

'हुलिय नेत्तिगे नेरळु' (बाघ के सिर पर छाया) कविता संकलन नदीम सनदी ने रचा है। इसमें लेखक युवा वर्ग की जिम्मेदारी को स्मरण करते हैं। यहाँ की कविताएँ युवा पीढ़ी के प्रश्नों के लिए उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करती हैं। हर कविता में कवि ने जो रूपक बाँधा है वह मनोज्ञ है। कवि का आशय है कि क्रांति के पंछी के लिए पर बाँधने का काम करना है। सामाजिक व्यवस्था में जो जड़ता आ गई है उसके विरुद्ध बोलना है, प्रतिरोध करना है और सतर्क रहना है।

'गग्गरी नुडिसुव बेरळु' (गग्गरी वाद्य बजाने वाली उंगली) यहाँ श्री पी. अरडी मल्लय्या जी ने म्यासबेड तलसमुदाय के लिए लोगों की सैकड़ों उंगलियों की बजाए नाद को कविता के द्वारा तार-तार खोलकर रखा है। यह एक रूपक है। मनुष्य समाज और पारिवारिक जीवन की मानसिक हिंसा, तनाव और शांति की अभिव्यक्ति इस रूपक में है। कवि अरडी मल्लय्या जी ने नई पीढ़ी के काव्य पथ पर स्वास्थ्यपूर्ण कदम रखा है।

'नेलद हुण्णु' (धरती का घाव) श्री बी.एम. प्रवीण का काव्य संकलन है। इसमें हमारे आस-पास के जीवन की वास्तविक स्थिति को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया गया है। मनुकुल का संकट दूर होते धरती का घाव भर जाता है, यह आशय कवि ने पद्यों में बुना है।

'धरणी' (क्षणिकाएँ) डॉ. धरणीदेवी मालगत्ति द्वारा रचित लघु कविताओं का संग्रह है। यह जीवन की वास्तविक बातों को प्रस्तुत करने वाली कविताओं से युक्त है। 'रजसूतक'

को मैल के रूप में बिंबित करना, शास्त्र-संप्रदाय, जाति-निंदा, स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव आदि के विरुद्ध आवाज़ उठाना अपराध के रूप में देखा जाता है। लेखिका ने इन बातों के अनुभव को अभिव्यक्ति देने का प्रयास कविताओं में किया है।

'मानवरागुव' (मानव बने) श्री होरेयाल दोरेस्वामी का कविता संकलन है। मानवीयता रहित इस समाज में कवि मानव बनने का संदेश दे रहे हैं। मूल्यहीन होते समाज को देख कवि प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। 'सीमोल्लंघन' कविता में जड़ मन को वास्तविकता का परिचय कराके 'अपने ही नियम में जिओ' का संदेश है। इसमें 50 कविताएँ वर्तमान के कलंक को दिखाते हुए प्रीति-प्रेम, प्रकृति, अध्यात्म, पर्यावरण आदि की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षिती करते हैं।

'कथामाला' प्रो. ए. वी. नावड जी द्वारा संपादित फर्डिनेंड किटल जी की अप्रकाशित कृति 'क्रिस्तकथन काव्य' है। यह बाइबिल कथासूत्र का उपयोग कर रचा गया स्वतंत्र काव्य है। ईसामसीह के चारों ओर बुनी कथाओं का सार है यह काव्य। यह आधुनिक कन्नड का प्रथम खंडकाव्य है। इसमें ईसा के जन्म से लेकर दिवारोहण तक की कथा काव्य रूप में प्रकाशित है। इसमें कुल 453 अंतर भाग हैं और 206 भामिनी षट्पदि, 73 वार्धक षट्पदि और 174 पूर्व राग, मट्ट ताल में रचित कीर्तन रूप में हैं। किटल का नाम लेते ही याद आता है उनका 'कन्नड़ इंग्लिश' निघंटु (जो किटल डिक्सनरी नाम से प्रसिद्ध है)। वे व्याकरणकार, साहित्य इतिहासकार और भारतीय मनीषा के महान् चिंतक थे।

'कणसु कवणेतिरि' (सपना गोफन का घूमना) प्रो. एस. जी. सिद्धरामय्या का अद्यतन कविता संकलन है। प्रो. एस. जी. सिद्धरामय्या जी लगभग चार दशकों से कन्नड काव्य के कार्य में लगे हुए हैं। उनके इस संकलन की निम्नोक्त पंक्तियाँ उनके काव्य के अनुसंधान की मीमांसा को स्पष्ट करती हैं। अनदेखा को अंतर्गत करना काव्य 'दर्शन' की विशेषता है।

गाढ़ांधकार में डूबी नीरव आधीरात
नींद जो नहीं आई उसे यादें घेर रही हैं
.....
कहाँ से कहाँ का संबंध ?
कालतंतु में जो दिखा मात्र
कँटिया हो तो अनदेखा ?
संगत जो है आँख का ग्रास
असंगत जो है माटी का बोना

('आधीरात की यादें' कविता से)

'जलता बाती तैल' इस कवि की बार-बार प्रयुक्त प्रतिमा है। वचन, तत्वपद, लोकसाहित्य का महाकाव्य के साथ कवि के अविनाभाव संबंध अनेक कविताओं में दर्शित हैं। इस मिट्टी के अंत:सत्व की मशाल को हमारी हथेली में रखने का काम इसमें कविताएँ करती हैं।

'ग्राफिटिय हूवु' (ग्राफिट का फूल) आकर्ष रमेश कमल का कविता संकलन है। भाव के लिए हानि न हो ऐसी कविता रचने की शैली महत्व की है। इन कविताओं में कवि आकर्ष रमेश जी विदेशों में आपको जो अनुभव हुआ, बस में, आफिस में, होटल में इस प्रकार विविध स्थानों में उनकी जुगाली करने बैठेंगे तो कविताएँ आप ही आप सृजित होती हैं।

'जीवन्मुखि' संगमेश बादवाडगि का कविता संग्रह है। इसमें ग्रामीण जीवन, प्रकृति, प्रेम आदि की अनुभव राशि कवि ने पाठकों के सामने पेश की है।

कवि का कहना है –

तूफान के लिए जितना भी प्रकोप हो
डरे बिना जलना पड़ता है नंदादीप को।
गरीबों की दयनीय स्थिति पर कहते हैं –
धनी खूब खाकर डकारते हैं
भूखे को एक कौर अन्न देने वाले भी नहीं।

संग्रह की 60 कविताएँ पाठकों को आकर्षित करती हैं।

'सोत कण्णुगळनु मिटकिसुव मध्याह्न' (थकी-हारी आँखें मिचकाने का दोपहर) श्री एस. दिवाकर की कविताओं का संकलन है। सामान्यत: कहा जाता है कि 'काव्य में दर्द को भुलाने का गुण है'। परंतु उसमें दर्द, संकट, उत्कंठा, परेशानी आदि की भावाभिव्यक्ति का माध्यम भी है। श्री दिवाकर जी ने इस संकलन में ऐसे ही रोमांचक चित्र खींचे हैं। यहाँ की कविताएँ सार्वकालिक, सार्वदेशिक और हमारे अंदर की प्रज्ञा के लिए मशाल हैं। अद्यतन वस्तुस्थिति और प्रासंगिकता इन कविताओं में है।

नाटक

'चूडामणि' श्रीमती आशा रघु द्वारा रचित नाटक है। रामायण में प्रेम का नया भाष्य रचा गया था। लेखिका ने कहा है कि रामायण केवल शोक कथा नहीं, प्रेम कथा भी उसमें है। यह बात 'चूडामणि' नाटक देखने पर सच निकली। वाल्मीकि आश्रम में कस्तूरी अपनी यादों का संबल खोलती है और उस प्रेम का प्रतिरूप चूडामणि द्वारा नाटक का आशय स्पष्ट होता है। दांपत्य के द्योतक के रूप में जो चूडामणि है, उसके द्वारा कुटीर और अयोध्या नामक दो प्रतिमाओं (बिंबों) द्वारा समाज का भिन्न संदर्भ जो निरूपित हुआ है वह नाटक की शक्ति है।

'अश्वगंधि' नाटक में सम्राट नृपतुंग के मरने पर राष्ट्रकूट साम्राज्य में घटित हुआ हो ऐसी-ऐसी बातों का चित्रण हुआ है। नाटककार हैं श्री सुचेतन स्वरूप। अश्वगंधि कुतूहलकारी पात्र है। वह शोषित स्त्रियों के प्रतिनिधि के रूप में है। नृपतुंग नामक बिंब के द्वारा प्रस्तुत राजकीय षड्यंत्र, दीनों का दर्द, वैसे ही अधिकार के लिए झगड़ा आदि का मनोज्ञ चित्रण हुआ है। यहाँ इतिहास सिर्फ बहाना है, चर्चित विषय, घटनाएँ वर्तमान का प्रतिबिंब हैं।

'आरु नाटकगळु' (छह नाटक) लेखक हैं डॉ. चंद्रु कालेनहल्ली। नाटककार ने इन नाटकों को लोककथा, पौराणिक और समकालीन वस्तुओं को आधार बनाकर रचा है। ये नाटक कई बार मंचित हुए हैं। 'माया किन्नरी' लोक कथा पर आधारित होकर, इसमें मनुष्य की संवेदना का अर्थपूर्ण चित्रण हुआ है। तीन पीढ़ी की कथा का 'कलिवीर जुंजप्पा' नाटक में चित्रित है। महाभारत की यदुवंश की विनाश की कथा का 'एल्लि मोहन मुरळि' नाटक में वर्णन बहुत दिलचस्प है।

कहानी

'उमाराव कथेगळु' श्रीमती उमाराव की कहानियों का संकलन है। इसमें 54 छोटी कहानियाँ हैं। अधिकतर कहानियों में नगर प्रज्ञा उभरने पर भी नगर और नागरिकता के जीवन का सूक्ष्म चित्र खींचा गया है। यहाँ की कहानियों में महिला अस्तित्ववादी अभिव्यक्ति को गति देने का प्रयास है। संकलन की 'अगस्त्य' कहानी तो बार-बार पढ़ने के लिए उकसाती है और पाठक को चिंतन करने की प्रेरणा देती है।

'यड्रामि सीमे कथनगळु' (यड्रामि सीमा कथन) कथाओं का गुच्छ है। कथाकार हैं मल्लिकार्जुन कडकोल। इसके मैदानी प्रदेश के लोगों की ज़िंदगी, दुख-दर्द के साररूपी निदर्शन के रुप में हैं यहाँ की कहानियाँ। व्यवस्था की क्रूरता, परिवर्तित समय-सन्निवेश में व्यक्तियों का व्यवहार, असहन, सहजीवियों के साथ रहने में दिक्कतें आदि का सूक्ष्म चित्रण पाठकों को सोचने पर मज़बूर कर देता है।

'शालेगे बंद चिरते मत्तु इतर कथेगळु' (शाला में आया चीता और अन्य कहानियाँ) वन्यजीवी कार्यकर्ता संजय गुब्बी की रचना है। ऐसा प्रतीत होता है वन्यलोक के बारे में कुतूहल रखने वालों को बिठाकर लिखा हो। वास्तव में यह लेखक का अनुभव है। 'इब्बनिय हुलि' (कुहरे में बाघ) वन्यमृगों के साथ सामना होने से संबंधित अनुभव-कथन है। 'शालेगे बंद चिरते' (शाला में आया चीता) एक थ्रिलर कथा जैसी है। बेंगलूरू में 2016 को एक शाला में चीता घुसा था। उसे पकड़ने गए लेखक संजय गुब्बी पर चीता टूट पड़ा था। यही घटना कहानी की कथा वस्तु बन गई। गहन विषय को भी सरल रूप में कहानी के समान बताया जा सकता है इसके लिए यह कृति एक मिसाल है।

'गुडी मत्तु बंडे' (देवालय और चट्टान) के रचयिता गुरुराज सनिल जी हैं। सनिल जी उरग (साँप) विज्ञानी के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनमें पर्यावरण और वन्यजीवों पर अतिशय दिलचस्पी है। यहाँ पर्यावरण संबंधी अपने अनुभवों को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गुडी मत्तु बंडे (देवालय और चट्टान) में पर्यावरण नाश और देवालय नवीकरण पर सृजित कहानी है। 'अवसान', 'सिनेमा' आदि कहानियाँ मनोवैज्ञानिक स्तर पर होकर पाठक को चिंतन के लिए मजबूर करती हैं। इनमें प्रकृति प्रेम की अभिव्यक्ति मनोज्ञ है।

'देव्र मगळु मत्तु इतर कथेगळु' (देवता की पुत्री और अन्य कहानियाँ) यह अकबर सी. कालिमिर्ची की वैविध्यपूर्ण कथावस्तु से युक्त 15 कहानियों का संकलन है। 'देव्र मगळु' कहानी देवदासी प्रथा पर आधारित है। इसमें देवदासियों के बच्चों की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्र खींचा गया है। यहाँ की कथाओं में दैवी आवाह्न के दृश्यों का तार-तार खोलकर रखा गया है।

'राजा कडेगू मदुवेयागिएबिट्ट!' (राजा ने आखिर शादी कर ही ली) यह श्री नारायण बल्लाल द्वारा रचित 16 कथाओं का संकलन है। इसमें दी कहानियाँ समाज के द्वंद्व के लिए दिखाया गया आइना हैं। समाज के समान व्यक्तिगत मन:स्थिति में भी उतार-चढ़ाव है। इनको न मानकर शुद्धि-अशुद्धि की परिकल्पना करते हैं। ऐसे विरोधाभासों पर चर्चा इन 16 कहानियों में हुई हैं। यहाँ की ऐतिहासिक, सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक क्षेत्रों से संबंधित कहानियाँ इन विरोधाभासों को छेड़ती हैं।

'एल्ला मीनुगळु गाळक्के सिक्कुवुदिल्ल' (सभी मछलियाँ जाल में नहीं फँसतीं), यह चलं हाड्लहल्ली का कथा संकलन है। इसमें बारह कथाएँ हैं। हर कहानी एक-दूसरे से भिन्न हैं। कथावस्तु भी चकित करने वाली है। ग्रामीण और नगर जीवन के अंतर से उत्पन्न संघर्ष, स्त्री-पुरुष संबंध, प्रकृति में घटने वाले व्यवहार यहाँ की कथाओं का सार है। अंतिम कहानी 'सभी मछलियाँ जाल में नहीं फँसतीं' पाठकों को अधिक सताती है।

उपन्यास

'कामन हुण्णिमे' (होली त्योहार) नटराज हुलियार जी का उपन्यास है। अपने जीवन में देखे जीवित व्यक्तियों को उपन्यास में पात्र बनाना आसान काम नहीं। इनके लेखन में कुशलता है। ग्राम्य जीवन के सौंदर्य, प्रेम, धीर, स्त्री पात्र, प्रेम काम के विवरण और समग्र गाँव को एक समुदाय

के रूप में चित्रित करने की रीति आकर्षित करती है। मानवीयता उपन्यास में अंतर प्रवाह के रूप में निःसृत हुई है।

'बोळ्ळूणकय्य' (संतुलित) सोमशेखर जी का उपन्यास है। यह भाव-जीव-संगम है। 'अच्छा देखना हो तो गाँव जाओ' कहा जाता था। परंतु आज गाँव और नगर में अंतर ही नहीं। इसमें संबंध टूट जाने से व्यक्ति जिस प्रकार खिन्न होता है इसका मनोज्ञ वर्णन लेखक सोमशेखर जी ने किया है। अनुभव की गाढ़ता और लेखन में वैविध्य इस उपन्यास की विशेषता है।

'हणादि' (बैलगाड़ी का रास्ता) 2019 अगस्त में प्रकाशित एक युवा उपन्यासकार कपिल पी. हुमनाबाद का पहला उपन्यास है। गाँव और नगर की जब सीमारेखा ही मिट रही है, नगर की व्याकुलता और गाँव के बारे में सपना दोनों अवास्तव की तरह लगता है। इस विरोधाभास को रूपकात्मक रीति से उपन्यास में रखा है। 'हणादि' का अर्थ है खेत में बैलगाड़ी में जाने का रास्ता। कथानायक जब अपने गाँव के रास्ते को मुड़कर देखता है तब जो दर्दभरा बिंब दिखता है, उससे आज के गाँव का स्वरूप भिन्न नहीं है। यह ध्वनित करता है उपन्यास।

'उमेदुवाररु' डॉ. लोहित नायकर का लिखा एक राजकीय उपन्यास है जिसमें वर्तमान राजकारण के सभी पहलुओं का पर्दाफाश करने का कार्य किया गया है। हैदराबाद कर्नाटक और दक्षिण कर्नाटक नामक दो राजकीय परिवारों के बीच की खींचातानी, साथ ही मध्य कर्नाटक में धन और शराब के साथ जाति व्यवस्था कैसे राजकीय खेल का पासा बनती है इसका रोचक चित्रण उपन्यासकार ने किया है।

'पुनर्वसु' श्री गजानन शर्मा का उपन्यास है। इस उपन्यास का कथानक शरावती विद्युत योजना के लिए सर. एम. विश्वेश्वरय्या जी के जोग में आना और योजना के लिए समीक्षा करने का आदेश देने से प्रारंभ होता है। और लिंगनमक्कि बाँध में जल-संग्रह शुरू होते ही उपन्यास का अंत होता है। जोग प्रपात के इतिहास के साथ उसके आस-पास के गाँवों का डूब जाने और उस समय के दुख-दर्द का वर्णन उपन्यास में चित्रित है।

'अस्मिते' प्रसिद्ध उपन्यासकार साईसुते का उपन्यास है। यह उनका 150 वाँ उपन्यास है। इसमें दांपत्य जीवन की कई परेशानियाँ चित्रित हैं। "भारत है, अद्भुत संस्कृति है, हमारे पूर्वजों के जड़मूल हैं।" यह कहकर बैंकॉक से निकलता है यहाँ का प्रधान पात्र चिदानंद। इस प्रकार पत्नी के साथ भारत की मिट्टी पर पाँव रखते ही उपन्यास का अनावरण होता है। इसमें पढ़ने की खुशी ही उपन्यास की शक्ति है।

'प्रिये चारुशीले' श्री नागराज वस्तारे का दूसरा उपन्यास है। लेखक स्वयं कहते हैं कि मेरे लिए कथन मुख्य नहीं, भाषा की संभवनीयता को शोधने के लिए कथन एक बहाना मात्र है। परंतु इस औपन्यासिक कृति में कथन का प्राण और भाषा का स्थान दोनों मुख्य है। इसमें दो दिन में घटने वाली कथा है। ऐल और मातंगी पुरी के सागर तट पर मिलते हैं। प्रेम-काम, स्त्री-पुरुष संबंध के मनोलोक का निरूपण मनोज्ञ है।

जीवनी

'भारतरत्न सचिन तेंदुलकर' श्री चन्नगिरि केशवमूर्ति (पत्रिका के शीर्ष लेखक) का लिखा सचिन तेंदुलकर जी के जीवन परिचय को लेकर कन्नड में यह पहला ग्रंथ है। लेखक ने स्वयं क्रिकेट प्रिय होकर क्रिकेट संबंधी कई पुस्तकें लिखी हैं। इस कृति के लिए तेंदुलकर जी ने ही भूमिका लिखी है। 32 अध्यायों में तेंदुलकर जी के जीवन का समग्र चित्र कलात्मक ढंग से बुना गया है।

'रा. शी (एम. शिवराम)' श्री जे. श्रीनिवासमूर्ति जी द्वारा रचित साहित्यकार शिवराम जी के जीवन और साधना की परिचयात्मक कृति है। यह केंद्र साहित्य अकादमी, दिल्ली से 'भारतीय साहित्य निर्माता' मालिका के तहत प्रकाशित है। रा. शि. नाम से कन्नड के प्रसिद्ध साहित्यकार वृत्ति से वैद्य थे। उनकी 'मनोनंदन' और 'मनोमंथन' कृतियाँ उल्लेखनीय हैं।

'अनंत ताननंतवागी सागिहोद कर्मयोगी'(अनंत आप अनंत होकर चल पड़े कर्मयोगी) कृति पूर्व केंद्र मंत्री दि. अनंत कुमार जी की जीवनयात्रा का सार संग्रह है। अनंत कुमार जी के जीवन की पृष्ठभूमि, संघर्ष का पथ, राजनीति का जीवन और उनके समाजमुखी कार्य पर भी इस कृति में प्रकाश डाला गया है। इस कृति के लेखक हैं श्री यशवंत सरदेशपांडे।

'शांतवेरि गोपाल गौडा' नई पीढ़ी के लोगों के लिए परिचय कराने वाली यह पुस्तक 'नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया' नई दिल्ली से प्रकाशित है। इसके लेखक हैं नटराज हुलियार। शिवमोग्गा (कर्नाटक) में जन्में गोपाल गौडा जी राज्य राजनीति के लिए समाजवादी दिशा दिखाने के लिए राजनीति में उतरे और आप तीन बार विधान मंडल के सदस्य हुए। ग्यारह अध्यायों की इस कृति में शांतवेरि जी का समग्र चित्र खींचने का अभिनंदनीय कार्य किया गया है।

कोश

'प्राकृत-कन्नड बृहत् निघंटु' डॉ. आर. लक्ष्मीनारायण

का प्रमुख परामर्श ग्रंथ है। कुवेंपु भाषा भारती ने प्राकृत भाषा के इस कोश को कन्नड में प्रकाशित किया है। संस्कृत से भी प्राचीन प्राकृत का कन्नड पर अधिक प्रभाव पड़ा है। कन्नड में तद्भव कहे जाने वाले बहुत-से शब्द प्राकृत से सीधा आए हैं। लक्ष्मीनारायण जी ने देवनागरी लिपि में जो प्राकृत और उसके संस्कृत रूप के 40,000 मूल पद और 20,000 निष्पन्न पदों को (कुल 60,000 पद) कन्नड में लिप्यंतरण कर उसके अर्थ भी कन्नड में दिए हैं। अपार श्रम से यह काम हुआ है। इस विशिष्ट कोश कार्य के लिए श्री लक्ष्मीनारायण अभिनंदनीय हैं।

संपादन

'नुडि-बेडगु' (वाणी का विलास) कृति कन्नड समालोचना साहित्य की विशिष्ट प्रतिभा की. रं. नागराज की रचना - समालोचना संसार को परिचित कराने वाली है। इसके संपादक हैं डॉ. शिवराज ब्याड रहल्ली। की. रं. नागराज के दिवंगत होने के दस वर्ष बाद इस संस्मरणात्मक कृति का संपादन हुआ है। इस कृति के माध्यम से रं. नागराज के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझने में उपयोगी है।

'अत्युत्तम सण्ण कथेगळु' (अत्युत्तम छोटी कहानियाँ) संपादन के. नरसिंहमूर्ति जी के संपादित और कन्नड साहित्य परिषद्, बेंगलूरू से प्रकाशित कृति है। इसमें बसवराज कट्टिमनी, चदुरंग, अनुपम, एल. एस. शेषगिरिराव और सदाशिव की कहानियाँ पुन: पाठकों को उपलब्ध हो रही हैं।

'गौरी लंकेश कंडहागे' (गौरी लंकेश जैसे दिखती है) कृति की संपादिका हैं डॉ. एम. एस. आशादेवी। इसमें 40 लेख हैं। ये लेख पाठकों को चिंतन-मंथन के लिए प्रेरित करते हैं। गौरी लंकेश सामाजिक कार्यकर्ता थीं। दमितों की ध्वनि थीं और अप्रिय सत्य बताने वाली थीं।

'बाहुबलि चरित्रे मत्तु संदेश' (बाहुबलि इतिहास और संदेश) कृति के संपादक हैं डॉ. अप्पण्णा एन. हंजे और डॉ. संजय एन. हंजे। जैनों के शिलालेख, साहित्य, संस्कृति, आचरण के बारे में शोधकार्य में लगे हुए डॉ. हंजे भाइयों ने अब तक जैन धर्म और संस्कृति पर कई ग्रंथों का संपादन किया है। इस कृति में चुने हुए 20 लेख संपादित हैं, उनमें बाहुबलि चरिते, संदेश और महामस्तकाभिषेक, आदि पर विद्वानों के शोधाध्ययन लेखों का संपादन हुआ है। यह शोधकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ के रूप में उपयोगी है।

अभिनंदन ग्रंथ

'मोगसाले एप्पतैदर होत्तिगे' (मोगसाले पचहत्तरवाँ ग्रंथ) मोगसाले जी का अभिनंदन ग्रंथ है। यह कन्नड के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. ना मोगसाले जी के पचहत्तरवें जन्मदिन पर उनके घनिष्ठ मित्रों एवं 'मोगसाले अभिनंदन समिति' द्वारा प्रकाशित आलेखों का संग्रह है। यह चार भागों में है। पहले भाग में मोगसाले जी पर अभिनंदन लेख हैं। दूसरे में संघ-संगम, साहित्य-विहार के कार्यक्रमों का प्रतिवेदन है। तीसरे भाग में और चौथे भाग के परिशिष्ट में कविताओं और मोगसाले जी के जीवन का विवरण संगृहीत है। इसमें मोगसाले जी के उपन्यासों पर भी आलेख सम्मिलित हैं।

संस्मरण ग्रंथ

'डॉ. गिरड्डी गौविंदराज : व्यक्ति-वाङ्मय' शीर्षक का संस्मरण ग्रंथ संपादन श्री टी. एस. दक्षिणामूर्ति तथा महेश तिप्पशेट्टी ने किया है। कन्नड सारस्वत लोक के कवि, कहानीकार, प्राध्यापक और समालोचक के रूप में प्रसिद्ध गिरड्डी गोविंदराज जी के दिवंगत होने के एक साल बाद उनके स्मरण में यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ है। इसमें गिरड्डी का जीवन, वाङ्मय, साक्षात्कार, श्रद्धांजलि, चित्रभाग आदि पाँच भाग में हैं।

निबंध

'प्राकृत-कन्नड परंपरे मत्तु प्रभाव' (प्राकृत-कन्नड परंपरा और प्रभाव) डॉ. एस.पी. पद्यप्रसाद जी द्वारा संपादित विचार गोष्ठी के निबंधों का संग्रह है। यह प्रसारांग कन्नड विश्वविद्यालय हंपी (कर्नाटक) से प्रकाशित है। यह कन्नड और प्राकृत भाषाओं का योगदान है तथा उनके बीच की अंत:संबंध निरूपक कृति है। इसमें छह गोष्ठियों में प्रस्तुत विद्वानों के 19 निबंध हैं। यह शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी ग्रंथ है।

'करण-कारण-5' श्री जयदेवप्पा जैनकेरी जी द्वारा संपादित 12 व्याख्यानों का निबंध रूप में संग्रह है। यह अल्लमपीठ, कांतावर (कर्नाटक) से प्रकाशित है। इसमें 'अनुभव का पथ-अनुभव की वाणी' शीर्षक व्याख्यान शृंखला में जो 2016 में सालभर व्याख्यान हुए उनका पुस्तक रूप है। वचन आंदोलन, स्वरूप-ज्ञान, अल्लम के अनुभव, अल्लम और कबीर (लेखक : डॉ. प्रभाशंकर 'प्रेमी') आदि विषयों पर निबंध उल्लेखनीय हैं।

'हित साहित्य' श्री अजक्कल गिरीश भट्ट के भाषा साहित्य और कला संबंधी निबंधों का गुच्छ है। इसमें पंद्रह निबंध हैं। 'कन्नड जागृति : नए सवाल' विषय पर विस्तृत चर्चा हुई है। कन्नड के विकास के लिए कन्नड भाषियों की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाला गया है।

'मूरने कण्णु' (तीसरी आँख) श्री चिदानंद साली के 12 निबंध जो कथन के कैयानवास पर सृजित भिन्न चित्रों जैसे हैं। चिदानंद साली जी कविता, कहानी, नाटक और

अनुवाद क्षेत्र में कार्य कर रहे प्रसिद्ध कन्नड लेखक हैं। 'बस्सिनोळगे दृश्य वैभव' (बस में दृश्य वैभव), 'मींगुलिगन ईसिन कनसु' (मछुवारे के तैरने के सपने), 'जाति नामक सूतक' आदि अत्यंत रोचक और उत्साहपूर्ण निबंध हैं।

'कन्नड कथनगळु' श्री पुरुषोत्तम बिलिमल्ले जी का निबंध संग्रह है। यह कन्नड भाषा के बारे में रची विशिष्ट कृति है। 'भारतव्यापी कथन' के द्वारा कन्नड कथन के स्वरूप का, शोधपरक अध्ययन का इस कृति में कथा के अंदर, कथा बुनते, रूपित करने वाला, कथन क्रम कुतूहलकारी है। यह कन्नड साहित्य की गरिमा बढ़ाते आगे बढ़ने उत्साह पैदा करने वाली कृति है।

गद्य

'ग्रेता थनबर्ग' मूक पृथ्वी के लिए ध्वनि देने वाली किशोरी ग्रेता थनबर्ग का कन्नड पाठकों को परिचय कराते हैं श्री नागेश हेगड़े। पंद्रह साल की लड़की अकेली धरने पर बैठी है। उसके धरने के समर्थन में 130 राष्ट्रों के किशोर सड़कों पर आ गए। ग्रेता ब्रिटेन और फ्रांस संसद में बोली। संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण दिया। नोबल पुरस्कार के लिए भी नामांकित हुई। आज विश्व में प्यास बढ़ रही है। शायद प्रकृति में भी उस प्यास को बुझाने की शक्ति नहीं। एक ओर प्रवाह, दूसरी ओर प्यास! जिए तो कैसे! अब ग्रेता भूमाता के मुँह की बात बोलती है। पृथ्वी ही उसका अपना घर है। भू को संकट आए तो हम सबको सकंट आने के समान है। ''हम सबका कल एक ही है। हम एक हो तो भूमि जीवित रह सकती है।'' यह ग्रेता की बोली है। ग्रेता अमेरीका के मूल निवासी की बेटी है!

शोधपरक

'अंबेडकर महामानवन महायान' डॉ. सी. चंद्रप्पा द्वारा रचित उद्ग्रंथ है। इसमें 35 अध्याय हैं। अंबेडकर जी को समझने के लिए आवश्यक समग्र जानकारी से युक्त गंभीर अध्ययन से निकला यह शोधपरक ग्रंथ है। जीवनयात्रा की हर घटना का उल्लेख कालानुक्रम में निरूपित किया गया है। संदर्भोचित चित्रों से कृति का मूल्य बढ़ा है। सरल भाषा में आकर्षक निरूपण से कृति पाठकों को प्रिय साहित्य है। कन्नड के लिए यह एक विशिष्ट कृति है।

'आ पूर्व ई पश्चिम' (वह पूर्व और यह पश्चिम) यह डॉ. सुचेतन स्वरूप जी का पूर्व और पश्चिम के चिंतनों का सामना होने का सार रूप है। प्राचीन काल से तत्वसाहित्य, संस्कृति और सभ्यता की वैश्विक स्तर पर बहुत बड़ी परंपरा वाले भारत के चिंतन का सही अध्ययन न करके पाश्चात्यों का अंधानुकरण करने में लगे रहने की स्थिति को लेखक उजागर करते हैं। पाश्चात्यों की विचारधारा में जो स्वास्थ्यपूर्ण है उसको स्वीकारना चाहिए। इसी आशय को लेकर चिंतन और शोधकार्य करना लेखक की दृष्टि से श्रेयस्कर है।

'सेक्यूलर सेनानी सुभाषचंद्र बोस' के लेखक हैं श्री बी. एम. हनीफ। इसमें लेखक ने देशप्रेमी सुभाषचंद्र बोस की राष्ट्रीयता और सर्वधर्म समभाव संबंधी विचारों को विस्तार दिया है। इसमें 9 अध्याय हैं। इसमें गांधी और बोस के बीच के संबंध की भी चर्चा हुई है।

'गांधी कथन' श्री डी. एस. नागभूषण जी का गांधी जी के 150 वें जन्मदिन के विश्वाद्यंत आचरण के संदर्भ में रचा गया यह गांधी जी के समग्र जीवनमूल्यको पुनर्निरूपित करने वाला 700 पृष्ठों का उद्ग्रंथ है। इस उद्ग्रंथ की रचना के पीछे 38 से अधिक पुस्तकों के अध्ययन का फल है। यह 93 अध्यायों में है। अतः यह बृहत् कृति भी है और महत्कृति भी।

'लंडन डायरी' श्री योगिंद्र मरवंते जी के प्रजावाणी आदि कर्नाटक की पत्रिकाओं के लेखों का संकलन है। योगिंद्र जी का जन्म कर्नाटक के करावली प्रदेश में हुआ और अब वे लंदन में बस गए हैं। इसमें इंग्लैंड प्रजातंत्र की प्रशंसा और भारत के प्रजातंत्र के साथ समीकरण का प्रयास भी है।

'सांस्कृतिक वीर मैलारलिंग' यह क्षेत्र आधारित अध्ययन है। डॉ. चिक्कण्णा यण्णेकट्टे ने इसमें गोरवों का नृत्य, मैलार मेला, नौका-सेवा, सर्पणी पवाड (देवी चमत्कार), मैलार गोरवा और कला साधकों का विवरण देकर अध्ययन की व्याप्ति का विस्तार किया है। पुराण प्रसिद्ध मैलारलिंग के पुराण, शिलालेख, शास्त्र ग्रंथ, लोककथा आदि के आधार पर लेखक ने चित्र उपस्थित किए हैं। यह शोध ग्रंथ संग्रह योग्य है।

'शरण स्मारकगळु' डॉ. वीरण्णा दंडे और डॉ. जयश्री दंडे जी के सतत दस वर्षों के क्षेत्र कार्य और अध्ययन पर रची 12वीं शती के शरणों के स्मरणीय स्थलों पर शोधपरक कृति है। इसमें 1700 पृष्ठ है तथा यह 3 भागों में विभाजित है। पूज्य शिवरुद्र स्वामीजी, बेलीमठ, बेंगलूरू की आर्थिक सहायता से, बसव समिति, बेंगलूरू से प्रकाशित विशिष्ठ संग्रहणीय ग्रंथ है।

विश्लेषणात्मक इतिहास बोध

'स्वातंत्र्य पूर्व कर्नाटक इतिहास' श्री महादेव प्रकाश जी का उद्ग्रंथ है। श्री महादेव प्रकाश जी 'भानुवार' पत्रिका के संपादक हैं। उन्होंने 21 अध्यायों में कर्नाटक के राजकीय इतिहास की समग्र जानकारी विश्लेषणात्मक अंतरदृष्टि से रखी है। इस कृति में शातवाहन, कदंब, गंग, चालुक्य,

राष्ट्रकूट, होय्सल से लेकर देश के आजाद होने तक का लगभग 1800 वर्षों के राजशासन का इतिहास और उनके राजशासन करने की रीति की संपूर्ण जानकारी मिलती है। साथ ही इस प्रदेश की कला, साहित्य, संस्कृति के विकास का परिचय भी है। यह इतिहास के छात्रों, अध्यापकों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी कृति है।

काव्य-शोध

'बा कुवेंपु दर्शनके' यह कन्नड के प्रसिद्ध समालोचक श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य के कुवेंपु के समग्र साहित्य दर्शन करने वाले शोधपरक लेखों का ग्रंथ रूप है। यह कुवेंपु अध्ययन श्रृंखला का अगला भाग है। कुवेंपु ने प्रारंभ में अंग्रेजी में कविता लिखी। वे कविताएँ अनुकरणात्मक थीं। कुवेंपु के साहित्य के विभिन्न पहलुओं का परिचय इस कृति में मिलता है।

'अक्षरयोध रामोजी राव' कृति 'ईनाड़' पत्रिका, ई टी वी, रामोजी फिल्म इंस्टिट्यूट को विकसित करने वाले रामोजी राव की साधना पर प्रकाश डालती है। इसके लेखक हैं श्री वी. हनुमंतप्पा। इस कृति में 26 लेख हैं। रामोजी राव पर लिखे पत्रकारों के लेख भी अनूदित होकर इसमें शामिल हैं।

'परमवीररु' (परमवीर) यह कृति युद्धवीरों के साहस एवं शौर्य के बारे में है। इसमें शहीद महापराक्रमी योद्धा के बारे में लेखों का संकलन है। इसके लेखक आर. श्री. नागेश जी हैं। इसमें सैनिकों ने जो कठिन परिस्थिति का सामना किया उसका और प्रतिकूल मौसम आदि का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है।

'उसाबरि' (झंझट) पत्रकार एन. एस. शंकर इसमें समकालीन कृतियों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसमें समृहित के लेख तीन भागों में विभाजित हैं। पहले में नटराज हुलियार की 'इंति नमस्कारगळु', देवनूर महादेव की 'एदेगे बिद्द अक्षर' और यशवंत चित्ताल की 'शिकारी' कृतियों पर प्रतिक्रिया लेखक ने दी है। दूसरे भाग में समकालीन परिदृश्य पर लेखक की प्रतिक्रियाएँ हैं। शंकर जी के लेख सीधे, सरल और संक्षिप्त होते हैं।

दलित साहित्य

कन्नड में दलित साहित्य 1970-80 में विकसित हुआ। यह दलित संवेदना के पुनरुत्थान का युग है। उनके लेखन में दर्द और आक्रोश है। दलित साहित्य के विभिन्न भागों में प्रकाशन कन्नड साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. मनुबलिगार की अध्यक्षता में हुआ है। इसमें छोटी कहानियों का संकलन डॉ. सण्णराम के, काव्य डॉ. मूड्नाकूडु चिन्नस्वामी के, मानविक डॉ. अर्जुन गोलसंगी के, लोकसाहित्य प्रो. एस. टी. पोते और अनुसंधान प्रो. मल्लेपुरं जी वेंकटेश जी के संपादकत्व में संपन्न हुए हैं।

इसी सिलसिले में कर्नाटक साहित्य अकादमी की ओर से 37 पुस्तकें 18 दिसंबर, 2019 को लोकार्पित हुईं। उनमें उल्लेखनीय दलित साहित्य संबंधी कृतियाँ हैं – डॉ. गुरुप्रसाद कंटलगेरे की 'दलित सांस्कृतिक कथनगळ अध्ययन', डॉ. गंगाधर गरग की 'दलित कायक परंपरा', डॉ. रविकुमार नीह की 'दलित साहित्य मीमांसा', डॉ. शारद की 'दलित साहित्य मत्तु दलित चळुवळी' और श्रीमती जी. नागमणि की 'दलित महिला चळवळिय अध्ययन'।

'गांधी' श्री अरविंद चोक्काडी द्वारा रचित 79 लेखों का संग्रह है। यह गांधी जी के 150वें जन्मदिन के संदर्भ की कृति है। अरविंद जी महात्मा जी पर भावुक होकर भी लिख सकते हैं और तार्किक रूप में भी। जितना भी पढ़े न समाप्त होने वाले गांधी जी के जीवन मार्ग और चिंतन का कोलाज है यह कृति। लेख छोट-छोटे हैं। परंतु हर लेख चिंतन के लिए प्रेरित करता है। गांधी जी की हास्य प्रज्ञा पर अंतिम लेख है। इस लेख का अंतिम वाक्य है ''अपने आप पर हास्य आरोपित करने वाले व्यक्ति के आत्मस्थैर्य को कोई भी छीन नहीं सकता।''

'लंकेश : मोहक रूपकगळ नडुवे' (लंकेश : मोहक रूपकों के बीच) यह लंकेश जी के अत्यंत निकटवर्ती श्रीनिवास जी का ग्रंथ है। कन्नड के दो-तीन-पीढ़ी के साहित्य मन को तीव्र रूप में प्रभावित करने वाले लेखकों में लंकेश जी का महत्वपूर्ण स्थान है। लेखक की स्मरण शक्ति अगाध है। समकालीन लेखकों के साथ लंकेश जी का संबंध, लंकेश जी का जीवन और असंख्या घटनाओं का स्मरण और टिप्पणियाँ इस कृति को पाठक के लिए महत्वपूर्ण बनाती है। लंकेश जी को समझना आसान नहीं। यहाँ लंकेश जी को समझने-समझाने की कार्यशैली विशिष्ट है।

'की. रं. नागराज पर चार कृतियाँ 2019 नवंबर में लोकार्पित हुई। की. रं. नागराज कन्नड के बहुचर्चित लेखक और समालोचक थे। उनकी शिष्य परंपरा बढ़ी है। आप खुद लिखते कम थे, परंतु बड़े-बड़े लेखकों को तैयार करते थे। शूद्र श्रीनिवास जी का 'की. रं. कट्टिकोट्ट मनोलोक'(की. रं. से प्रदत्त मनोलोक), डॉ. टी. वेंकटेशमूर्ति जी का 'याजमान्य संकथन', डॉ. शिवराज ब्याडरल्लि का 'नुडि-बेडगु' (बानी का विस्मय) और डॉ. जयशंकर हलगुरु का 'की. रं. होस कवितेगळु-2019' (की. रं. की नव कविताएँ-2019) उल्लेखनीय और शोधोपयोगी कृतियाँ हैं।

अनुवाद

'श्री महाभारत' प्रो. एल.एस. शेषगिरिराव से अंग्रेजी में रचित है। इसका कन्नड रूपांतर श्री जी. एन. रंगनाथराव जी ने किया है।

'लूषन अवर आय्द 10 चीनी कथेगळु' (लूषा की चुनी हुई 10 चीनी कहानियाँ) लूषन की चुनी हुई 10 चीनी कहानियों का कन्नड अनुवाद डॉ. विजया सुब्बराज ने किया है। इसमें चीनी जीवन और संस्कृति की एक झाँकी मिलती है। मूलकृति में लूषन ने अपनी तन्हाई, हताशा और जिंदगी के अनुभव के क्षणों को अभिव्यक्ति दी है। भाषा में सरलता और वास्तविता उभर आई है।

'महात्मा गांधी - नन्न तात' (महात्मा गांधी मेरे दादा) यह महात्मा गांधी जी की पोती सुमित्रा गांधी कुलकर्णी का गांधी पर लिखी रचनाओं का कन्नड अनुवाद है। अनुवादिका प्रो. बी. वाइ. ललितांबा जी हैं। इसमें महात्मा गांधी जी के व्यक्तिगत स्वभाव, परिवार के साथ उनका व्यवहार आदि का कुतूहलपूर्ण चित्रण है।

'सावित्री' यह श्री महर्षि अरविंद का महाकाव्य है। इसका कन्नड अनुवाद डॉ. आर. के. कुलकर्णी ने किया है। मूलकृति अंग्रेजी में 700 से अधिक पृष्ठों का उद्ग्रंथ है। लेखक ने कन्नड में इसे संक्षिप्त रूप दिया है। यह केवल अनुवाद नहीं। यह ट्रांस क्रियेशन है। सावित्री की मृत्यु को जीतकर अमरत्व साधने का चित्र मनोज्ञ है। इसमें आध्यात्म सौंदर्य उभर आया है।

'कोक्करेगळ लामा सेने' (बकपक्षियों की लामा सेना) यह नीरज वाघोलिकर द्वारा रचित अंग्रेजी कृति 'सेविंग दि दलै लामास क्रेन्स' कृति का अनुवाद है। कन्नड अनुवाद श्री नागेश हेगडे का है। यह पर्यावरण की रक्षा करने वाली लाम सेना पर आधारित है। भारतीय संस्कृति में पले तीन साहसियों की बक पक्षी बचाने से संबंधित कथा है। अरुणाचल प्रदेश में बाँध निर्माण करते समय वन्य जीव वैविध्य को जो मार पड़ती है उसको नज़रंदाज करके जब निर्माण के लिए आगे बढ़ते हैं, उसके विरोध में जनाभिप्राय रूपित करने की साहसिक गाथा है।

'ओंदु अर्थपूर्ण सत्य' यह चुनी हुई छोटी कहानियों का कन्नड अनुवाद है। अनुवादक डॉ. जे. एस. कुसुमगीता जी हैं। मूल कहानीकार हैं हिंद के प्रसिद्ध कथाकार हिमांश जोशी। ये जोशी जी के जीवनानुभव और अनुभूति से उभरे सुंदर चित्र हैं। जन जीवन चित्र में मिट्टी की गंध, स्त्री का दुख-दर्द, असहायकता आदि का वर्णन मनोज्ञ है। यह नव–कर्नाटक प्रकाशन से प्रकाशित है।

'ऊसरवळ्ळी' (गिरगिट) बी. एस. सरोजा जी का अनुवाद है। हिंदी मूल लेखक डॉ. अखिलेश निगम 'अखिल' हैं। इस कथा संकलन में 12 कहानियाँ हैं। डोली, नौकरानी पठनीय कहानियाँ हैं।

'चरित्रेय अब्राह्मणीकरण' मूल अंग्रेजी कृति ब्रजरंजन मणि के 'दि ब्राह्मनैसिंग हिस्टरी : डामिनेंस एंड रेसिस्टेंस इन इंडियन सोसाइटी' का कन्नड अनुवाद है। अनुवादक हैं पत्रकर्त्ता रीटा रीनि। यह अब्रह्मण दृष्टिकोण से इतिहास का परिशीलन है। इसमें रोमांचक पूर्वाग्रह को हटाने वाले सत्य पाठकों के सामने प्रस्तुत किए गए हैं।

'प्राकृत साहित्यद रूपरेखे' (प्राकृत साहित्य की रूपरेखा) हिंदी मूल की कृति का अनुवाद है। मूल लेखक डॉ. तारा डागा है। यह प्राकृत साहित्य के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

'मुळुगदिरली बदुकु' (डूब न जाए जीवन) ग्रीक तत्वज्ञानी एपिक्वेटस् की रचना 'दि आर्ट आफ लिविंग' का कन्नड अनुवाद है। अनुवादक हैं सुभाष राजमाने। एपिक्वेटस ने अपने अपार जीवनानुभव की पृष्ठभूमि में मनुष्य के जीने की कला पर अपने चिंतनों के द्वारा दार्शनिक के रूप में जो अभिव्यक्ति दी है वह आज भी प्रासंगिक है। उसके चिंतन सिर्फ उपदेश नहीं, पथप्रदीप भी हैं। इन लेखों में हृदयांतराल के सुप्तभावों को उद्दीप्त करने की शक्ति है।

'लखनो हुडुग' मूल लेखक विनोद मेहता जी हैं। यह ख्यात पत्रकार विनोद मेहता जी के कुछ संस्मरणों का संकलन है। अंग्रेजी मूल के इस विशिष्ट कथन का कन्नड अनुवाद श्री जी. टी. सतीश और शशि संपल्ली ने किया है। लखनऊ की सड़कों में भटकता एक लड़का देश का प्रसिद्ध पत्रकार तो बन गया वह कुतूहलकारी कथन है। ये पत्रकार का ही आत्मकथन है। यह छह अध्यायों में है। पत्रकारिता में आसक्तों के लिए यह एक उपयुक्त कृति है।

'काळि गंगा' मूल कोंकणी उपन्यास है। उपन्यासकार महाबलेश्वर सैल जी हैं। यह उनका पहला उपन्यास है। इसकी कन्नड अनुवादक गीत शेणैजी हैं। गोवा से कर्नाटक के काली नदी तट पर आया परिवार कालक्रम में 18 शाखाओं में बँटकर एक कृषि समाज के निर्मित होने की कथावस्तु इस उपन्यास में है।

काव्यानुवाद

'स्वप्नलिपि' एक विशिष्ट कविता संकलन है। तेलुगु पत्रकार श्री पेनुमूर्ति विश्वनाथ शास्त्री ने 'अजंता' काव्यनाम से ये कविताएँ 1993 में प्रकाशित की। जब मूल संकलन की एक भी प्रति अपने पास न रहने पर स्मरण के आधार पर

पुन: लिखकर प्रकाशित किया। इन कविताओं को कन्नड भाषियों के लिए मनस्पर्शी अनुवाद प्रस्तुत करने वाले ख्यात कवि चिदानंद सालि जी हैं। 'स्वप्नलिपि' ने तेलुगु काव्य पर बहुत प्रभाव डाला है।

उदाहरण के लिए कविता की कुछ पंक्तियाँ देखें –

फाँसी की रस्सी मेरी कल्पनाएँ हैं
जंजीरे ही मेरी बातें हैं
मेरे अक्षर ही मेरे ऊपर फेंके पत्थर हैं
मेरे लिए न घर है
न मेरा कोई अंत है
.....
आकाश न दिखता
जहाँ अँधेरा फाँसी का खंभा बन गया है
नि:शब्द पर नि:शब्द हो बैठकर
तूफान के सामने के दीए के समान गीत
लिखूँगा
मेरे लिए कोई रूप नहीं
मेरे गीत ही मेरे रूप हैं।

(मेरे ऊपर फेंके मेरे अक्षर)

भयंकर एकांत, महानगर, अँधेरा, मौत – ये हैं अजंता की कविताओं की वस्तुएँ। उनके समग्र काव्य विलक्षण बिंबों की कतारों का उत्सव है। यहाँ की भाषा हमारी परिचित ही है परंतु उससे सृजित चित्रलिपि निगूढ़! यह वास्तव में अमिट लिपि है!

साहित्येतर

'बायारिद बेंगळूरु' (प्यासा बेंगलूरू) श्री टी. एम. शिवशंकर जी का जल के महत्व को समझाने वाला ग्रंथ है। जिसका प्रकाशन कन्नड पुस्तक प्राधिकार से हुआ है। इसमें बेंगलूरू के जलमूल का इतिहास और नगर विस्तार पर प्रकाश डाला गया है। इसमें 20 अध्याय हैं। उसमें 'सदा प्यासा नगर' जल प्रज्ञा जागृत करने में सहायक है। जल अकाल की भयंकरता पर भी प्रकाश डाला गया है।

'सुवर्ण कथन' डॉ. एम. वेंकटस्वामी जी का महाप्रबंध है। यह प्रसारांग, कन्नड विश्वविद्यालय हंपी (कर्नाटक) से प्रकाशित है। इसमें सुवर्ण (पीला लोह) कैसे संघर्ष पैदा करता है इसे जानना हो तो कोलार सुवर्ण की खान (के.जी.एफ) की ओर देखना चाहिए। उसका इतिहास ही यह सुवर्ण कथन है। इसमें सुवर्ण शोध की रसविद्या का इतिहास ही खुलता है। खानों में से सोना निकालने वाले श्रमिकों की हालत पर भी प्रकाश डाला गया है।

'आयुरारोग्य' डॉ. वसुंधरा भूपति द्वारा रचित और स्वप्न बुक हाऊस, बेंगलूरू से प्रकाशित है। आरोग्य (सेहत) के साथ साहित्य का रिश्ता है यह बताने वाला संकलन है यह कृति। इस कृति में लेखक ने औषधि के इतिहास में आयुर्वेद के लिए कितना महत्व है, उस जानकारी से अवगत कराया है पाठकों को। पहले अध्याय में आयुर्वेद के इतिहास पर प्रकाश डाला है। मार्के का कथन है कि कार्बोहाइड्रेट का सेवन मस्तिक की शक्ति को बढ़ाता है। इस कृति में अठारह अध्याय हैं। मनुष्य के लिए स्वास्थ्य कितना मुख्य है और स्वास्थ्य रक्षा के लिए आयुर्वेद कितना सहायक है, इन अंशों पर कृति प्रकाश डालती है। लेखिका का यह अभिनंदनीय कार्य है और हर घर में रखने और पढ़ने लायक है यह कृति।

'साइंस मत्तु परिसर सिंचन' (विज्ञान और पर्यावरण सिंचन) यह नागेश हेगड़े जी द्वारा रचित लेखों का संकलन है। यहाँ के लेख प्रजावाणी (दैनिकी) में शीर्ष लेख के रूप में छपते थे। लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले, भविष्य को बदल सकने वाले, कई विद्यमानों का विश्लेषण यहाँ हुआ है। 'धर्मक्षेत्र में पदार्पित बंदर से लगी बीमारी', 'सस्यलोक में प्रज्ञा का प्रश्न' चिंतन के लिए बाध्य करते हैं।

– प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बेंगलूरू-560079

❑❑❑

5

कश्मीरी साहित्य

डॉ. महाराजकृष्ण भरत 'मुसा'

कोई भी भाषा चिरकाल तक तभी जीवित रह सकती है, जब उसकी अपनी लिपि हो, पर जो भाषा प्रतिकूल परिस्थितियों में किसी दूसरी आयातित लिपि का वरण करने को विवश हो, उस पर सदैव संकट गहराता रहता है। कश्मीरी भाषा प्राचीन काल में अपने स्वरूप, रंग, रूप और केसरिया सुगंध के साथ शारदा लिपि में लिखी जाती रही है, पर कालांतर में उस भाषा से अपनत्व लिए अक्षर छीन लिए गए। कश्मीरी भाषा मध्यकालीन कश्मीर से अरबीकृत फारसी लिपि में लिखे जाने लगी और वर्तमान युग तक इस लिपि का प्रचलन है। आज जबकि जम्मू कश्मीर में उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा के अतिरिक्त कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को भी राजभाषा का दर्जा दिया गया, तो इससे यह आशा जगी है कि इस केंद्र शासित प्रदेश में भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी को भी राजकीय सम्मान प्राप्त होगा। पहले इस प्रदेश की राजभाषा केवल अंग्रेज़ी और उर्दू थीं। विडंबना तो यह है कि प्रदेश की राजभाषा उनको बनाया गया था जो न तो जम्मू और न ही कश्मीरी समाज के लोगों की मातृभाषा थीं। अब भाषा के आधार पर भी यह न्याय हुआ है कि डोगरी जम्मू भू-भाग का प्रतिनिधित्व कर रही है जबकि कश्मीर में रहने वाले अधिकांश लोगों की मातृभाषा कश्मीरी है।

सन् 2019 में प्रकाशित कश्मीरी भाषा साहित्य का आकलन करते हुए हम पाते हैं कि यह वर्ष कविता, कहानियों, नाटक तथा अनुवाद कार्य को समर्पित रहा। कश्मीरी भाषा साहित्य के समालोचना पक्ष को डॉ. गुलाब नबी हलीम ने सुदृढ़ किया। डॉ. हलीम ने अपनी पुस्तक 'गोन न्यूर' (राग का गुच्छा) में कश्मीर के ख्यात नाम रचनाकारों के साहित्य की विवेचना की है, जिनमें उल्लेखनीय हैं, आज़ाद, अहदज़रगर, मरगूब बानिहाली निशांत अंसारी। डॉ. गुलशन मजीद ने 'टंग डोलमुत बर' (बिना सांकल के द्वार) अफसाना संग्रह प्रसिद्ध कहानीकार हृदय कौल भारती को समर्पित किया है। अन्य जो पुस्तकें उपलब्ध हो पाईं, उनकी विवेचना यहाँ प्रस्तुत है।

(क) कविता संग्रह

1.'वंद् वाशर'

कश्मीरी भाषा साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार जगन्नाथ सागर द्वारा रचित 'वंद् वाशर' : एक कविता संग्रह है जिसमें केवल रुबाइयों को ही स्थान दिया गया है। कश्मीरी भाषा में सर्वप्रथम रुबाइयाँ रखने की प्रतिभा गुलाम रसूल नाज़की ने प्रदर्शित की और कवि सागर ने इस ओर पहल कर रुबाइयों के इतिहास में अपना नाम दर्ज किया है।

215 रुबाइयों पर आधारित इस कविता संग्रह में कवि सागर ने गहन चिंतनपरक आलेख लिखकर रुबाइयों की संरचना, शैली और शिल्प से पाठकों को परिचित कराया है। 300 रु. मूल्य की इस पुस्तक में कुल 122 पृष्ठ हैं। रुबाई को परिभाषित करते हुए रचनाकार ने लिखा है कि यह एक चतुष्पदी नज़्म है जिसमें एक विचार या विषय को पूरी तरह चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। रुबाई रचने का अर्थ है गागर में सागर भरने की क्षमता रखने वाली नज़्म का सृजन करना। हिंदी साहित्य जगत में तो बिहारी के मुक्तकों को 'गागर में सागर भरने' की संज्ञा दी गई है।

2.'यथ छु मुजादिल'

सूफी विचारधारा से प्रेरित 'यथ छु मुजादिल' संग्रह अब्दुल रशीद सद्दीकी द्वारा रचित है। इसमें गज़लें, वचन और नज़्में हैं। कवि सद्दीकी गहन चिंतनपरक भावबोध की नज़्में रचते हैं, जिनमें आध्यात्मिकता भी है और सांप्रदायिक सौहार्द की रंगत भी।

3.लोंचि गंडिथ चाय

'लोंचि गंडिथ चाय' (दामन के साथ बंधी छाया) कविता संग्रह द्राक्षा अंद्राबी द्वारा रचित है जिसमें चतुष्पदी तथा त्रिपदी नज़्में है। इस संग्रह की समीक्षा कश्मीरी भाषा के ख्यातनाम रचनाकार फारूक नाज़ की, गुलाब नबी ख्याल तथा डॉ. जे एन हलीम आदि ने लिखी हैं।

4.'नारु अलाव'

एक संजीदगी लिए, जीवन के कटु अनुभवों से कविता की रेखाएँ खींचने वाले कन्हैया लाल परदेसी के कविता संग्रह का नाम है- 'नारु अलाव' (अग्नि अलाव)। इस संग्रह में 33 नज़्में, 29 गज़लें, 6 भजन तथा 15 हाइकू हैं। तीन हाइकू द्रष्ट्व्य हैं-

बब द्राव
स्वर्गस कुन
नेचिव वोन

(अर्थात् वृद्ध चला, स्वर्ग की ओर, बेटे ने कहा)

ड्बि तेलि ओस नेरान
गाह त्रावान
नोशि वोन

(अर्थात् चबूतरे के नीचे से चलता था, प्रभा बिखेरता बहू, ने कहा)

तस कुस ओस
जिंदु जुंवस प्रसान
एक गाटिल वोन

(अर्थात् उन्हें कौन जीते जी पूछता था एक समझदार ने कहा)

कवि परदेसी ने इसके अतिरिक्त संकलन में 'मानवता','जफाकश','गुफ्तार','समझदार किसान', अंटार्कटिका न्यूट्रान बम आदि रचनाएँ भी हैं।

5. ख्यालन हुंद जमा खर्च

कश्मीरी भाषा के मझे हुए रचनाकार ने 'ख्यालन हुंद जमा खर्च' (ख्यालों का जमा खर्च) कविता संग्रह नस्तालीख और देवनागरी लिपि में रचा है। 'वख छु वख' (समय-समय है) 'चललार' (भागमदौड़), 'शुर' (बालक), 'सिर्य देवता' (सूरज देवता), 'अग्न कुंड' (अग्नि कुंड) आदि।

(ख) अफसाना संग्रह

1.येली पछ रॉव : कश्मीरी भाषा साहित्य में एक प्रमुख नाम है- अमर मालमोही। 'येलि पछ रॉव' (जब भरोसा ही गुल हो गया) 'अफसाना संग्रह' (कथा संग्रह) रचनाकार मालमोही जी की कृति है। जिसमें 13 कहानियाँ संगृहीत है। कश्मीरी और हिंदी भाषा में समानांतर रूप से रचनाशील डॉ. रतन लाल शांत ने कथा संग्रह की भूमिका लिखी है। कथाएँ विस्थापन, कश्मीरी की अनुभूतियों पर लिखी गई हैं। संग्रह की कथाएँ जीवन की पैनी दृष्टि का प्रतिफलन हैं।

2. 'शीन'

कहानी संग्रह 'शीन' (बर्फ) दोनों लिपियों में प्रकाशित हुआ है। एक ओर मुख पृष्ठ पर नस्तालीख लिपि में पुस्तक का नाम लिखा है तो दूसरी ओर उसका लिप्यंतरण देवनागरी में किया गया है। व्यवसाय से अभियंता विनोद ने लेखन क्षेत्र में पदार्पण किया है। 15 कहानियों पर आधारित इस संग्रह में 'एहतिजाज' (प्रदर्शन), 'शीन' (बर्फ) 'मॉजि' (माँ), 'ज़्यव'(जीभ), 'बी.बी.सी.' तथा 'क्रेकडाउन' जैसे शीर्षक उल्लेखनीय हैं।

'शीन' नामक कथा संग्रह में विस्थापन से पूर्व की अनुभूतियाँ तथा वर्तमान समय का यथार्थ भी झलक रहा है। यह लेखक की दूसरी पुस्तक है। संग्रह में लेखक की स्मृतियाँ जीवंत हो उठी हैं।।

(ग) नाटक

कश्मीरी भाषी मुश्ताक महेदी ने 'शक्कर बाब' नाटक संग्रह की रचना कर नाटककार और रंगकर्मी मोती लाल क्यमू की स्मृतियों को नए रंग और तेवर दिए हैं। श्री क्यमू अपने समय के सफल नाटककार रहे हैं। जिन्होंने अपने घर कश्मीर और आतंकवाद की त्रासदी को भावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है।

'शक्कर बाबा' नाटक संग्रह में चार नाटक संगृहीत है जिनके नाम हैं' 'शक्कर बाबा', 'कैदखाना', 'राहगुज़र' और 'नज़ली'।

(घ) अनुवाद कार्य

'प्रज़नॅच़ हुंद गाश'

कश्मीरी भाषी लेखक मीम हय ज़फर ऐसे विरले लेखक हैं जो भारतीय संस्कृति और संस्कारों से पुष्पित पल्लवित, जीवन-दर्शन से ओतप्रोत, प्राचीन पुस्तकों पर अपनी सारगर्भित टिप्पणियों के लिए जाने जाते हैं। शैव दर्शनाचार्य क्षेमराज कृत 'प्रत्यभिज्ञाहृदयम' ग्रंथ का मीमहय जफर ने कश्मीरी में अनुवाद किया है। पहले उन्होंने मूल संस्कृत श्लोक को उद्धृत किया है तत्पश्चात् अपने दृष्टिकोण से उसकी व्याख्या प्रस्तुत कर एक गहन चिंतन बोध का परिचय दिया है।

'प्रजनॅच़ हुंद गाश' : अर्थात पहचान का प्रकाश। कश्मीरी भाषा को अपनी परंपरा से साक्षात्कार कराना एक सच्ची पहल है। पहले पुस्तक का एक भाग कश्मीरी भाषा में है, और दूसरी ओर उसे देवनागरी में लिप्यंतरण कराया गया है, जो समय की माँग भी है।

2. मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित श्री तेगबहादुर की कविता का कुमार अशोक सर्राफ घायल ने कश्मीरी अनुवाद प्रस्तुत कर एक उल्लेखनीय कार्य किया है। यह सर्वविदित है कि गुरु तेगबहादुर ने क्रूर औरंगजेब के शासन काल में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर हिंदू समुदाय के अस्तित्व की रक्षा की थी। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कविता रचकर गुरु तेगबहादुर के प्रति कृतज्ञता तो ज्ञापित की थी, उसी क्रम में कश्मीर से उखाड़े गए कवि सर्राफास ने भी गुरु तेगबहादुर के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं। उत्पल पब्लिकेशंस् द्वारा प्रकाशित इस अनुवाद कार्य को पं. कृपा राम जी के प्रति समर्पित किया है जिन्होंने गुरु तेगबहादुर को उस काल खंड में क्रूर औरंगज़ेब के अत्याचारों के प्रति सजग करते हुए संरक्षण की गुहार लगाई थी। कश्मीरी भाषा में पुस्तक का नाम है 'मैथिलीशरण गुप्त गुरु श्री तेगबहादुर'।

कश्मीरी भाषा साहित्य की इन पुस्तकों के अतिरिक्त इस भाषा में पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन हो रहा है। 'वाख' शीर्षक से प्रकाशित एक पत्रिका ऐसी विरली पत्रिका है जिसमें कश्मीरी भाषा के आलेखों, अफसानों, नज़्मों तथा अन्य रचनाओं को देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण किया जाता है। यह पत्रिका दिल्ली से प्रकाशित हो रही है जो पहले त्रैमासिक थी और वर्तमान में जिसका जुलाई से दिसंबर 2019 के अंक को अद्धर्वार्षिक अंक के रूप में छापा गया है। यह पत्रिका पूर्णतया कश्मीरी भाषा साहित्य को समर्पित है।

कश्मीरी भाषा साहित्य के भविष्य को उज्ज्वल बताते हुए ख्यातनाम रचनाकार सतीश विमल कहते हैं कि गिनने के लिए तो विपुल साहित्य कश्मीरी भाषा में रचा जा रहा है, जिसमें प्रचुर मात्रा में कविताओं का प्रकाशन सामने आ रहा है। गुणवत्ता की दृष्टि से हम कुछ एक कवियों, कथाकारों, समीक्षकों का नाम ही ले सकते हैं, जो कश्मीरी भाषा को ऊँचाइयों की ओर ले जा रहे हैं।

निस्संदेह कश्मीरी भाषा साहित्य निरंतर तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है और इस बार जो इस भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है, उससे लेखक जगत में भी यह आशा बढ़ी है कि कल का सूरज और लालिमा, लालित्य पांडित्य लेकर आएगा।

– शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मूठ्ठी, जम्मू-181205

❑❑❑

6

कोंकणी साहित्य

डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा

व्यक्ति, साहित्य, समाज अपने समय में अपनी गति से यात्रा तय करते ही रहते हैं। पानी बहता.... समय भी सरकता....किसी के रोके नहीं रुकता। मनुष्य भी जीवन में आगे ही बढ़ सकता है....भूतकाल में झाँका जा सकता है....पर वहाँ ठहरा नहीं जा सकता। अनुभवों से, इतिहास से सीखकर आगे बढ़ने में ही समझदारी है। कोंकणी साहित्य भी अपने साहित्यिक इतिहास से पनपते-पनपते अपनी यात्रा तय कर रहा है। अलग-अलग साहित्यिक विधाओं में विकसित हो रहा है।

सब से पहले कोंकणी कविता के बारे में देखते हैं कि काव्य संग्रहों में आशय और आकार के संदर्भ में सन् 2019 में क्या दिखाई देता है।

नवोदित कवयित्री अनघा कामत अपना पहला काव्य संग्रह लेकर आ रही हैं। इस काव्य संग्रह की प्रस्तावना, कोंकणी के वरिष्ठ कवि नागेश करमली ने लिखी है। 'भांगरभूयं'-(रविवार, 3 मार्च 2019) 'चंवरमाल' काव्य संग्रह में बालगीतों के साथ-साथ पेड़, पत्ते, फूल, फल, तितली, अलग-अलग प्रकार के चंपे के फूल आदि में उनकी सुंदरता द्रष्टव्य होती है। सब्जी, बारिश के समय की मछली आदि का वर्णन सूक्ष्मता से किया गया है। बदलते समय के बदलाव को रेखांकित करने का काम कवयित्री करती हैं। अलग-अलग प्राकृतिक स्पंदनों में कविता अपना मार्ग तय करती है।

कोच्चि के कवि एन. बालकृष्ण मल्या का काव्य संग्रह 'आत्मगत'। पुस्तक की समीक्षा आर. एस.भास्कर ने की है। इनका यह दूसरा काव्य संग्रह है। कवि के विचारों की गंभीरता जीवन की नई दिशा तय करती नजर आती है।

आँखों के सामने
सत्य दिखता नहीं
आँखें बंद करके बैठा हूँ
कानों को दिखाई दे रहा है....

अपनी इंद्रियों से जो अलग प्रकार की पहचान हो रही है सत्य को पहचानने की यह अलग राह तय होती दिखती है। उसी तरह जीवन का एहसास जीवन क्या है? अगर कोई पूछे तो बताना बहुत मुश्किल लगता है अगर कोई मिले जो मुझे जीवन की पहेली समझाएँ तो उसकी पहचान कोई मुझसे कराएँ....

विंदा नाईक का काव्य संग्रह 'काव्यफुलां'-काव्यफूल भी महत्वपूर्ण रचना है।

कोंकणी कविता के बारे में मराठी वर्तमान पत्र 'लोकमत' में शैलेंद्र मेहता के 'सिसिफस तेंगशेर'

अर्थात् सिसिफस शिखर पर के बारे में अनंत सालकर (लोकमत, हैलो रविवार, पृ.3, 18 अप्रैल, 2019) लिखते हैं कि-

कवि शैलेंद्र मेहता का यह काव्य संग्रह- "स्वत: तच रमलेल्या आणि अनावश्यक हलवेपणाचा अवगुंठना (खाल) राहून स्वत: भोवती आकलनाच्या मर्यादा घालून घेतलेल्या कोंकणी कवितेने मेहतांच्या कवितेला उपेक्षित ठेवले तर तो तिचा करंटेपणा ठरेल. पण अशा प्रकारच्या करंटेपणा कोंकणीला अपरिचित नाही, हे ही तितकेच खरे...."

अर्थात् अपने आप में ही निमग्न होती कोंकणी कविता अनावश्यक रूप से भावनाशीलता के आच्छादन में पनपती एवं स्व आकलन तक सीमित कोंकणी कविता ने अगर शैलेंद्र मेहता की कविता को नकारा तो यह उसकी कृतघ्नता ही मानी जाएगी। इस प्रकार की कृतघ्नता कोंकणी काव्य जगत के लिए कोई नई बात नहीं है। शायद इसीलिए काव्य संग्रह के आरंभ में ही कवि 'शहामृग' नाम की कविता में प्रस्थापित तत्वों का उल्लेख करते हैं।

वैसे भी शैलेंद्र मेहता की कविता सांस्कृतिक सीमाओं को अनावृत्त करने का साहस रखती है। व्यवस्था का विरोध करते-करते यहाँ कविता सामाजिक, सांस्कृतिक, राजकीय विरोध करते-करते अपने शिखर पर पहुँचती है। देखते हैं कोंकणी कविता इस काव्य संग्रह को स्वीकारती है या नहीं। एक बात तो साफ है कि कोंकणी कविता सांचेबद्ध होती जा रही है ऐसे समय में आमूल चूल परिवर्तन की आकांक्षा लेकर यह काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है।

'वसुंधरा' काव्य संग्रह सुनील हरी पालकर द्वारा रचा गया है जिसमें 28 कविताओं का संग्रह है। अलग-अलग विषयों पर ये कविताएँ अपना विचार व्यक्त करती हैं। गोवा कोंकणी अकादमी की आर्थिक सहायता से इस पुस्तक को प्रकाशित किया गया है। डॉ. किरण बुडकुले ने इसकी प्रस्तावना लिखी है।

'मनस्पंदनां' अर्थात् मनस्पंदन कवयित्री शोभा फुलकार रचित नया काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है। इनके अब तक 'शुभत्कार' 'रूजवण' अर्थात् 'अंकुर' काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस काव्य संग्रह में प्रेम, आध्यात्मिक और समाज के भाव मुखरित स्पंदन हैं। कुल 70 कविताओं के इस काव्य-संग्रह में समसामयिक समय के सत्ताधीशों के स्वर भी व्यक्त होते हैं। अपने अंतर्मन में गोता लगाकर, स्पंदनों को व्यक्त करती ये कविताएँ कोंकणी काव्य साहित्य में अपना स्थान बनाती हैं। स्व. श्रीधर कामत की तीन पुस्तकों का लोकार्पण 9 फरवरी 2019 को किया गया। श्रीधर जी को गुजरे पूरा एक साल हो गया। गत साल 7 फरवरी 2018 को कोंकणी साहित्य का गीतकार अचानक चल बसा। 9 फरवरी को श्रीधर जी का जन्मदिन है उसी दिन को उनकी कविता और गीतों की पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है। 'जैत' एकांकी का पुनर्प्रकाशन होगा।

कोंकणी कहानी

अपूर्वा कर्पे की दो पुस्तकों का प्रकाशन हुआ जिसमें से एक कहानी संग्रह है और दूसरा निबंध संग्रह है।

इस साल डॉ. जयंती नायक की 'आर्त' अर्थात् व्यथा-कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। कोंकणी साहित्य में इन्होंने आज तक तीन कहानी संग्रह दिए हैं-

- 'गर्जना 1989'
- 'अथांग 2004' (साहित्य अकादमी पुरस्कार)
- 'आर्त 2019'

पिछले 40 सालों से जयंती जी कोंकणी साहित्य में कार्यरत हैं। लोकगीत, लोककथा साहित्य, कविता, नाटक अलग-अलग विधाओं में अपना योगदान देती रही हैं। कोंकणी से अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्य भी उन्होंने किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में मानवीय संबंध, स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसकी व्यथा, टूटते हुए संयुक्त परिवार, परंपरा, लोकजीवन से दूर जा रहा युवा-वर्ग इन प्रश्नों से जुझती लेखिका. ..नए प्रश्न, उनकी व्यथा, खास करके स्त्री प्रश्न, बहुजन समाज इनमें से अपनी राह चुनती....नया समाज रचकर कार्यरत लेखिका इस कहानी संग्रह से अपनी नई राह तराश रही हैं।

कोंकणी साहित्य कहानी विधा में जो स्त्री कहानीकार हैं उनमें हेमा नायक बहुत जाना माना नाम है। इन्होंने सन् 1982 में 'पसय' अर्थात् सांध्य प्रकाश, 'दुर्गावतार'-2009 में और अब 2019 में 'नयनतारा' और दूसरी कहानियों का प्रकाशन पंद्रह

नवंबर को हुआ है। साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाली इस लेखिका ने स्त्री संदर्भी प्रश्नों को ज्यादा महत्व दिया है। उन पर होने वाले अत्याचार, अन्याय, शोषण, मेहनत करने वाली स्त्री आदि इनकी कहानी को प्रतिबिंबित किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह भी इसमें अपवाद नहीं है। इस कहानी संग्रह में 'नयनतारा', 'श्वेता-सिंधु', 'निवलकाणी', 'पुनवैभव', 'नाकाशी' आदि कहानियाँ हैं।

कोंकणी की रोमी लिपि में इस साल – 'Koxttanche vantte' अर्थात् कश्टांचे वांटे- ले. जेस फर्नांडीस द्वारा लिखित इस कहानी संग्रह में मेहनत करने वालों की व्यथा को उजागर करने की कोशिश की गई है। कष्ट पाकर भी मंजिल न मिलने की व्यथा में कहीं सफलता तो कहीं निष्फलता का दौर चलता रहता है। विधि की यही व्यथा इस रचना को वास्तविकता का जामा पहनाने में सफलता प्राप्त करती नज़र आती है।

'yodd Ambott Tikh' by William Venchik lekh अर्थात् 'गोड आंबट तीख' हिंदी में लिखना हो तो मीठा, खट्टा, तीखा- चुने हुए लेखों का यह संग्रह है। जीवन के खट्टे, मीठे, तीखे अनुभवों का यह लेख संग्रह अपने समसामयिक संदर्भों में अपनी राह तय करता है।

कहानीकार वल्ली क्वाड्रस ने अपना कहानी संग्रह मूल कन्नड लिपि से देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण किया है। इसे अनुवाद के अंतर्गत विवेचित किया गया है।

कोंकणी रंगमंच

गोवा में कोंकणी नाट्य प्रतियोगिता का आयोजन कला अकादमी करवाती है। प्रतिस्पर्धा है तो समीक्षक भी होंगे ही। कोंकणी नाटकों को देखने वाले समीक्षकों में एक नाम किशोर अर्जुन का है। जो 'लोकमत' (मराठी अखबार) में कोंकणी नाटकों का 'रिव्यू' लिखते हैं। 'हांव तो न्हू' अर्थात् मैं वह नहीं हूँ। गड़बड़ घोटाला अर्थात् 'घुस्पागोंधल' 'टाईम फेल' इन नाटकों का परीक्षण करने पर अर्जुन जी को लगता है कि कोंकणी नाटकों में सहनशक्ति को सीमा तक सहना पड़ता है.....

नाटक करते-करते वह सिनेमा, लोकनाट्य, लोकवेद प्रस्तुति तियात्र या फिर और कुछ? सिर्फ नाटक के नाम पर वाकई क्या हो रहा है? ये समझ में ही नहीं आता? (लोकमत, 05 अप्रैल, 2019)

इतना ही नहीं 'टाईम फेल' नाटक तो इतना फेल हुआ कि अंत तक परीक्षक फेल होते ही गए कि नाटक देखते-देखते औरंगजेब ने इस नाटक को देखकर ही शायद नाटकों पर, कला क्षेत्रों पर प्रतिबंध लगाया होगा.....जैसा विधान करने पर मजबूर हो जाता है....(12 अप्रैल, 2019)

गोवा के मराठी या कोंकणी नाटकों के स्तर को लेकर पत्रकार मिलिंद म्हाडगुत भी 18 अप्रैल 2019 को लिखते हैं कि-

"गोवा की नाट्यसंहिता का दर्जा ढल रहा है.. .फोंडा शहर के राजीव गांधी कला भवन में व्यावसायिक नाटकों का मंचन हुआ.... रंगमंच पर सही मायनों में क्या चल रहा है यही समझ में नहीं आता था का आरोप करते हैं। विनोद के नाम पर कमर के नीचे के बीभत्स शब्दों का उपयोग करने में ही सफलता मानते हैं। गोवा के मराठी या कोंकणी नाटकों में प्रेक्षकों को जकड़कर रखने वाली नाट्यसंहिता लिखी ही नहीं जाती का आरोप करते हुए....टिकट के बढ़ते दाम और फिसलते नाटक का समीकरण लगाते हैं।"

किशोर अर्जुन नाट्य समीक्षक और परीक्षक 19 अप्रैल 2019 के 'लोकमत' में 'बनवड' नाटक का परीक्षण करते हुए नाट्यकार डॉ. प्रकाश वझरीकार की नाट्यसंहिता को वर्ण, वंश, वर्ग के वर्चस्ववाद में रक्तरंजित मानव इतिहास को चित्रित करने में सक्षम मानते हैं। बहुजन समाज, उनकी समस्या, न्याय-अन्याय के परिमाण देते हुए नाटककार कौन से संदर्भों में खड़ा रहता है इस पर विचार करना जरूरी होता है। मिट्टी तो भेदभाव नहीं करती पर मन में दबी जाति ही भेद-भाव खड़े करती है। मनुष्य को चाहिए कि उसी को जीतने की कोशिश करें। नए विचार, नया मानवीय संतुलित समाज, नयेपन की प्रक्रिया ही नाटक के केंद्र बिंदु रूप में सशक्त रूप से उभरी होने का परीक्षण द्रष्टव्य होता रहता है। कथा प्रस्तुतीकरण, दिग्दर्शन भी बखूबी निभाया गया है। दिग्दर्शक झिलू गांवकार भी इस विधा में सफल हुए हैं। कला अकादमी द्वारा आयोजित इस नाट्यस्पर्धा में 'बनवड' नाटक को दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 'भांगर भूंय'

वर्तमान पत्र में स्पर्धा के परिणाम को 26 अप्रैल को प्रकाशित किया गया।

इसी दिन पणजी में अस्मिताय संस्था ने इस साल 2019 का पुरस्कार, प्रकाशक प्रभाकर भिडे को प्रदान किया। राजहंस प्रकाशन संस्था को वे पिछले 40 सालों से चला रहे हैं। तकरीबन 1500 कोंकणी, हिंदी, अंग्रेजी पुस्तकों का उन्होंने प्रकाशन किया है। साथ-साथ वे 'इयरबुक' और 'गोवा सांस्कृतिक' नाम से डायरेक्टरी भी प्रकाशित करते हैं। इनके कोंकणी योगदान को ध्यान में रखकर, उन्हें यह पुरस्कार दिया गया है।

कोंकणी नाटकों के बारे में अब लोगों को लगने लगा है कि गोवा में नाट्य अकादमी की स्थापना होनी चाहिए।

सन् 2019 में कोंकणी नाटक में एक नया प्रयोग किया गया है जिसे कोंकणी के अखबार के रविवार 22 सितंबर 2019 के अंक में दिपराज सातोर्डेकार ने बहुत ही सूक्ष्मता से इसे निरूपित किया है। 'डम इंडिग्नेशन' अर्थात् एक मूक, अवाक्, स्तंभित, विस्मयकारी रूप से आस्वाद प्राप्त करने का सफल प्रयत्न किया गया है। दिपराज के पास नाटक को विश्लेषित करने की पैनी निगाह है जिसके लिए उनका अभिनंदन इस उम्मीद के साथ कि भविष्य में कोंकणी नाटकों के बारे में वे और सूक्ष्मता से अवलोकन कर पाएँगे।

अपने लेख में वे लिखते हैं-

सिर्फ 40 मिनट के इस नाटक में नाटक प्रेक्षक शरण न होते हुए, प्रेक्षक को नाटक के शरण लाने वाला यह नाटक, कोंकणी नाट्य जगत में नई दिशा लेकर आया है। प्रस्तुत नाटक का निर्माण थियेटर फ्लेमिंगो कंपनी ने किया है।

अभिनव क्रिएशन ने इसका प्रस्तुतिकरण किया है। 'मज्जा स्कूल ऑफ जॉय' अन्वेषा सिंगबाल द्वारा अभी हाल ही में इस स्कूल को शुरू किया गया है। 'नॉन व्हर्बल प्ले' होते हुए भी इसमें मूवमेंट के माध्यम से, एक पात्री नाटक स्टोक संगीत और घुमट की थाप से अपनी नई भाषा संप्रेषित करता है। (घुमट-मिट्टी से बना एक वाद्य) तबले पर जैसे थाप होती है वैसे ही इस गोलाकार बने वाद्य पर थाप बजाई जाती है। स्त्री पात्र इस नाटक में प्रतीकात्मक रूप से बलात्कार, शोषण, विनयभंग, शारीरिक शोषण इन सबको एक ही पात्र अनेक रूपों में अभिनीत करके अपना संदेश भी देते जाता है। स्त्री सजती, सँवरती है, सुंदर भी दिखती है तो पुरुष को लगता है कि वह उसे आकर्षित करने के लिए ही यह सब करती है। और फिर वही भूखी नजर हर बार उस स्त्री का वस्त्रहरण करती-रहती है....कुछ-कुछ संदर्भों में यह नाटक 'निर्भया' की भी याद दिलाता है। खासकर जब लोह के बने रॉड का उपयोग होता है तब यह और उजागर होता है। स्त्री इस तरह से परेशान है कि वह मूक, स्तब्ध, विस्मित अलग-अलग संदर्भों में होती है। कलाकार अमोदी सोनप, शास्त्रीय नृत्यांगना है तो अपने किरदार को हावभाव, शरीर के अंगों का टेंशन इन सबसे अपना वक्तव्य स्पष्ट करती है। दिग्दर्शक केतन जाधव भी अभिनंदन के पात्र है।

सही मानो में कोंकणी नाट्य जगत में यह एक अलग ही प्रयोग है इसमें दो राय नहीं। जो मिलता है उसका पूरा उपभोग करना, नहीं मिलता तो जबरदस्ती करना और इस कदर बिगाड़ना की वह टूट जाए.... भोग, उपभोग, नष्ट करना यह आदमी की फितरत है जिसे नाटक में बखूबी अधोरेखित किया गया है।

नवंबर 2019 में कोंकणी विनोदी नाट्य स्पर्धा का आयोजन किया गया। मराठी के अखबार 'लोकमत' में मिलिंद म्हाडगुत मराठी और कोंकणी नाटकों के बारे में रसास्वादन देते रहते हैं। 'फॅमिली एक्सप्रेस' के बारे में उन्होंने 13 नवंबर, 2019 को अपना लेख लिखते हुए, इस नाटक को 'मनोरंजन के साथ साथ अंतर्मुख करने वाला' माना है। नाटक का कथानक धरमली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर घटित होता है। चार व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए स्टेशन पर आए हैं- पीटर कॅसिनो में हारकर जान देना चाहता है... रिया प्रेम में फँसने के कारण आत्महत्या करना चाहती है, वरिष्ठ नागरिक पंचांग और सुलोचना की कहानी कुछ और ही है। इन चारों के बीच में चाय वाला एक जुडने वाली कड़ी के रूप में अपना कार्य करता है। "जीवन सुंदर है ही पर जीवन की तरफ देखने की दृष्टि भी सुंदर होनी चाहिए का संदेश देने वाला ये नाटक, कोंकणी रंगमंच की नई दास्तान सुनाता है।"

कुल मिलाकर कोंकणी नाटक को अभी भी बहुत विषयों पर अपने नाट्य के कथ्य बनाने का

काम करना बाकी है। बंगाली और मराठी नाटकों की तुलना में अभी बहुत लंबी यात्रा तय करना बाकी है।

तियात्र

कोंकणी रंगमंच में नाटक और तियात्र अपने-अपने क्षेत्र में कोंकणी रंगमंच और तियात्र अकादमी ऑफ गोवा (टी.ए.जी)Aponn-'हम' गोवा के लोगों की सामाजिक समस्या अर्थात् बाहर वालों का गोवा पर अतिक्रमण और समाज में फल-फूल रहा जातिवाद इन दोनों के बारे में ये तियात्र अच्छा विश्लेषण कर रहा है। गोवा में ओ. बी. सी. में नाम बदलकर इस जाति में आने वाले बड़ी संख्या में हैं। पास के राज्य के आने वाले ये लोग गोवा में ओ. बी. सी. की सब सुविधाएँ ले रहे हैं जिसका बहुत बड़ा रैकेट चल रहा है इसे इस तियात्र में दर्शाया गया है।

दूसरा चरित्र मुंबई में तीस साल रहने के बाद गोवा में पुर्तगाली पासपोर्ट बनवाने गोवा वापस आता है तब उसे पता चलता है कि उसके नाम से कोई और माइग्रेंट उसे बहुत पहले ले चुका है जो कि पास के राज्य से आया हुआ होता है। गोवावासी जो मुंबई में तीस सालों से रह रहा है वह कभी गोवा आया ही नहीं। किसी दूसरे किस्से में उसकी जमीन भी किसी दिल्ली की पार्टी को बेच दी गई है। ऐसे बहुत सारे गोवन्स इकठ्ठे होकर अपने लिए न्याय माँगने खड़े होते हैं। गोवावासी जब बाहर के देशों में काम करने जाते हैं तो हिलमिलकर रहते हैं जबकि गोवा में आने वाले स्थानांतरित लोग यहाँ आकर धौंस जमाने लगते हैं। इसी समस्या को तियात्र में उजागर किया गया है। गोवावासियों के सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न रखकर ये तियात्र सोचने पर मजबूर करता है। दूसरा तियात्र कॉमेडी के रूप में है- अर्थात् राजा खा रहा है....मुर्गा देख रहा है.... इसी तियात्र में कब्र खोदने वाले के चरित्र को उकेरा गया है। जिसे कोंकणी भाषा में 'पेदो' कहा जाता है। भगवान में विश्वास रखने वाला ये पेदो निष्ठापूर्वक अपना कब्र खोदने का काम करता रहता है। उसके परिवार में एक बेटा और एक बेटी है। बेटी को अपने बाप के काम से कोई शिकायत नहीं पर बेटे को ये काम बिल्कुल पसंद नहीं। इनके पड़ोस में एक परिवार रहता है। इन दो परिवारों में जो तनाव और कॉमेडी साथ-साथ चलता है जिससे हँसते-हँसते पेट में बल पड़ते हैं। समाज में कब्र खोदने वाले के काम को उसका मान-सम्मान दिलाने की इस पेशकश को सराहा जा रहा है। मृत्यु के बाद हर मरने वाले को या तो श्मशान जाना है या फिर कब्रिस्तान। तो फिर उनको समाज का हिस्सा मानना ही चाहिए।

तियात्र की एक खासियत यह भी है कि वह समसामयिक प्रसंग और समस्या पर अपनी कहानी को बुनते हैं। 'हम' तियात्र को ही देखें तो ओ. बी. सी. के समाज में स्थानांतरितों की समस्या ऐसी पनपी कि भंडारी समाज में सोलह हजार लोग परजातीय और परप्रांतीय हैं। (रविवार, 03 नवंबर 2019, 'तरूण भारत') यह बात उनके समाज अध्यक्ष अशोक नाईक खुद स्वीकार करते हैं। यहाँ पर ध्यान रखने योग्य बात यह है कि समाज में जो घटनाएँ हो रही है उन्हें तियात्र तुरंत अपना विषय बना लेते हैं। वैसे तो रंगमंच का काम यही है कि समाज को आईना दिखाएँ। तियात्र इस बात में कुछ ज्यादा ही संवेदनशील दिखाई देता है। गोवा में परप्रांतीय लोगों की समस्या कुछ अधिक ही ज्वलंत बनती जा रही है।

उपन्यास

सन् 2019 में कोंकणी उपन्यास जगत में सन्नाटा ही रहा। खैर आगे चलकर दूर होगा, यही आशा कर सकते हैं।

लोककला

लोककला के संदर्भ में 'सरस्वती कला मंडल' फोंडे शहर की संस्था ने अपने पच्चीस साल पूरे करने के उपलक्ष में जो नया मार्ग अपनाया है उससे लोककला का संवर्धन करना आसान होगा। लोकनाट्य के क्षेत्र में इन्होंने एक प्रयोग किया है।

हर लोकनृत्य के बाद विशेषज्ञों का मार्गदर्शन लेने के लिए चर्चा सत्र का आयोजन किया गया, जिससे कलाकार, अपनी कला का संवर्धन बेहतर रूप से कर सकें। चर्चा और मार्गदर्शन के द्वारा लोककला के स्तर को बढ़ाने में मदद मिलेगी, इसमें कोई दो राय नहीं। कला और संस्कृति मंडल के मंत्री गोविंद गावडे और पार्षदों ने मिलकर वरिष्ठ और अनुभवी कलाकारों का सम्मान किया। उनके समय में कोई साधन-सुविधा न होने के बावजूद इन्होंने अपनी कला को आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाया। इतने बड़े सांस्कृतिक, सामाजिक योगदान के लिए लोककला

हमेशा उनकी ऋणी रहेगी। पंद्रह फरवरी, 2019 के 'भांगर भूंय' में इसकी जानकारी, लोक कलाकार कमलाकर म्हाकळशी ने सुंदर लेख के द्वारा अपने गांव की लोककला के प्रस्तुतिकरण का ब्योरा सब तक पहुँचाया। जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। हमारी लोककलाएँ हमारे जीवन की थाती हैं उन्हें संभालना, संवारना हम सबकी जिम्मेदारी है। 'जागोर' नामक लोकनृत्य के लिए 'गोवा जागोर एसोसियेशन' द्वारा, कार्यशाला का आयोजन किया गया। गोवा के कला और संस्कृति विभाग ने भी इनसे हाथ मिलाकर इस आयोजन को सफल बनाया। इस लोकनृत्य के वरिष्ठ कलाकारों को पुरस्कार देने का काम भी किया जाता है।

गोवा में सरकार होली और कार्निवल के समय चित्ररथों की स्पर्धा का आयोजन करवाती है। गोवा के हरएक जिले से लोककला संस्था इसमें हिस्सा लेती है पर प्रस्तुतिकरण के बाद उस पर कोई चर्चा-विचारणा होती ही नहीं तो उसके स्तर के बारे में सोचा ही नहीं जाता। लोककला के जानकार कमलाकर दत्ताराम म्हाळशी जो काणकोण में रहते हैं- उन्हें लगता है कि सरकारी आयोजन में प्रस्तुतिकरण का स्तर गिरता जा रहा है। (12 अप्रैल, 2019, 'भांगर भूंय') लोककला के जानकार विनायक खेडेकार, डॉ.पांडुरंग फळदेसाय, डॉ. नंदकुमार कामत, प्रो. श्याम वेरेंकार, डॉ. जयंती नायक, अजित पैंगीणकार, महेंद्र फळदेसाय, लाडू पवार, ज्ञानेश्वर नायक, राजेंद्र केरकार, पौर्णिमा केरकार जैसे विशेषज्ञों ने समय-समय पर इस बारे में सरकार को अवगत कराया है। इन लोगों ने लोक कलाकार, परीक्षक, प्रस्तुतकर्ता सबसे इस बारे में खुलकर चर्चा की है। पर विशेषज्ञों को लगता है कि सरकारी आयोजन में आज का युवावर्ग हिस्सा नहीं लेता। गाना, बजाना, नृत्य करना इसका सामंजस्य होता है द्रष्टव्य नहीं होता। गोवा सरकार के संस्कृति मंत्री गोविंद गावडे खुद अच्छे लोक कलाकार हैं तो भविष्य में कुछ अच्छा होने की आशा रख सकते हैं।

डॉ. जयंती नायक ने इस साल लोक-साहित्य के अंतर्गत 'कंथा वर्तू राजाची रे' शीर्षक के अंतर्गत तीन गीत कहानियों को प्रस्तुत किया है। संकलन और संपादन करके इन्होंने अपनी कोंकणी साहित्य यात्रा को समृद्ध बनाया है। वैसे तो इन्होंने कोंकणी लोकवेद के अंतर्गत इतना कार्य किया है जो अपने आप में ही एक मिसाल है। कोंकणी लोकवेद को इतना समृद्ध करने वाली डॉ. जयंती नायक गीत कहानियों द्वारा एक नया आयाम बना रही हैं।

इस पुस्तक को 'गोवा अकादमी' ने अनुदान दिया है। उस समय के अकादमी के अध्यक्ष स्व. सुरेश गुंडू आमोणकार सर ने प्रस्तावना के रूप में लिखा है-

भावार्थ- अध्ययन करने वालों के लिए ये कहानियाँ समाज अध्ययन के रूप में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी। काल प्रवाह में जो खो जाता है उसे संजोने हेतु कोंकणी लोकवेद के लिए गीतों और संकलनों की और आवश्यकता है।

कोंकणी लोकवेद क्षेत्र में एक नया आयाम तय करने वाली डॉ. जयंती नायक का अभिनंदन। वैसे भी लोकवेद की गीत कहानियों द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक और नृवंशशास्त्री अध्ययन करना आसान हो जाता है। आशा है आने वाली पीढ़ी इस पर और अनुसंधान करने की कोशिश जरूर करेगी।

समीक्षा-संदर्भ ग्रंथ

रायटर और फायटर रविंद्र केळकार द्वारा एक संदर्भ ग्रंथ में कुल 14 लेखों का संपादन किया गया है। डॉ. गुणाजी देसाय और डॉ. हनुमंत चोपडेकार के संपादन में इस संदर्भ ग्रंथ को तैयार किया गया है। दोनों संपादक गोवा की पार्वतीबाई चौगुले महाविद्यालय के कोंकणी विभाग में लेक्चरर हैं। वैसे इस पुस्तक का प्रकाशन तो 2012 में हो चुका है। चूँकि डॉ. हनुमंत चोपडेकार ने कोंकणी वर्तमान पत्र भांगरभूंय में (10 मार्च, 2019) अपनी संपादित पुस्तक की समीक्षा की है अत: उस लेख के संदर्भ में इस साल इसे शामिल करना आवश्यक हो जाता है।

डॉ. हनुमंत के विचार में प्रस्तुत पुस्तक द्वारा कोंकणी समीक्षा के क्षेत्र में एक नया वातायन तैयार करने की कोशिश की है। कोंकणी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले स्व. रविंद्र जी के व्यक्तित्व और पूरे कृतित्व को न्याय देने का प्रयास किया गया है।

संजीव वेर्णेकार कोंकणी साहित्य में कवि, विचारक एवं समीक्षक के रूप में प्रसिद्ध हैं। सन्

2019 में उनकी जो कृति प्रकाशित हुई है। उसमें कोंकणी भाषा की रचना यात्रा को उनके ऐतिहासिक संदर्भों में देखने की कोशिश की गई है। संजीव जी ने उन ऐतिहासिक संदर्भों को खुद जिया है, उन धागों को पिरोकर उसे एक कालानुक्रम में बाँधकर कोंकणी भाषा के इतिहास को जिसे सन् 1978 से लेखक खुद देखते रहें हैं उन आंदोलनों में वे हिस्सा ले चुके हैं 'कोंकणी राजभाषा किस तरह बनी?' मुंबई, कर्नाटक, कोच्चि में जहाँ-जहाँ कोंकणी भाषा का इतिहास है वहाँ पर खुद जाकर उन्होंने शोध करके, तथ्यों को ही बयां करने की कोशिश की है। साथ में दूसरे कोंकणी चिंतकों को भी वहाँ स्थान दिया गया है। भाषा के संवर्धन के लिए यह आवश्यक है।

आत्मकथा

कोंकणी भाषा में इस साल आत्मकथाएँ प्रकाशित हो रही हैं यह पहल अच्छी ही मानी जाएगी।

'माती आनी मलब' अर्थात् मिट्टी और आकाश। के कथाकार महाबळेश्वर सैल हैं।

इस साल अर्थात् 2019 में बोनाव्हेंतूर पियात्रो जिन्होंने 'वैचारिक लेखन' में Zannvayechi zhor अर्थात् ज्ञान का खजाना पुस्तक लिखी। उन्होंने ही आत्मकथा लिखकर कोंकणी साहित्य को समृद्ध किया है। पर दुर्भाग्य ऐसा कि 14 जुलाई को जब उनका 80 साल का जन्मदिन मननेवाला था कि उसी दिन उनकी आत्मकथा-Vattliechea Avazan (रोमी लिपी में) 'वाटलेच्या आवाजान' का प्रकाशन होने वाला था पर 06 जुलाई को ही कोंकणी का यह लेखक इस दुनिया से चल बसा। उनको श्रद्धांजलि देते हुए 13 जुलाई को 'भांगर भूंय' में विन्सी क्वाद्रूश का लेख प्रकाशित हुआ था। लेखक इसे आत्मकथा कहते हैं।

अपने लेख में उन्होंने बोनाव्हेंतूर के साहित्यिक योगदान के बारे में लेखाजोखा लेने का प्रयत्न किया है। कोंकणी की रोमी लिपि में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले ने आत्मकथा के साथ-साथ 17 और पुस्तकें लिखी हैं जिनमें 13 उपन्यास, 1 बाल साहित्य, 1 कहानी संग्रह, 1 उपन्यास धारावाहिक रूप में, 1 उपन्यास कन्नड लिपि की कोंकणी में अनूदित हुआ है। अपने साहित्य के लिए उनको कोंकणी भाषा मंडल, गोवा कला अकादमी, थॉमस स्टीफंस कोंकणी केंद्र, दाल्गाद कोंकणी अकादमी, वावराड्यांची इश्ट, गोवा सरकार के सांस्कृतिक, संस्थाओं से पुरस्कार प्राप्त हुए थे। इनका पूरा साहित्य जब रोमी कोंकणी लिपि से देवनागरी कोंकणी में प्रकाशित होगा तभी इनकी महत्ता समझो जाएगी। इसी आशा के साथ कि भविष्य में बोनाव्हेंतूर की साहित्यिक कृतियाँ देवनागरी लिपि की कोंकणी में प्रकाशित होगी, तभी सही मायनों में श्रद्धांजलि होगी। जिंदगीभर जो अपने आपको गरीब रखकर कोंकणी साहित्य को समृद्ध करता रहा, ऐसे साहित्यकार को हमारा शत्-शत् नमन।

'भांगराली जीण' अर्थात् स्वर्णिम जिंदगी, लेखक माणिकराव गावणेंकार द्वारा लिखित आत्मकथा अपने जीवन में झाँककर अपने अनुभवों को अपने सामाजिक, ऐतिहासिक संदर्भों में व्यक्त करते हैं।

वैचारिक

'ऊर्बा' व्यक्ति विशेष- कोंकणी कहानीकार एन.शिवदास पर 105 लोगों ने लेख लिखे हैं। सुफला गायतोंडे संपादक हैं। इस व्यक्ति विशेष अंक पर प्रतिक्रिया के रूप में लिखते हुए (भांगर भूंय 23 मार्च 2019) अरविंद काकोडकार लिखते हैं कि-

भावार्थ- कुछ लेखों को पढ़ते हुए लगा कि संपादक सुफला जी बार-बार फोन करती थी इसलिए लेख लिखे गए हैं.....सबसे हटकर जो लेख है उसे अभयकुमार वेलींगकार का था जिसमें एन् शिवदास के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं को लिखा गया था।

वैसे भी कोंकणी साहित्य में समीक्षा आलोचना के बारे में अभी भी परस्पर प्रशंसा का रूप ही चलता है। मैं तुम्हारी पीठ ठोकता हूँ तुम मेरी पीठ थपथपाने वाला रवैया ही चल रहा है.....बोनाव्हेंतूर पियात्रे कोंकणी साहित्य में जाना माना नाम है। लैटिन भाषा में इनके नाम का अर्थ है भाग्यशाली। सही मायनों में ये कोंकणी लेखक कोंकणी साहित्य के लिए भाग्यशाली ही है। इनका साहित्य लेखन रोमी लिपि की कोंकणी में प्रकाशित है। सत्रह उपन्यास, पत्रकारिता, संपादन, तियात्र, आकाशवाणी पर भी अलग-अलग कार्यक्रम कर चुके हैं। सेक्सोफोन, क्लेरोनेट, रेबेक अर्थात् वायलिन बजाना भी इस बहुमुखी साहित्यकार को आता है। मुंबई में इनका संगीत ऑरकेस्ट्रा भी है।

इन्होंने अपना पहला उपन्यास 1958 में प्रकाशित किया, शीर्षक था 'शैतान का कारस्तान' और 2013 में प्रकाशित हुई 'शृंखला'। पिछले पचपन सालों से कोंकणी साहित्य में जो लेखक कार्यरत हैं उन्हें अब तक उनके योगदान के लिए सिर्फ दालगाद कोंकणी अकादमी ने सराहा है। गोवा कोंकणी अकादमी अभी भी सोचते ही रह गई है। इस साल यह लेखक अपनी उम्र के 76 वर्ष में भी उतने ही कार्यरत हैं और Zannvayechi Zhor अर्थात् 'ज्ञान का खजाना' पुस्तक रूप में प्रकाशित होता है। सही मायनों में यह पुस्तक ज्ञान का भंडार है।

इसमें कुल मिलाकर सौ लेख हैं, जिनके विषय विविधता से भरपूर हैं। लेखक ने ज्ञान की सेंच्युरी में विज्ञान, टेक्नोलॉजी, इतिहास, तत्वज्ञान, प्राणी प्रें, व्यक्ति, समाज आयामों में अपना ज्ञान बाँटने का सफल प्रयास किया है, जैसे मनुष्य के मरने के बाद भी क्या उसके बाल बढ़ सकते हैं? पत्थर युग किसका युग था? साईकल का उपयोग कब शुरू हुआ? टेलिफोन का जन्म, मोनालिसा का मूल चित्र आज कहाँ पर है? पिसा का मिनार झुक रहा है पर टूटता क्यों नहीं? कार्टून्स कब शुरू हुए? पक्षी कैसे सुन पाते हैं? पेंसिल कब बनाई गई? आईस्क्रीम का जन्म कब हुआ? क्यों लक्कड़बग्घा पूरा समय पेड़ को कुतरता रहता है? सर्कस का प्रारंभ कैसे हुआ? आदि।

मनुष्य की कौतुहलता को बढ़ाने वाले ये लेख ज्ञान की गंगा बहाने में भी सफल ही हुए हैं। लेखक को बधाई।

पत्रकार राजू नायक कोंकणी, मराठी दोनों भाषाओं में लिखते रहते हैं। पर्यावरण उनका प्रिय विषय है। गोवा में मायनिंग उद्योग ने पर्यावरण को किस तरह नष्ट किया है इस पर ये अपनी पत्रकारिता में सफलता से लिखते ही रहे हैं। इस साल तीन पुस्तकों को प्रकाशित कर रहे हैं। गोवा में खदान की समस्या को उजागर करने वालों में राजू नायक एक महत्वपूर्ण नाम है। पत्रकार, पर्यावरण प्रेमी, गोवा कर्णाटक की म्हादय नदी की पानी की समस्या उसका चिंतन, उसका राजकारण विश्लेषित करने में इन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सुशांता दत्ता नायक द्वारा रचित यात्रा वर्णन की पुस्तक को 'बिंब प्रकाशन' ने प्रकाशित किया है। देश में अलग-अलग छब्बीस जगहों पर की गई यात्रा का वर्णन किया गया है। सितंबर के महीने में, मडगाँव के रवींद्र भवन में इस पुस्तक का प्रकाशन समारोह मनाया गया। 'धर्तरे वयलो सर्ग' अर्थात् धरती पर का स्वर्ग पुस्तक में सुशांता ने यात्रा वर्णन के अनुभवों को बड़ी गहराई से चित्रित करने की सफल कोशिश की है। उमा महेश राव और प्रो. माधव कामत ने सुशांता की पुस्तक पर अपने विचार प्रकट किए और प्रकाशन संस्था की ओर से दिलीप बोरकार ने अपना मंतव्य दिया। प्रस्तुत पुस्तक से कोंकणी वैचारिक साहित्य में इजाफा भी हुआ है।

कोंकणी निबंध साहित्य में मुकेश थळी एक जाना माना नाम है। आज तक उनके लिखित चार निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं यह पाँचवा निबंध संग्रह है जिसका शीर्षक है 'रंगतरंग'। प्रस्तुत पुस्तक में विषयों की विविधता, आशय की घनता, गहन विचार, कोंकणी भाषा की मिठास के कारण यह निबंध संग्रह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

इसी पुस्तक का रसास्वादन करते हुए 03 नवंबर 2019, भांगर भूंय अखबार में स्नेहा सबनीस ने ले. मुकेश थली से प्रश्नोत्तर करते हुए 'रंगतरंग' पुस्तक के साथ-साथ अपनी रचना यात्रा के बारे में भी प्रकाश डाला है। परिपक्वता के साथ-साथ अपनी निरीक्षण शक्ति पैनी होने का एहसास लेखक को है। यह बात उनके निबंध संग्रहों से भी स्पष्ट होती है। इनका पहला निबंध संग्रह सन् 1995 में आया और पाँचवा 2019 में। अर्थात् 24 वर्षों का लंबा समय व्यतीत करने के बाद आज लेखक मुकेश थली अपनी कलम की धार पैनी कर पाएँ हैं इसमें कोई दो राय नहीं। लेखक, पत्रकार, अनुवादक भी होने के कारण अपना शब्द भंडार बढ़ाने के लिए अलग-अलग भाषाओं के शब्द कोश, व्युत्पत्ति कोश, समांतर कोश, पर्यायवाची कोश, वाक्य प्रचार कोश का उपयोग करते रहते हैं। सही मायनों में इससे भाषा समृद्ध होती है।

किसी भाषा की समृद्धि के लिए शब्द कोश, समांतर कोश, पर्यायवाची कोश आदि बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। सन् 2006 से माइकल फर्नांडिस, जो मुंबई में बेकरी का काम करते हैं उन्हें लगा कि कोंकणी भाषा के लिए पर्यायवाची कोश का संकलन होना

चाहिए। मिड-डे अखबार में अंजु मसकरी का लेख छपा था जिससे इस कोश की शुरुआत हुई। ये बात अंग्रेजी अखबार द नवहिंदी टाइम्स 27 अक्टूबर पैनोरमा फ्रेराडिक नोरोन्हा के लेख में स्पष्ट होती है। कोंकणी रोमी लिपि में ये पर्यायवाची कोश जिसे देलगादो कोंकणी आकदमी ने प्रकाशित किया है। इस शब्दकोश का रूप बनाने में प्रताप नायक-एस. जे. प्रेमानंद लोटलीकर प्रो. एस. एम. बोर्जेस, संपादक जैसे कोंकणी महारथियों ने योगदान दिया है। संपादक विंसी क्वाद्रोस के कोश में कोंकणी भाषा के एक लाख शब्द है। कोंकणी भाषा के लिए अथाह परिश्रम करने वालों को सलाम। साथ-साथ दालगाद कोंकणी अकादमी के अध्यक्ष टोमेजिन्हो कार्डोजो भी अभिनंदन के पात्र हैं।

गौरतलब है कि केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक एवं अधिकारी भी धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित 22 भाषाओं का कोश 'भारतीय भाषा कोश' भी इसी साल प्रकाशित हुआ है जिससे भारतीय भाषाओं में आदान-प्रदान बढ़ेगा। तुलनात्मक अध्ययन भी कम से कम शब्दों का ही क्यों न हो, हो तो सकेगा। भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञ भी धन्यवाद के पात्र हैं।

सन् 2019 में 'प्राचीन कोंकणी भारत' और 'महाभारत' को भी प्रकाशित किया जा रहा है। इसका लोकार्पण 06 नवंबर 2019 को पणजी के संस्कृति भवन में, अस्मिताय प्रतिष्ठान द्वारा किया गया। प्राचीन कोंकणी लिखित स्वरूप में सन् 1600 के आसपास से मिलने लगता है। जिनके रचयिता पुर्तगाली मिशनरी हैं। गोवा के लोगों ने इन रचनाओं को पुर्तगाली मिशनरियों को सुनाई और उन्होंने इसे कोंकणी की रोमी लिपि में लिपिबद्ध किया। इसमें महाभारत, रामायण और अन्य कहानियाँ हैं। आज भी पुर्तगाली के ब्रागा शहर के ग्रंथालय में कोडेस 771-772 में इन्हें देखा जा सकता है। प्राचीन कोंकणी कृतियों को रचने वाले पुर्तगाली और अन्य विदेशी मिशनरी ही है। यह सब रोमी लिपि में मिलता है। हालाँकि कोंकणी भाषा की अधिकृत लिपि देवनागरी को माना गया है पर यह भी ऐतिहासिक सत्य है कि शुरुआत के समय में कोंकणी मराठी भाषा की बोली ही थी पर जब मिशनरियों ने लिखना शुरू किया तो रोमी लिपि में ही लिखा। वैसे तो यह भी ऐतिहासिक सच है कि हिंदी भाषा का पहला व्याकरण लिखने वाले विदेशी ही थे। आहिस्ता-आहिस्ता कोंकणी बोली भाषा का रूप धारण करने लगी। आज वह स्वतंत्र भाषा रूप में अपना विकास कर रही है। प्रो. रॉकी व मिरांद जिन्होंने सोलहवीं शताब्दी के 'प्राचीन कोंकणी भारत' और 'द ओल्ड कोंकणी भारत' को देवनागरी कोंकणी में ले आएँ हैं, उनके मत से कोंकणी 'महाभारत' में शुरुआत में नाम मिलता नहीं है पर 'भारत' नाम से उल्लेख मिलता है। उसमें कुल दस पर्वों के नाम मिलते हैं- आदिपर्व, सभापर्व, अरण्यपर्व, विराटपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, गदापर्व और अश्वमेधपर्व। इसके अलावा 'भीष्मपर्व' की अपूर्ण प्रति मिलती है। कोडेक्स 771 इसमें मुख्य कृति 'रामायण' है जिसमें 268 पन्ने हैं। महाभारत के 'आदिपर्व' के 162 पन्ने हैं। 'अश्वमेधपर्व' की एक अपूर्ण कहानी (हंसध्वज की कहानी) भी है। प्रो. मिरांद आगे यह भी बताते हैं कि 'कोंकणी भारत' में हनुमान का पात्र अलग-अलग कहानियों में अलग-अलग जगह पर दिखाई देता है। एक और बात है कि महाभारत में हनुमान का पात्र सिर्फ एक बार दिखाई देता है जब भीम और हनुमान मिलते हैं। 'कोंकणी भारत' में महाभारत की कहानियाँ तो हैं पर उनका क्रम बदला हुआ है। इस तरह से भारतीय साहित्य में 'कोंकणी भारत' अपनी अलग पहचान लेकर आता है। कोंकणी साहित्य 2019 में प्राचीन साहित्य का भी समावेश और स्वागत है।

कोंकणी साहित्य के कथा संसार में दामोदर मावजो बहुत चर्चित नाम है। 'कार्मेलीन' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाले इस लेखक ने अपनी उम्र के 75 साल पूरे किए हैं। इस साल उन्होंने अंग्रेजी में 'इंक ऑफ डिसेंट' नाम से अपनी पहली पुस्तक लिखी है। किसी भी देश की लोकशाही में मतभेद, असहमति, विरोध, निषेधाधिकार का अपना महत्व है। तलवार से लेखनी कितनी मजबूत होती है इस विचार के साथ लेखक दामोदर मावजो प्रस्तुत होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में प्रस्तावना गणेश एन. देवी ने लिखी है और लोकार्पण के समय इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने ऐट थ्रेट्स टू फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन इन

मॉडर्न इंडिया इस विषय पर अपना लेक्चर दिया। लेखक और समीक्षक डॉ. किरन बुडकुले ने सम्मानीय अतिथि के रूप में प्रस्तुत पुस्तक के ऊपर अपने विचार प्रकट किए।

अनुवाद और लिप्यंतरण

'विमुक्ता' मूलतः तेलुगु भाषा का कहानी संग्रह है, मूल लेखिका बोल्गा हैं, लेखक दामोदर मावजो ने इसका अनुवाद किया है। दामोदर मावजो जिन्होंने अनुवाद किया है उनका कहना है कि इस कहानी संग्रह में सीता पर आधारित पाँच कहानियाँ हैं जो सामाजिक सरोकारों को चित्रित करती हैं।

कन्नड भाषा से कोंकणी भाषा में अनुवाद करने वालों में रमेश लाड एक महत्वपूर्ण नाम है। बहुत सारी कन्नड पुस्तकों का इन्होंने कोंकणी भाषा में अनुवाद किया है। दोनों भाषाओं के जानकार रमेश लाड ने इस बार विवेक शानबाग की कन्नड पुस्तक का कोंकणी अनुवाद 'घाचर घोचर' नाम से किया है। इसमें सामान्य मनुष्य, और उसके परिवार की कहानी है। घर धन में आते ही मनुष्य के जीवन में कैसे-कैसे बदलाव आते हैं, उसके जीवन स्तर में जो परिवर्तन आते हैं उसे बखूबी चित्रित किया गया है। अनुवाद से भाषाएँ समृद्ध ही होती हैं। अनुवादकों को बधाई।

कोंकणी के वरिष्ठ कवि, स्वतंत्रता सेनानी नागेश करमली जी ने 'खलील जिब्रान' पुस्तक का अनुवाद कोंकणी भाषा में किया है। जिसका लोकार्पण पाँच फरवरी 2019 को पणजी के कला और संस्कृति भवन में हुआ। नागेश जी ने कोंकणी काव्य को चार काव्य संग्रह दिए हैं। साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी उन्हें मिल चुका है। अब अनुवाद विधा में भी कोंकणी साहित्य को वे समृद्ध ही कर रहे हैं।

प्रस्तुत अनूदित पुस्तक में वरिष्ठ नागेश जी ने 'भूंयदेव' -द अर्थ गॉड 'वज्रां आनी मोतयाँ' सैंड एंड फॉर्म 'अग्रदूत' फोररनर- 'जिब्रानाच्या दिश्टाव्यो काणयो' (दो भागों में)- द वॉन्डरर एंड द मैडमैन- इन कुछ चुनी हुई रचनाओं को इसमें सम्मिलित किया गया है।

कोंकणी साहित्य में अनुवाद को लेकर इस साल बहुत चर्चाएँ हो रही है। गोवा कोंकणी अकादमी में अनुवाद, संबंध कोई अनुदान की योजना (स्कीम) में है ही नहीं। अर्थात् जैसे साहित्यिक विधाओं में अनुदान दिया जाता है पर अनुवाद की पुस्तकों को गोवा कोंकणी अकादमी अनुदान देती ही नहीं है। इस बात को लेकर कोंकणी अखबार 'भांगर भूंय' में दिनेश मणेरकार ने 29 अक्तूबर, 2019 को एक विचारमंथन के रूप में अनुवाद प्रक्रिया पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। साहित्य में अनुवाद भी साहित्यिक विधा है। लेखक ने अनुवाद का साहित्यिक मूल्य दिखाते हुए इसकी आर्थिक समस्याओं को भी उजागर किया है जैसे-

अनुवाद करते समय

- मूल लेखक की अनुमति
- अनुवादक की खोज
- अनुवादक को मानदेय
- अनुदित पुस्तक की छपाई/प्रकाशन
- अनुदित पुस्तक का प्रोमोशन और मार्केटिंग

कभी-कभी मूल लेखक अपनी रॉयल्टी भी माँगता है.... इन बातों को लेकर अनुवाद विधा को समृद्ध बनाने के उपाय भी इस लेख में लेखक सुझाते हैं। 'गॉस्पॅल्स ऑफ रामकृष्ण' अनुवादक माणिकराव गावणें- इस पुस्तक का लोकार्पण 22 नवंबर 2019 को किया गया।

लिप्यंतरण के अंतर्गत ले वल्ली क्वाड्रस कन्नड लिपि से देवनागरी लिपि में दो पुस्तकों को प्रकाशित कर रहे हैं। 'बंध' कहानी संग्रह में कुल मिलाकर 14 कहानियाँ हैं जो 2006 से लेकर 2016 तक कन्नड लिपि की कोंकणी में रची गई कहानियों का संग्रह है जिसका 2019 में कोंकणी की देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण स्वयं लेखक के द्वारा किया गया हैं। कन्नड लिपि की कोंकणी लिपि की इस बोली में प्रादेशिक शब्द उसका उच्चारण, उसका सामाजिक संदर्भ देखते हुए 'सोसिओ लिंगविस्टिक स्टडी के लिए ऐसे कहानी संग्रह बहुत उपयोगी होगें, इसमें कोई दो राय नहीं। गोवा प्रदेश की कोंकणी लिपि के लिए ऐसा साहित्य और उपयोगी हो इसलिए और ऐसे प्रयत्न होने चाहिए। कोंकणी भाषा और साहित्य के लिए नए वातायन आवश्यक है। इति शुभम्.....।

'मुग्दनातल्लीं गितां' वैसे तो गीतों का संग्रह है पर मूल कन्नड से लिप्यंतरण होने के कारण इसे अनुवाद और लिप्यंतरण में रखा गया है। इस संग्रह में

सिर्फ कविता विश्लेषण ही नहीं है पर इन कविताओं के बारे में मेरा अपना मंतव्य है। इसमें मेरा पक्षपाती मंतव्य भी हो सकता है कारण हर मनुष्य की, हर वस्तु की तरफ देखने की एक खास वजह होती है और उसी के अनुरूप उसकी विवेचन या विश्लेषण की दृष्टि आकार लेती है। वह विश्व हरेक का अपना होता है। वल्ली क्वाड्रस अभिनंदन के पात्र हैं। भविष्य में ऐसी और कृतियाँ कोंकणी साहित्य को मिलती रहे यही कामना करती हूँ।

कोंकणी बाल साहित्य

'भुरग्यांची पांयजणां' अर्थात् बच्चों की पाजेब, (पायल) का प्रकाशन जनवरी 2019 में हुआ। वासंती काकोडे की यह दूसरी पुस्तक है। पच्चीस कहानियों के इस कहानी संग्रह में बच्चों के लिए सरल शब्दों में उदाहरण- देकर अपने विचार व्यक्त करने में लेखिका सफल हुई हैं। कोंकणी कवयित्री नयना आडारकार ने इस पुस्तक में अपनी प्रस्तावना लिखी है। चित्रों को डॉ. वरूण पै काकोडे ने सजाया है। पिछले तीन सालों से गोवा में, कोंकणी भाषा मंडल और रवींद्र भवन मडगांव मिलकर बाल साहित्य परिषद् का आयोजन कर रहे हैं। इस साल भी 19 और 20 सितंबर, 2019 को आयोजन किया गया, जिसमें 720 शिक्षक, विद्यार्थी, लेखकों ने हिस्सा लिया। 'भांगर भूंय'-कोंकणी अखबार में- 29 सितंबर 2019, के अंक में कोंकणी शिक्षक सोनिया गडकार ने, पृ. 04 पर इस परिषद् की उपयोगिता पर लेख लिखा है। उनका मानना है कि ऐसे आयोजनों से विद्यार्थी और शिक्षकों को बाल-मानस का अध्ययन करने में आसानी होती है।

कोंकणी बाल साहित्य के विकास में इन आयोजनों से मदद होगी, इसमें कोई दो राय नहीं। इस साल कोंकणी बाल साहित्य में नयना आडारकार की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं 'कांटेकुंवर' और 'बटमोगरी' अनुक्रम से औषधीय वनस्पति और मोगरे के फूल। जाहिर है जब बच्चों के लिए रचना है तो कुंवर-कुंवरी, राजा-रानी एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनते हैं।

वैसे तो नयन आडारकार जी कोंकणी कवयित्री हैं। काव्य संग्रहों के साथ-साथ बच्चों की कहानियाँ भी लिखतीं रहतीं हैं। बच्चों के लिए सार्थक रचनाएँ लिखने के लिए उनका अभिनंदन।

इस साल अर्थात् 2019 का बाल साहित्य पुरस्कार राजश्री कारापूरकर को प्राप्त हुआ है। कोंकणी बाल-साहित्य में राजश्री बांदोडकर कारापूरकर एक ऐसी शिक्षिका है जो कॉलेज में भौतिक-शास्त्र पढ़ाती हैं। उनकी लिखी पुस्तक 'विज्ञानगोयी' भी बाल साहित्य में महत्वपूर्ण है। लेखिका की सबसे बड़ी बात यही है कि वे विज्ञान के विषयों को बाल सुलभ भाषा में प्रस्तुत करती हैं। इस साल इन्हें 'चिटकुल्या चिंकिचें विशाल विश्व' अर्थात्- छोटे से चिंकि का विशाल विश्व उक्त पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर द्वारा लेखिका को यह पुरस्कार 17 नवंबर, 2019 को मिलापोर, चेन्नई के बाल विद्या भवन में आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया।

डॉ. पी.एस.रामाणी को चिकित्सा विज्ञान में उनके ठोस योगदान के लिए उन्हें 'सारस्वत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 23 जुलाई 2019, को मुंबई में एक भव्य समारोह में गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत ने उनको यह पुरस्कार दिया।

कोंकणी सिनेमा

गोवा के महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में सिनेमा की पटकथा, काव्य लेखन, सिनेमा निर्माण, अभिनय, डॉक्युमेंटरी फिल्म, लघु सिनेमा, फोटोग्राफी, निर्देशन आदि के बारे में 15 और 16 मार्च 2019 दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'कोंकणी सिनेमा: एक दृष्टि, एक पहचान' विषय के अंतर्गत अलग-अलग महाविद्यालय से कोंकणी विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार रखें। सिनेमा का रसास्वादन करते हुए अभिनय, दिग्दर्शन, पटकथा लेखन, फोटोग्राफी, निर्माण प्रक्रिया पर प्रकाश डालने के हेतु को साकार करने के लिए कोंकणी सिनेमा 'नाचुया कुंपासार' अर्थात् आओ नृत्य करें नाम से सिनेमा प्रदर्शित किया गया। कोंकणी सिनेमा के दिग्दर्शक राजेंद्र तालक ने बीजभाषण दिया। कोंकणी नाटककार पुंडलीक नायक ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट किए। कोंकणी सिनेमा द्वारा कोंकणी भाषा के विकास को दिखाने का प्रयास किया गया। इस संगोष्ठी में जो प्रपत्र प्रस्तुत किए जाएँगे उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था भी कर

दी जाएगी जिससे विद्यार्थियों को जानकारी मिल सके।

ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले पद्मभूषण और स्वातंत्र्य सैनिक रविंद्र केलेकार के जीवन पर आधारित डॉक्युमेंट्री फिल्म बनाई गई है। इसकी निर्मिति ज्योति कुंकलकार ने की है। जिसका लोकार्पण भारत के भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी जी द्वारा किया गया। रविंद्र जी की जीवनी और साहित्य के बारे में जानकारी देना अब आसान हो जाएगा।

24 अप्रैल की तारीख कोंकणी सिनेमा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन कोंकणी भाषा की पहली फिल्म 'मोगाचो आंवडो' अर्थात्- प्यार की लालसा- रीलिज हुई थी। 24 अप्रैल को कोंकणी विश्व में 'कोंकणी सिनेमा डे' के नाम से मनाया जाता है और ब्रगांजा अल जेरी को कोंकणी फिल्म पितामह के नाम से याद किया जाता है। फिल्म निर्माता होने के साथ-साथ उन्होंने इस फिल्म में हीरो का रोल भी किया था।

कोंकणी सिनेमा की स्थिति-गति के लिए एक लेख ('लोकमत' के 25 अप्रैल के अंक) में मुक्त पत्रकार मिलिंद म्हाडगुत मराठी भाषा में लिखते हैं-

भावार्थ:.....गत कुछ सालों में कोंकणी सिनेमा ने अच्छा व्यवसाय किया है फिर भी, गोवा में अब भी कोंकणी फिल्मों की संस्कृति पनपती नज़र नहीं आती। इफ्फी के आने के पंद्रह सालों बाद भी कोंकणी फिल्मों का माहौल नहीं बन पाया।

कोंकणी सिनेमा निर्माण से लेकर वितरण तक की व्यवस्था को सुधारने की जरूरत है। वैसे भी सब भारतीय प्रादेशिक फिल्मों के सामने आवाह्न तो है ही। इस साल कोंकणी और मराठी में 'मिरांडा हाऊस' फिल्म प्रदर्शित हुई है। देखें क्या होता है? कोंकणी सिनेमा 'आमोरी' को राष्ट्रीय पुरस्कार जाहिर किया गया है। मराठी सिनेमा 'खरबस' को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। गोवा में मराठी सिनेमा भी निर्मित होते रहते हैं यह सराहनीय बात है। दोनों फिल्मों के दिग्दर्शक और कलाकार अधिकतम रूप से गोवावासी ही हैं। शायद इसीलिए गोवा के लिए ये पुरस्कार बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। 'आमोरी' फिल्म के दिग्दर्शक दिनेश भोसले का मानना है कि मेरी ढ़ाई साल की मेहनत रंग लाई है। पूरी टीम ने मिलकर हमारे सपने को साकार किया है। हमारे समय की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण और हमारे जलस्त्रोत हैं। इनको बचाए रखना हमारी जिम्मेवारी है। 'आमोरी' शब्द ही कोंकणी लोगों के लिए अर्थपूर्ण है। शाम की वह गोधूलि बेला है जब मंदिर की आरती और गिरजे की शाम की मेरी की मधुर प्रार्थना के स्वर घुल-मिल जाते हैं....जो मानव समाज के लिए कल्याणकारी है। उसी तरह फिल्म का संदेश भी पानी बचाना है, उसका संवर्धन ही एक उपाय है जो मानव समाज को बचा सकता है। दिग्दर्शक को लगता है कि अगर हम समय पर सचेत नहीं होते तो हम 'उजाले से अंधेरे की ओर जाएँगे।' आशा की जा सकती है कि कोंकणी फिल्में और बेहतरीन होती जाएँगी। 'बड़े अब्बू' कोंकणी सिनेमा को झारखंड में राष्ट्रीय चलचित्र महोत्सव में चार पुरस्कार मिले। इस फिल्म में गोवा के ट्रक ड्राइवर को और उसके परिवार के संघर्ष को दर्शाया गया है।

बैंड बजाकर अपना पेट पालने वालों के जीवन पर आधारित कोंकणी में 'द म्युजिशियन' सिनेमा अपनी राह बना रहा है। दुबई, अबुधाबी, शारजा और कतर में यह कोंकणी फिल्म प्रदर्शित हो चुकी है। इन शहरों में कोंकणी भाषा और सिनेमा को चाहने वाले बहुत हैं। प्रिंस जॅकोब जो कि कोंकणी तियात्र और सिनेमा के लिए बहुत जाना माना नाम है। इन शहरों में गोवावासी नौकरी करने जाते हैं तो अपने साथ-साथ अपनी कला का संवर्धन भी करते हैं। गोवा के मडगाँव शहर के रवींद्र भवन में इस सिनेमा को 13, 17 एवं 24 नवंबर को दिखाया गया। इसके बाद मेंग्लोर, उडुपी, इजरायल, लंदन, कनाडा में भी इसका प्रदर्शन होने वाला है। बैंड बाजे वालों के जीवन में, आज के जमाने में जो कठिनाइयाँ चल रही हैं उन्हें उजागर करने की कोशिश की गई है।

भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 2019, पचास साल का आयोजन जिसमें कोंकणी सिनेमा 2019 में विकासमान है। 'काजरो' अर्थात् एक विषैला बीज। विषैला इसलिए कि वह हरिजन है, अछूत है। जातिवाद का यह कलंक पता नहीं हमारे भारतीय समाज में कब तक रहेगा? हमारे समाज का यह विष

न जाने अब भी कितना जहर उगलेगा? काजरो 21 मुंबई फिल्म फेस्टीवल अक्तूबर 2019 में दिखाई गई। इस सिनेमा में तिलग्या की कहानी को दर्शाया गया है जो हरिजन है। गाँव में दशहरे का उत्सव मनाया जा रहा है। तिलग्या को उसमें शामिल होने से मना किया गया है क्योंकि उत्सव के समय ही उसकी पत्नी गोकुला का देहांत हो गया है। उसका मृत शरीर लेकर उसे गाँव के बाहर जाने को कहा जाता है।

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक प्रेमचंद रचित 'कफन' कहानी अपने सामाजिक संदर्भों में जितनी महत्वपूर्ण बनती है उतनी ही सार्थक 'काजरो' अर्थात् विषैला बीज की कहानी बनती है। जाति प्रथा का कलंक लेकर न जाने कितने 'तिलग्या' हमारे ही देश में, आज भी अपनी नर्क-यात्रा सहते होंगें? कानून जहाँ समानता का हक देता है वहाँ समाज उस हक को निगल जाता है। इसी विरोधाभास को दर्शाती यह फिल्म, कोंकणी सिनेमा का उज्ज्वल भविष्य जरूर बनेगी।

भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव- अर्थात् आई एफ एफ आई (IFFI) अपने पचास साल पूरे करने जा रहा है गोवा में इसका आयोजन पिछले सोलह सालों से हो रहा है। पत्रकार और फिल्म क्रिटिक इसका लेखा-जोखा ले रहे हैं। नवद्रिंत टाइम्स (17 नवंबर-2019) में सचिन शोट को लगता है कि आज भी इफ्फी डेलीगेट फ्रेंडली नहीं बन पाया। पिछले पंद्रह सालों के आयोजन से गोवा ने ज्यादा कुछ नहीं सीखा। डेलीगेटस को लंबी लाईनों में खड़े रहना पड़ता है। बेंगलूरू और कोच्चि के फिल्म महोत्सवों की तुलना में इफ्फी के आयोजन पर प्रश्न चिह्न उठाए जा रहे हैं।

अपने लेख में आगे फिल्म क्रिटिक अशोक राणे की बात बताते हैं- अतंरराष्ट्रीय फिल्मों के महोत्सवों के समीक्षक के रूप में जिन्होंने अपना नाम कमाया है वे पचास साल की इफ्फी यात्रा पर एक प्रदर्शनी बना रहे हैं। डी एफ एफ ने उन्हें यह जिम्मेवारी सौंपी हैं पर भारतीय लोगों की समस्या यह है कि हम डोक्युमेंटेशन में कमजोर हैं। इफ्फी की शुरुआत 1952 में हुई। बाद के दस वर्षों तक आयोजन ही नहीं हुआ। 1961 में फिर से शुरू हुआ। पर डी एफ एफ डायरेक्टरेट ऑफ फिल्म फेस्टिवल के पास 1952 का कोई ब्रोशर ही उपलब्ध नहीं है। कोई दस्तावेज भी किसी के पास उन्हें मिला नहीं है। किसी ने भी कलाकारों की कला, उनका इतिहास, उनका स्वतंत्र अस्तित्व उस पर सोचना जरूरी ही नहीं समझा! देखें. ... वास्तविक रूप में जब 20 नवंबर को परदा खुलता है तब क्या होता है....

कोंकणी सिनेमा के बेहतर भविष्य की कामना कोंकणी भाषा और साहित्य के विकास में निश्चित ही अपना योगदान देगा।

– 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को-द-गामा, गोवा-403802

❑❑❑

7

गुजराती साहित्य

डॉ. वर्षा सोलंकी

एक बात लोगों के मन में सहज ही बैठ गई है कि गुजराती भाषी लोग पुस्तक नहीं पढ़ते हैं, तो जाहिर सी बात है कि जो पढ़ते नहीं हैं वो लिखेंगे भी क्या? जिसके चलते गुजराती साहित्य ज्यादा संपन्न नहीं हुआ है। पर, यह बात बिल्कुल गलत है। गुजराती भाषी लोग पढ़ते भी हैं और लिखते भी हैं। इस व्यापारी प्रवृत्ति वाले लोगों ने मस्तिष्क के साथ-साथ कलम चलाना भी सीख लिया है।

आदिकाल से गुजरात के पास अपना समृद्ध साहित्य है। पहले धार्मिक विषयों पर अधिक लिखा जाता था। अब समय बदला है नए तकनीकी ज्ञान के आने से साहित्य जगत भी इससे अछूता नहीं रहा है। आज ई-बुक का जमाना आ गया है। समय बीतने के साथ-साथ सभी बातों में परिवर्तन आता रहता है पर अक्षरों की अमिट छाप पन्नों पर कायम रहती है। एक वर्ग ऐसा भी है जो केवल और केवल पुस्तक ही पढ़ना पसंद करता है। इसी के चलते पुस्तकें लिखी जाती हैं, संपादित की जाती हैं एवं बड़े पैमाने पर बिक्री होती है। इन्हीं पुस्तकों की उँगली थाम के आने वाली नस्लें नए साहित्य का सृजन करती रहती हैं और इसी तरह सभी भाषाओं का साहित्य वटवृक्ष बनकर समाज को अपनी ज्ञान रूपी शीतलता की छाया प्रदान करता रहता है।

चिंतनशील समाज में साहित्य का सृजन निरंतर होता रहता है। यह एक लगातार चलती रहने वाली प्रक्रिया है। ताम्रपत्र और कपड़ों पर लिखे जाने वाले अक्षर ही आगे चलकर पोथियों तक पहुँचे है। साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होते-होते आज वह मोबाइल और इंटरनेट तक पहुँच चुका है पर फिर भी पुस्तकें अपना स्थान बनाए हुए हैं, उनका महत्व कम नहीं हुआ है। हर साल विभिन्न लेखकों द्वारा विविध विषयों पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं। साहित्य अब प्राँतों और देशों की सीमाओं से बाहर निकलकर समाज और संस्कृति को जोड़ने में सेतु का काम कर रहा है। इसमें अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है, अनुवाद के जरिए हम किसी भी भाषा का साहित्य अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं। विश्व की महानतम विभूतियाँ हमारे लिए साहित्यिक ज्ञान का ऐसा खजाना हमारे लिए छोड़ गई हैं इससे हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हजारों वर्षों तक अपने जीवन को आलोकित करती रहेगीं। साथ ही हर साल इसमें नए विद्वानों द्वारा लिखा गया साहित्य भी जुड़ता रहता है और अपनी गरिमामयी पहचान छोड़ता जाता है।

भारतवर्ष में संविधान की अष्टम अनुसूची में बाइस भाषाओं को स्वीकृति मिली है। न केवल इन्हीं भाषाओं में बल्कि और भी अधिक भाषाओं

में साहित्य का विकास हो रहा है। भारत बहुभाषा-भाषी देश है जिससे इसका साहित्यिक फलक विशाल है और यह स्वाभाविक भी है। प्रत्येक भाषा अपने प्रांत की संस्कृति, उसकी कला और उस समाज की मानवीय संवेदनाओं को साथ रखकर लोगों तक पहुँचती है। किसी भी प्रांत की भाषा उसकी धरोहर है। साहित्य के माध्यम से ही अन्य भाषा-भाषी लोग किसी दूसरे प्रांत की कला और संस्कृति से परिचित होते हैं।

गुजरात की बात करें तो गुजराती साहित्य अपने आप में विशिष्ट और समृद्ध साहित्य है। गुजराती में साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य का सृजन हो रहा है। अनेक नए उभरते लेखक हर साल जुड़ रहे हैं, जिसमें गुजराती साहित्य का क्षेत्र पर्याप्त विस्तार पा रहा है। महिला लेखिकाओं का भी इसमें अपना विशिष्ट स्थान है।

पिछले कुछ सालों से गुजरात में बेटी को शादी पर अन्य उपहारों के साथ-साथ पुस्तकें भी भेंट की जाती हैं। गुजरात के साहित्य प्रेमी तो यहाँ तक कहते हैं कि ऐसे घर में बेटी दो जिस घर में पुस्तकें पढ़ी जाती हों क्योंकि पुस्तकों से प्रेम करने वाले लोग जिस घर में बसते हों उस घर में ज्ञान और संस्कार का दीप सदैव अपनी रोशनी फैलाता रहता है।

वर्ष 2019 में लिखे गए गुजराती साहित्य पर प्रकाश डालें तो इस साल उपन्यास, लघु कहानी संग्रह, कविता संग्रह, गजल संग्रह, जीवन प्रेरक साहित्य, दृष्टांत कथा, प्रवास साहित्य, नाटक, विवेचन, शिक्षा के विषय में लिखी गई पुस्तकें, बाल साहित्य, स्वास्थ्य संबंधी पुस्तकें, फूड रेसीपी, प्रवास, संस्मरण, आत्मकथा, इतिहास, साहसिक कथाएँ, धार्मिक, मनोविज्ञान, हास्य व्यंग्य, निबंध, आलोचना संबंधी पुस्तकें एवं अनुवाद से संबंधित साहित्य पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। वर्षभर में सभी विधाओं में बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं। सभी पुस्तकों का समावेश यहाँ पर कर पाना मुश्किल है। फिर भी प्रयास यही है कि ज्यादा से ज्यादा पुस्तकों के विषय में चर्चा हो जिससे कि पाठक गुजराती भाषा में लिखे गए साहित्य से अवगत हो सकें।

गुजराती साहित्य में डॉ. केशुभाई प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। उनका उपन्यास 'कोई अतावों गोकुल मारु' एक विशिष्ट उपन्याास है। आजीवन शिक्षक रहे केशुभाई बेहतरीन व्यक्तित्व के इनसान हैं, उन्होंने अपने 'माणस होवानो मने वहेम' और 'मैं कुछ नहीं जानु' नामक उपन्यास की रचना करके साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। 'कोई बतावो गोकुल मारु' इस कहानी में विशिष्ट परिस्थिति में फँस जाने वाली भाग्यहीन बनवासी माता के पेट से जन्मी 'सुपरगर्ल' की आपबीती है। यह कहानी लड़की के विषय में कही गई है किंतु यह आत्मकथा नहीं है। इसमें अपनी खोई हुई पहचान को ढूँढ़ने का प्रयास करती अपने दादा की लाडली, प्यारी बेटी की संवेदना से भरी व्यथा है। इस कहानी में यौवन से पूर्ण लड़की की अलौकिक स्मृतियों का प्रतिबिंब अभिव्यक्त होता है। डॉ. केशुभाई की 'कैदी नंबर 108' बहुत प्रचलित पुस्तक है जिसको गुजरात में बहुत ही पढ़ा एवं सराहा गया है।

'विकी बाबा एंड कंपनी' में मनहर ओझा ने धर्म के नाम पर लोगों को ठगने वाले बाबाओं और उनके कारनामों पर लेखक ने प्रकाश डाला है। विकी अपने दोस्तों के साथ मिलकर धर्म के नाम पर रुपए कमाने का षडयंत्र रचता है। जिसमें उसकी गर्लफ्रेंड रचना उसका साथ देती है। कम समय में रुपए कमा लेने का आसान रास्ता शुरू-शुरू में उन्हें आसान लगता है। इनके साथ पोलिटिशियन बलदेव सिंह अपना मकसद पूरा करने के लिए 'वीकी बाबा एंड कंपनी' के साथ जुड़ जाता है। जिसमें विकी और रचना उसके जाल में फँस जाते हैं। इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का प्रयास इस कहानी में सुरुचिपूर्ण शैली में किया गया है। यह कहानी पाठकों के मन में अंत तक कुतुहल बनाए रखती है। 'टर्निंगपॉइंट' की सफलता के बाद मनहर ओझा ने 'वीकी बाबा एंड कंपनी' की रचना की। इसके अलावा 'धर्म मर्म जीवीजानों', 'समजण', 'परिवर्तन', 'प्रसन्ननता', 'जित मन की', 'गैर समाज' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

समीत (पूर्वेश) श्रोफ ने इस वर्ष दो उपन्यास- 'जोग गुजोग', 'जीवादोरी' लिखे हैं। कैमेस्ट्री में

डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त समीत (पूर्वेश) श्रोफ साहित्य में रुचि होने के कारण साहित्य लेखन की ओर आकर्षित हुए, उनका प्रथम उपन्यास 'गुजरात मित्र' रविपूर्ति नामक में धारावाहिक के रूप में पाठकों के सामने आया जिसको पाठकों ने बहुत पसंद किया। इसके बाद एक अन्य उपन्यास और लघु कहानियाँ चित्रलेखा में आती रहीं जिससे उनकी कलम और भी निखरी। इनके सभी कहानी संग्रह पुस्तक के रूप में पाठकों के समक्ष आए हैं। जिसको लोगों ने खूब पसंद किया है।

भारतवर्ष के महानतम ग्रंथ महाभारत की महाकथा में सबसे श्रेष्ठ स्त्री पात्र कुंती का है। कुमारपाल देसाई ने कुंती के पात्र को 'अनाहता' की कथा में दर्शाया है। कुंती के मातृत्व, हस्तिनापुर की महारानी होने के बाद भी उसके जीवन में आए संघर्षों को अपना कर्तव्य मानकर जीवन को आसान बनाने की एक महिला के संघर्ष की गाथा को नवीन शैली में उपन्यास के रूप में लेकर आए हैं। दुर्वाषा मुनि ने वरदान के लिए जो मंत्र दिया था वही मंत्र कुंती के लिए अभिशाप बन जाता है और इसी मंत्र से सूर्यदेव से प्राप्त पुत्र कर्ण को समाज के डर से त्यागना पड़ता है। इस बात का दुख आजीवन कुंती को सताता रहता है। कुंती ने माद्री के दोनों बच्चों को अपनाकर आजीवन उनको प्यार किया, पांडवों के साथ वनवास झेला। कुंती के जीवन में आने वाले तथाकथित संघर्षों को तथा उसके मातृत्व को इस कथा में विस्तृत रूप से बताया गया है।

गुजरात के साहित्यकारों में कुमारपाल देसाई का अपना एक विशिष्ट स्थान है। उन्होंने 'तन अपंग-मन अडिखम', 'श्रद्धाना सुमन', 'प्रसन्नता ना पुष्पों', 'शुकनोउत्सव', 'जीवी जाणनारा', 'भाटीए घडया मानवी', 'फूलनी आँखें', 'झाकण मोती', 'मंत्र मानवतानों', 'मंत्र महानताणों', 'शीलनी संपदा', 'जीवननु जवाहिर', 'मननी भीरात', 'केसरनी क्यारी', 'केसर अने कस्तूरी', 'केसर अने कुमकुम' जैसी महानतम कृतियों की रचना की है। जैन विश्वकोश खंड-5 का संपादन भी उन्होंने किया है। कुमारपाल देसाई की आपंगना ओजस कृति को पुरस्कृत भी किया गया है।

हंसराज सोखला द्वारा लिखित कहानी 'मनबंधन' में मंजू और मोहन जो कि आपस में प्रेम करते हैं, लेखक ने इन दो पात्रों की कहानी के माध्यम से यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया है। मानव जीवन की वास्तविकता कल्पना से भी अधिक कठिन होती है, यही लेखक ने बताने का प्रयास किया है। दो प्रेमियों के प्रेम की कथा, वेदना, अकेलापन, विरह, एक दूसरे को सदैव मदद करने की तत्परता तथा समाज के रीतिरिवाज एवं लोक-लाज की चिंता इन्हीं सब बातों को कहानी के माध्यम से चित्रित किया गया है। इसमें बदलती ऋतु, लहलहाते खेत-खलिहान, घर तथा गाँव का सुंदर चित्रण है। कच्छ में बोली जाने वाली देहाती मीठी बोली भी है। जन-सामान्य की भावनाओं को अपनी कथाकृति में नया आयाम देने पर हंसराज सोखला का गुजराती साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान है।

ईश्वर परमार द्वारा लिखे गए लघु उपन्यास 'आपणा वतनमां, आपणु राज' जिसमें लेखक ने बाघेर जाति के लोगों की जीवनशैली को दर्शाया है। इस जाति के संघर्षमय जीवन और लोक-व्यवहार को उपन्यास के माध्यम से चित्रित किया गया है।

राजमोहन भटनागर द्वारा लिखित मीराबाई के जीवन पर आधारित हिंदी कथा को छाया त्रिवेदी ने 'न गोपी न राधा' नाम से अनूदित किया है। इस कथा में कृष्ण भक्ति में लीन मीराबाई के जीवन पर आधारित कथा का विस्तृत वर्णन किया गया है। जिस तरह गोपियाँ और राधा कृष्ण के विरह में विरहिणी बन अपने जीवन को ढो रही होती हैं, उसी तरह मीराबाई भी कृष्ण की प्रेममय संवेदना को अपने मन में भरकर कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति का गान करती हैं और अपने जीवन के संघर्ष तथा समाज की मर्यादा का उल्लंघन करती हुई सदैव के लिए कृष्णमय बन जाती है यही बात इस उपन्यास में वर्णित है।

नवनीत सेवक ने 2019 में साहित्य जगत को अपनी अलग ही शैली में लिखे गए तीन उपन्यास दिए हैं। जिसमें 'जन्मांतर', 'प्रेमछाया' तथा 'सेतु और प्रिया' हैं। नवनीत सेवक बाल मनोविज्ञान से संबंधित साहित्य में पहले भी अपना योगदान दे

चुके हैं। जिसमें उन्होंने बच्चों को ध्यान में रखकर उन्हीं की रुचि के अनुरूप 'सुबाहुणा साहसो' एवं 'मंगलना ग्रहमाँ' लिखा है साथ ही 'मंगलना मोरचे' भी उन्हीं के द्वारा लिखा गया बाल मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यास है। 'टारझणः जंगलनणों राजा' और 'टारझनः जंगल सम्राट' में साहस से भरी बाल कथाएँ हैं। गुजराती साहित्य में नवनीत सेवक ने अपने लेखन से अलग ही पहचान बनाई है।

नवलिका संग्रह में डॉ. अनिल चौहाण द्वारा लिखित 'माणस उर्फे लांगजी उर्फे संबंध' में मानवीय संवेदनाओं को उकेरा गया है। अनिल चौहाण के लेखन में जीवन की वास्तविकता और मानवीय पीड़ा की झुंझलाहट साफ दिखाई देती है। विज्ञान से जुड़े होने के बावजूद साहित्य के क्षेत्र में अपनी कलम चला रहे डॉ. अनिल चौहाण को गुजराती पाठकों ने साहित्य में ऊँचे स्थान पर विराजित किया है।

नरेश धोलकिया द्वारा लिखित कहानियाँ – 'सांजनो सूर्योदय' में अपने आसपास घटित घटनाओं का उल्लेख किया है। जिसमें ज्यादातर सच्ची घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। इन कहानियों की पृष्ठभूमि समाज में नित्यप्रति घटित घटनाएँ हैं जो उनके लेखन का आधार बनी हैं। नरेश धोलकिया की अन्य रचनाओं में 'अंगदनो पग', 'सियतिनुं संतान' 'लांबुस्वप्न' और 'अदृश्य पात्रों' शामिल हैं।

डॉ. हर्षद कामदार द्वारा लिखित 'जीवननुं उपवन', 'सुखी धवानुं तमारा हाघमां ज छे', 'सदाय सुखमां रहो', 'सुख नामना प्रदेश मा' और 'जिंदगीना धबकार' प्रमुख कहानी संग्रह हैं। इनकी लगभग सभी कहानियों में मानव जीवन के संघर्ष का सजीव चित्रण है।

वर्ष 2019 में आए अन्य कहानी संग्रहों में पूजा तत्सम द्वारा लिखा गया 'एंटरप्रिन्योर' है जिसमें आधुनिक युग की कश्मकश को दर्शाया गया है। कश्मकश जनरेशन गैप की वजह से हो, नई पीढ़ी के विचारों से हो, आपसी संबंधों में हो, स्वयं के अस्तित्व की पहचान हो या फिर व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष की यातना हो इन सबसे निकलने के बाद ही तो सफल उद्यमी एंटरप्रिन्योर बन पाता है। कहानी में अनेक ऐसे पात्र हैं जो संघर्षों के बाद सही अर्थ में उद्यमी (एंटरप्रिन्योर) बन पाए हैं।

पल्लवी मिस्त्री द्वारा लिखित 'देवदूत' में मानव मन की भावनाओं को साहित्यिक स्वरूप दिया गया है। इन कहानियों में लेखिका पल्लवी मिस्त्री का अभिव्यक्ति कौशल दर्शनीय है।

'रेती नुं घर' में प्रीति हितेश टेलर द्वारा लिखी गई लघु कथाएँ हैं। विशाल आकाश में दिखते बादलों पर किसी के पैरों के निशान नहीं होते पर विशाल समंदर की रेत पर अनगिनत पैरों के निशान के साथ-साथ किसी का बनाया हुआ संवेदना भरी रेत का घर होता है। प्रीति टेलर की इन कहानियों में यथार्थ जीवन के इंद्रधनुषी रंग देखने को मिलते हैं।

गुजराती साहित्य में अपना असीम योगदान देने वाले भगवती कुमार शर्मा जाने माने गुजराती साहित्यकार हैं। भगवती कुमार शर्मा कवि और पत्रकार हैं। उनकी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं पर केंद्रित हैं। उनकी श्रेष्ठ कहानियों का संपादन शरीफा बेन ने किया है। 'असूर्यलोक' उनका पुरस्कृत उपन्यास है। उनकी कहानियों में समाज का प्रतिबिंब देखने को मिलता है। नारी की संवेदना एवं समाज के नीति नियमों में बंधी नारी की स्थिति का यथार्थ वर्णन उनकी कहानियों में मिलता है। शरीफा बेन ने भगवती कुमार शर्मा की कहानियों को संपादित करके गुजराती साहित्य को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। शरीफा बेन ने गुजराती साहित्य में उपलब्ध विभाजन की कहानियों का अनुवाद भी किया है। उन्होंने सहादत हसन मंटो की उर्दू कहानियों का गुजराती में अनुवाद करके गुजराती पाठकों को मंटो से परिचित करवाया है और साथ ही अन्य उर्दू साहित्य से भी रूबरू करवाया है।

ओ हेनरी की कहानियों का अनुवाद हरित पंडया द्वारा किया गया है। जिसमें विदेशी भूमि पर बनी एवं घटित घटनाओं को कहानी के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाया गया है। जिसका अनुवाद कर वे गुजराती भाषी पाठकों को ओ हेनरी की

कहानियों तक ले गए हैं और ऐसे ही सबको ओ हेनरी के साहित्य का आस्वाद करवाया है।

एलिसमनरों द्वारा 'ए नगरमां' अंग्रेजी भाषा में लिखी अच्छी कहानियों का अनुवाद किशोर पंडया ने किया है। एलिसमनरो ने अपनी कहानियों में अपने देश की भूमि पर घटी घटनाओं एवं प्रसंगों को तथा अपने ही साथ बने संस्मरणों को कहानी का रूप दिया है जिसको किशोर पंडया ने अनूदित कर गुजराती पाठकों तक एलिसमनरो को ले आए, जिससे पाठकों को नए परिवेश की कहानियों के पठन-पाठन का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

रसियन और फ्रेंच भाषा की कहानियों को 'विश्व नो वार्ता वैभव' नाम से अशोक हर्ष ने गुजराती में अनूवादित कर गुजराती साहित्य में अपना योगदान दिया है, अशोक हर्ष ने लेखक बाल्जाक के उपन्यास 'करीनबेट्टी' (फ्रेंच) का भी गुजराती में अनुवाद किया है। इसके अलावा उन्होंने अंग्रेजी नाटक का 'सागरना छैया' नाम से गुजराती में अनुवाद किया है। अशोक हर्ष के अनुवाद को गुजराती साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान मिला है तथा लोगों ने बहुत पसंद किया है।

मनुष्य का जीवन संघर्षो से भरा हुआ है पर जीवन को आनंदमय बनाने के लिए एवं जीवन को उत्साहपूर्ण तरीके से जीने के लिए प्रेरणा देने वाला कोई साधन हो तो जीवन जीना आसान बन जाता है। इसके लिए मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन प्रेरक साहित्य का पठन-पाठन करे और उसे अपने जीवन में अपनाए। गुजराती में जीवन प्रेरक साहित्य लिखने में अनेक विद्वानों ने अपना असीम योगदान दिया है।

'नवला दर्शन' और 'जीवंत दर्शन' शामदेव ने लिखा है। इस साल 2019 में शामदेव ने आध्यात्म साहित्य में 'श्रीकृष्ण नी अलौकिक लीला', 'हिमालयमां उद्धवजीनी कृष्ण कथा', 'श्रीकृष्ण उत्तर आए छे' तीन कृतियों की रचना की है। नवला दर्शन और जीवंत दर्शन में भक्त की भगवान के प्रति अगाध श्रद्धा एवं भक्ति भावना को दर्शाया है। श्रीकृष्ण की अनगिनत अलौकिक लीला के विषय में सामान्य जनसमूह गहरी आस्था रखते हैं। आशा अनमोल है यह सच है पर उसके साथ तार्किक भावना जुड़े तो वह एक विशेष दिव्यता की ओर भावुक भक्त को ले जाती है। 'श्रीकृष्ण की अलौकिक लीला' की रचना करके शामदेव ने मनुष्य जीवन में आने वाले संशयों का समाधान करने का प्रयास किया है। इस ग्रंथ में कुल 33 प्रकरण हैं।

'हिमालयमां उद्धवजीनी कृष्ण कथा' में भगवान व्यास जी द्वारा श्रीमद्भागवत की रचना से पहले भगवान श्रीकृष्ण की जीवनलीला की कथा किसने किसके पास सुनी। इस पृथ्वी पर ऐसा कौन सा प्राणी था जो श्रीकृष्ण की जीवनलीला, वृंदावनलीला, मथुरालीला, द्वारिकालीला, हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ आदि लीलाओं के बारे में आदि से अंत तक जानता हो। ऐसा तो एक ही पुरुष था कृष्ण सखा उद्धव जी, तभी तो भगवान श्रीकृष्ण उद्धव जी को बदरीनाथ भेजते हैं। श्रीकृष्ण की प्रेरणा और भगवान व्यास जी की इच्छा से बदरीनाथ क्षेत्र में व्यास जी के आश्रम में उद्धव जी की कृष्ण कथा का आयोजन किया जाता है। जिसमें वक्ता हैं उद्धव जी और श्रोता हैं भगवान व्यास जी और उस समय के ऋषि मुनिगन। उद्धव जी के मुख से कृष्ण कथा पूर्ण रूप में सुनकर भगवान व्यास जी श्रीमद्भागवत की रचना करते हैं। बदरीनाथ में कही जाने के कारण इस कथा में हिमालय के वातावरण का सजीव चित्रण है। उद्धव जी की इस प्रथम और प्राचीन कथा को आधार मानकर इस ग्रंथ की रचना की गई है। इस ग्रंथ में कुल 54 प्रकरण हैं।

बालरोग विशेषज्ञ डॉ. आशीष चोकसी द्वारा लिखित '42 प्रेरणात्मक प्रसंग' में आशीष जी ने अपने 25 साल की पढ़ाई के अनुभव को चित्रित किया है, सुख-दुख, हार-जीत, सफलता, असफलता, प्रेम और मैत्री, आत्मविश्वास, परिवार के जीवन मूल्यों को दृष्टांतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जीवन के प्रति लोगों की शिकायतें कम हो और ईश्वर ने जो दिया है उसी में जीवन की पूर्णता को देखने का नजरिया रखे जिससे कि हर इंसान उत्साह से जीवन जिए।

रोहित शाह द्वारा संपादित 'महात्मा गांधी जी पुनर्जन्म' जीवन प्रेरक साहित्य है जिसमें महात्मा

गांधी जी का अगर पुनर्जन्म हो तो क्या हो। इस कल्पना को दर्शाया गया है। इसी जीवन प्रेरक साहित्य की शृंखला में मनसुख सल्ला द्वारा 'गांधीजीनी नजरे दुनिया' इसी साल 2019 में लिखा गया है। इसमें लेखक ने गांधी जी की नजर से दुनिया की सृष्टि की रचना को देखने का प्रयास किया है। रोहित शाह और मनसुख सल्ला गुजराती साहित्य में अपना श्रेष्ठ स्थान बनाए हुए हैं। उनके द्वारा लिखित 'माणसाइनी केडवणी' पुरस्कृत कृति है। इसी शृंखला में आगे प्रभाकर समार द्वारा 'महात्मा गांधी साथे संवाद' लिखा गया है जो जीवन को गांधी जी के विचारों के अमल द्वारा जिया जाए तो जीवन की तासीर ही बदल जाए यही सब बातें इसमें बताई गई हैं।

डेलकार्नेगी (अंग्रेजी) द्वारा लिखित जीवन प्रेरक साहित्य को पी.जी. शाह, अचला वीरा द्वारा 'लोकोना दिल जितवानी कला' शीर्षक से लिखा गया है। इसमें लोगों के दिलों को कैसे जीता जाता है, लोगों को कैसे अपना बनाया जाता है एवं संबंधों में संवेदना कैसे बढ़ाई जाती है इस विषय में गंभीर चर्चा की गई है। दृष्टांतों के माध्यम से बात को समझाने की कोशिश की गई है।

गुजराती साहित्य में हर साल संस्मरण, कहानी या उपन्यास जितने भी लिखे जाते हैं। उनमें योगेश जोशी द्वारा लिखा गया 'जिया एंड दादा', स्वामी सच्चिदानंद द्वारा लिखा गया 'वीरता परमो धर्म' एवं 'सिंधुताईसचकाल' जो एक गरीब मराठी महिला के संबंध में है जिसने अनाथ बच्चों को गोद ले कर सड़क पर घूमते बच्चों को भी प्यार दिया तथा उनके रहने खाने की व्यवस्था की समाज में घटित ऐसी यथार्थ घटनाओं को स्वामी सच्चिदानंद ने साहित्य में स्थान देकर सबका ध्यान ऐसे सेवाधर्मी कार्यों की ओर आकर्षित किया है।

यशवंत मेहता और गार्गी वैध द्वारा लिखित 'गुजरातना नारी रत्नों' में उन नारियों के विषय में चर्चा की गई है जो संघर्ष करके अपने पैरों पर खड़ी हुई हैं और समाज में अपना स्थान बनाया है। इन महिलाओं ने अन्य महिलाओं के लिए मिसाल कायम की है। यशवंत मेहता और गार्गी ने 'परोढना प्रकाश रूप महिलाओं' भी लिखा है। जिसमें ऐसी महिलाओं की चर्चा है जिन्होंने संघर्ष को अवसर में तबदील कर अपने जीवन की राह खुद बनाई। जिन्होंने अपने अंधेरे जीवन को प्रकाश तक पहुँचाया और न केवल स्वयं को बल्कि अपने परिवार को भी अंधेरे से उजाले की ओर लेकर गईं। धीरेंद्र मेहता द्वारा लिखित 'मेहताजी तमू एवा शुं' इसमें मेहता जी के जीवन में घटित घटनाओं को दर्शाया गया है।

विश्व के ग्यारह से अधिक देशों की यात्रा कर चुके प्रभाकर जी ने आठ से ज्यादा पुस्तकें लिखकर गुजराती पाठकों को अपनी लेखनी का परिचय दिया है। गुजरात के बारडोली में जन्मे लौहपुरुष जिनको लोग 'सरदार पटेल' के नाम से जानते हैं वे अपने जीवन में कैसे थे। उन्होंने देश के लिए खासकर किसानों के लिए क्या किया। वह वल्लभभाई से सरदार कैसे बने। तथा उनके व्यक्तित्व को प्रकाशित करने का प्रयास 'सरदार सौना सरदार' में किया गया है। गुजरात में सरदार वल्लभभाई पटेल के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। यहाँ प्रभाकर खामार ने अपनी विशेष शैली में सरदार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

दौलत भट्ट द्वारा लिखित सेवा समर्थजनी सुवाम में लेखक ने समाज के लिए समर्पित नर एवं नारी के रूपों को दर्शाया है। भिन्न-भिन्न समाज से आए अनेक महान पुरुषों ने समाज में अपनी सेवा की सुगंध फैलाकर समाज को सुवासित किया है। प्रत्येक इनसान में कमी और खूबियाँ होती हैं। जो लोग पराई पीड़ा को परखने के लिए तथा उनकी सेवा के लिए आगे आते हैं उनसे ही नई घटनाओं का निर्माण होता है। समाज में बसे न केवल धनिक वर्ग बल्कि गाँव में बसने वाले बिल्कुल अनपढ़ देहाती लोग भी अपनी सेवा से समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरा करते हैं। दौलत भट्ट ने समाज से ही पात्रों को लेकर उन्हें अपनी कलम के द्वारा उनके कार्यों को लोगों तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास किया है।

नाथालाल गोहिल ने 'आर्यदृष्य राष्ट्र निर्माता डॉ. अंबेडकर' कृति में अंबेडकर के जीवन को चित्रित किया है। भारतीय संविधान के सर्जक,

भारतीय नारी के मुक्तिदाता, भारतीय किसानों एवं मजदूरों को उनका हक दिलाने वाले और हजारों वर्ष से पीड़ित, शोषित, गुलामों से बदतर और पशु से भी हीन जीवन जीने वाले दलित समाज के लोगों को उनके अधिकार दिलाकर उनको इंसान होने की अनुभूति कराने वाले अंबेडकर राष्ट्र नेता और भारतरत्न के अधिकारी थे। अंबेडकर की इन्हीं बातों को और उनके महानतम विचारों को उन्होंने अपनी पुस्तक में चित्रित किया है।

मणिलाल पटेल का गुजराती साहित्य में विशिष्ट स्थान है। उन्होंने 'ज्ञान यज्ञ ना आचार्य' में डॉ. धीरुभाई ठाकर के जीवन को चरितार्थ किया है। उनके ज्ञान एवं उनके व्यक्तित्व की महत्ता को दर्शाते हुए उनको 'आचार्य' कहा गया है। मणिलाल पटेल गुजराती साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए हैं।

'ग्रंथना पंथना अनोखा यात्री' जीवन चरित्र में दीपक मेहता साहित्यिक क्षेत्र में कितने ऊँचे स्थान पर हैं तथा साहित्य में उनका जो योगदान है उसके बारे में यशवंत मेहता ने हमें जानकारी दी है। अपनी विशिष्ट लेखन शैली द्वारा उन्होंने पाठकों को तृप्त किया है। उनके अलावा अन्य लेखकों द्वारा लिखे गए जीवन चरित्र और संस्मरण में वर्ष 2019 में 'प्रणाम पप्या' डॉ. बिंदु त्रिवेदी और दधीची ठाकर 'समाजनी सुगंध' रमेश तन्ना की, 'मकरंद मधु' प्रवीणकांत केवलराम ठाकर की, 'झमण', अनिल वाघेला की, 'अमारुं रक्तरंजित वतन' 'राहुल पंडिता' अनुवादक जेलम वोहरा, विपिन जमुभाई की भट्ट 'बे हाथनी मथामण' आदि प्रमुख हैं।

आमतौर पर सभी मनुष्यों को घूमने का शौक होता है पर गुजराती लोग तो घूमने में जगविख्यात हैं। इसीलिए गुजरात के लेखकों द्वारा लिखा गया यात्रा एवं पर्यटन संबंधी साहित्य प्रचुर मात्रा में है। कहा जाता है कि भारत तीर्थों की भूमि है जहाँ पर लोग बार-बार जाना पसंद करते हैं। ऐसी ही एक जगह है भारत की सबसे बड़ी नदी गंगा है जो हिमालय से निकलकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है इसी पर आधारित 'हरिद्वार की यात्रा' का वर्णन स्वामी सच्चिदानंद द्वारा किया गया है। इसी के साथ स्वामी जी ने 'आंदामाननो बीजो प्रवास' भी लिखा है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि गंगा की जहाँ पूजा अर्चना की जाती है वहाँ हजारों भक्त अपनी आस्था से माँ गंगा में डुबकी लगाते हैं। जिसके तट पर हजारों की संख्या में आश्रम स्थित हैं तथा हजारों संन्यासियों को जिस धरती ने अपना आँचल फैलाकर पनाह दी है ऐसी पावन भूमि का वर्णन स्वामी जी ने हरिद्वार की यात्रा में लिखा है। हरिद्वार का सुबह का वातावरण और शाम की शीतलता तथा रमणीय पर्वत शिखरों का वर्णन करके अपने अनुभवों को साझा किया है।

स्वामी सच्चिदानंद ने अंडमान में दूसरी बार जो यात्रा की उसी का वर्णन 'आंदामाननो बीजो प्रवास' में किया है। अंडमान का वातावरण और वहाँ के लोग, उनका जीवन, उनकी संस्कृति तथा उनके रीति-रिवाजों के बारे में लिखा है। प्रथम बार जब स्वामी जी वहाँ गए थे तब और इस बार में उन्होंने क्या नए अनुभव किए इसी बात का विस्तृत वर्णन किया है। स्वामी सच्चिदानंद का गुजराती साहित्य में बड़ा ही योगदान है। स्वामी जी ने महाभारत की कथाएँ, उपनिषद् की कथा एवं चिंतन, कच्छ की जीवन शैली को दिखाती कहानियाँ, सौराष्ट्रवासियों की शूरवीरता को बयां करती बातें, क्रांतिकारी कथाएँ, शहीदों की जाँबाज कथाएँ, मानवीय संबंधों से मिले अनुभव, अपने बायपास सर्जरी के अनुभव तथा अपने जीवन में आने वाले सभी छोटे-मोटे प्रसंगों को बयां करता लेखन उन्होंने अपनी कलम से लोगों तक पहुँचाया है। उनके द्वारा लिखी गई 'भारा अनुभवों' तथा 'विदेश यात्रा प्रेरक प्रसंगों' पुरस्कृत कृतियाँ हैं। स्वामी जी विशेष व्यक्तित्व के धनी होने के साथ-साथ नम्र एवं सही में सत्तचित आनंद से परिपूर्ण व्यक्ति हैं।

प्रवास साहित्य में आगे रमण सोनी द्वारा लिखित 'रण तो रेशम रेशम' में लेखक ने रण के विषय में बात की है। मरुस्थल की भूमि जहाँ दूर-दूर तक रेत के ढेरों के सिवा कुछ नहीं दिखाई देता। यहाँ जीना सही में दुश्वार है साथ ही यह रेशम जैसी रेत मन को मोहक कैसे लगती है यही बात हल्की-फुल्की शैली में रमण सोनी जी ने कहना चाहा है। रमण सोनी जी ने 'हिमालय अने

हिमालय' का प्रवास वर्णन भी लिखा है। उजबेकिस्तान और जोर्डन के प्रवास का वर्णन तथा उत्तरीय ध्रुव के प्रवास का वर्णन भारती राणे ने अपनी विशिष्ट शैली में किया है।

रतिलाल बोरी सागर जो कि गुजराती हास्य व्यंग्य लिखने वाले जाने माने साहित्यकार हैं। उन्होंने 'तण अठवाडीया अमेरिका माँ' में अपनी हास्य शैली में वर्णन किया है। तीन हफ्ते में उन्होंने अमरीका में घूमकर क्या देखा, क्या अनुभव किया तथा उनके साथ घटी छोटी-मोटी घटनाएँ जिसमें हास्य उत्पन्न होता है और पढ़ने वालों को उस वातावरण में पहुँचाता है जहाँ वह घटना घटी है जिसको पढ़ते समय पाठक घटना से जुड़ जाता है और हास्य का पूरा आनंद उठाता है। रमण सोनी गुजराती साहित्य के बहुत बड़े विद्वान हैं, जिन्होंने अपने लेखन से लोगों को हँसना सिखाया और जीवन में हास्य कैसे उभरकर आता है यह अपनी बातों एवं अनुभवों के जरिए हमें बताते हैं।

प्रवीण शाह द्वारा लिखित 'चालो गुजरात ना प्रवासे' में गुजरात के सभी पर्यटन स्थलों को एवं बड़े-बड़े मंदिरों तथा गुजरात से लगी 1600 किलोमीटर समुद्री सीमा पर बने विशिष्ट पर्यटक स्थानों के विषय में जानकारी दी गई है।

जब से मनुष्य जीवन शुरू होता है यानी जब से बच्चा जन्म लेता है तब से उसके सीखने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। बच्चा अपने आस-पास के वातावरण से लोगों के हाव भाव से, सुनकर, देख कर सीखता है, वैसे तो उसके सीखने की प्रक्रिया तो गर्भ में आने पर ही शुरू हो जाती है। तब से लेकर जन्म और जन्म के बाद आजीवन सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। सबसे पहले अपने परिवार से सीखता है, थोड़ा बड़े होने के बाद उसे स्कूल में भेजा जाता है वहीं उसे शिक्षा प्राप्त होती है जिससे उसके व्यक्तित्व विकास का क्रम आगे बढ़ता है इसी के साथ-साथ जैसे-जैसे बच्चे को शिक्षा-दीक्षा दी जाती है वैसे-वैसे उसके ज्ञान में वृद्धि होती है इसीलिए जरूरी है कि बाल साहित्य का भी विकास हो इसमें केवल पढ़ाई ही नहीं बल्कि इसमें पत्रिकाएँ, चित्र कथाएँ, चित्रों में रंग भरना, लकीर के द्वारा किसी चीज को ठीक जगह पहुँचाना, पहेलियाँ, हाव-भाव के साथ गाई जाने वाली कविताएँ, बोध देती छोटी कहानियाँ, मोती या चॉकलेट या ऐसे ही अन्य चीजों से गिनती सिखाना भी शामिल है। इसी तरह बच्चों के ज्ञान का विस्तार बढ़ता है और आज के बच्चे कल के सुनहरे भविष्य की ऊँची उड़ान को आसानी से तय कर पाते हैं। बाल मानस के मनोमस्तिष्क तक पहुँचने के लिए आवश्यक है बाल साहित्य का विकास। जिसमें इस बार 2019 में 'दलपतरामनुं' बाल साहित्य, संपादक यशवंत मेहता, 'अवनवी प्राणी कथाओं' डॉ. अरुणिका मनोज दरु, 'उडतोकाचबो' रवजीभाइकाचा, 'खुशखुशाल परी' श्रद्धा त्रिवेदी, 'भाग भागती चांदपरी' गिरा पिनाकिन भट्ट, 'सोनपरीआवी खरी' नटवर हेडाउ, 'रातुरनोचोतरो' डॉ. शिलीन शुक्ल, 'मेघाधनुष' मित्तल पटेल, 'थनगनाट' मित्तल पटेल, '23 प्रेरणात्मक बाल नाटक' मित्तल पटेल, 'मजानी शिशु कथाओं' हिरल शाह, 'बालसुलभ वार्ताओं' कालिंदी पारीख, और गोलगोललाडु' किरीट गोस्वामी आदि प्रमुख हैं।

इन सब साहित्यकारों ने बाल साहित्य में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। कुछ समय से ऐसी शिकायत है कि बाल साहित्य नहीं लिखा जा रहा है। पर गुजरात में यह बात गलत साबित हुई है। अनेक रचनाकारों ने बाल साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य किया है उन्होंने बाल मानस को समझकर उसी के मुताबिक साहित्य का सृजन किया है।

आज कल बॉलीवुड की फिल्में भी बच्चों के मानसिक विकास तथा खान-पान में इस तरह का बदलाव लाने का संदेश दे रही हैं जिससे हमें कैंसर होने का खतरा कम होता है। ऐसी ही सब जानकारी डॉ. पी.जी. शाह ने अपनी पुस्तक में दी है। योग को आज के समय में शरीर को स्वस्थ रखने का श्रेष्ठ मार्ग माना गया है। योग दिवस मनाकर भी हम लोगों को योग के प्रति जागृत करते हैं। भाणदेव ने इसी शृंखला में 'संपूर्ण प्राणायाम' लिखकर लोगों को योग और प्राणायाम से होने वाले फायदे तथा प्राणायाम से निरोगी जीवन

जी कर मनुष्य अपने बुढ़ापे को संवार सकता है। यही सब बातें भाणदेव ने अपने योग विषयक लेखन में कही हैं।

ग़ज़ल का प्रारंभ अमीर खुसरो से माना गया है। उसके बाद ग़ज़ल उर्दू से निकलकर हिंदी और गुजराती भाषा में भी उसका पदार्पण हुआ। इसी शृंखला में 'मोर पींछना सरनामे' ग़ज़ल संग्रह लिखकर वर्षा प्रजापति ने अपने नवीन ख्यालों को शब्दरूप देकर लोगों के सामने रखा है। जिसमें वर्षा जी ने अपने मन के भावों को अभिव्यक्त किया है।

गुजरात में हर साल बड़े शहरों में पुस्तक मेलों का आयोजन किया जाता है। जिसमें हजारों की संख्या में पुस्तकों की बिक्री होती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि गुजराती साहित्य के विकास में पुस्तक मेलों और साहित्यिक पत्रिकाओं का भी बड़ा योगदान है। सोशल मीडिया के आ जाने से हर व्यक्ति अपने विचारों को लोगों के सामने अभिव्यक्त करता है पर जो उससे भी दो कदम आगे हैं वे अपने पसंद और रुचि की विधा में लिखते हैं। नवोदित लेखकों की लिखी किताबें इस साल 2019 में पाठकों के सामने आईं उसे भी लोगों ने बहुत पसंद किया। आशा है गुजराती साहित्य अपने आने वाले कल में और भी ऊँचाइयाँ हासिल करेगा।

– डी.-7, इनकम टैक्स कॉलोनी, न्यू सिविल हॉस्पिटल के सामने मजूरागेट, सूरत, गुजरात-395001

❑❑❑

8

डोगरी साहित्य

ओम गोस्वामी

डोगरी साहित्य : अवांतर प्रसंग

विवेचन वर्ष 2019 में पुस्तक प्रकाशन की गति तीव्र होती नज़र आती है। विश्वास होता है कि डोगरी विगत सदी के छठे-सातवें दशक की तरह पुनः ठहराव का शिकार नहीं होगी। न केवल यह कि इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है, बल्कि कुछेक विधाओं में वृद्धि का अमल सचेत करने के लिए काफी है। इस वर्ष में अनुवादों की संख्या बढ़ी है। वर्ष 2019 में मात्र एक उपन्यास का सामने आना उस खतरे की उस घंटी की ओर इशारा करता है जिसका छठे-सातवें दशक में ऊपर संकेत हुआ है। कहानी विधा में स्थिति अधिक उत्साहवर्धक नहीं है। इस बार मात्र पाँच कहानी संग्रहों से इस विधा की खानापूर्ति हो पाई है। इस वर्ष प्रकाशित होने वाले मुख्य कहानी संग्रह हैं-

(i) 'नमें टन्नल' : राज राही
(ii) 'केह् पता' : राजेश्वर सिंह राजू
(iii) 'नखस्मी जमीन' : जगदीप दूबे
(iv) 'जिंदगी किन्नी खूबसूरत ऐ' : ओम गोस्वामी
(v) 'सोच समुंदर' : अशोक दत्ता

यह तमाम संग्रह डोगरी कहानी की प्रौढ़ता का प्रमाण हैं। सूची में प्रथम चार कहानीकार मंजे हुए कहानीकार हैं। इधर अशोक दत्ता की कहानी-कला ने समीक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया है। इसलिए 'सोच समुंदर' पर अलग से विचार करने की आवश्यकता है।

गल्प विभाग में उपन्यास विधा के अंतर्गत प्रकाशित होने वाला 'चंपा' नामक उपन्यास जिसे सधे हुए नाट्यकार रत्न दोषी ने लिखा है, यह इस विधा के जीवित होने का आभास कराता है।

साहित्य पाठक से कटता जा रहा है। प्रकाशित पुस्तकों में लगातार कम होती जा रही रुचि के कारण कई बार पुस्तकें मात्र लेखक के चौगिर्द सिमटी रह जाती हैं। उचित प्रचार-प्रसार या विज्ञापन न होने के कारण किताबें छपकर भी एक सीमित दायरे तक सिमटी रहती हैं। और तो और समीक्षकों-आलोचकों को इनसे वंचित रह जाना पड़ता है। ऐसे में पाठकों से इनकी पहचान कैसे होगी ? इस वर्ष चड़वाल-हीरानगर के चमनलाल खजूरिया द्वारा प्रकाशित कविता संग्रह 'सनैह्री काल ने बगाड़ी चाल' को भी गुमनामी का हश्र झेलना पड़ा है। इस पुस्तक की कविताओं में कवि ने निज भाषा और संस्कृति से अपने प्रेम को प्रकट किया है। अन्य विधाओं में भी किताबें गुमनामी के अंधियारे में पड़ी हुई दिख जाती हैं। इस वर्ष कुछेक अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं जो वृहद पाठक वर्ग तक पहुँच नहीं पाए। ऐसे ही एक अल्प ज्ञात प्रयास के रूप में यशपाल निर्मल द्वारा उद्भ्रांत शर्मा के

हिंदी प्रबंध-काव्य के डोगरी अनुवाद का नाम लिया जा सकता है। वैसे 'राधा माधव' नाम्नी इस प्रबंध-काव्य का प्रकाशन एक स्तुत्य प्रयास है। इसी वर्ष सुनीता भड़वाल द्वारा अंग्रेज़ी काव्य संग्रह-'म्यूज़िंग्स फ्राम माई एटिक' (मूल लेखक-दर्शन दर्शी) को डोगरी में 'चेत्ते दे चबारे चा' शीर्षक से अनूदित किया गया है। 2019 में प्रकाशित यह अनुवाद 15 जनवरी 2020 में आयोजित एक लोकार्पण समारोह में सामने आया। इस वर्ष प्रेमचंद की उनके सुपुत्र अमृतराय द्वारा लिखित जीवनी 'कलम का सिपाही' का डोगरी अनुवाद सुनीता भड़वाल ने किया है। इसे साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसी भाँति सुनील शर्मा ने 'परवाज़' (संतोष कुमार) नाम्नी हिंदी नाटक का डोगरी अनुवाद 'दुआर' शीर्षक से किया है। अनुवाद के वर्ग में दो और पुस्तकें जिनका अनुवाद आशु शर्मा ने किया है, वे हैं -

(i) 'नराते' (डॉ. सुशील शर्मा का हिंदी शोध लेख) इसे 'सर्वभाषा ट्रस्ट', नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

(ii) 'वासवदत्ता' (डॉ. संजीव कुमार की लंबी हिंदी कविता) इसे इंडिया नेट बुक्स ने प्रकाशित किया है।

इस वर्ष अनुवाद के क्षेत्र में पर्याप्त कार्य हुआ है। इसके बावजूद हमारा अनुमान है कि कई बार चर्चित पुस्तकें प्रकाशन वर्ष के पश्चात् सामने आने के कारण इस प्रकार के समीक्षा लेख में चर्चा पाने से अवश्य छूट जाती होंगी।

इस समीक्षा वर्ष में कुछेक पुस्तकों का पुनर्मुद्रण भी हुआ है। राज्य की कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के जम्मू प्रभाग द्वारा डोगरी लोकगीतों के 10 खंडों तथा डोगरी की पूर्व प्रकाशित लोक-कथाओं के दो भागों के द्वितीय संस्करण सामने आए हैं। आगामी वित्त वर्ष में लोकगीतों और लोक-कथाओं के शेष भाग प्रकाशित होने की उम्मीद है। यहाँ यह बताना समीचीन होगा कि अकादमी लोकगीतों और लोक-कथाओं में से प्रत्येक के अठारह-अठारह खंड प्रकाश में ला चुकी है।

डोगरी संस्था, जम्मू की चंद पुस्तकों के नवीन संस्करण

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी डोगरी संस्था ने अपनी कुछेक पुस्तकें मुद्रित करवाई हैं। दो ऐसी पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में परीक्षार्थियों के पठनार्थ नियत हैं उनका नवीनतम संस्करण इस वर्ष प्रकाशित किया गया है। ये पुस्तकें हैं -

- 'बावा जित्तो'-रामनाथ शास्त्री
- 'आधुनिक डोगरी कविता' का नया संस्करण। इस पुस्तक को पहली बार 2010 ई. में प्रकाशित किया गया था।

इसी वर्ष 20 दिसंबर को डोगरी में अनूदित-प्रकाशित कुरान मजीद को 'पवित्तर कुरआन' शीर्षक से एक लोकार्पण समारोह में सामने लाया गया। अनुवाद हेतु मौलाना वहीदुद्दीन खान के 'तज़्कीरुल क़ुर्रान' को आधार बनाया गया। सुश्री अज़रा चौधरी द्वारा अनूदित इस पवित्र पुस्तक को 'शाहे हमदान सोसाइटी', राजौरी ने प्रकाशित किया है। ऐसे कामों से विभिन्न वर्गों एवं समुदायों में धार्मिक सद्भाव के सद्-प्रयासों को प्रोत्साहन मिलेगा। इसकी आशा है।

विकास की राहों पर डोगरी

कविता अनमोल काव्य-स्त्रोत[1]

डोगरी भाषा में ऐसे कवि प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, जिनके द्वारा प्रणीत काव्य के नमूने प्रकाशन की सुविधा न मिल पाने से या तो लोक-वार्ता का अंग बन गए या विस्मृति की अंधियारी राहों में खो गए। कुछ काव्य-रूप कालांतर में लोक-मानस द्वारा लोकगीतों के रूप में गुनगुनाए जाने लगे। कुछ ऐसे कवि भी हो चुके हैं जिनकी चंद कविताएँ तो प्रकाश में आईं, किंतु उनके योगदान का वृहत्-अंश या तो अप्रकाशित रहा या विस्मृति के गर्त में लीन हो गया। प्रस्तुत शोध-ग्रंथ में ऐसे ही अल्पज्ञात कवियों की रचनाओं का संकलन किया गया है। इसमें अधिकांशतया ऐसे कवि और उनकी कविताएँ स्थान पा सकी हैं जिन्होंने 1947 ई. के आस-पास लिखना आरंभ किया था। अपने सशक्त काव्य-प्रयासों से उन्होंने डोगरी

कविता को समृद्ध तो अवश्य किया, किंतु उनके योगदान को वह वांछित महत्व नहीं मिल पाया जिसके वे अधिकारी थे। आज़ादी के 70 वर्षों में ऐसे कवियों के एक बड़े वर्ग को महत्वहीन मानकर भुला दिया गया। इनमें से अधिकांश अज्ञात अथवा अल्पज्ञात कवि बने रहे।

समीक्षित कृति में इस प्रकार के 42 कवियों का जीवन परिचय, योगदान एवं साहित्य में स्थान स्पष्ट किया गया है। प्रत्येक कवि की प्रतिनिधि काव्य-रचनाओं को भी यथासंभव प्रकाश में लाया गया है। ऐसी अनुपलब्ध सामग्री को एक ग्रंथ के रूप में सामने लाने का अध्यवसाय किसी डी. लिट्. के शोध-कार्य से कम नहीं है। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि इन कवियों की स्तरीय कविताओं को नज़रंदाज़ करना घोर गफ़लत से कम नहीं है। डिमाई आकार के 467 पृष्ठों के इस ग्रंथ में प्रकाशित मूल्यवान सामग्री से स्पष्ट है कि डोगरी की कविता-यात्रा में इन कवियों के अस्तित्व को नजरंदाज करना एक भारी भूल है। ऐसे उच्च स्तरीय शोध-कार्य करवाने हेतु जे. एंड के. कल्चरल अकादमी कोटिशः बधाई की पात्र है। अल्पज्ञात कवियों विषयक इस प्रथम गंभीर अध्ययन के उपरांत इस सिलसिले में दूसरा ग्रंथ प्रकाशित कराने की परमावश्यकता है ताकि डोगरी के ऐसे कवियों को अंधियारे गर्त से निकालकर उनके ऐतिहासिक योगदान से परिचित हुआ जा सके।

त्रै-पंगते[2]

विषय-वस्तु की दृष्टि से डोगरी कविता समकालीन प्रवृत्तियों का दामन थामे हुए है। इसके साथ ही इसमें अपनी अलग पहचान बनाने का आग्रह भी स्पष्ट होकर उभरता नज़र आता है। कुछ वर्ष पूर्व 'चमुखा' या 'चपंगता' नामक काव्य-शैली का समारंभ मोहनलाल सपोलिया द्वारा किया गया था। यह प्रयास इतना प्रचलित हुआ कि लगभग तमाम कवियों ने अपनी कलम से इस शैली में आज़माईश की। फलतः बहुत से लोगों की काव्य सामर्थ्य प्रकाश में आई। यह शैली इतनी अधिक प्रचलित हुई कि चंद वर्षों में इस काव्य-शैली पर केंद्रित पुस्तकें प्रकाश में आने लगीं। इसी भाँति डोगरी भाषा में ऐसा ही एक अन्य प्रयास 'त्रै-पंगते' नाम से वरिष्ठ कवि सत्यपाल गढ़वालिया द्वारा 2017 ई. में आरंभ किया गया। तीन पंक्तियों पर आधारित इस काव्य-शैली में यह विशेषता थी कि यह दो पंक्तियों पर आधृत उर्दू के गज़लिया शेर की भाँति एक तीखा संदेश-संवाद प्रतीत होती है। इसमें प्रायः कोई तीखा कटाक्ष या संदेश मौजूद रहता है। व्यंग्योक्ति का भाव ही 'त्रै-पंगते' का विशेष अभिप्राय है। डोगरी लोकगीतों के 'टप्पा' या तीन पंक्तियों वाले 'चन्न गीत' के निकट प्रतीत होने वाली इस काव्य-शैली को नए संदर्भों में त्रै-पंगते के लिबास में पेश किया गया है।

इस प्रकार के प्रयास डोगरी कविता के संरचनात्मक संसार में अपने पैरों पर खड़े होने का प्रमाण हैं। तीन पंक्तियों की इस स्वतंत्र कविता में जीवन से संबंधित विविध पहलुओं का स्पर्श किया गया है। वैसे तो जीवन के पक्षों की गणना करना संभव नहीं है, तो भी इस पुस्तक में संकलित त्रि-पदों में चार के मुख्य पहलू इस प्रकार से हैं-

1. जीवन एवं परिवेश की झलकियाँ
2. स्वानुभूत-भाव-बिंब
3. विविध प्रसंगों पर निजी प्रतिक्रिया
4. अपने जीवन से संबद्ध सफलता के पहलू अथवा असफलता के सूक्ष्म भाव।

तीन पंक्तियों के लघु कलेवर में कवि ने बेहद गूढ़ भावों और विचारों को सामने रखकर महारत से पेश किया है। राजनैतिक परिदृश्य और समाजिक विडंबनाओं के प्रति कवि मन पूर्णतया जागरूक है। उसने राजनैतिक शोषण को आधार बनाकर तीखे व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं। रसराज शृंगार के अनुपम नमूने भी कवि ने सफलता से गढ़े हैं।

स्मृति-चंद्रिका[3]

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में डोगरी काव्य में ग़ज़ल विधा उफान पर रही है। डोगरी में वर्षों से यह चलन रहा है कि बतौर शायर अपनी अलग पहचान के लिए प्रत्येक कवि का ग़ज़ल शैली में कलम-आज़माई करना आवश्यक है। वे लोग जो कविता की परंपरागत शैलियों में लिखने की महारत रखते थे, वे भी स्वंछद अथवा

छंदोबद्ध धारा से हटकर ग़ज़लें लिखने लगे। परंपरा से हटने का यह समवेत प्रयास इस बात का परिचायक है कि कवि-वर्ग आधुनिक शैलियों में प्रयासरत रहने की सदिच्छा रखता था।

पूर्णचंद्र शर्मा ने अपने प्रथम कविता संग्रह 'धरती दा चन्न' (1979 ई.) के द्वारा श्रेष्ठ कविताओं का रसास्वादन डोगरी के पाठक-वर्ग को कराया। अब लगभग चार दशकों की आभासित खामोशी के उपरांत वे अपना सद्य: प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह 'चेत्तें दी चाननी' (स्मृत्ति-चंद्रिका) लेकर सामने आए हैं। पिछली पीढ़ी से जुड़े होने के कारण स्वभावतया उनका ग़ज़ल विधा से जुड़ाव रहा है। 103 ग़ज़लों के इस संग्रह में उनकी पुख्ता कलम और गंभीर सोच के दिग्दर्शन होते हैं।

कवि हृदय में घनीभूत होकर बाहर निकलने वाले विचार एवं भाव ग़ज़लिया बिंब का रूप धारण कर लेते हैं। इनमें रोमानियत से लबरेज़ ग़ज़लों की अलग शिनाख्त है। यह पुस्तक इस नई सदी के दूसरे दशक में ग़ज़ल विधा की पुनर्स्थापना का सद्-प्रयास है। अब यह देखना शेष है कि युवा पीढ़ी के डोगरी कवि ग़ज़ल की सूनी पड़ी शाहराह पर कदम बढ़ाने की रुचि का प्रदर्शन करते हैं अथवा नहीं।

इस संग्रह में संगृहीत रचनाएँ ग़ज़लगोई की दृष्टि से कामयाब ग़ज़लें हैं। इनकी जितनी सराहना की जाए कम है। एक शेर में पूर्णचंद्र शर्मा गज़लियात के असलूब एवं हुनर से अपनी ला-इलमी का इज़हार यों करते नज़र आते हैं-

अजें मेरे गीतें रवानी निं आई,
अजें मेरी ग़ज़लें जुआनी निं आई।
अजें भेत भाखा निं छंदें-रदीफें,
ते जुंबश अजें मेरी काह्न्नी निं आई।

भावार्थ : ''मेरे गीत प्रवाहहीन हैं और मेरी ग़ज़ल अभी जवां नहीं हुई। अभी मुझे ग़ज़ल में 'छंद' या 'रदीफ़' की जानकारी नहीं है। मेरी लेखनी में अभी स्पंदन नहीं उभरा।''

इससे स्पष्ट है कि शायर ग़ज़ल को उत्कर्ष पर ले जाने का इच्छुक है। बहरहाल, इस संक्षिप्त समीक्षा में इतना कहना अभीष्ट है कि यह पुस्तक स्तरीय ग़ज़लों का संग्रहणीय संग्रह है। आशा करनी चाहिए इस शायर की कलम भविष्य में और भी बेहतर कविता-रत्नों से डोगरी भाषा की झोली भरेगी।

नया सवेरा[4]

डोगरी के रचनात्मक परिदृश्य में हर दिशा से कलमकार शामिल होते जा रहे हैं। डोगरी के रचनात्मक महायज्ञ में भागीदार हो रहे लोग कुछ पाने की इच्छा से नहीं, अपितु मातृ-भाषा को कुछ देने की इच्छा से शामिल होते हैं। ऐसे ही होमकर्ताओं में एक नवोदित प्रतीत होने वाले हस्ताक्षर का नाम है अशोक अंबर। ये भड्डू के प्रसिद्ध गाँव डुडवाड़ा से संबंध रखते हैं। डुडवाड़ा की धरती से डोगरी कविता में नामवरी के झंडे गाड़ चुके रोमाल सिंह भड़वाल का नाता रहा है, जिनकी डोगरी कविताएँ श्रेष्ठता के आयामों के चौखट में बंधी हुई हैं।

अशोक अंबर की आमद ने डुडवाड़ा-भड्डू की धरती की प्रतिभा के प्रति आश्वस्त किया है। स्तर की दृष्टि से ग़ज़ल जैसी कठिन विधा में उनका प्रयास सराहना के योग्य है। 'नया सवेरा' के अपने पहले ही प्रयास में उन्होंने 152 ग़ज़लों का संग्रह पेश किया है। यह एक तथ्य है कि ग़ज़ल की विधागत ज़रूरतों पर मज़बूत पकड़ बनाने के लिए एक लंबा तजुर्बा दरकार है।

डोगरी ग़ज़ल की दुनिया में अशोक अंबर की आमद न केवल सराहना के योग्य है, बल्कि आश्चर्य-चकित करने वाली भी है। कारण है कि अपने पहले ही प्रयास में वे 152 ग़ज़लों का संग्रह 'नमां सवेरा' लेकर आए हैं। ग़ज़ल वस्तुत: आम कविता से भिन्न एक कठिन शैली है। ग़ज़ल की विधागत ज़रूरतों पर मज़बूत पकड़ बनाने के लिए एक लंबे तजुर्बे की आवश्यकता है। इस तजुर्बे में किसी उस्ताद शायर का मार्गदर्शन मिला हो तो सोने पर सुहागा समझना चाहिए। अशोक अंबर को इस दिशा में जम्मू के सुप्रसिद्ध कवि दीपक आरसी का कड़ा शब्दानुशासन हासिल हुआ। यही कारण है कि अपनी पहली ही पुस्तक में वे एक मंजे हुए शायर की प्रभावान्विती

देते हैं। इस विधागत अनुशासन के विषय में दीपक आरसी बतलाते हैं-

''इन तीस वर्षों में मुझे याद नहीं मैंने उसे कितनी बार डांटा होगा, या एक-एक ग़ज़ल को 10-10 बार पढ़वाया होगा, उसमें परिवर्तन करवाए होंगे, एक-एक मिसरे को चार-चार प्रकार से लिखवाया होगा, पर मुझे इतना अवश्य स्मरण है कि वह जब भी आया उसका उत्साह पहले से अधिक बढ़ चुका होता...।'' (पृ. 22 नमां सवेरा)

इस संग्रह की ग़ज़लों में विधागत गंभीरता और कड़ी मेहनत के दर्शन होते हैं। इस पुस्तक के पठन के पश्चात् विश्वास होता है कि अशोक अंबर अपने आने वाले नए ग़ज़ल संग्रह में और भी बेहतर ढंग से मुखर हो पाएँगे।

मिट्टी की प्रतिमाएँ[5]

प्रेमनाथ 'राह्दा' की परिगणना ऐसे डोगरी कवियों में की जाती है जिनकी काव्य-रचना का उद्देश्य स्वानुभूत को शब्दबद्ध करना रहा है। मस्त-मलंग तबियत के ऐसे कवि लोक-कविता का सृजन करते आए हैं। राह्दा विगत छह से अधिक दशकों से डोगरी भाषा में अपनी काव्य-रचनाओं का योगदान देते आए हैं। चर्चित कविता-संग्रह में उनके संपूर्ण काव्य का दर्शन उपलब्ध होता है। डुग्गर के लोक-जीवन में उनकी गहरी पैठ है। ऐसे में उनकी कविताओं का सरोकार जीवन के लौकिक पक्ष से सीधे दिखाई पड़ता है।

आकर्षक गेट-अप में प्रकाशित यह पुस्तक दो खंडों में विभाजित है। प्रथम खंड में कवि की मानव-जीवन, लोक-संस्कृति तथा लोक विषयक अनुभूति स्पष्ट होती है। कवि की आध्यात्मिक विचारधारा के अलावा, जीवन पर उसका तीखा व्यंग्य और भी स्पष्ट होकर उभरा है। कृषक परिवार से संबद्ध प्रेमनाथ 'राह्दा' शिक्षा विभाग से बतौर हैड मास्टर सेवा-निवृत्त हुए तो पूर्णरूपेण जीवन को कविता सृजन और कृषि कर्म में अर्पित कर दिया। डुग्गर में प्रचलित लोक-गायन की शैली 'छिंजां' में भी विशेष रुचि लेने लगे। लोक-जीवन में रुचि के रहते उनके लेखन में लोक की सतरंगी छटा बिखरी दिखाई पड़ती है। इस कारणवश उनकी डोगरी लोक-नायक 'बावा जित्तो' पर लिखित लंबी कविता ऐतिहासिक महत्ता रखती है।

लोहड़ी, बैसाखी आदि लोक उत्सवों पर कवि की निराली भाव-भंगिमा, डोगरा संस्कृति पर उनकी मज़बूत पकड़ को सामने लाती है। ऐसी रचनाओं में भोलेपन से आवेष्ठित भावों को सादा शैली और ठेठ भाषा में प्रस्तुत किया गया है। कवि चूँकि लोक-जीवन के सरोकारों का विशेष ज्ञान रखता है, इसलिए वह लोक-चिकित्सा की जानकारी भी रखता है। इसलिए इस विषय पर उसकी दो कविताएँ 'टोटका-I' और 'टोटका-II' के शीर्षक से पुस्तक में उपलब्ध होती हैं। इनमें लोक-कवि ने कतिपय रोगों के सरल उपचारों का बखान किया है।

पुस्तक का दूसरा खंड जो 55 पृष्ठों पर आधारित है, मूलरूप से कवि प्रेमनाथ 'राह्दा' के जीवन से संबद्ध है। इस खंड में कवि के जीवन-वृत्त का सविस्तार चित्रण ओम गोस्वामी की लेखनी से हुआ है। यह पुस्तक वस्तुतः कवि प्रेमनाथ राह्दा के जीवन एवं कृतित्व पर केंद्रित एक विशिष्ट प्रयास है। इसके प्रकाशन से इस लोक-कवि की कविताओं के संरक्षण एवं संवर्धन में निश्चय ही सहायता मिलेगी।

अनुराग अंकुरण[6]

अपने उपन्यास 'भागीरथ' हेतु साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत इंदरजीत केसर मूल रूप से एक कवि हैं। कविता-विधा में इनकी बारह से अधिक कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं। भावाभिव्यक्ति की विविध शैलियों में उन्होंने कवि-हृदय के सूक्ष्म भावों को सफलता से प्रकट किया है। कवि लोग जिस मानवीय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व अपनी रचनाओं में करते हैं उसका प्रतिफलन इस कवि की सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'हिरखी पौंगर' (अनुराग अंकुरण) में भी होता है। उदाहरणार्थ 'फर्ज़' शीर्षक का यह भाव-संवेग देखें -

मेरे संग मेरे गुणों का गुणानुवाद न करो,
अपितु मुझे मेरे अवगुण बतलाओ।
यह मत सोचो कि मैं क्रोधित होऊँगा,

कमियाँ जानकर मैं और भी खुश होऊँगा।
मुझे झूठे यशोगान से परहेज़ है,
अवगुण मुझे सुधरने का अवसर देते हैं
आप भी सच्चे मित्र का कर्त्तव्य निभाओ।

कवि को अपने भाव-संसार पर मज़बूत पकड़ है। कविता के केंद्रस्थ भाव को वह पूरी महारत से निभाता नज़र आता है।

इस संग्रह में 80 छंदोबद्ध कविताओं के अतिरिक्त पाँच गीत भी संकलित हैं। विभिन्न मनोभावों के अलावा इसमें पर्यावरण एवं समाज से संबद्ध विविध सरोकारों पर बुनी गई हृदयहारी कविताएँ सराहना के योग्य हैं। इस पुस्तक में अच्छे स्तर की रचनाएँ संगृहीत हैं।

जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज़ - कहानी

विचार-समुद[7] - आरंभिक डोगरी कहानी मूलत: ग्रामीण परिवेश से संबद्ध कहानी थी, किंतु शीघ्र ही इसमें निम्न मध्यवर्गीय नागर और ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया जाने लगा। डोगरी कथाकार प्रधानतया निम्न मध्यवर्ग से संबंध रखते थे। संभवतया इसीलिए उनकी कथा-रचनाएँ मध्यवर्गीय परिवेश में पनपती विडंबनाओं को प्रतिबिंबित करती थीं। सातवें दशक में ऐसी कहानियाँ भी प्रकाश में आने लगीं जो टूटते जीवन-मूल्यों का परिशीलन प्रस्तुत करती थीं। डोगरी कहानी को युवा कलमकारों द्वारा मनोवैज्ञानिक आयाम भी प्रदान किए गए। विकासशील भारतीय समाज में उभरते टकराव के कथांश का लेखन डोगरी लेखकों ने खूब किया। इधर अपने नए और दूसरे कहानी संग्रह से डोगरी कथा-पथ पर आगे बढ़ने वाले अशोक दत्ता ने दस कहानियों के संग्रह को 'सोच समुंदर' नाम दिया है। इस शीर्षक से यह तथ्य स्पष्ट है कि कहानीकार इनमें से प्रत्येक कहानी को अपने विचारों के समुद्र से वेग सहित उफनकर बाहर निकलने वाला विचार-पुंज मानता है।

अशोक दत्ता के पास कथानक को विस्तार देने वाली एक विशेष तकनीक मौजूद है। वे ठेठ डोगरी में अपने संदेश को स्पष्ट रूप में रखने की महारत रखते हैं। इन कहानियों के कथा-पात्र जीवन के विविध पक्षों से जुड़े हुए लोग हैं जो जीवन के प्रामाणिक चित्रों को रूपायित करते हैं। अपने कथा-पात्रों के माध्यम से लेखक ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न-चिह्न प्रस्तुत किए हैं -

''...यह सभ्य समाज, विकास की आड़ लेकर कहीं गुप्त रूप से दोबारा आदिम दौर के पथ पर तो नहीं चल पड़ा ?'' (वापसी; पृ. 31)

''किसी दूसरे के नीचे नौकरी करना गुलामी से कम नहीं। ...नौकरी चाहे सरकारी क्षेत्र की हो या निजी क्षेत्र की...।'' (फींगरां-फींगरां बजूद; पृ. 104)

अन्यत्र कहीं सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक चित्रण उपलब्ध होता है- ''पुत्र! जिस व्यवस्था में हम जी रहे हैं उसमें डिग्रियों या अंकों का कोई महत्व नहीं। यहाँ जो जीता, वही सिकंदर होता है। किसी भी काम के लिए जायज़-नाजायज़ हरबे इख्तियार करने पड़ते हैं जिन्हें हम जैसी सोच वाले मनुष्य नहीं कर सकते।''

(जुगाड़; पृ. 34)

इन तमाम कहानियों के कथानक अति रोचक हैं। इनकी बयान शैली सादी और दिलचस्प है। हमें विश्वास है आगे चलकर अशोक दत्ता और भी परिपक्व कहानियों से डोगरी कहानी विधा को मालामाल करेंगे।

नाट्य-विधा में संजीदा प्रयास

इस वर्ष (2019 ई.) में नाटककार मोहन सिंह नाट्य-विधा को लेकर बेहद व्यस्त रहे हैं। इस दौरान उन्होंने अपनी कुछ नाट्य-पांडुलिपियों को गंभीरतापूर्वक शोधित एवं प्रकाशित किया है। इस वर्ष प्रकाशित होने वाली उनकी कृतियों से सिद्ध होता है कि इस नाटककार की नाट्य-विधा पर पकड़ उत्तरोत्तर मज़बूत होती गई है। उनके तीन नाटक चर्चा में रहे हैं, जिनके शीर्षक हैं- 1. 'टैगोर', 2. 'धर्म', 3. 'राजमाता'।

तीनों नाटकों का कथानक विस्तार विभिन्न आयामों का स्पर्श करता नज़र आता है। तीनों में यह साँझ है कि इनमें नाटककार मोहन सिंह के वैचारिक संसार पर आधुनिकता का पर्याप्त प्रभाव पड़ता नज़र आता है। मोहन सिंह जो मूल रूप से एक कवि के तौर पर स्थापित हैं, वे साहित्य अकादमी द्वारा अपने नाटक 'अपनी डफली अपना राग' के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं। अपने लेखन के आरंभ से ही मोहन सिंह अपने समकालीन वस्तु-जगत को अपनी रचनाओं में परावर्तित करते आए

हैं। आज का मुसीबतज़दा आम आदमी जिस समय-खंड में जी रहा है, नाटककार ने उसकी परिस्थितियों और विडंबनाओं को बखूबी पहचाना है। यदा-कदा तल्ख टिप्पणियाँ भी की हैं जो आज के यथार्थ को नग्न करती हैं।

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर पर लिखित नाटक 'टैगोर'[8] एक अलग दृष्टिकोण की लघु नाटिका है। इस नाट्य-पुस्तिका के समर्पण के शब्द दृष्टव्य हैं -

'गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को जोकि क्षेत्रीय भाषाओं के प्रबल समर्थक थे।'

नाटक में रवींद्र काव्य से कुछेक कविताओं को उद्धृत करके नाटककार ने उनके भावना-संसार पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। यद्यपि नाटक में रवींद्रनाथ बतौर एक पात्र के सामने नहीं आते हैं, तथापि उनकी वैचारिकता के पर्याप्त लंबे काव्यात्मक उद्धरण नाटक को मूलतः उन पर संकेद्रित कर देते हैं। नाटक के केंद्रस्थ प्रेरक को परोक्ष में रखकर भी उनके संदेश को नाटक में स्पष्टतया प्रतिफलित किया गया है।

इस नाट्य-पांडुलिपि का लेखन वर्ष 2011 ई. में टैगोर की 150वीं जयंती मनाने के अवसर पर हुआ था। इसे साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से संबद्ध अकादमी (जे. एंड के. कल्चरल अकादमी) द्वारा आयोजित 'टैगोर फेस्टीवल' के लिए लिखा गया था, किंतु इसे उस समय फेस्टीवल में खेला नहीं जा सका था।

धर्म[9] - धर्म क्या है और इसकी परिभाषा क्या है? ऐसे कुछ पेचीदा प्रश्नों पर गंभीर चिंतन का प्रयास इस नाट्य-कृति में उपलब्ध होता है। गहन चिंतन के फलस्वरूप वर्ष 1993 ई. में लेखक के ज़ेहन में इस समस्या का बीज-वपन हुआ। तदुपरांत दो दशकों के अंतराल में (वर्ष 2013 ई.) में यह चिंतन-मनन नाटक के रूप में सामने आया और 'धर्म' शीर्षक नाटक की पांडुलिपि तैयार हुई। उन्हीं दिनों संगीत-नाटक अकादमी की ओर से नाटक खेलने के लिए वित्तीय पोषण मिला तो यह मंचित भी हो सका। दो प्रश्न जिन पर लेखक ने नाटक के मुख्य घटनाक्रम को सार्थक रूप से केंद्रित रखा है, वे हैं -

(i) धर्म के नाम पर आज जो खेल-तमाशे हो रहे हैं, ऐसा लगता है तमाम फसादों की जड़ में मूलतः धर्म ही एक कारण है।

(ii) वर्तमान परिदृश्य में 'धर्म' वर्गों और फिरकों में बँकर एक-दूसरे को मारने या बरबाद करने का साधन बन चुका है। बरबादी का व्यावसायीकरण करके मासूम और आस्थावान लोगों को लूटने और उनका शोषण करने का साधन बन चुका है।

10 पात्रों का प्रयोग करके इस नाटक के माध्यम से इस तथ्य को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान समय में मानव का वास्तविक धर्म क्या है। छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से कथानक को आगे बढ़ाते हुए लेखक मानव-धर्म से संबद्ध प्रश्नों को यों आगे बढ़ाता है -

''यह तेरा धर्म है। जात-जमातों में बँटा धर्म, फिरकों-समुदायों में विभाजित धर्म... निजी स्वार्थों से लबरेज़ धर्म। यह आदमी का धर्म नहीं है। आदमी का धर्म तेरे इस धर्म से ऊँचा धर्म है। आदमी का धर्म, सब धर्मों से ऊपर है, सब धर्मों से पवित्र है...।''

मानव जीवन में मिश्रित पाखंड को बड़ी बेदर्दी और कुशलता से बेपर्दा किया गया है।

राजमाता[10] **:** आज के दौर में भारतीय नाटक में राजनैतिक प्रसंगों और परिदृश्यों को प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति प्रमुख है। हम जब समकालीन राजनैतिक परिवेश पर 'कमेंट' करना चाहते हैं तो सुरक्षित शैली के रूप में सांकेतिक विधि को प्रयोग में लाना श्रेयस्कर मानते हैं। 'राजमाता' नाटक वर्तमान समय-खंड का सुपरिचित दस्तावेज़ है। इसमें राजनैतिक स्वार्थ एवं हेतुवाद के स्वर प्रमुखता से उभारे गए हैं। इस नाट्य-रचना में राजनैतिक विडंबना को व्यंग्य शैली द्वारा उभारने का सफल प्रयास हुआ है। लेखक ने परिदृश्य पर पात्रों के माध्यम से तीखा कटाक्ष किया है। वह बदलते संदर्भों की नई परिभाषाएँ गढ़ने का प्रयास करता नजर आता है -

(i) ''राजधर्म में मौका-परस्ती; गद्दारी और नमक-हरामी का नाम है।''

(ii) ''राजधर्म सदा उसके पक्ष में रहा है जिस ने वक़्त को पहचाना है और अवसर को संभाला है।

राजधर्म सदा शक्तिशाली के पक्ष में खड़ा रहा है, कमज़ोर और लाचार के पक्ष में नहीं।''

निर्बल और बलवान की खींचतान सदा से चलती आई है। वस्तुत: सत्ता से जुड़े लोग आज की वस्तु- इस प्रकार स्थिति को व्यक्त करते हैं- ''पहरेदार फिक्रमंद हैं। प्रजा परेशान है और हम दुविधा में हैं। समझ नहीं आ रहा आखिर हो क्या रहा है ?''

राजनैतिक स्वार्थों और दुविधाओं का रुचिकर अंकन इस नाट्य कृति में हुआ है। यह पठनीय कृति है, डोगरी के पाठक एवं श्रोता जिसे अवश्य ही मंच पर देखना चाहेंगे।

रेडियाई साहित्य

छः रूपक[11] **:** डॉ.वीणा गुप्ता मूल रूप से एक सुविख्यात वैयाकरण और भाषा-विज्ञानी हैं। इन्होंने डोगरा संस्कृति के कतिपय पहलुओं पर सूचनाप्रद आलेख भी लिखे हैं। गत वर्षों में ऐसे ही छह आलेखों को इन्होंने रेडियो रूपकों के रूप में रूपांतरित किया था। इनके शीर्षक हैं -

1. 'डोगरी भाषा और इसका रूप-स्वरूप'
2. 'अद्‌भूत डोगरी कवि : वेदपाल दीप'
3. 'बेजोड़ डोगरी लेखक : नरेंद्र खजूरिया'
4. 'डुग्गर के पर्व-त्योहार'
5. 'डुग्गर का मौसमी खान-पान'
6. 'व्रत-पर्वों में डुग्गर का खान-पान'

विदूषी लेखिका ने रेडियो के श्रोताओं को ध्यान में रखकर इन लेखों को रेडियो रूपकों के रूप में ढाला है। यह छहों रूपक आकाशवाणी जम्मू से प्रसारित हो चुके हैं। जैसा कि शीर्षकों से स्पष्ट है ये छहों रूपक ज्ञानवर्धक भी हैं और मनोरंजक भी। सादा वार्तालाप अर्थात् संवाद शैली में इन्हें रूपक का रूप दिया गया है। रेडियो रूपक में चूँकि रचनात्मक साहित्य की गुंजाइश बहुत कम होती है, इसलिए इस रेडियाई विधा को साहित्यिक विधाओं में सम्मिलित नहीं किया जाता। लेखिका का उद्‌देश्य रचनात्मक साहित्य की प्रस्तुति भी नहीं है। उसे अपने शोध विषयों से संबंधित जानकारी रेडियो के श्रोताओं तक पहुँचाना अभीष्ट है। चूँकि शोधात्मक विषय को आलेख की भाँति ज्ञानवर्धक बनाने का प्रयास किया गया है- इसलिए ये रूपक कहीं-कहीं बोझिल प्रतीत होने लगते हैं। ऐसे में रेडियो-रूपक के प्रस्तोता के लिए गीत-संगीत तथा ध्वनि का आश्रय लेकर बोझिल कड़ियों को सुगम बनाने का कार्य करना आवश्यक है।

बहरहाल, यह कहना अत्युक्ति न होगा कि विदूषी लेखिका ने भाषा जैसे तकनीकी और क्लिष्ट विषय को भरपूर ज्ञानवर्धक बनाने का भरसक प्रयास किया है। वेदपाल 'दीप' और नरेंद्र खजूरिया के साहित्यिक योगदान विषयक अच्छी जानकारी दी गई है। खान-पान और पर्व-त्योहारों से संबद्‌ध रूपक भी डोगरा संस्कृति के विविध पहलुओं का सुचारू उद्‌घाटन करते हैं। हमें आशा है लेखिका आगे भी ऐसे प्रयास जारी रखेंगी।

शोध की उपलब्धि

देशबंधु डोगरा नूतन के उपन्यासों की भाषा का रूप और वाक्य-स्तरीय अध्ययन[12] - यह लेखक डॉ. रत्न बसोत्रा द्‌वारा भाषा-वैज्ञानिक शोध का प्रबंध है जिस पर उन्हें जम्मू विश्वविद्‌यालय द्‌वारा पी. एच. डी. प्रदान की गई थी। इस प्रबंध में देशबंधु डोगरा 'नूतन' के तीन डोगरी उपन्यास यथा 'कैदी', 'पियोकै भेजो' और 'जांगली लोक' का रूप वैज्ञानिक और वाक्य स्तरीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। देशबंधु के लेखन की भाषा मानक डोगरी से पर्याप्त मात्रा में भिन्न है। लेखक द्‌वारा प्रयुक्त भाषा की विशेषता यह है कि उसने अपनी धारणा अथवा कल्पना के आधार पर कई भाषाई प्रयोग किए हैं। इसलिए, इस विषय पर शोध आवश्यक हो जाता है ताकि लेखक और पाठक के मध्य उभरे अंतराल का निराकरण हो सके। डॉ. बसोत्रा ने भाषा-विज्ञान की स्थापित पद्‌धतियों का आश्रय लेकर 'नूतन' की औपन्यासिक भाषा का विशद् विश्लेषण किया है। शोधकर्ता ने एक विशेष स्थल पर लेखक द्‌वारा प्रयुक्त अशुद्‌ध हिज्जों को लक्षित किया है और उनके शुद्‌ध रूप को बतलाया है। किंतु, शोधकर्ता द्‌वारा सुझाए गए कुछ हिज्जों में शुद्‌ध को अशुद्‌ध बतलाने की भूल हो गई है। यथा-अशुद्‌ध कहे गए छुआह्‌न, समाह्‌ना आदि हिज्जे पूर्णतया शुद्‌ध हैं। जबकि 'हैट्‌ठ', 'कुड़िये' आदि शब्द लौकिक उच्चारण हैं।

चर्चित उपन्यासों में उपलब्ध सांस्कृतिक संकेतों पर कुछ सामग्री को केंद्रित करके अनावश्यक रूप से पुस्तक का कलेवर बढ़ाया गया है। अन्यथा इस पुस्तक में भाषा-वैज्ञानिक सटीकता से जुड़ी सामग्री की कमी नहीं है। इस गहन भाषाई अध्ययन के लिए शोध-कर्ता बधाई का पात्र है। निश्चय ही डोगरी भाषा इस ग्रंथ के प्रकाशन से समृद्ध हुई है।

बाल साहित्य

डोगरी में बाल साहित्य की आमद एक निरंतर प्रक्रिया बन गई है। यद्यपि बाल साहित्य के प्रकाशक या विक्रेता सामने नहीं आ पाए हैं तो भी बाल साहित्य के लेखक, कवि या कहानीकार निजी अध्यवसाय से अपनी रचनाओं को निरंतर प्रकाश में ला रहे हैं।

समीक्षा वर्ष-2019 में प्रकाशित होने वाली बाल पुस्तकों में से प्रमुख हैं-

1. **छुट्टियाँ** - यशपाल निर्मल द्वारा लिखित यह एक रोचक बाल उपन्यास है।
2. **शरारती काकू** - सरोज बाला जी की नौ बाल-कथाओं का यह संग्रह पठनीय सामग्री से भरपूर है।
3. **नन्हीं टोर** - पी. एल. परिहार द्वारा लिखित 101 बाल कविताओं का संग्रह।
4. **मक्खन-मखाने** - यशपाल निर्मल जी की बाल-कविताओं का संग्रह।

डोगरी का बाल साहित्य निरंतर गति से आगे बढ़ रहा है। खुशी की बात यह है कि जिस बाल साहित्य को विगत दौर में वरिष्ठ लेखक एक कठिन रचना-प्रक्रिया कहते थे, उसी विधा में डोगरी के प्रतिभावान लेखकों ने सफलता से लेखनी को चलाना शुरू किया है। यह डोगरी के समस्त आंदोलन के लिए विशेष उपलब्धि मानी जानी चाहिए। यह बेहद तसल्ली वाली बात है कि आज डोगरी के नए-पुराने कलमकार बाल साहित्य की आवश्यक विधाओं में अपने संग्रह प्रकाश में ला रहे हैं। स्तर की दृष्टि से भी इन्हें बढ़िया माना जा सकता है। अतएव इनमें से कइयों को साहित्य अकादमी का बाल-पुरस्कार भी मिला है। इस दृष्टि से साहित्य-अकादमी पुरस्कार अपने उद्देश्य में सफल रहा है। पुरस्कार की प्रेरणा ने बाल साहित्य के आंदोलन को गति एवं दिशा प्रदान की है। कहानियों एवं कविताओं के अतिरिक्त उच्च स्तरीय बाल-उपन्यास भी रचे जा रहे हैं। समग्र रूप से कह सकते हैं कि डोगरी में बाल साहित्य का उन्नयन अंततोगत्वा डोगरी भाषा के साहित्य को प्रतिभावान साहित्यकार देकर डोगरी की साहित्यिक नींव को पुख्ता कर रहा है।

नियतकालिक

नमीं चेतना - 'डोगरी संस्था' जम्मू द्वारा चलाए गए डोगरी साहित्य और संस्कृति के आंदोलन में नव-चेतना के प्रसारार्थ 'नमीं चेतना' नामक पत्रिका ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसने नई प्रतिभा को डोगरी के आंदोलन से जोड़ा था। किंतु, विगत कुछ दशकों से इसे पत्रिका के बजाय एक अर्ध-वार्षिक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाने लगा है। पुस्तक विक्रय से संस्था हेतु आर्थिक जुगाड़ तो ज़रूर हो सकता है, किंतु नव-चेतना के प्रचार-प्रसार की भूमिका गौण हो जाती है। वर्ष 2019 ई. में त्रै मासिक' नमीं-चेतना' के दो अर्ध-वार्षिक अंक प्रकाशित किए गए हैं। इनमें से एक छंदमुक्त कविता पर तो दूसरा कहानी विधा पर केंद्रित है।

डोगरी अनुसंधान (जुलाई-2018 से जनवरी-2019)

बारहवें और तेरहवें अंकों का यह संयुक्तांक, डोगरी के लेखक ज्ञान सिंह पर केंद्रित है। इसमें इस लेखक के व्यक्तित्व एवं लेखन पर विभिन्न लेख संकलित किए गए हैं। ज्ञान सिंह द्वारा लिखित नाटकों एवं अन्य कृतियों विषयक लघु लेख इसमें प्रकाशित किए गए हैं। जो लोग ज्ञान सिंह के रचनात्मक योगदान के विषय में जानने की ललक रखते हैं उनके लिए यह अंक निश्चय ही उपयोगी है।

जम्मू-कश्मीर अकादमी की डोगरी पत्र-पत्रिकाएँ

जम्मू-कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ की द्वैमासिक पत्रिका 'शीराज़ा' (डो.) इस भाषा के साहित्यिक आंदोलन को आगे बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाती आई है। इस वर्ष के दौरान 'शीराज़ा' के पाँच अंक प्रकाशित हो चुके हैं। सुसंपादित पठनीय

सामग्री तथा आकर्षक 'गेट-अप' के साथ शीराज़ा के ये पाँचों अंक सराहना के योग्य हैं। राज्य की अकादमी विगत 55 वर्ष से 'साढ़ा-साहित्य' नामक वार्षिकी प्रकाशित करती आ रही है। इसका वर्ष 2018 ई. का 'झरोखा अंक' तथा वर्ष 2019 का 'साक्षात्कार अंक' विवेच्य वर्ष में प्रकाशित हुआ है। 'झरोखा अंक' में सुप्रसिद्ध लेखकों, कवियों और कलाकारों पर शोध सामग्री उपलब्ध है तो 'साक्षात्कार अंक' में डोगरी के नामी-गिरामी साहित्यकारों के लेखन और जीवन विषयक ज्ञानवर्धक साक्षात्कार संकलित किए गए हैं।

समाहार

डोगरी भाषा के उन्नयन हेतु कई दिशाओं में काम हो रहा है। विभिन्न साहित्य-साधक अपना-अपना योगदान दे रहे हैं। साहित्य का प्रकाशन भी कभी तीव्र गति से और कभी धीमी गति से चलता रहा है। किंतु, साहित्य के पाठकों का निरंतर अभाव भी बढ़ता नज़र आ रहा है। यह एक चिंतनीय स्थिति है। गत वर्ष डोगरी के एकमात्र दैनिक पत्र 'जम्मू प्रभात' का अचानक दम तोड़ देना इस चिंताजनक स्थिति में वृद्धि करने वाला कारक है। यह डोगरी के साधकों एवं हित-चिंतकों के लिए सचेत रहने का संकेत भी है। 'जम्मू प्रभात' जो कि बहुधा साहित्य का दैनिक पत्र था, उसका बंद होना डोगरी साहित्य के वर्तमान की दशा एवं दिशा को प्रतिबिंबित करता है। निश्चय ही आने वाले वर्षों में डोगरी की उन्नति के लिए गंभीर प्रयास करने होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **'नमुल्लियां काव्य-सीरां';** प्रकाशक-जे. एंड के. अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़, जम्मू (जे. एंड के.)
2. **'त्रै-पंगते';** सत्यपाल गढ़वालिया; हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (जे. एंड के.)
3. **'चेत्तें दी चाननी';** पूर्णचंद्र शर्मा; तारा प्रकाशन; ज़िला-जम्मू (जे. एंड के.)
4. **'नमां सवेरा';** अशोक अंबर; चारु प्रकाशन; ज़िला-कठूआ-184203 (जे. एंड के.)
5. **'मिट्टी दियां मूरतां';** प्रेमनाथ राह्दा; राह्दा प्रकाशन, जम्मू (जे. एंड के.)
6. **'हिरखी पौंगर';** इंदरजीत केसर; जै माता प्रकाशन, जम्मू (जे. एंड के.)
7. **'सोच समुंदर';** अशोक दत्ता; प्रकाशक-हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू।
8. **'टैगोर';** मोहन सिंह; प्रकाशक-डुग्गर मंच, जम्मू
9. **'धर्म';** मोहन सिंह; प्रकाशक-डुग्गर मंच, जम्मू
10. **'राजमाता';** मोहन सिंह; प्रकाशक-डुग्गर मंच, जम्मू
11. **'छे रूपक';** वीणा गुप्ता, हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (जे. एंड के.)
12. **देशबंधु डोगरा 'नूतन' दे उपन्यासें दी भाषा दा रूप ते वाक्य-स्तरी अध्ययन;** डॉ. रत्न बसोत्रा; हाइब्रो पब्लिकेशंस, जम्मू (जे. एंड के.)

– 181, पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी, जम्मू-180001

❑❑❑

9

तमिल साहित्य

डॉ. बी. संतोष कुमारी

तमिल भाषा का साहित्य अत्यंत पुराना है। अन्य भाषाओं की तरह ही इसे भी सामाजिक आवश्यकताओं ने जन्म दिया है। तमिल साहित्य तमिल भाषा में लिपिबद्ध साहित्यिक लेखन से संबंधित है। तमिल भाषा द्रविड़ परिवार की भाषा है। तमिल में साहित्य, इतिहास के अन्य डोमेन की तरह अपने आप में समृद्ध है, एक व्यापक साहित्यिक परंपरा का मालिक है जो दो हजार वर्षों से फैली हुई है। सबसे पुराना जीवित कार्य स्वयं परिपक्वता के निशान प्रदर्शित करता है जो विकास की एक लंबी अवधि की ओर इशारा करता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से तमिल साहित्य का पुनरूद्धार हुआ। जब धार्मिक, दार्शनिक झुकाव का अध्ययन एक ऐसी शैली में किया गया जिससे आम जनता को आनंदित होना आसान हो गया। जनता के साथ संबंध का यह इशारा, स्वतंत्रता पूर्व काल के राष्ट्रवादी कवियों ने जनता को उकसाने में कविता की शक्ति को लागू करने से आरंभ किया था। साक्षरता के विकास के साथ-साथ गद्य फूलने लगा और अपने समकालीन चरण की ओर बढ़ा एवं परिपक्व हुआ। तमिल साहित्य में लघु कथाएँ और उपन्यास उनकी क्रमिक उपस्थिति बनाने लगे। तमिल सिनेमा के लिए जबरदस्त प्रशंसा ने आधुनिक तमिल कवियों को फिर से उभरने के अवसर भी प्रदान किए हैं।

दमयंती- आपकी कहानियों में भावनाओं की तीव्रता और गहनता दिखाई देती है। आपने अपनी रचनाओं में लैंगिक असमानता और सामाजिक राजनैतिक मुद्दों के साथ-साथ अपनी गहन चिंता में संयम बनाए रखा। मानव मन की अप्रत्याशिता को प्रकट करने वाली कहानी को बयान करने का आपका लक्ष्य था। आपकी कहानियाँ एक परिवार में स्त्री पुरुष संबंधों में सूक्ष्म शक्ति के खेल पर ध्यान केंद्रित करती हैं जो शारीरिक हिंसा की सीमाओं और महिलाओं पर होने वाली अधिक स्पष्ट हिंसा है।

एमिलि डिकेंस को जानने के बाद वे अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करने के लिए प्रेरित हुईं। उन्होंने छह कहानी संग्रह, एक उपन्यास और एक निबंध संग्रह प्रकाशित किया। उन्होंने सिल्विया प्लाथ की कविता का तमिल में अनुवाद किया। टेलीविज़न में उन्होंने मिनिंबांगल द्वारा निर्मित समुथिरकानी धारावाहिक से पटकथा लेखन प्रारंभ किया। उन्होंने सामाजिक मुद्दों पर वृत्तचित्र और सरोगेट माताओं पर एक कथा साहित्य का निर्देशन किया। उन्होंने निर्देशक मीरा कथिरावन के साथ 2018 में विजीथिरु की तीन कहानियों में से एक का सहलेखन किया। उन्होंने तमिल फिल्म विजीथिरु की पटकथा का सहलेखन किया। उन्होंने ग्यारह अन्य फिल्मों के लिए गीत लिखे। उन्होंने भारत बाला के लिए एक पटकथा

लिखी और दूसरे का निर्देशन कुट्टी रेवती ने किया। थायडैम आनंद विकडन नामक पत्रिका में प्रकाशित उनकी लघु कहानी पर आधारित है। थर्मल पावर स्टेशन पर उनकी लघु कहानी इसके अपशिष्टों के कारण पर्यावरणीय तबाही एक लघु फिल्म में बनाई गई थी। उन्हें महिलाओं के लेखन में उनके योगदान के लिए वर्ष 2019 में 'द हिंदू' तमिल भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

इमायम– आपका असली नाम वी. अन्नामलै है। इमायम आपका उपनाम है जिसमें आप रचनाएं करते हैं। आप तमिल साहित्य के एक प्रमुख और प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। आपने पाँच उपन्यास, पाँच लघु कहानी संग्रह और एक उपन्यास लिखा। आप द्रविड आंदोलन और इसकी राजनीति के साथ बहुत नजदीकी के साथ जुड़े रहे। आपका उपन्यास 'कोवरू काजुधईगल' (द मूल्स) और 'अरूमुगम' ने तमिल साहित्य के भीतर प्रशंसा अर्जित की और क्रमश: अंग्रेजी और फ्रेंच में अनुवाद किया। आपने दलित समुदाय में देखे गए उत्पीड़न के संदर्भ में एक दलित लेखक की भूमिका जैसे मुद्दों पर बहस की। आपका उपन्यास 'कोवरू काजुधैगल' को विशेष रूप से दलित लेखन में आधुनिक तमिल साहित्य का क्लासिक माना जाता है। इस उपन्यास का अनुवाद अंग्रेजी तथा मलयालम में हुआ। आपके 'सेल्लाद पनम' साहित्य के लिए आपको इयल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। समकालीन तमिल साहित्य के लिए आपको 2019 में 'द हिंदू' पत्र द्वारा पुरस्कृत किया गया।

पा राघवन– आप एक प्रसिद्ध तमिल लेखक हैं। आपको भारतीय भाषा परिषद् पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। आपका सबसे प्रसिद्ध और सराहनीय काम 'यति' उपन्यास है जो भारतीय संन्यासियों की दुनिया को दर्शाता है। पैरा ने अपनी आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए संक्षिप्त अवधि के लिए संन्यासियों के साथ समय बिताया था। वे कहते हैं कि रामकृष्ण मठ के स्वामी थापस्यानंद के साथ उनकी मुलाकात ने वह संतुलन दिया जिसकी उन्हें तलाश थी और उन्होंने महसूस किया था कि उनका मिशन मात्र लिखना है। उनकी गैर काल्पनिक कथाएँ जैसे 'डॉलर देसम' (अमरीका का राजनैतिक इतिहास) और 'नीलमेलम रथ्थम' (इजराइल का इतिहास–फिलिस्तीन संघर्ष) तमिल गैर कथा लेखन में मील का पत्थर मानी जाती है। आपने पाकिस्तान के राजनीतिक इतिहास पर भी एक शृंखला लिखी। उसकी सफलता ने उन्हें राजनैतिक इतिहास पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया। आपने 2011 से 2019 तक तमिल धारावाहिक वाणी रानी के 1750 धारावाहिकों के लिए स्क्रीन प्ले लिखा है। इसे भारतीय टेलीविजन उद्योग में एक रिकॉर्ड माना जाता है।

लीना मणिमेखलै– आप एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता, कवि और अभिनेत्री हैं। आपकी रचनाओं में पाँच प्रकाशित कविताएँ एंथोलॉजी और एक दर्जन फिल्में शैलियों, वृत्तचित्र, कथा और प्रयोगात्मक कविता फिल्मों में शामिल हैं। इन्हें कई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भागीदारी, उल्लेख और सर्वश्रेष्ठ फिल्म पुरस्कार से मान्यता दी गई है।

मीना कंदसामी– आप एक कवयित्री, कथा लेखिका, अनुवादक और कार्यकर्ता हैं जो चेन्नई में स्थित हैं। उनके अधिकांश कार्य नारीवाद और समकालीन भारतीय मिलिशिया के जाति विरोधी आंदोलन पर केंद्रित हैं। आप यूनिवर्सिटी ऑफ आयोग के इंटरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम में भी भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं और कैंट यूनिवर्सिटी, कैंटरबरी, यूनाइटेड किंगडम में चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट फेलो थीं।

अपने साहित्यिक कार्यों के साथ आप जाति, भ्रष्टाचार, हिंसा और महिलाओं के अधिकारों से संबंधित विभिन्न समकालीन राजनैतिक मुद्दों पर मुखर हैं। आपके फेसबुक और ट्विटर हैंडल के माध्यम से आपकी उपस्थिति सोशल मीडिया में है। आप 'आउटलुक इंडिया' और 'द हिंदू' जैसे प्लेटफॉर्मों के लिए कभी-कभी कॉलम भी लिखती हैं। आपने 'वी आर नॉट द सिटीजन' की सीमित प्रकाशित 53 प्रतियाँ हैंडमैन चैपबुक एडिशन लिमिटेड, टैंगरीन प्रेस लंदन से प्रकाशित की हैं। आपको आप के कार्य के लिए 'एक्सक्लूसिव कैडवर्स अंटलांटिक बुक्स 2019' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

चो धर्मन– आपका वास्तविक नाम एस. धर्मराज है। आपको साहित्य लिखने की प्रेरणा अपने मामा श्री पूमणि से प्राप्त हुई, वे भी साहित्य अकादमी से

पुरस्कृत हो चुके थे। कूगै उपन्यास में आपने स्वातंत्र्योत्तर भारत के तमिल जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया। जिसका अंग्रेजी में अनुवाद 'द आउल' में हुआ। आपने तकरीबन 9 पुस्तकें लिखी हैं।

आपको वर्ष 2019 में साहित्य अकादमी की ओर से अपने उपन्यास 'शूल' के लिए तमिल भाषा वर्ग में पुरस्कार प्राप्त हुआ। शूल उपन्यास में आपने तुत्तुकुड्डी जिले के उरूलैक्कुडी ग्राम के निम्नवर्गीय समाज की समस्याओं का चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया।

पेरुमाल मुरुगन– समकालीन साहित्यकार पेरूमाल मुरुगन लेखक, कवि और आलोचक हैं। आपके 10 उपन्यास, 10 लघु कथा संग्रह हैं। आपका सर्वोत्तम उपन्यास मदोरुभागन है। जिसका अनुवाद अंग्रेजी में 'वन पार्ट वुमैन' हुआ है, जिसे आई एल एफ समन्वय भाषा सम्मान से सम्मनित किया गया। इस उपन्यास में उन्होंने तिरुचेनगोड ग्राम की प्राचीन संस्कृति और परंपरा तथा लोक जीवन को प्रस्तुत किया है, जिसमें निःसंतान दंपत्ति की कहानी है जो बच्चे के लिए तरसते हैं।

आपके 'पौन्नाची' उपन्यास को अवार्ड के लिए चयनित किया गया। पौन्नाची उपन्यास में मादा काले भेड़ के जीवन की कथा है जो कोनगुनाडु क्षेत्र की है और इसमें एक गरीब वृद्ध दंपत्ति के हाथों काले भेड़ की त्रासदी को दर्शाया गया है।

सबरीनाथन– आपने दो कविता संग्रह की रचना की है। आपकी पहली रचना 'कालम कालम आट्म' जो आपने महाविद्यालयी शिक्षा समाप्त होने पर वर्ष 2011 में लिखी। आप तमिलनाडु के रोजगार और प्रशिक्षण विभाग में कार्यरत हैं। आपकी रचनाओ में तमिल साहित्यिक सम्मेलन करिसल मन अर्थात् करिसल के अंचल विशेष की विशेषताएँ प्राप्त होती हैं। आप साहित्यिक आलोचनाएँ भी लिखते हैं।

देवी नाचियप्पन– आपने अब तक बाल साहित्य से संबंधित बारह पुस्तकें लिखी हैं। आप शिवगंगा जिले के विद्यालय में तमिल शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं।

वर्ष 2019 में सबरीनाथन और देवी नाचियप्पन को साहित्य अकादमी द्वारा युवा पुरस्कार तथा बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मनित किया गया।

सबरीनाथन को यह अवार्ड उनकी कविता 'संचना वाल' (पूंछ) के लिए प्राप्त हुआ जो वर्ष 2016 में प्रकाशित रचना है। देवी नाचियप्पन को बाल साहित्य के विकास में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

– एच-410, द रॉयल कैसल पल्लावरम् टू थिरुमुडिवक्कम् रोड, थिरुमुडिवक्कम्, चेन्नई-600044

❑❑❑

10

नेपाली साहित्य

ज्ञानबहादुर छेत्री

संस्कृतमूलीय भारोपीय परिवार का सदस्य नेपाली भाषा का उद्‌भव भारत में ही हुआ था और इस भाषा को सन् 1992 में भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में अंतर्भूक्ति मिली। नेपाली भाषा में आंचलिक बोलियों का समेकित, सम्मिश्रित, मानक स्वरूप भी विकसित हुआ है। परिष्कृत और मानक भाषा के साथ-साथ रचनाकारों की कृतियों में आगत, आयातित, अपभ्रंश और खिचड़ी भाषा का प्रयोग नेपाली में भी देखा जाता है। 2019 में भारतीय नेपाली साहित्य का सर्वांगीण विकास, प्रचार, प्रसार मोटे तौर पर पूर्ववत् रहा है। साहित्य सेवा के प्रयोजनमूलक प्रयास पुस्तक प्रकाशन क्षेत्र में, समाजसेवी संस्थाओं, साहित्य संस्थाओं, प्रकाशकों, पाठकों और लेखकों के प्रोत्साहन एवं सहयोग से नेपाली साहित्य विकास के पथ पर गतिमान है।

नेपाली भाषा का स्वरूप विश्वजनीन है। हमारे पड़ोसी राष्ट्र नेपाल की यह राजभाषा है। इसके अलावा म्यानमार, भूटान, हॉगकॉग सहित यूरोप और अमरीका के कई देशों में नेपाली भाषा का प्रचलन है। नेपाल के साथ-साथ विश्व के चारों ओर से नेपाली भाषा में उच्चस्तरीय साहित्य का सर्जन हो रहा है। जगदंबा प्रकाशन (काठमांडू, नेपाल) से विश्व संदर्भ में नेपाली साहित्य का इतिहास प्रस्तुति का काम पूरा हो चुका है। 'जगदंबा नेपाली साहित्य को बृहत् इतिहास' शीर्षक ग्रंथ के तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं। इस बृहत् इतिहास का तीसरा खंड 'भारतीय नेपाली साहित्य' और चौथा खंड 'नेपाली डायापोरा साहित्य' पर आधारित है। भारतीय परिप्रेक्ष में नेपाली साहित्य की अलग पहचान है और भारतीय नेपाली साहित्य का इतिहास कई अन्य संस्थाओं के साथ भारतीय साहित्य अकादमी ने भी प्रकाशित किया है।

इस लेख में 2019 वर्ष में केवल भारतीय नेपाली साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

निबंध

निबंध गद्य साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली विधा है। संस्मरण, यात्रा विवरण, जीवनी आदि अनेक उपविधाएँ निबंध विधा के अंतर्गत आती हैं। इसलिए यह विधा अन्य विधाओं की तुलना में कुछ बृहत् और जटिल प्रतीत होती है।

'असम में नेपाली भाषा मान्यता आंदोलन' इस वर्ष प्रकाशित निबंध की पुस्तकों में जयनारायण लुइँटेल का यह एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण है। विदित है कि भारत भूमि में उद्‌भूत संस्कृतमूलीय नेपाली भाषा को संविधान के बाहर रखा गया था। संविधान में अंतर्भूक्ति के लिए भारत के नेपाली भाषी नागरिकों को छत्तीस साल तक लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी थी। इस आंदोलन

का शंखघोष देहरादून से जाग्रत 'गोर्खा' पत्रिका के आनंदसिंह थापा, वीरसिंह भंडारी और नरेंद्रसिंह राणा ने किया। सिक्किम राज्य के मुख्यमंत्री नरबहादुर भंडारी और उनकी सांसद पत्नी दिलकुमारी भंडारी के सुयोग्य नेतृत्व के बल पर नेपाली भाषा को 1992 में अन्य दो भाषाओं मणिपुरी और कोंकणी के साथ संवैधानिक मान्यता मिली। बीच में आंदोलन कभी तेज कभी मंद गति से चलता रहा। असम के नेपाली भाषी लोगों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया। भाषा का मुद्दा राष्ट्रीय मुद्दा है। कालिम्पोंग के युवा लेखक सुवास सोतोङ ने उनकी पुस्तक 'भाषा आंदोलन इतिहास र उपलब्धि' में देशभर के आंदोलन का इतिहास लिपिबद्ध किया है। जयनारायण लुइटेल के प्रस्तुत ग्रंथ में केवल असम राज्य का संदर्भ उल्लिखित है। प्रकाशक है असम नेपाली साहित्य सभा।

'चेतनाको स्पंदन' आलोच्य वर्ष में प्रकाशित किसी नारी लेखक का उल्लेखनीय निबंध संग्रह है। इसकी रचयिता कल्पना देवी आत्रेय नेपाली सांस्कृतिक सुरक्षा परिषद आमा मंच की महासचिव के पद पर कार्यरत हैं। इस संग्रह में समावेशित कुल सोलह निबंधों में 'सशक्त समाज र राष्ट्रनिर्माणमा नारीको भूमिका', 'प्राचीन भारतीय महिलाहरुको परिस्थिति र योगदान', 'आत्मचेतनाको विशुद्ध स्पंदन हो गीता', 'हाम्रा परंपरा अपरम्पार छन', 'भारतीय इतिहास सत्यमा आधारित बनोस' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। भारतीय इतिहास के कई महापुरुष जैसे- माधवदेव, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रानी गाइदालु चाणक्य आदि के जीवन पर आलोकपात किया है। भारतीयता की नींव भारतीय आध्यात्मिकता और नारी शक्ति में टिकी हुई है--- निबंधकार का संक्षेप सार यही है। एन पी एस निरौला रटन का 'नयाँ पुराना रचनाहरु' विविध विषयों पर रचित लेखों के संकलन में साहित्येतर विषय भी हैं। केंद्रप्रसाद उपाध्याय का 'मेरो सपनाको सिरानी' (निबंध संग्रह), सरमान सुब्बा रसिक का 'कोण प्रतिकोण', कृष्ण प्रधान का 'प्रणयम गुरुवर' (जीवनी) आदि वर्ष 2019 की चर्चित निबंध कृतियाँ हैं।

'यता हुँदा उताको झझक्को' डॉ. देवेन सापकोटा का भ्रमण विषय पर आधारित ग्रंथ है। कवि और कहानीकार के रूप में सुपरिचित सापकोटा की यह पहली कृति है। शैक्षिक प्रयोजन के लिए उन्होंने नॉर्थ केरोलिना (यू एस ए) पोल्ट्री रिसर्च इंस्टीट्यूट में छह महीने के लिए अध्ययन और रिसर्च किया। इसी भ्रमण के दौरान उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका के कई दर्शनीय स्थानों का भी भ्रमण किया। यह ग्रंथ पहली बार अमरीका का भ्रमण करने वाले छात्रों के लिए उपयोगी होगा। हरि ढुङ्गेल का 'यात्रा अमरीका को' नेपाली यात्रा साहित्य में एक नवीन संयोजन है। इसी तरह अजम प्रधान का 'हिमवत खंड' और शंकर प्रधान का 'दक्षिण पश्चिम' अपने देश का उत्तरी खंड और दक्षिण भारत का भ्रमण अनुभव है।

कविता

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित डॉ. जीवन नामदुंग समकालीन नेपाली साहित्य के जाने माने साहित्यकार हैं। पचास से भी अधिक ग्रंथों के रचयिता नामदुंग इन दिनों साहित्य अकादमी नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक पद पर कार्यरत हैं। 'समय संवाद' (कविता संग्रह) इनका नवीनतम ग्रंथ आज के जटिल समय का संबोधन करता है। कमला राई का 'समयका पाइलाहरु' आज के परिवर्तित समय की जटिल जीवन शैली को अभिव्यक्त करता है। इसी तरह कृष्णनील कार्की का 'समयको भाग्यरेखा' शीर्षक का कविता संग्रह में भी कवि कार्की आज की परिस्थिति में ह्रासोन्मुख मानवीय संवेदना पर चिंता जताते हैं। 'पहिलो पाइलो' (कविता संग्रह) की लेखक हैं नीता गुरुङ। यह उनकी पहली पुस्तक है फिर भी अनुभूति की कलात्मक प्रस्तुति में काफी सफल है। पचास कविताओं के इस संकलन में समावेशित नेपाली भाषा के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार लीलबहादुर क्षेत्री, डॉ. गोविंदराज भट्टराई और नवसापकोटा के परिचयात्मक आलेख से इस काव्यकृति की सौष्ठव वृद्धि हुई है। 'म बोल्दिनँ कलम बोल्दछ' कविता संग्रह के कवि हैं दक्षिणा देवी गजुरेल। ध्रुव लोहागण की 'तितो सत्य' काव्यकृति में प्रचलित व्यवस्था के प्रति कवि का विषोद्गार प्रकट हुआ है।

तुलसीशरण उपाध्याय नेपाली भाषा-संस्कृति के जाने-माने विद्वान हैं। आप असम के गमिरि में स्थित राकाचंद्र संस्कृत टोल में प्रधानाध्यापक के रूप में

शिक्षादान में लगे हुए हैं। शिक्षण के साथ साहित्य सर्जन में भी आप संलग्न हैं। 'भावकुसुमाञ्जली' उपाध्याय का छंदोवद्ध काव्य संकलन है। इस में नौ कविताएँ हैं जिसमें सबसे लंबी कविता 'टारेर टर्दैन त्यो' में 107 श्लोक हैं। 'मनको औषधि', 'हिड्दै अघि आउन', 'सृष्टि रहस्य', 'भीमाजुली चतुर्दसी', 'शिव आचार्यको सम्झनामा', 'बस्तछन दैव सम्झिँदै', 'निराशा सिवा हात लागेन केही', 'बित्यो जिंदगी हात आएन केही', 'दिनमणि अष्टक हुतात्माको सम्झना' आदि भिन्न आयाम की कविताएँ हैं।

कस्तै वीर पराक्रमी छ र पनी खै के गर्यो लौ भन
मेधावी बहुविज्ञ रैछ र पनी ख्वै बन्छ सर्वेश्वर
सारा जीवन गर्छ कष्ट कठिन ख्वै हातमा के रह्यो
आयो टप्प टिप्यो लग्यो मिति पुग्यो टारेर टर्दैन त्यो।

(टारेर टर्दैन त्यो)

'टारेर टर्दैन त्यो' (टाला नहीं जाता) शीर्षक कविता का विषय है मृत्यु। बड़े-बड़े शूर वीर, राजा महाराजा भी मृत्यु से हार मान गए। शस्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञ, ज्ञानी, विज्ञानी सब के सब महाकाल के आगे घुटने टेकने को विवश हैं। समय आने पर वह (मृत्यु) आता है और पकड़कर ले जाता है। मृत्यु को टाला नहीं जा सकता।

सुषमा मोक्तान का 'उन्मुक्तिका चाहना', धन नीरव प्रधान का 'आँखाको पाप', के एन कोइराला का 'चरणामृत', रत्न लक्सम सुब्बा का 'अंतर्भाव', ललित लोहार का 'मनभित्रको आकाश' (गीत संग्रह), हरि ढुङ्गेल का 'मेरो जिंदगी', एन पी एस निरौला रटन का 'सम्झौता कविताहरु', कमल दाहाल का 'कलम कलम' (गीत संग्रह), रवि पौडेल रटन का 'जीवन बँचाइका उदगारहरु' (मुक्तक संग्रह), शैलेश प्रधान का 'मान्छेको कविता', मनबहादुर राई का 'अल्झेका आशाहरु', त्रिपुरा पोखरेल खरेल का 'मेरी कविता', डॉ. शारदा उपाध्याय का 'भावनाका बतासे स्वरहरु', ऋषि अधिकारी का 'मनको बारुद' (गजल), ऋषिकेश भरद्वाज का 'साथी यहाँ यस्तै छ जिंदगी', शांत कुमार घिमिरे का 'आम जनता', राजेंद्र पाशा का 'उत्क्रोश स्वरहरु' (हाइकु), इंद्रबहादुर गुरुङ का 'यात्रा', शांतप्रकाश राई का 'मीरफूल', संजीव उपाध्याय का 'अनुपम', तेजमान बराइली का 'गांधी' (मुक्तक संग्रह), अशोक रोका का नखोज्नु उसलाई सहरहरुमा, प्रेम विश्वकर्मा का 'मादल' (गीतों का संकलन), गोकुल रसाइली का 'कालकुष्ठ', सुदर्शन अम्बटे का 'इयाउँकिरी र जुनकिरी' (बाल कविता), बिलोक शर्मा का 'समयाभास' आदि 2019 में प्रकाशित उल्लेख्य काव्य कृतियाँ हैं।

नाटक

'मालती' उपन्यास के लिए मुक्ति प्रसाद उपाध्याय को साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुस्कार मिल चुका है। आलोच्य वर्ष में उनका नाटक 'महिमा' प्रकाश में आया। दस दृश्यों के इस नाटक में आस्ट्रेलिया में कर्मरत धनवान पुत्र और पुत्रस्नेह में तड़पती एक माँ की कहानी है। भौतिक सुख की बाढ़ी में भावनात्मक बातें तिनके की भाँति बह जाती। इस नाटक में जेनेरेशन गैप की समस्याएँ हैं। द्वंद नाटक का प्रमुख तत्व होता है। मुक्ति प्रसाद उपाध्याय के 'महिमा' नाटक में नाटकीय द्वंद की सुंदर प्रस्तुति देखने को मिलती है। इस नाटक में धनवान पुत्र यांत्रिकता और भौतिकता को ही जिंदगी मानता है जबकि उसकी माँ भावनात्मक मूल्यों का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। असम राज्य की शोणितपुर जिलांतर्गत पोथिमारी गाँव के महीपति निरोला नाटक लेखन में सुपरिचित प्रतिभा हैं। असम के इतिहास पर आधारित उनकी कई नाट्यकृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनका 'चिर्पटको' चोट सामाजिक यथार्थवादी नाटक है। यह एक गरीब देहाती परिवार की कहानी है। सुनिल राई का नाटक 'घरमा के के छन' भी एक मंचीय सफल नाटक प्रकाशन में आया है।

आख्यान

विश्व साहित्य में उपन्यास विधा का महत्व सबसे अधिक प्रतीत होता है क्योंकि उपन्यास के विस्तृत कलेवर के कारण इसमें जीवन के हरेक पहलू समा सकते हैं। लेखक भी उपन्यास में अपनी सर्जन प्रतिभा को खुलकर उजागर कर पाता है। सर्वेक्षण में पता चला है कि नेपाली भाषा में उपन्यास की संख्या बहुत ही कम है। यह चिंता का विषय है। आलोच्य

वर्ष में केवल दो उपन्यास प्राप्त हुए। विष्णु शर्मा अधिकारी का 'कर्मभूमि' और दूसरा डॉ. साङमु लेप्चा का 'आकाशबेली'।

'उमेरको घाउ' प्रेम प्रधान का नवीनतम कहानी संग्रह है। प्रधान साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित आख्यानकार हैं। 'उमेरको घाउ', 'निर्मला', 'भोक', 'इच्छाको कठपुतली', 'दिशाहीन सड़क', 'चिंता सल्केको पहाड़', 'जीवनको चौतारो र तीन स्वरहरु', 'नयैं बिहानको खोजमा' आदि मिलाकर कुल सोलह कहानियाँ हैं। इनकी कहानियों में मुख्यत: दार्जीलिग पहाड़ की समस्या के साथ स्वाधीन राष्ट्र के नागरिक के रूप में शान की जिंदगी जीने की तमन्ना अभिव्यक्त हुई है। इसी तरह इस वर्ष में प्रकाशित चर्चित कहानी संग्रह है डॉ. इंदुप्रभा देवी का 'रुद्ध अनिरुद्ध'। इस कहानी संग्रह में 'पग्लँदै झरेको रात', 'जीवन संगीत', 'झरणा', 'अक्सिजेन', 'मी टु', 'अँध्यारो भित्रको उज्यालो', 'उन्मूक्तिको ढोका' आदि चौदह कहानियाँ संकलित हैं। बिम्बात्मक, प्रतीकात्मक और नारीवादी प्रवृत्ति इनकी कहानियों में देखी जाती है। 'बेहद फुलेका मनका बैंशहरु' इस कहानी संग्रह के रचयिता दलमान डी गुरुङ नाम्ची सिक्किम के आख्यानकार हैं। प्रस्तुत संग्रह में 'तृषा अनि वर्षा', 'विकल्प खोज्दै जीवन', 'गोधुलिपछिको शून्य आकाश', 'डलरको मोहमा फसेपछि', 'नियतिले साँचेको एक टुक्रा माया', 'घुम्ती घरकी चमेली', 'काला पानी बगर जिंदगी', 'हिमालको सेतो हिउँ र कल्पना', 'दुख्दो त वारि र पारि नै छ' लेखक की कुल नौ कहानियाँ संकलित हैं। नयाँ बाजार, जोरथाङ के ध्रुव लोहागण भी साहित्य में इस वर्ष चर्चित रहे। उनकी 'समय चक्र' कहानी संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। राहुल राई बोगिको का 'मितोप' (मितोप मणिपुरी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है फालतू आदमी), पवन राई नामदुंग का 'निशब्द गाउँ', डॉ. गोकुल सिन्हा का 'वसुधैव कुटुम्बकम', वीणाश्री खरेल प्रधान का 'महक रजनीगन्धाको', शीला लामा का 'बेरंग जिंदगीका रंगहरु' आदि आलोच्य वर्ष में नेपाली भाषा में प्रकाशित कहानियों का संकलन हैं।

लोककथा और बाल साहित्य एक-दूसरे के परिपूरक माने जाते हैं क्योंकि लोककथा की शुरुआत बाल जीवन से ही आरंभ हो जाती है। लोगों द्वारा किए गए कार्यों को शब्द साहित्य द्वारा रेखांकित कर लोककथा के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है जैसे कोई हराभरा जीवंत वृक्ष। जिसका अर्थ कभी समाप्त ही नहीं होता। इसके साथ-साथ नई संभावनाएँ अपने आप निकलती रहती हैं। लोककथा का मूल स्वरूप इसी बात पर समाहित है और यही रूप जो व्यावहारिक दृष्टि से कुछ अलग-सा होते हुए भी बाल साहित्य का स्थान निरंतर पा रहा है क्योंकि यह साहित्य बाल-बालिकाओं के लिए अलिखित, कल्पनाशील साहित्य है, जिसका परित्याग करना असंभव है, क्योंकि लोककथा बालकों के मन मस्तिष्क पर स्वत: प्रवाहित होती है।

आलोच्य वर्ष 2019 में रुद्र पौडेल की 'लोक कथा' नेपाली बाल साहित्य की महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें 'चोर र चंडाल', 'बाठो मूर्ख', 'दश वचने आमा बीस वचने छोरी', 'नारद बुद्धिले बाँचे', 'बुद्धिको काम', 'तीन छोराहरु', 'सेती र काली छोरी', 'डेढहाते मान्छे', 'तीन गफाडीहरु', 'कोही छोटा दन्त्य कथा', 'आमाको माया', 'आँखा पैंचो लाउने कथा', 'बहिराहरुको पारिवारिक कथा', 'आहारिसे मान्छे र गुणी पशुको कथा', 'आखिर हार मान्नै पर्यो' ----कुल मिलाकर पंद्रह लोककथाएँ संकलित हैं। शिबु छेत्री का कहानी संग्रह 'नयाँ जूत्ता' में संकलित कहानियाँ बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए रचित बालोपयोगी ग्रंथ अभिभावकों के लिए भी अवश्य पठनीय हैं।

समालोचना

सन् 2019 में प्रकाशित समालोचना विधा में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या संतोषप्रद नहीं है। अर्जुन प्रधान का 'परखपृष्ठ' वर्ष की एक उत्कृष्ट समालोचना पुस्तक है। अर्जुन प्रधान नेपाली समालोचना के एक अग्रणी समीक्षक हैं। 'सिर्जनाको सेरोफेरो', 'विमर्शन', 'अंत:दृष्टि', 'चिंतनपथ', 'मननमार्ग' प्रधान की पूर्व प्रकाशित समालोचना की पुस्तकें हैं। आलोच्य वर्ष 2019 में प्रकाशित प्रधान के परखपृष्ठ पर संकलित लेखों में चौदह पुस्तकों पर समीक्षा की गई है। कवि, निबंधकार और समालोचक के रूप में सुपरिचित सुकराज दियाली की दो समालोचना विधा की पुस्तकें

प्रकाशित हुई। जिसके शीर्षक हैं, (क) 'विमर्शको कसीमा जीवन नामदुंगको बखतबहादुर' और (ख) 'काव्याङ्कन'। प्रकाशमणि प्रधान का 'विधा विमर्श' भी नेपाली समालोचना का एक उल्लेख्य ग्रंथ है। इस ग्रंथ में समालोचक प्रधान ने धरणीधर शर्मा, रूपनारायण सिंह, पारसमणि प्रधान, रामकृष्ण शर्मा, लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, हरिभक्त कटुवाल, शिवकुमार राई, इंद्रबहादुर राई, विंद्या सुब्बा प्रभृति अग्रज साहित्यकारों की परिचयात्मक समीक्षा की गई है। टीका ढुंगेल रटन का 'कतिका स्मृतिहरु' समालोचना में भी भारत की दस नेपाली साहित्यक कृतियों के बारे में परिचयात्मक चर्चा है।

'समकालीन भारतेली नेपाली साहित्य गति र प्रवृत्ति' इस संकलन का प्रकाशन आलोच्य वर्ष का अति महत्वपूर्ण प्रकाशन है। असम नेपाली साहित्य सभा की पहल में अप्रैल 2018 में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की थीम थी समकालीन भारतीय नेपाली साहित्य। देश के विभिन्न क्षेत्र के जाने माने लेखक गवेषकों ने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि विषयों पर अपना कार्यपत्र प्रस्तुत किया। कबीर बस्नेत, डॉ. इंदुप्रभा देवी, सरिता समदर्शी, ज्ञानबहादुर छेत्री, डॉ. राजकुमार छेत्री, डॉ. नवीन पौडेल, डॉ. शांति थापा, डॉ. दीपक तिवारी, टेकनारायण उपाध्याय, पूर्णकुमार शर्मा, डॉ. वासुदेव पुलामी, डॉ. खेमराज नेपाल, डॉ. खगेन शर्मा, मुक्तिप्रसाद उपाध्याय और रूपेश शर्मा के कुल सत्रह कार्यपत्र पठित हुए। इनके शैक्षिक और ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए कार्यपत्रों का पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया गया। इसे भारतीय नेपाली समालोचना का यह एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ माना जा सकता है। इसके संपादक है रुद्र बराल।

अनुवाद

हमारे देश भारत में अनुवाद की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। संस्कृत के वैदिक, औपनिषदिक तथा पौराणिक साहित्य से यह परंपरा मध्यकाल तक चली आई। मध्यकाल में भी संतों और ऋषि-मुनियों ने संस्कृत और पालि भाषा के साहित्य, दर्शन, नीतिशास्त्र, चिकित्सा, ज्योतिष, व्याकरण आदि विषयों के अनेक ग्रंथों का युगीन भाषा में अनुवाद किया। फिर 19वीं शताब्दी में भारतीय प्राचीन ग्रंथो के साथ-साथ पश्चिमी साहित्य विशेषकर अंग्रेजी के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों के अनुवाद हुए। भारतीय लेखकों ने अंग्रेजी, असमिया, नेपाली, बांग्ला, मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड आदि भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद किया। इस प्रकार समग्र में देखें तो राजनैतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता, अखंडता तथा सांस्कृतिक नवजागरण लाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट, नेशनल अनुवाद मिशन तथा अन्य शैक्षिक संस्थाएँ भी अनुवाद को बढ़ावा दे रही हैं।

आलोच्य वर्ष 2019 में भारतीय साहित्य के कई महत्वपूर्ण ग्रंथ अनुवाद के माध्यम से नेपाली भाषा में आए।

डॉ. संजीव उपाध्याय एक कुशल अनुवादक हैं। उपाध्याय ने हेमिंगवे का 'द ओल्ड मैन एंड द सी', अलेक्जेंडर डुमा का 'दा काउन्ट ऑफ मांटोक्रिष्टो', कामु का 'द प्लेग' उपन्यास का अनुवाद कर चुके हैं। 2019 में उनकी अनूदित पुस्तक 'बाबु-छोरा' (उपन्यास) प्रकाशित हुई। इस उपन्यास के मूल असमिया भाषा के लेखक हैं होमेन बरगोहाईं। बरगोहाईं के 'पितापुत्र' उपन्यास को अनुवादक डॉ. संजीव उपाध्याय ने नेपाली भाषा में अनुवाद किया है। इसी तरह 'शान्तनुकुलनन्दन' असमिया उपन्यास के मूल लेखक हैं पुरवी बरमुदोइ। इसे नेपाली में एक ही शीर्षक में अनुवाद किया है पूर्ण कुमार शर्मा ने। यह साहित्य अकादमी का अनुवाद अनुबंध पर संपन्न हुआ, अतः इसका प्रकाशक भी साहित्य अकादमी, नई दिल्ली है। कैलाश मानसरोवर से उद्भूत, तिब्बत चीन से होते हुए अरुणाचल से असम राज्य के बीचों बीच प्रवाहित होकर बंगोपसागर में समाहित ब्रह्मपुत्र नदी, तत्संबंधित पौराणिक कहानी और अनेक मिथक किंवदंतियों को जोड़कर पुरवी बरमुदोइ ने उपन्यास का रूप दिया। 'शान्तनुकुलनन्दन' का अनुवाद निश्चित रूप से नेपाली साहित्य में एक अनमोल संयोजन सिद्ध होगा। 'कब्बे और काला पानी' निर्मल वर्मा का साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कहानी संग्रह है, जिसमें लेखक की सात कहानियाँ हैं- 'धूप का एक टुकड़ा', 'दूसरी दुनिया', 'जिंदगी यहाँ और

वहाँ', 'सुबह की सैर', 'आदमी और लड़की', 'कब्बे और काला पानी', 'एक दिन का मेहमान' शामिल हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ यदि भारतीय परिवेश को उजागर करती हैं तो कुछ कहानियाँ हमें यूरोपीय परिवेश से परिचित कराती हैं। लेकिन मानवीय संवेदना, मानव-संबंधों में आज जो ठहराव और ठंडापन है, उदासी और कृत्रिमता है इन कहानियों के माध्यम से वो हमें झकझोरती हैं। इसे 'काग र कालो पानी' शीर्षक देकर नेपाली में अनुवाद किया है दार्जीलिंग के बहुचर्चित लेखक सुकराज दियाली ने।

विविध

'पद्म ढकाल अभिनंदन ग्रंथ' में असमिया और हिंदी भाषा में पद्म ढकाल के व्यक्तित्व और साहित्यिक कृतित्व के विषय पर लिखित सत्तर रचनाएँ समावेशित हैं। असम के एक जाने-माने साहित्यकार पद्म ढकाल ने लगभग छह दशकों तक साहित्य की सेवा की और आज पचासी वर्ष की उम्र में भी लेखन कार्य में सक्रिय हैं। किसी भी लेखक को उसके जीवन काल में ही सम्मानित करना बहुत अच्छी परंपरा है। इनके ज्यादातर निबंध संस्मरणात्मक, पुनरावृत्ति के दोष से युक्त हैं। बीचों-बीच कुछ विशिष्ट लेखकों के समीक्षात्मक लेख भी हैं। जिन लेखों में स्रष्टा ढकाल का व्यक्तित्व और कृतित्व उजागर हुआ है। टीका ढुंगेल रटन पत्रात्मक निबंध साहित्य को आगे बढ़ाने लिए प्रयत्नशील हैं। उनकी 'पत्र संबंध' एक पठनीय पुस्तक है।

वर्ष 2019 में आधुनिक भारतीय नेपाली साहित्य का इतिहास (हिस्ट्री आफ माडर्न इंडियन नेपाली लिट्रेचर) अंग्रेजी भाषा में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस ग्रंथ के लेखक हैं डॉ. जीवन नामदुंग। लेखक ने इस ग्रंथ में स्पष्ट रूप से दिखाया है कि भारतीय नेपाली साहित्य की अलग पहचान है, जो भारतीय राष्ट्रीयता को प्रतिबिंबित करता है। तीन अध्यायों में विभाजित यह ग्रंथ गैर नेपालीभाषी पाठकों के लिए उपयोगी संदर्भ ग्रंथ होगा।

नेपाली साहित्य परिषद, सिक्किम नेपाली साहित्य की एक पुरानी और सुपरिचित लोकप्रिय साहित्य संस्था है। प्रकाशन संस्था के रूप में भी कार्यरत यह संस्था हरेक साल महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन कर रही है। इस वर्ष परिषद के बैनर पर प्रकाशित ग्रंथों में 'भानुस्मारिका' गवेषकों और छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी संदर्भ पुस्तक होगी। दुलियाजान असम से 'अभिव्यक्ति' (अंक 28, 29) संपादक बालकृष्ण उपाध्याय, इसके अतिरिक्त पिछले सालों की तरह देश के विभिन्न प्रांतों से नेपाली भाषा में दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक आदि पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। भानु जयंती, भाषा मान्यता दिवस आदि पर्व और विभिन्न सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं के अधिवेशन के उपलक्ष पर संस्था के मुखपत्र और स्मृतिग्रंथ प्रकाशित होते हैं- ये भी साहित्य का संवाहक है। तेजपुर और गांतोक से प्रकाशित 'हाम्रो प्रजाशक्ति', 'देशवार्ता', 'उदय', 'हिमालय दर्पण', 'हाम्रो धरोहर', 'चिनारी', 'प्रदीपिका', 'कनका', 'स्रष्टा' आदि पत्रिकाओं का नेपाली साहित्य के विकास पर योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है।

वर्ष 2019 के पुरस्कार, सम्मान

साहित्य अकादमी पुरस्कार- सलोन कार्थक (विश्व एउटा पल्लो गाउँ- नियात्रा)

साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार- भविलाल लामिछाने (चराको चिरबिर भुराको किरकिर-कविता संग्रह)

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार- सचेन राई दुमी (बोजुले भनेको कथा मूल अंग्रेजी ग्रेनमदर्स टेल्स आर रे नारायन)

साहित्य अकादमी युवा साहित्यकार पुरस्कार- कर्ण बिरह (चर्किएको भूइँ- कविता संग्रह)

भानु पुरस्कार- ध्रुव लोहागण

डॉ. शोभाकांति थेगिम स्मृति पुरस्कार-रीता ठकुरी

स्रष्टा पुरस्कार- सुकराज दियाली, माधव बुढाथोकी, पूर्ण योञ्जन।

लालमान सञ्चरानी स्मृति पुरस्कार- जयदीप सुब्बा

शिवकुमार राई स्मृति पुरस्कार- कृबु संयमी

अगमसिंह तामाङ प्रतिभा पुरस्कार - सुरेश सुब्बा बियोगी

निष्कर्ष

पिछले वर्षों की तुलना में वर्ष 2019 के नेपाली साहित्य को गुणगत एवं संख्यात्मक दृष्टि से संतोषजनक ही माना जा सकता है। विशेष रूप से उपन्यास और

बाल साहित्य विधा में कमी स्पष्ट दिखाई देती है। विश्व साहित्य में उपन्यास विधा का महत्व सबसे अधिक प्रतीत होता है क्योंकि उपन्यास के विस्तृत कलेवर के कारण इस पर जीवन के हरेक पहलू समा सकते हैं। लेखक भी उपन्यास में ही उसकी स्रष्टा प्रतिभा को खुलकर उजागर कर पाता है। सर्वेक्षण में पता चला है कि नेपाली भाषा में उपन्यास की संख्या बहुत ही कम है। यह चिंता का विषय है। इस वर्ष कविता विधा सबसे आगे रही, कथा साहित्य में भी बढ़ोत्तरी हुई। कविता और अन्य विधाओं को औसत रूप में संतोषजनक मान सकते हैं। आलोच्य वर्ष में विशेषकर नारी और युवा लेखकों में काफी उत्साह देखने को मिला है।

– चानमारी, तेजपुर, गुवाहाटी, असम-784001

❑❑❑

11

पंजाबी साहित्य

प्रो. फूलचंद मानव

उत्तरी भारत में, हिंदी के पश्चात् सर्वाधिक प्रचलित भाषा पंजाबी है। हिंदी और कई हिंदीतर भाषी प्रांतों में भी इसे सुना, समझा और सराहा जा रहा है। रेडियो, नाटक, टी.वी. सीरियल, सिनेमा-फिल्में, रंगमंच ने भी इसे हवा दी है। पंजाबी का साहित्य समकालीन सर्वाधिक लोकप्रिय इसलिए भी हो रहा है कि भारतीय भाषाओं के साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में भी पंजाबी रचनाएँ छपती, पढ़ी जाती और प्रशंसा पा रही हैं। कहानी, कविता के अतिरिक्त प्रकाशकों के यहाँ से हिंदी में भी, पंजाबी नाटकों, उपन्यासों, संस्मरणों या आत्मकथाओं को प्रकाशित किया जाता है। चंडीगढ़, दिल्ली की तरह अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, पटियाला के अतिरिक्त समाना, समराला सरीखे क्षेत्रों से भी पंजाबी पुस्तकों का प्रकाशन-वितरण धड़ल्ले से हो रहा है। नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया (एन. बी.टी), साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ जैसी श्रेष्ठ साहित्यिक संस्थाओं के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित रहे हैं।

जसवंत सिंह कंवल और दलीप कौर टिवाणा, पंजाबी उपन्यास, कहानी के भी शीर्ष हस्ताक्षर हैं। इन्होंने पंजाबी को पाठक दिए हैं। लोकप्रिय पंजाबी लेखन में दोनों की रचनाएँ बड़ी संख्या में छपी, बिकी और पढ़ी भी जा रही हैं। अमृता प्रीतम, नानक सिंह, गुरबनश सिंह प्रीतलड़ी की तरह दोनों रचनाकारों ने सम्मान एवं पुरस्कार पाया है और पंजाबी पाठकों की संख्या में वृद्धि की है। इन्हें पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया जाता रहा है। अभी तक इन पर शोध प्रबंध लिखे जा रहे हैं। प्रसंगाधीन वर्ष 2019 में सेहत के उतार-चढ़ाव के रहते भी इन शीर्ष रचनाकारों की बातें अखबारों, पत्रिकाओं में आती रही हैं।

आज जो, और जैसा लिखा जा रहा है, पंजाबी में भी लघु पत्रिकाओं, सरकारी रिसालों, अखबारों के माध्यम से सामने आता है जो आने वाले कल तक जाकर इतिहास का हिस्सा हो जाता है। चुनकर संकलित, संपादित रूप में यही पुस्तकाकार 'बाजार' का हिस्सा हो जाता है। पाठक, लेखक, प्रकाशक, भी इसी पर इतराता है। इस प्रकार पत्रिकाओं के मूल मर्म और महत्व को हम नकार नहीं सकते। कल इनकी जरूरत थी, आज ये लाजिमी हैं और आने वाले कल में इनकी प्रस्तुति पर ही भविष्य में आलोचक, संपादक निर्णय लेंगे। इनकी रचनाधार्मिता पर संवाद रचाएँगे।

रोजाना अजीत, पंजाबी ट्रिब्यून, नवां जमाना, जागरण, पंजाबी के उन प्रमुख अखबारों में से हैं जिनके साप्ताहिक, साहित्यिक परिशिष्टों को पढ़ा, सहेजा और संभालकर भी रखा जाता है। पुस्तक चर्चा, समीक्षाएँ, ताजा रचनाएँ, चित्र, परिचर्चा यहाँ सालभर मुख्यतः छपती रहती हैं। वाद-विवाद को

जन्म देती सामग्री भी कभी सामने आती है तो उत्तेजना पैदा करती है। पंजाबी अखबारों में देश-विदेश के पंजाबी साहित्य, उनकी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती रहती है। अमरीका, कनाडा, इंग्लैंड या आस्ट्रेलिया ही नहीं, अन्य कई देशों से कवि-कवयित्रियाँ या रचनाकार, इधर पंजाब आकर अपनी किताब छपवाते हैं, उस पर चर्चा करवाते हैं।

सिरजणा, शब्द, कहाणी पंजाब, सरोकार, चिराग, मुहांदरा, लकीर, नज़रिया, मिन्नी, साहित्यिक एकम से लेकर 'फिलहाल', 'हुण', 'राग', 'अक्खर', 'शंख', 'त्रिशंकु', 'गुफ्तगू', 'दरपण', 'शब्द त्रिंजण', 'कवि शास्त्र' जैसी तीस चालीस पत्रिकाएँ पंजाबी में सक्रिय हैं। ये इस बात का प्रमाण हैं कि पंजाबी में पाठक हैं। धड़ की-कड़ की भाषा पंजाबी के इन्हीं पाठकों ने ऐसी पत्रिकाओं को बरकरार रखा हुआ है।

विदेशी और भारतीय भाषाओं के साहित्य का पंजाबी अनुवाद इनमें छपता है तो पंजाबी पाठक अपनी भाषा के लेखन का कद भी पहचानने के काबिल हो जाता है। धारावाहिक उपन्यास, लंबी कहानी, लघु कथाएँ, गीत, गज़ल, कविताएँ, लेख, आलोचना, स्तंभ आदि 2019 की ऐसी स्तरीय पत्रिकाओं में पंजाबी पाठक को पढ़ने के लिए मिलते रहे हैं।

पंजाबी कहानी के क्षेत्र में किरपाल कज़ाक, सुखजीत, मनमोहन बावा, जतिंदर हांस, जिंदर, गुरदेव रूपाणा, सांवल धामी, दीप दविंदर सिंह, जसबीर राणा, सुरिंदर रामपुरी और अजमेर सिद्धु से लेकर रानी नगेंदर, दीप्ति बरूटा, तृप्त के सिंह, सरघी, अरविंदर कौर धालीवाल, सुरिंदर नीर, वीना वर्मा, सुरजीत, सिमरन अक्स जैसे कथाकारों की लंबी फेहरिश्त है जिनकी कहानियाँ सन् 2019 में पत्रों-पत्रिकाओं में छपी, चर्चित हुईं। साथ ही इनमें से दर्जनों रचनाकारों के कथा संग्रह भी प्रकाशित हुए। शहर-दर-शहर, साहित्य सभा, साहित्य अकादमी या स्थानीय कई मंच इन कहानी संग्रहों पर गोष्ठी, संवाद या लोकार्पण समारोह भी आयोजित करते रहे हैं। यहीं कथा विधा और संग्रह/संकलन विशेषकर, पेपर लिखकर, पढ़वाए गए हैं।

कथाकार अशोक वशिष्ट, विजय कुमार, लाल सिंह लाली, गुरशरण सिंह नरूला, मनजीत बराड, रवि रविंदर, राजिंदर सिंह चड्डा, सुरत विंदर सिंह मुल्लापुर, अनेमन सिंह, एस. साकी, सरूप सियालवी, निंदर गिल आदि कथाकारों की कहानियों पर भी बात हुई है। हरजिंदर सिह सूरेवालिया, नैण सुख, दविंदर मंड, गुरमीत कडि यलवी, सुखपाल सिह थिंद, बलजीत, बलविंदर सिंह गरेवाल, बिंदर बसरा जैसे कथाकारों का नोटिस भी इनकी रचनाधर्मिता के कारण लिया जाता रहा है। इस या ऐसी सूची में दर्जनों अन्य रचनाकारों के नाम भी शामिल हो सकते हैं, जिनकी हाज़िरी पंजाबी कथाकार के रूप में अखबारों, पत्रिकाओं में मिली है। लेकिन लीक से हटकर, धारा के विरुद्ध अथवा मुख्यधारा में ट्रेंड-सैंटर कहानियों की बात किए बिना इसे चरितार्थ नहीं किया जा सकता।

'इश्क सी कुडी' वीना वर्मा का संग्रह, 'इकत्ती कहाणीआं' नछत्तार, 'सहमी बुलबुल दा गीत' सुरिंदर रामपुरी, 'पारवती दा खोखा' अश्विनी बागडीआँ, 'मैं अनयघोश नहीं' सुखजीत, जनानी पौद' केसरा राम, 'बोधकहाणीआँ' मनमोहन नरता, 'मंगते' एस. साकी, कुछ खास ऐसे कथा संग्रह पंजाबी में 2019 में छपे हैं, जो आलोचकों, गंभीर पाठकों का ध्यान खींचते रहे हैं। 'इश्क दिन' तृप्त के. सिंह, 'रब न करे' अशोक वशिष्ट, 'रूह दा सागर' विजय कुमार, 'पिच्छा रह गिआ दूर' दीप्ति बरूटा, 'पारले पुल' सुरजीत आदि संकलनों-संग्रहों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। भाषा, शैली अथवा शिल्प के आधार पर कुछ पुस्तकों में उल्लेखनीय कहानियाँ हैं तो दर्जनों कथानकों की नवीनता के कारण भी कथाकारों और कहानियों पर चर्चा केंद्रित रही है। स्मरणीय कहानियों का उल्लेख यहाँ अलग से भी किया जा सकता है।

किरपाल कज़ाक हमारे वरिष्ठ रचनाकार हैं, जिन्होंने श्रम और साधना के आधार पर साहित्य में स्थान अर्जित किया है। 'अंतहीन' कहानी संग्रह पर कज़ाक के नाम की घोषणा 2019 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए की गई है। 'जीऊणा सच्च बाकी झूठ', जतिदर हांस का कहानी संग्रह विदेश से घोषित होने वाले एक मोटी राशि के पुरस्कार के तौर पर सामने आया है तो गुरदेव रू पाणा के संग्रह 'आमखास' को भी ऐसे ही प्रवासी पुरस्कारार्थ घोषित किया गया है।

कहानी 'खजूरां' - सुखजीत, 'भगवें बदलां च फंसे सिंग' और 'तेरे बरगे'-दीप्ति बरूटा, 'हाफ-टाइम'

और कहानी 'सियासत खेड बाबा सियासत'- जिंदर, 'बंदे दा पुत्त' और 'एह कोई नाटक नहीं'- सावंल धामी की कहानियाँ, 'इश्क छोटी जेही बेवफाई' और 'तां फिर मैं इत्थे हां' और 'एह कोई नाटक नहीं' - सांवल धामी की कहानियाँ 'इश्क छोटी जेही बेवफाई' और 'तां फिर मैं इत्थे हां' - जसबीर राणा, कुछ खास चर्चित रही इस साल की कहानियों में से हैं, जिनको पाठकों ने सराहा है।

पंजाबी कहानी 'रंगां दी सांझ', 'काग', 'काली गुफा', 'एह झांजर तूं न पांवी', 'मुश्कीयाँ जुराबाँ' जैसी कहानियाँ लिखकर, छपवाकर, भगवंत रसूलपुरी, सुरिंदर नीर, बराड़, अजमेर सिद्ध और हरजिंदर सिंह सूरेवालिया ने अपने-अपने कथाकार का कद ऊँचा किया है। 'आई पुरे दी वां'- नैन सुख, टुट्ट भज्ज- सुरिंदर रामपुरी, 'पंज नंबर दो सौ छपंजा'- दविंदर मंड, 'बचना'- गुरप्रीत कडि यलवी, 'कालिख कोठरी'- सुखपाल बिंद, 'बी-पॉजिटिव यार'- बलीजीत, 'पंडत जी उर्फ परसराम'- बलविंदर सिह गरेवाल, 'गंढ तुप' रानी नगेंदर, 'प्लेसवैल्यू' केसरा राम, 'खुह ते खाई'- खालिद- खालिद हुसैन, 'होलि डे बाइक' सरघी, 'वेदन कहीए किस' अरविंदर कौर धारीवाल जैसी कहानियों पर 2019 में नज़र इसलिए टिकती है कि भारतीय भाषाओं में अनूदित इनके रूपांतर छपने चाहिए। एक भाषा में कैद कथा प्रायः दूसरी-तीसरी भाषा में छपकर कुछ अलग और ऊँचा स्थान भी बना सकती है।

सन् 2019 की पंजाबी कहानी में मनुष्य की मनुष्यता से दूरी, प्रेम-प्रसंग, नैतिकता, रहस्य-रोमांच ही नहीं, सामाजिक स्तर पर उच्छृंखलता भी उजागर हो रही है। धर्म-अधर्म, अर्थिक असमानता, लैंगिक अनुभूतियाँ, थर्ड-जेंडर से लेकर राजनीति तक को यहाँ उकेरा गया है। पात्र नर हो या नारी, नायिका या नायक को, प्रथम पुरुष में भी 'डील' करते हुए, कथानक में 'रस' भरने की चेष्टाएँ कायम हैं। सामुदायिक दंगे, चुनाव, आध्यात्म और नारी विमर्श, आदिवासी या दलित समस्याओं को भी रचनाकार 2019 की पंजाबी कहानी में, शिष्टता के साथ ट्रीटमेंट देकर, रोचकता, जिज्ञासा बनाए रखने में सफल होकर, खुलकर, कथानक को खोला गया है। अपनी बोली में बहुत कुछ बोला गया है। प्रसांगाधीन साल की पंजाबी कहानी अन्य विधाओं की अपेक्षा, पाठक को संतुष्ट करने में सक्षम ठहरती है।

कुछ ग़ज़ल संग्रह मेरे पास समीक्षार्थ, मानार्थ आए हैं। उनका विवरण इस प्रकार है-

'फुल्ल ते कंडे' -डॉ. सुरजीत कुंजाही, 'पक्कीआं फ़सलां' - डॉ. सुरजीत कुंजाही, 'मन पदेसी'- गुरभजन गिल, 'चुप दे खिलाफ़' - सतीश गुलाटी, 'कुझ तां कहि' - सुरिंदर सिदक, 'मंज़िल द तरजुमा' - पाल ढिल्लों, 'तपश' - मंगत चंचल, 'बिन सिरनाविओं घर' - सुरिंदर सिंह चोहका

ग़ज़ल एक छंद विधान की मर्यादा में कही जाने वाली सूक्ष्म विधा है। अरबी, फ़ारसी, उर्दू के प्रभाव ने इसे इतना परिपक्व और परिचित बना दिया है कि इसकी सोच, शेअरों की सूक्ष्मता और गहराई, एकाएक प्रभावोत्पादक हो जाती है। हिंदी या पंजाबी में इसे गंभीरता से लिया गया है। लेकिन नौसिखिया 'रचनाकार' इसके 'अध्ययन' से बचते आए हैं। छंद शास्त्र का पूर्णतः पालन न करते हुए, लय या ताल मिलाकर, कुछ भी सतही लिखकर काम चला लेते हैं। यह ग़ज़ल और उन नए ग़ज़लकारों का भी, एक तरह से निरादर है।

डॉ. सुरजीत कुंजाही वरिष्ठ रचनाकार हैं। इनकी कविता, गद्य, ग़ज़ल में पाकीज़गी और पुरतगी झलकती है।

धरती, गगन, पाताल, समंदर, जिधर नज़र दौड़ाई
तरसदीआं रू हां दी तड फादित्ती साफ़ सुनाई
मौत दा साया नचदा रहिदै हर इक जीवन अंदर
इक घड़ीपल चैन दी मोहलत बंदे हत्थ न आई।

'फल्ल ते कंडे' का यह समर्पण ही कुंजाही की ग़ज़ल कला का पर्याय माना जाता है। 'पक्कीआं फ़सलां' ग़ज़ल संग्रह में रचनाकार ने विषयानुसार शेअर करते हुए, उस्ताद शायर का परिचय दिया है। सस्ते मोती, परिवार, संसार, जीवन, समाज, प्यार से लेकर सावन, कुदरत, गुरजोत सरीखे अनेक विषयों को केंद्र में रखकर ग़ज़लें कहीं है। मंच पर इनकी धूम रही है। पेशे से शरीर के डॉक्टर सुरजीत कुंजाही गाते हैं तो समां बांध देते हैं।

'मन परदेसी' ग़ज़ल संग्रह के रचयिता लुधियाना के लोकप्रिय कवियों में शामिल हैं। चार-पाँच ग़ज़ल संग्रह और गीत, कविता की कई पुस्तकें देकर उन्होंने

नाम बनाया है। इनकी शायरी में इसी पुस्तक की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं–

तन देसी, पर मन परदेसी हौली–हौली हो जांदै
पिंडा वाले जद शहिरां विच करन कमाई जांदे ने।
मर चले हां आपां यारो चुप रहिके ना बोलण करके
मन परदेसी हो चलिआ है, दिल बूहा ना खोलण करके।

सतीश गुलाटी पंजाबी पुस्तकों के प्रकाशक और ग़ज़लकार भी है। लुधियाना के इस शायर ने भी पंजाबी कविता में स्थान बनाया है।

चेहरिआं, ते उकरिआ सभ पढ़ लियां
मैं नहीं शब्दां दी भाषा जाणदा।
ओस ग़म नूं मैं नहीं कुझ जाणदा
ग़म नहीं जो ज़िंदगी दे हाण दा।।

यों 'चुप्प दे खिलाफ़' ग़ज़ल संग्रह में सतीश गुलाटी का संघर्ष, जीवन दर्शन और अनुभव बयान हो जाता है। बीबी सुरिंदर सिदक 'कुझ तां कहि' संग्रह में स्मरण करती लिखती हैं–

तेरे बोलां विचों मेरे शेयर उमगद ने–
सिरज ना खौफ, सन्नाटा तौबा ऐदां चुप्प ना रहि
चन्ना! तेरी चुप्प दी घाटी बहुत डरौणी है
आखर तेरे दिल विच की है, बोल तूं 'कुझ तां कहि।।

यों ही पाल ढिल्लों भी अपनी पुस्तक के शीर्षक पर कह रहे हैं–

मंजिल दा तरजुमा है, संभाल मील पत्थर
अपने करीब रक्खीं, हर हाल मील पत्थर।

मंगल चंचल (तपश) और सुरिंदर चाँद 'बिन सिरनाविओं घर' ग़ज़ल संग्रहों में, अपने–अपने परिवेश, दर्द और संभावनाओं का बयान कर रहे हैं। ग़ज़ल उर्दू, हिंदी या पंजाबी में लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकार है। सन् 2019 में छपे पंजाबी के पचासों अन्य ग़ज़ल संग्रह भी पाठकों ने पसंद किए हैं। पंजाबी ग़ज़ल की तरह, कविता भी पंजाबी में इसी तरह पढ़ी और सराही जा रही है। हरभजन सिंह खेमकरणी (अमृतसर), मनमोहन सिंह दाऊं (मोहाली), स्वामी अंतर नीरव, जसवंत जफ़र के ताजा काव्य संग्रह आएँ हैं। इसी प्रकार मोहन गिल, हरविदर पाल सिंह, लाज नीलम सैणी, अमनदीप हांस के नवीन कविता संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

'खुशबू दा दरद'– खेमकरणी, 'चानण दी पैड'– दाऊं, 'अक्स'– लाज नीलम, 'ना बंझली ना तितली'– अमनदीप हांस, 'नवीं सवेर'– हरविंदर पाल सिंह', 'सैल्फी'– मोहन गिल और 'प्यारे आओ घरें'– जसवंत जफ़र ने भी पाठक को आकर्षित किया है। भूमंडलीकरण, आर्थिकता, भौतिकवाद, धर्म में अधर्म, असमानता जैसे विषयों पर कलम चलाकर रचनाकारों ने, यहाँ बताए काव्य संग्रहों में अपनी–अपनी बात कही है।

'लहू विच मौलदे गीत'– सरवजीत सोही, 'हे सखी।'– सुरजीत, 'कुझ बाकी ऐ'– स्वामी अंतर नीरव, 'असीं नहीं सुधरांगे' – डॉ. जस कोहली 'नैण अमोलडे'– गुरविंदर सिंह, 'गागर विच सागर'– अमरीक सिंह तलवंडी और 'संगम' (अनूदित कविताएँ) नवराही घुगियानवी की काव्य कृतियाँ भी मेरी नज़रों से होकर सरक रही हैं। 'ऐने कु हन शबद मेरे' (महिंदर सिह चीमा) पंजाबी लिखारी सभा, सिआटल में भी रचनाकारों की पीड़ा, कल्पना, उत्साह और उनके अनुभवों का संसार, साकार हो रहा है।

कविता को गंभीरता और आत्मीयता के साथ कहने वालों में यमुनानगर–जगाधरी के पंजाबी कवि डॉ. रमेश कुमार का नाम कहीं ऊपर और आगे आता है। एक दर्जन से ऊपर कविता संग्रह पंजाबी में दे चुके रमेश कुमार का नया काव्य संग्रह 'अ–सहमत' है। जीवन दर्शन, संवेदना, शिद्दत और एहसास, ये सब इनकी छोटी–छोटी कविताओं से टपकता है। उक्तियों, लोकोक्तियों की तरह इनकी पंक्तियों को उद्धृत किया जा सकता है। मौन साधक की तरह शोर–शराबे से दूर रहते हुए इन्होंने अपनी चार–पाँच काव्य कृतियाँ हिंदी में भी अनुवाद करवाकर प्रकाशित की है। कविता का दंश, कटाक्ष, कहीं गहरे में प्रभावोत्पादक सिद्ध हो रहा है। डॉ. रमेश कुमार कविता जीते हैं, भोगते हैं और सुनाते–सुनाते, वातावरण पर छा भी जाते हैं। इसी संग्रह की 'असहमति', 'तालाब', 'बसरे', 'औकात', 'भाषण या हमसफर', 'ठंड', 'दौड़' आदि कविताएँ, संक्षिप्त होती हुई भी, जीवन विस्तार के मर्म को समझा जाती हैं।

अंग्रेजी की प्रसिद्ध कविताओं का पंजाबी अनुवाद, पुस्तकाकार नवराही घुगियानवी ने 'संगम' नाम से प्रकाशित करवाया है, इसमें टेनिसन, वर्ड्सवर्थ जैसे विश्वविख्यात रचनाकारों की प्रमुख कविताओं का सरल मुहावरे में अनुवाद पेश किया गया है।

आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल, पंजाब यूनिवर्सिटी के पंजाबी विभाग के वर्तमान चेयरपर्सन प्रोफेसर डॉ. योगराज द्वारा संपादित 424 पृष्ठों की कृति 'सुरजीत पातरः साहितिक प्रतिभा संग संवाद' देखने में आई है। पातर पंजाबी के प्रमुख श्रेष्ठ कवि, 'सरस्वती सम्मान' पा चुके हैं। लिखने, पढ़ने या गाने में भी इन्हें महत्वपूर्ण माना जाता है। पंजाब यूनिवर्सिटी के पब्लिकेशन ब्यूरो से प्रकाशित इस संकलन में पंजाबी और अंग्रेजी में, दो भागों में आलोचनात्मक लेख शामिल हैं। रचनाकार 'पातर के साथ गुफ्तगू' का तीसरा खंड भी यहाँ, तीन मुलाकातों के रूप में दिया गया है। इस किताब में अमरजीत चंदन, जगजीत सिंह, अमरजीत ग्रेवाल, तेजवंत सिंह गिल, डॉ. सुरजीत, त्रलोक धालीवाल, सर्वजीत सिंह से लेकर मोहरजीत, साधु सिंह, जसलीन कौर, सुखविंदर अमृत आदि के गत दशकों पे सुरजीत पातर की काव्य प्रतिभा पर लिखे छपे हुए भी, लेखों को एक जिल्द में शामिल किया है।

साहित्यिक समीक्षक के रूप में सुरजीत पातर द्वारा लिखी भूमिकाएँ अथवा आत्मसमीक्षा, या आलोचना कर्म पाँच-छह लेखों में दर्ज है। 'सुरजीत पातर दी कविता दा विचारधारायी संवाद', डॉ. योगराज का अपना एक आलोचनात्मक लेख भी किताब का हिस्सा है। ऐसे महत्वपूर्ण संकलन या संपादन की औपचारिक एक पन्ने की टिप्पणी, संपादक द्वारा दी गई है। यहीं विस्तृत आलेख में, सम्मिलित-संपादित कार्य के महत्व को उजागर किया जा सकता था। एक आलोचना, शोध कार्य-पंजाबी परवासी कहानी सुखविंदर कौर की, बलदेव सिंह धालीवाल की सहमति के साथ दिखाई दी है।

'पाशः संपूर्ण लिखतां' अमोलक सिंह के संपादन में उपयोगी कृति इसलिए है कि यहाँ पाश के ज़िंदगीनामा के साथ, नौ भागों में कवि अवतार सिंह पाश के गद्य कार्य को सहेजने, समेटने की कोशिश की गई है। हरमनप्रीत सिह ने 'अनुवाद, रूपांतर ते नाटक', सतीश वर्मा के अधीन, शोध कार्य करके प्रकाशित करवाया है, जिसमें नाटक विधा के अनुवाद रूपांतर की प्रक्रिया पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार हुआ है। 'परछावें भाले रोशनी' तरलोचन सिंह का नाटक संग्रह है। यहाँ 'उलटे वगण दरिया', 'वगदे पाणी दीआं लहरां नू मोड़...'! और 'परछावें भालें रोशनी' शीर्षक तीन नाटक संकलित हैं। एक अन्य नाटक 'सस्सी पुन्नू' बलकार सिंह का भी देखने में आ रहा है। पंजाबी नाटककार आत्मजीत, साहिब सिंह व कुछ दूसरे रचनाकारों की कृतियाँ भी 2019 में छपी हैं।

'पंजाब टू कर्नाटक'- हरदीप कुलाम, 'राहां दे रू-ब-रू' - नवतेज शर्मा, और 'मेरी कैनेडा फेरी'- अजमेर सिंह फरीदपुर, सफरनामा के नाम पर किताबें आई हैं। इनका साहित्यिक पक्ष शिथिल है। आज यात्रा वृतांत, संस्मरण, डायरी आदि विधाओं ने पर्याप्त विकास किया है। शैली, शिल्प व भाषा की दृष्टि से भी परिपक्वता है। उपर्युक्त तीनों पुस्तकों में लेखकों ने रोजनामचा की तरह लेखन किया है। बलदेव सिंह कोरे- 'कौडे मिट्ठे सच्चे' (लेख), 'झुग्गीआं दे लाल' - कुलविंदर कौर मिनहास (गद्य), और 'पलकां दे ओहले'- गुरदीप सिंह बडैच, (गद्य) की पुस्तकें, अपने आभा मंडल, परिवेश और अनुभवों पर आधारित ऐसी किताबें हैं जिनमें आलेख, निजी स्तर पर मूर्तिमान हुए हैं। 'गोडे घुट्ट ते मौजां लुट्ट' व्यंग्य संग्रह बलदेव सिंह आज़ाद की पुस्तक है। इसी व्यंग्यकार, कवि की पहले भी तीन-चार किताबें व्यंग्य के नाम पर आती रही हैं। के. एल. गर्ग (व्यंग्यकार) की तरह, पंजाबी पत्रिकाओं, अखबारों में भी आज़ाद को पाठक पढ़ते रहे हैं।

उपन्यास 'स्वर्ग दी मौत' जसवंत सिंह गजणमाजरा, 'बलदी रुक्ता' - भोला सिंह, संघेडा, सामान्य पाठक के लिए उपयोगी रचनाएँ जान पड़ती हैं। जसवंत सिंह कंवल का नावेल - 'हाणीं चेतना' प्रकाशन से पेपर बैक छपा है। इसी के कई संस्करण हैं जो पंजाबी पाठकों में लोकप्रिय हैं। इसे पाठ्यक्रम में भी पढ़ाया जा रहा है।

उपन्यास 'पुन्न ते पाप' गुलाब नबी गौहर (कश्मीरी), पंजाबी में अनूदित रचना है जिसे केंद्रीय साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। पुरस्कृत-सम्मानित इस उपन्यास को सुरिंदर नीर से अनुवाद

करवाकर प्रकाशित किया गया है। हमारे राजनैतिक, सामाजिक जीवन की गाथा का इस कथानक में वर्णन है। अनूदित कृति में मुहावरे का संकट सामने आता है। स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में आने पर कृति का मुहावरा भी लक्ष्य भाषा जैसा हो जाता है, तभी वह सफल-सार्थक होती है। यों ही एक अन्य अनूदित उपन्यास 'दलित' विजै सौहार्द का लिखा, मलकीअत बसरा द्वारा पंजाबी में रूपांतरित हुआ है। हिंदी के शब्द तत्पर, परवाह-प्रवाह, शहि-मात, व्यक्तिगत, वास्तव, बाखूबी, हत्थे से उखड़ना इस या ऐसे अनुवाद को किरकिरा कर रहे हैं। चूँकि प्रकाशक या अनुवादक, जहाँ संशोधक की भूमिका से बचना चाहता है, वहाँ ऐसा हश्र होने की आशंका बनी ही रहेगी।

पंजाबी में गद्य साहित्य की रचना कम हो पाती है। लेकिन विचाराधीन साल में इंटरव्यू, जानकारी, यात्रा संस्मरण, परिचय या इसी तरह की कुछ उपयोगी कृतियाँ सामने आई हैं। कवि, उपन्यासकार और चिंतक मनमोहन के साथ समय-समय पर पत्रिकाओं, अखबारों में छपे साक्षात्कार आदि का संकलन 'वारता' नाम से तरसेम के संपादन में छपा है। गुरबनश सिंह भुल्लर समर्थ कथाकार, उपन्यासकार हैं। उनकी 'इक अमरीका एह वी' (352 पृष्ठ) रोचक, ज्ञानवर्धक और पठनीय पुस्तक है। 'पलकां दे ओहले' गुरदीप सिंह बडैच की शैली की मिसाल प्रस्तुत करती, लीक से हटकर, एक गद्य कृति आई है। यों ही 'मोतीआं दी लाप' में गुरु साहिबान के साथ गुरदयाल सिंह, अणखी, अजमेर औलख नाटककार, ओमप्रकाश गासो और बाबू रजन अली आदि पर दिलचस्प लेख देकर, मास्टर बोहड सिंह मल्लण ने पुस्तकाकार सामग्री दी है।

'कदमां दे निशान' इंग्लैंड के उद्योगपति मनमोहन सिंह मठारू पर एवं कथाकार एस. बलवंत ने सचित्र कृति, 'वृहताकार', लिखी है। 'जीवनः मातगर्भ तों शिविआं तक दा सफ़र' मनुष्य की जीवन यात्रा पर, मैडीकल दृष्टिकोण से सुरजीत कुंजाही ने पठनीय भाषा में पुस्तक प्रस्तुत की है।

रविंदर रवि पंजाबी के पाँच दशक से कनाडा में प्रवास करते कवि का नया काव्य संग्रह 'पार गाथा-2020' अभी सामने आया है। कहानीकार, नाटककार, आलोचक रविंदर रवि के साहित्य सृजन का क्षेत्र विस्तृत है। प्रयोगवादी दौर में चर्चित रहे रवि ने ताजा काव्य संग्रह में चिंतन के नए आयाम स्पर्श किए हैं। अशांत चेतना कवि, रंगकर्मी लोकनाथ की कविताओं का अवलोकनीय काव्य संग्रह है।

मीत कहे मेरा हाल लिखीं यार कहे मेरा मीत लिखीं
दिल आखे जो धरत हिला दे, ऐसा कोई मनमीत लिखीं
कोई कहिंदा शहर है जालय कहणा सच्च मुनास्यि ना
फिर भी कूड पसारे अंदर सच दा नीवा वाल लिखीं।

प्रीत मनप्रीत के काव्य संग्रह 'रूत्ता', दिल ते सुपने' की यह प्रारंभिक रचना है। कनाडा के इस प्रवासी रचनाकार में संभावनाएँ हैं। नए पुराने पंजाबी कवियों में परंपरा निभाने या इसे ढोने का शौक है, तो तेवरों के साथ, शैली और शिल्प में अनेक प्रयोग भी यहाँ हो रहे हैं। नवदीप सिंह मंडी-'चुप दी कथा', लखविंदर जौहाल- 'लहू दे दफ़्ज', परमिंदर सोढ़ी- 'किताब च लुक गया कोई', कंवरदीपे- 'मन रंगीआं चिडीआं, मक्खन मान- 'बिरसा मुंडा दा पुनरजनम' और परमजीत रामगढिया की 'अधूरी कविता' के साथ ही दर्जन भर अन्य काव्य कृतियाँ भी पाठकों को हमारी भाषा में मिली हैं। 'तेरे तीक औदियां'- अमरिंदर सोहल, 'रंग जो रेनवो' च नहीं- वाहिद, 'मन नाही बिसराय'- बीबा बलवंत, 'संवाद'- तरलोचन, 'मीर', 'कविता सिरफ़ कविता नहीं'- कमरजीत पुलर, 'लाल रंग खूबसूरत हुंदै'- सुखविंदर, 'सरद मौसमां दे सूरज'- गुरनाम कंवर, 'दीविआं दी सरगम'- संतोख सिंह सुक्खी, 'बेदावा नहीं'- भूपिंदर जौली कृतियों के साथ यहाँ पर मैं 'बांदर नाल बहिस न करो' - सुखिंदर, 'विन रूक्ख रिजक न रास'- गुरप्रीत, आदि का ज़िक्र भी करना चाहता हूँ।

इन और ऐसे बीसियों नए-पुराने कवियों, कवयित्रियों के काव्य संग्रह तो छपे हैं, लेकिन उन पर बात चलाने वाले आलोचक पंजाबी में नदारद हैं। जो अध्यापकीय प्रवृत्ति के अनेक आलोचक विश्वविद्यालयों में पीठासीन हैं, उनको आलोचक कहलवाने का सुख तो लेना आता है, लेकिन वे 'आलोचना' नहीं कर पाते, आलोचना, जो नीर क्षीर विवेक दर्शा पाए।

पंजाबी की तिमाही साहित्यिक पत्रिकाओं में से मिन्नी, नज़रिया, लकीर, मुहांदरा, शब्द, सिरजणा, चिराग, कहाणी - पंजाबी के साथ ही 'समकालीन साहित', समरदशी, राग, अक्खर, साहितिक शंख आदि दर्जनों ऐसी तिमाही, मासिक जैसी पत्रिकाएँ इन दिनों आ रही हैं।

तस्वीर, दर्पण, सरोकार, शब्द त्रिंजण अथवा इसी स्तर की 10-12 अन्य पंजाबी पत्रिकाएँ भी पाठकों के लिए छपती हैं।

विचाराधीन साल की पत्रिकाओं का मूल्यांकन-सर्वेक्षण महसूस करवाने वाला है कि 'पकड़-जकड़' या पहचान-परख संपादकों का पंजाबी में भी अभाव है। 'फिलहाल', शंख, समकालीन साहित, एकम या दो-चार अन्य पत्रिकाएँ पहचानी जा सकती हैं, जो कसौटी पर कस कर पाठकों को ध्यान में रखकर, सामग्री दे रही हैं। आत्मविज्ञान, सीढ़ी-सेतु परंपरा आदान-प्रदान इनके ऐसे ऐब हैं, जो 'पठनीयता' से इन्हें दूर करने वाले सिद्ध हुए हैं।

कुल मिलाकर साल 2019 का पंजाबी साहित्य विविध विधाओं का नोटिस लेने वाला साल कहा जा सकता है।

- साहित्य संगम 239, दशमेश एन्क्लेव, ढकौली (जीरकपुर के समीप), चंडीगढ़-160104,

❑❑❑

12

बांग्ला साहित्य

डॉ. सुब्रत लाहिड़ी

बांग्ला भाषा का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। पश्चिम बंगाल को छोड़कर त्रिपुरा, असम और स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश में बांग्ला साहित्य का सृजन होता है। साथ ही साथ विदेशों में भी बांग्ला पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। फलस्वरूप उन क्षेत्रों में भी साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित कृतियाँ प्रकाशित होती रहती हैं। अर्थात् साहित्य का प्रकाशन बहुआयामी है। साहित्य के प्रकाशन केंद्र मूलत: तीन हैं कोलकाता, अगरतला (त्रिपुरा) और ढाका। वैसे दिल्ली के नैशनल बुक ट्रस्ट और साहित्य अकादमी भी बांग्ला साहित्य के प्रकाशन में अहम् भूमिका निभाते हैं।

2019 में प्रकाशित विभिन्न विधाओं के ग्रंथों की चर्चा के पहले पुस्तक प्रकाशन की विविधता पर बातचीत करना संभवत: संगत होगा। किसी भी भाषा के साहित्य अथवा साहित्येतर विषयों के प्रकाशन में विविधता होती है। सृजनात्मक साहित्य के अतिरिक्त आलोचना, समीक्षा, विज्ञान से संबंधित, बाल साहित्य अर्थात् जीवन और समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर पुस्तकों की रचना होती है और उनका प्रकाशन भी। पुस्तक प्रकाशन के लेखा-जोखा को वर्गीकृत करके चर्चा करना समुचित होगा। साथ ही साथ यह भी स्पष्ट किया जा सकता है कि अधिकतर रचनाकार लेखन के बाद उसे मूलत: विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भेजते हैं। अधिकतर रचनाएँ या तो लघु पत्रिका में अथवा दैनिक पत्रिकाओं के रविवासरीय साहित्य पेज पर अथवा प्रतिष्ठित मासिक/त्रैमासिक अंक में प्रकाशित होती हैं। विभिन्न पुस्तक मेलों में ढेर सारी नव प्रकाशित कृतियाँ उपलब्ध होती हैं। बांग्ला भाषा के प्रकाशन की निजी संस्कृति है। बंगाल में दुर्गा पूजा या नए साल के उपलक्ष्य में विभिन्न विशेषांक प्रकाशित होते हैं। विशेषांकों में विभिन्न लेखकों की विभिन्न विधाओं पर रचनाएँ छपती हैं जो कालांतर में पुस्तक के रूप में प्रकाशित होती हैं।

2019 में बांग्ला भाषा में विभिन्न विधाओं पर संभवत: 2300 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। जिनमें काव्य ग्रंथ 247, उपन्यास 280, कहानी संकलन 200, नाटक 34, सृजनात्मक साहित्य की आलोचना या समीक्षा ग्रंथ करीब 115, बाल साहित्य जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और ज्ञान-विज्ञान से संबंधित पुस्तकें लगभग 294, धर्म और दर्शन से संबंधित ग्रंथ 112, देश विभाजन पर चर्चा परिचर्चा 8, समाज व राजनीति विषयक ग्रंथ 98, शिक्षा चिंतन 12, लोक संस्कृति 34, संगीत शास्त्र और लोक संगीत 25, फिल्म से संबंधित पुस्तकें 20, खेलकूद से संबंधित ग्रंथ 6, आदान-प्रदान या अनुवाद की 30 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जीवनी साहित्य पर सर्वाधिक 126 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, आत्मकथा 45, इतिहास जिसमें अंतरराष्ट्रीय, भारत और बंगाल का इतिहास सम्मिलित

है कुल 45 ग्रंथ, भारत का स्वतंत्रता आंदोलन 12 ग्रंथ, स्त्री विमर्श या स्त्री साहित्य 15, यात्रा साहित्य की 46 पुस्तकें प्रकाशित हुईं। विषय वैविध्य के कारण बांग्ला के पुस्तक प्रकाशन में विविधता परिलक्षित होती है। आलोच्य विषय का आकलन कोलकाता से प्रकाशित पुस्तकों को केंद्र में रखकर ही किया जा सकता है। कोलकाता और विभिन्न जिलों से प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक पर स्वतंत्र चर्चा करना संभव नहीं है। अतः कुछ प्रमुख कृतियों पर जो कि बहुत ही चर्चित हुई हैं चर्चा करने का प्रयास किया जा सकता है। प्रत्येक विधा पर अलग से विश्लेषणमूलक चर्चा संभव नहीं हो पाएगी। इसलिए कथा साहित्य, कविता, नाटक, बाल साहित्य, जीवनी इत्यादि विधाओं पर प्रकाशित सीमित पुस्तकों पर बातचीत की जा सकती है।

कथा साहित्य

इस प्रकाशन वर्ष में कई महत्वपूर्ण उपन्यास प्रकाशित हुए हैं उनमें अनीता अग्निहोत्री द्वारा रचित 'काश्ते' बहुत ही चर्चित उपन्यास रहा है। मराठवाड़ा अंचल के गरीब मेहनतकश किसान और मजदूर इस उपन्यास के केंद्र में हैं। मराठवाड़ा अंचल चीनी सहकारी समिति के किसान नेता ईख कटाई के मजदूरों को बंधुआ मजदूर या दास मजदूर बनाकर शोषण करते हैं। पुलिस प्रशासन, बैंक, राजनीतिक नेता, सरकार यानी पूरी व्यवस्था इनके शोषण में सम्मिलित रूप में जुटी हुई है। किस तरह रुई उपजाने वाले किसान कर्ज चुकाने का अवसर न पाने के कारण आत्महत्या कर रहे हैं।

सूखाग्रस्त विदर्भ मराठवाड़ा अंचल में सूखा और मनुष्य की दुर्दशा को लेकर व्यवसाय चलता रहता है। हजारों करोड़ सरकारी रुपए राजनीति और समाज के ठेकेदार लगातार लूट रहे हैं। इसी उपन्यास में उपन्यासकार ने कहा है सूखा से लेकर व्यवसाय का एक निरंतर चक्र चल रहा है। विदर्भ मराठवाड़ा के सूखाग्रस्त इलाकों में उससे मुनाफा लूटने वाले जनप्रतिनिधि, ठेकेदार, उद्योगपति मिलकर सरकार चला रहे हैं। एक तरफ उद्योग सिंचाई का पानी लूट रहा है तो दूसरी ओर मिट्टी और पानी संरक्षण के लिए मंजूर किए गए हजारों करोड़ों रुपए लूट रहे हैं ये लोग।

इंसान के प्रति चरम अमानवीय व्यवहार किया जाता है उसकी पहचान यहाँ काश्ते के रूप में है। वहाँ की भाषा में ठेकेदार को मुकदम कहा जाता है। यह मुकदम मजदूरों को 22 घंटे काम करवाते हैं। मुकदम उनको पैसे उधार में देते हैं। जिससे उनका छह महीने तक रोजाना खर्च यानी जिंदगी का गुजारा हो जाता है। फिर यह गरीब मजदूर ठेकेदार का कर्ज चुकाने के लिए सूखाग्रस्त लातूर जिले से बहुत दूर कटाई का काम करने के लिए सातारा जिले में जाते हैं। वहीं एक खेत के आसपास या बगल में झोपड़ी बनाकर बाकी छह महीने किसी तरह दिन गुजारते हैं।

इनकी मजबूरी का फायदा उठाकर मुकदम मजदूर स्त्रियों का बलात्कार भी करते हैं दो बच्चों की माँ तेरेना मुकदम के बलात्कार से बचने के लिए आग बरसाती गर्मी में भी गला बंद डबल जामा पहनती है ताकि वह बलात्कार से बच सके। इस उपन्यास में स्त्रियों का बहुत ही बलिष्ठ चरित्र का अंकन किया गया है इसलिए कठिन संघर्ष करते स्त्री मजदूरनी के चरित्र बहुत महत्वपूर्ण हैं। दया जोशी का चरित्र भी बहुत अहम् है। वह कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में संघर्ष करती है। काश्ते उपन्यास में दया, तेरेना, वैशाली आदि पात्र न्याय के लिए संघर्ष करती रहती हैं। महाराष्ट्र के प्रांतिक किसानों के लॉन्ग मार्च में शामिल भी होती हैं। यह उपन्यास राष्ट्र व्यवस्था के खोखलेपन और शोषक चरित्र को उजागर करता है। साथ ही स्त्री, किसान, मजदूर, मेहनतकशों के संघर्ष की यथार्थ कथा को उकेरता है। स्त्री के प्रतिवादी रूप को बहुत ही यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। दे'ज पब्लिशिंग ने इस उपन्यास को प्रकाशित किया है।

'झुमरा' : यह आनंद पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित प्रख्यात उपन्यासकार तिलोत्तमा मजूमदार का नया रोमांटिक उपन्यास है। 'झुमरा' उपन्यास का केंद्रीय पात्र झुमुर नाम की एक लड़की है। उसकी माँ बचपन में चल बसी। उसकी बहन झीरी और पिता ज्योतिर्मय तीनों साथ रहते हैं। झुमुर अपना परिवार संभालती है। सहजता और सरलता उसकी चारित्रिक विशेषताएँ हैं। पिता का एक मित्र है प्रवीर। जिसे वह प्रवीर चाचा कहती है। प्रवीर चाचा का बेटा टोपर दिव्यांग है। वह

झुमुर से चार साल छोटा है। झुमुर ही टोपर की देखभाल करती है। इसलिए झुमुर पर टोपर का बहुत भरोसा है। टोपर का झुमुर से बहुत गहरा लगाव है। वह अपनी योग्यता से नौकरी पाता है। एक दिन झुमुर से दिव्यांग टोपर उसके प्रति अपनी दुर्बलता और मन की कोमल भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। यह सुनकर झुमुर द्वंद्व में आ जाती है। कुछ तय नहीं कर पाती। उसकी दूसरी जगह शादी तय हो जाती है। वह संदीपन से विवाह कर लेती है। तिलोत्तमा मजूमदार खुद एक कवि भी हैं इसलिए इस उपन्यास में उनके कवि मन की कोमलता हावी है।

'सुवर्णरेखा सुवर्णरेखा : 2019 में आनंद पुरस्कार से सम्मानित कथाकार नलिनी बेरा का यह नवीन उपन्यास है। 'भासान', 'शबर पुराण', 'अपौरुषेय', 'ईश्वर कबे आसबे', 'माटिर मृदंग' आदि इनके उपन्यास हैं। चूंकि नलिनी बेरा ओडिसा से सटे हुए मिदनापुर जिले के निवासी हैं। इसलिए उनके प्राय: सभी उपन्यासों में उन्होंने अपने जीवन से जुड़ी जमीन और वहाँ के लोगों की अंतरंग कथा को चित्रित किया है।

'सुवर्णरेखा सुवर्णरेखा' उपन्यास में एक ऐसे जनपद का आख्यान है जो नदी किनारे बसा हुआ है। यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र हर वर्ण के लोग एक साथ रहते हैं। आदिवासी भी यहाँ रहते हैं। वर्ष के अंतिम दिन बंगाल, बिहार और ओडिसा के लोग बालिजात उत्सव मनाते हैं। यहाँ वैष्णव धर्म का प्रभाव बहुत ज्यादा है। इसका एक कारण है क्योंकि श्रीचैतन्य इसी इलाके से गुजरते हुए पुरी गए थे। इसलिए चैतन्य महाप्रभु का प्रभाव यहाँ बहुत है।

इस उपन्यास का केंद्रीय चरित्र एक किशोर है। जो कथावाचक है। उसकी माँ चाहती है कि वह पढ़े-लिखे और पढ़-लिखकर जीवन में आगे बढ़े। जबकि कुछ लोगों की इच्छा है कि वह अपने चाचा की तरह वैद्य बने उसके चाचा उसे साँप से लोगों को बचाने के लिए जहर उतारने का एक-आध मंत्र और कुछ जड़ी-बूटी की पहचान करवाते हैं पर बच्चे को साँप से बहुत डर लगता है। इसलिए साँप के डर से वह यह काम नहीं करना चाहता है। फिर उस गाँव का नचुआ अनंत दत्त उसे जात्रा दल (यानी बंगाल का मशहूर लोकनाट्य शैली) में लेना चाहता है। पर उसकी माँ इसका विरोध करती है। बच्चा स्कूल जाने लगता है और उपन्यास की कथा स्वर्णरेखा नदी से जुड़ जाती है।

आर्थिक परिस्थिति बदलने के कारण आदिवासी भी अपनी मानसिकता में बदलाव लाते हैं। किस प्रकार पुलिस या सेना में भर्ती हुआ जाए इसके बारे में वे सोचने लगते हैं। लेखक ने यथार्थ जीवन और संघर्ष का चित्रण किया है। साथ ही उस इलाके के मिथक, पुरान, उत्सव, इतिहास सबका चित्रण किया है। वस्तुत: यह एक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और जीवन संघर्ष के आधार पर रचित बहुत ही महत्वपूर्ण उपन्यास है। दे'ज पब्लिशर्स ने इस उपन्यास का प्रकाशन किया है।

'धूलोबालिर जीवन' यह एक लड़की की दकियानूसी और रूढ़िवादी पारिवारिक दमघोंटू परिवेश से मुक्ति की छटपटाहट और विद्रोह की कथा है। प्रचेत गुप्ता इस उपन्यास के रचयिता हैं और आनंद पब्लिशर्स इसके प्रकाशक हैं। सृजिता इस उपन्यास का मुख्य चरित्र है। जो बहुत ही महत्वाकांक्षी और जिद्दी भी है। उसका बचपन और कैशोर्य अपने पिता अनिमेष बसु जिन्हें स्त्री स्वतंत्रता पर कतई विश्वास नहीं है, की देख-रेख में बीता। पिता और पुत्री के बीच खींचातानी चलती रहती है। सृजिता के शिक्षक विधान जब उसे पत्र लिखते हैं तो उसके पिता उस शिक्षक को सजा देने के लिए असामाजिक हथकंडे अपनाते हैं। और बहुत जल्दी उसकी शादी कर देना चाहते हैं। कॉलेज के सेमिनार में भी उसे जाने नहीं देते अर्थात् वह अपनी तरह से जीवन जी नहीं पाती। इस सख्ती के कारण उसका स्वतंत्रता बोध बंजर बन जाता है। नतीजतन उसके भीतर ऐसी घुटन से मुक्ति पाने की आकांक्षा तीव्र होती है और वह विद्रोह करती है। सृजिता अपने शिक्षक विधान से विवाह कर लेती है। बाद में वह जीवन और कर्मक्षेत्र में बहुत सफल होती है।

'सागरेर सब आछे' इसमें एक ही जिल्द के अंतर्गत कहानी, उपन्यास और साक्षात्कार हैं। इसमें 'विपदे पड़ेछेन रवींद्रनाथ' शीर्षक कहानी, चार उपन्यास 'आमार जा आछे', 'राजकन्या', 'तीन नंबर चिट्टी' और 'सागर आई लव यू' है। साथ ही सागर के

द्वारा लिया गया साक्षात्कार भी है। दे'ज पब्लिशर्स से निकली यह पुस्तक प्रकाशन क्षेत्र में एक नया प्रयास है।

2019 में प्रचेत गुप्ता की और कई कृतियाँ विभिन्न प्रकाशन संस्थानों से प्रकाशित हुई हैं। जैसे 'नूड़ि पाथरेर दिनगुलि', 'बाछाइ करा भय' और 'मेघमल्लारे हत्यार गान'।

क्लासिक उपन्यासों की कई ग्रंथावली प्रकाशित हुई हैं जैसे समरेश बसु के पाँच उपन्यासों को लेकर आजकल पब्लिशर्स ने 'प्रथम पाँच' को प्रकाशित किया है। इसमें उनके प्रख्यात पाँच उपन्यास जैसे 'श्रीमती काफे', 'बीटी रोडेर धारे', 'गंगा', 'नयन पूरेर माटी' और 'उत्तरबंग'।

समरेश मजूमदार के 'सुधारानी', 'नवीन संन्यासी', 'मोहिनी', 'जनयाजक', 'विक्टोरियार बागान' और 'कुल कुंडलिनी' उपन्यासों को लेकर आनंद ने उपन्यास समग्र प्रकाशित किया। वैसे इस वर्ष समरेश मजूमदार के समकालीन जीवन और समाज पर आधारित कई उपन्यास भी प्रकाशित हुए। जैसे 'कथामाला', 'जिभ काटलो नोतुन बोउ', 'बुकेर घरे बंदी आगुन' आदि।

कहानी

कहानी के प्रकाशन में व्यापकता है। कई कहानीकारों की कहानियों के व्यक्तिगत संकलन निकले और कहानी समग्र भी प्रकाशित हुए। नलिनी बेरा का कहानी संकलन 'झिंझी पोकार जीवन ओ अन्यान्य', श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय का कहानी संकलन 'दुइएर पिठे दुइ', प्रचेत गुप्ता का 'एइ गल्पो बला ठिक हलो ना', इमदादुल हक का 'समस्त बड़ गल्प', आदि। चूँकि स्वतंत्र रूप से एक-एक कहानी पर चर्चा करना या उनके विषय, केंद्रीय चरित्र पर चर्चा करना संभव नहीं है। इसलिए कहानी संकलन का सर्वेक्षण मात्र किया गया।

इस प्रकाशन वर्ष में कई महत्वपूर्ण विषयों पर कहानियों के संकलन आए जैसे असम के बांग्ला कहानीकारों की नई कहानियों को लेकर 'आसामेर बांग्ला छोटो गल्प' जिसका संपादन किया है रणवीर पूरकायस्थ और एकुश शतक ने इसे प्रकाशित किया है। विषय वैविध्य और वैचित्र्य इसकी विशेषता है। अगरतला, त्रिपुरा के अक्षर पब्लिकेशन ने शुचिस्मिता महापात्र रचित कहानियों को 'निशिडाक' में संकलित कर प्रकाशित किया है।

छिटमहल यानी विदेशी अंतक्षेत्र विशेषत: पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के बीच के छिटमहल के रहने वालों की यंत्रणा की व्यथाकथा, जीवन संघर्षों को लेकर दो महत्वपूर्ण संकलन 1. 'छिटमहलेर गल्प': इसका संपादन और संकलन किया है वरेंदु मंडल ने तथा सोपान इसके प्रकाशक है। 2 गांगचिल द्वारा प्रकाशित 'छिटमहलेर नतुन गल्प', इसका संपादन किया है राजर्षि विश्वास ने। उज्ज्वल साहित्य मंदिर ने जहाँगीर होसेन के संपादन में 'दुआ बांग्लार आस्तिक नास्तिकताय हिंदू मुसलमानेर गल्प' प्रकाशित किया है। इसमें पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के जनजीवन से जुड़ी कहानियाँ हैं।

त्रिपुरा के उन्नीस जनजाति गोष्ठियों को लेकर श्यामल वैद्य के संपादन में 'दलित- गल्प दलित-लेखक' शीर्षक कहानी संकलन प्रकाशित हुआ। गांगचिल इसका प्रकाशक है।

'जा देखि जा शुद्धि एका एका कथा बलि', यह सुनिल गंगोपाध्याय द्वारा 3 नवंबर 2010 से 10 अक्तूबर 2012 तक आनंद बाजार पत्रिका में पाक्षिक कॉलम में लिखित ललित रचनाएँ इस ग्रंथ में संकलित हैं। आनंद प्रकाशन ने इसे प्रकाशित किया है। इस संकलन में स्पष्टभाषी प्रतिवादी सुनील गंगोपाध्याय ने जो देखा जो सुना उसे शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त किया है। अपने जीवन के अनुभवों का चित्रण किया है। जीवन भर लेखक तरह-तरह के लोगों से मिलते रहे। शिक्षित बुद्धिजीवी से लेकर मेहनतकश आम लोगों से संवाद स्थापित करते रहे। सबकी सुनते रहे और सबके जीवन संघर्ष को बड़ी नजदीकी से देखते रहे। कभी नाराजगी हुई तो कभी बहुत दुखी भी हुए। अभिमान भी हुआ। पर सुनील गंगोपाध्याय का कवि मन बड़ी सहजता से सब कुछ नीलकंठ की तरह पी गया। उल्लेखनीय है कि 'नीललोहित' नाम से भी वे ललित रचनाएँ लिखते रहे। मरणोपरांत प्रकाशित उनके जीवन के अंतिम दिनों के अनुभव इस ग्रंथ में परिलक्षित होंगे। अकेले-अकेले बात करने में एक अजीब संतोष होता है। इसीलिए सुनील गंगोपाध्याय का यह कहना कि 'एका एका थाकलेइ मने मने बोलते थाकि

भालोबेसे मिटलो ना साध' बहुत ही मर्मस्पर्शी कथन है।

कविता

कवियों के विभिन्न संकलनों पर स्वतंत्र रूप से आकलन का अवसर सीमित है। कृतियों का ब्यौरा ही प्रस्तुत करना समीचीन होगा। महत्वपूर्ण कवियों में जय गोस्वामी के तीन काव्य ग्रंथ 'परंतो बेलार रांगा आलो' (सिगनेट), 'भेंगे जाओआर परे' (आनंद प्रकाशन), 'आतुराग' (वैभाषिक) प्रकाशित हुए।

इसी प्रकाशन वर्ष में कवि श्रीजात के तीन कविता संकलन विभिन्न प्रकाशन संस्थाओं से प्रकाशित हुए हैं। पत्रभारती से 'जा किछु व्यक्तिगत', सिगनेट से 'जे ज्योत्सना हरिणातीत' और आनंद पब्लिशर्स से 'जे कथा बलोनि आगे' प्रकाशित हुआ है।

सौमित्र चट्टोपाध्याय के दो काव्य संग्रह 'अंतमिल' सिगनेट से और 'छवि ओ छाया' दे'ज प्रकाशन से प्रकाशित हुए हैं।

उल्लेखनीय है कि बांकुड़ा (पश्चिम बंगाल का एक जिला) अंचल की कविताओं का एक संकलन 'बांकुडार आंचलिक कविता' अमित कुमार सेनगुप्ता के संपादन में संचयन प्रकाशन संस्था ने प्रकाशित किया है। इसी तरह 'दु बांग्ला कविता संग्रह' का संपादन किया है रफीकुल इस्लाम ने और प्रतिभास ने इसे प्रकाशित किया है। इस संकलन में पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के विभिन्न कवियों की रचनाएँ सम्मिलित हुई हैं। यह संकलन पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश की सांस्कृतिक एकता की एक मिसाल है।

नाटक

कई नाटक इस प्रकाशन वर्ष में प्रकाशित हुए हैं। लेकिन नाटककार चंदन सेन और ब्रात्य बसु बहुत ही चर्चित रहे हैं। बांग्ला रंगमंच में भी ये दोनों बहुत ही सक्रिय नाट्यकर्मी हैं। चंदन सेन के प्रिया प्रकाशन से 'बिपज्जनक प्रेमकथा' और कलाभृत प्रकाशन से 'स्पर्धावर्ण और अन्यान्य' एवं 'अंतश्चित्रण ओ अन्यान्य एकांकी' प्रकाशित हुए। मित्र ओ घोष ने नाटककार, निदेशक व अभिनेता व्रात्य बसु का नाटक 'मिरजाफर ओ अन्यान्य नाटक' प्रकाशित किया। क्लासिक नाटक दीनबंधु मित्र के 'नीलदर्पण' नाटक का पुनर्प्रकाशन हुआ है। यह 1860 ईस्वी के संस्करण का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया। सोम प्रकाशन ने इस नाटक का प्रकाशन किया।

बाल साहित्य

बांग्ला भाषा के प्राय: सभी साहित्यकारों ने बच्चों के लिए साहित्य सृजन को महत्व दिया है। बांग्ला साहित्य में इसकी अत्यंत समृद्ध और प्राचीन परंपरा है। बच्चों के लिए साहित्य की प्रत्येक विधा में साहित्यकारों ने सृजन कर्म किया है।

छड़ा यानी बच्चों के लिए तुकबंदी। तुकबंदी की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनमें नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती का 'हालूम' को देव साहित्य कुटीर ने प्रकाशित किया है। सोनार तरी प्रकाशन संस्था ने शेखर अहमद का संकलन 'उल्टो पाल्टा', सुनील करण के 'छड़ा समग्र' का प्रकाशन किया है।

अनेक कहानी संकलन भी प्रकाशित हुए हैं। जिनमें किन्नर राय द्वारा रचित कहानियों का संकलन 'अलीबाबा और तीन चोर'। इसे दे'ज प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। नेशनल बुक ट्रस्ट ने नलिनी बेरा के दो बाल उपन्यास 'शीलावती' और 'सात बेटा एक बेटी' को 2019 में प्रकाशित किया है। शीर्षेंदु मुखोपाध्याय के तीन ग्रंथ विभिन्न प्रकाशन संस्थाओं से प्रकाशित हुए हैं जिनमें 'आसमानीर चर' (आनंद प्रकाशन), 'छोटोदेर 100 गल्प' (दीप प्रकाशन), और 'सिंदुक खुललेइ चल्लिश' (पत्रभारती)। भूत प्रेत, रहस्यमय रोमाँच, ख़ेलकूद, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित अनेकों पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

43वें कोलकाता पुस्तक मेले में बांग्ला प्रकाशन क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना घटी। भारत और बांग्लादेश की दो बांग्ला साहित्य प्रकाशन संस्थाओं ने एक समझौता किया और पश्चिम बंगाल एवं बांग्लादेश के लेखकों की पुस्तकों के प्रकाशन करने का निश्चय किया। पश्चिम बंगाल के लेखक की पुस्तकों को बांग्लादेश में अन्य प्रकाश-प्रकाशन संस्था प्रकाशित करेगा और बांग्लादेश के लेखकों की कृतियाँ पश्चिम बंगाल की प्रकाशन संस्था पत्रभारती प्रकाशित करेगा। इसीलिए 'बइसांको' की प्रतिष्ठा की गई। तद्नुसार पत्रभारती ने बांग्लादेश के चार लेखक सैयद मनजुरुल इस्लाम की 'सेरा दश गल्प', फरिदुर रेजा सागर की 'एबारो हाफ भजन छोटो काकु', मारुफुल इसलाम

की 'निर्वाचित 101 कविता' और माजहारुल इसलाम की 'हुमायून अहमेदेर माकड़सा भीति ओ अन्यान्य' प्रकाशित किया।

इसी तरह बांग्लादेश की अन्य प्रकाश प्रकाशन संस्था ने पश्चिम बंगाल के समरेश मजूमदार की 'कथामाला', सत्यम राय चौधरी की 'दुनियादारी' और त्रिदिवकुमार चट्टोपाध्याय की 'आजो रोमांचकर स्वाधीनतार रक्तझरा गल्प' का प्रकाशन ढाका से किया।

वर्तमान में ई-पद्धति और संयंत्र के विकास के साथ-साथ कई ई-पत्रिकाओं का प्रचलन हुआ है। सभी भारतीय भाषाओं में यह रुझान देखने को मिलता है। ब्लॉग या फेसबुक ने भी सृजनात्मक लेखन का दायरा बढ़ा दिया है। सबसे बड़ी बात है कि यह किसी भी देश की सीमा को नहीं मानता है अर्थात् सार्वदेशिक होता है। तो इसे अस्वीकारना मुश्किल है । बांग्ला में फेसबुक साहित्य को संकलित कर दो पुस्तकें 1.'असितेर सांप्रतिक फेसबुकेर' कविता का प्रकाशन दक्षिण 24 परगना के सेजूती ने किया है। इच्छेफडिं प्रकाशन, बरहमपुर से करिम आशानुल के 'फेबुनिक: फेसबुक निर्वाचित कालम' शीर्षक पुस्तक निकली है। विभिन्न ई-पत्रिकाओं में भी बांग्ला कहानी, कविता या ब्लॉग में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर आलोचना भी अपलोड होती रहती है।

लेखक और प्रकाशक के संयुक्त प्रयास ने बांग्ला साहित्य को समृद्ध किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 बांग्ला प्रकाशन, पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स गिल्ड, कोलकाता।

2. देश पत्रिका

3. विभिन्न दैनिक पत्रिकाएँ।

– 63-ए, साउथ सिंथी रोड, कोलकाता-700030

❑❑❑

13

मराठी साहित्य

डॉ. दामोदर खड़से

मराठी साहित्य में हर वर्ष नवीनता का समावेश होता रहता है। वैचारिकता में नवान्मेष, साहित्य में नवीनता, प्रस्तुतीकरण में नयापन निरंतर उभरकर आता है। मराठी साहित्य सम्मेलन हर वर्ष आयोजित किया जाता है। इस वर्ष यह आयोजन मराठवाड़ा, उस्मानाबाद में आयोजित किया गया था। विशेषता यह रही कि इस सम्मेलन की अध्यक्षता पहली बार किसी ईसाई धर्मगुरु ने की। वे मराठी में ही अपना लेखन करते हैं और अपने सामाजिक कार्यों के लिए जाने जाते हैं। उनका नाम है- फादर फ्रांसिस दिब्रिटो। सम्मेलन का उद्घाटन मराठी के सुप्रसिद्ध कवि ना. धों. महानोर ने किया। सम्मेलन में सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों का साहित्य में प्रतिबिंब की व्यापक चर्चा हुई। विभिन्न विमर्श, ख्याति प्राप्त साहित्यकारों की भागीदारी, विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों के साथ पुस्तक-प्रदर्शन व बिक्री उल्लेखनीय रहे। पुस्तकों की पालकी भी निकाली गई। साहित्यिकों के साथ जनसामान्य की भी भागीदारी सहज ही देखी जा सकी। समसामयिक ज्वलंत प्रश्नों की ओर वक्ताओं ने ध्यान आकर्षित किया।

पुणे में एक स्वैच्छिक संस्था द्वारा साहित्य और पठन-पाठन के संदर्भ में युवा कार्यकर्ता, कवि श्री अभिषेक अवचार के नेतृत्व में एक अभिनव कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। वे ऐसे साहित्यकारों, विद्वानों और पुस्तक-प्रेमियों के घर जाकर अनुरोध करते जो पुस्तकें दान करने के लिए उत्सुक हैं। उनसे पुस्तकें एकत्र कर पार्कों, सार्वजनिक स्थानों पर पुस्तकें रखते और पाठकों को नि:शुल्क उपलब्ध कराते। न कोई लाइब्रेरियन, न कहीं पुस्तकों की अलमारियों को ताला। पाठक अपनी रुचि के अनुसार पुस्तक ले सकते हैं और पार्क/सार्वजनिक स्थानों पर बैठकर पढ़ सकते हैं। उन पुस्तको को पढ़ लेने के बाद अलमारी में यथास्थान रख देना होता है। घर भी ले जा सकते हैं और बाद में लौटा सकते हैं। इस पुस्तक-यात्रा में अपनी ओर से पुस्तकें शामिल कर सकते हैं। इस प्रयास को काफी अच्छा प्रतिसाद पाठकों, दानदाताओं और स्वयंसेवकों की ओर से मिलता रहा।

एक और उल्लेखनीय आरंभ 'पुस्तकों के गाँव' के रूप में किया गया। महाबलेश्वर और पंचगनी के बीच एक छोटा-सा गाँव है- भिलार। इस गाँव के अधिकांश निवासी भिलारे हैं। पूरा गाँव स्ट्रॉबेरी की खेती और व्यवसाय करता है। इस गाँव को महाराष्ट्र सरकार ने 'पुस्तकों का गाँव' घोषित किया। गाँव वालों ने एक-एक कमरा पुस्तकों के लिए दिया। ऐसे पचीस घरों में पुस्तकें सरकार द्वारा उपलब्ध कराई

गईं हैं। साहित्य की विधाओं यथा-उपन्यास, कहानी, कविता, संस्मरण, इतिहास, स्त्री साहित्य, दलित-परिवर्तनवादी साहित्य, नाटक, समीक्षा आदि विधा के अनुसार एक-एक घर में एक-एक विधा रखी गई है। सरकार की ओर से कमरे में पुस्तकों के लिए दो-दो अलमारियाँ, एक स्टैंड, चार कुर्सियाँ, एक टी-पॉय रखा गया है। एक रजिस्टर भी है, ताकि पाठक अपनी प्रतिक्रियाएँ लिख सकें और अपनी किसी नई पुस्तक को शामिल करने का अनुरोध कर सकें। एक घर में केवल नई पत्र-पत्रिकाएँ रखी गई हैं। यह प्रयास संभवत: देश में पहली बार किया गया है। आवधिक आधार पर लेखकों के, पाठकों के चर्चा-सत्र आयोजित किए जाते हैं। इस तरह साहित्य की अभिरुचि विकसित करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

पुस्तकों के इस गाँव में गाँव वालों ने अपनी ओर से नि:शुल्क कमरे उपलब्ध कराए हैं। ऑफिस के लिए भी काफी बड़ी जगह उपलब्ध कराई गई है। पूरा गाँव इस आयोजन का लाभ उठाता है। महाराष्ट्र में यह पुस्तकों का गाँव चर्चा का विषय है। पर्यटक जब महाबलेश्वर जाते हैं। इस गाँव में भी जाते हैं।

मराठी में हर वर्ष, हर विधा में पुस्तकों का प्रकाशन होता है। साथ ही, दीपावली के अवसर पर बड़ी मात्रा में पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित होते रहे हैं। यह संख्या हर वर्ष लगभग चार सौ के आसपास होती है। गली-मुहल्लों के छोटे-बड़े पुस्तकालयों में ये दीवाली-विशेषांक पुस्तकालयों के सदस्यों को उपलब्ध कराए जाते हैं। कई परिवार पटाखों के साथ ऐसे दीवाली विशेषांक की खरीद करते हैं। इन विशेषांकों में प्रतिष्ठित मराठी लेखक सृजनात्मक भागीदारी करते हैं। कई लेखक-संपादक वर्षभर ऐसे विशेषांकों के लिए रचनात्मक रूप से तैयारी करते हैं। मराठी साहित्य के क्षेत्र में इन विशेषांकों का महत्व बहुत विशिष्ट है।

कुछ विशिष्ट कृतियों को संक्षेप में देखा जा सकता है- जो पुस्तकाकार रूप में मराठी साहित्य को संपन्न करती हैं। संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

उपन्यास

मराठी उपन्यासों में वर्तमान का प्रतिबिंब सहज ही देखा जा सकता है। 'तणस' (यानी 'तिनका') ऐसा ही एक उपन्यास है। वर्तमान उलझनों, चुनौतियों और समस्याओं से घिरा 'तिनका' आकार लेता है। चारों ओर की भयावहता, असुरक्षा और सार्वजनिक अव्यवस्था का गवाह ही है, 'तिनका' का दिनकर शिक्षित-बेरोजगार। वह आम युवकों की तरह सामान्य ही है, इसलिए नौकरी की निश्चितता नहीं है। वह एक जीप लेकर अपना धंधा शुरू करता है। इस क्षेत्र में आने पर उसे कई प्रकार की बुरी आदतें लग जाती हैं। एक दुर्घटना के कारण उसके जीवन का गणित गड़बड़ा जाता है। उसे मनोज नामक एक सिविल इंजीनियर मिलता है। अपने लालची आचरण के कारण वह नौकरी गंवा बैठता है। वह भी बेरोजगार है। इन दोनों की कहानी के माध्यम से उपन्यासकार महेंद्र कदम ने गाँवों में फैल रहे जाति-द्वेष धर्मांधता, भेदभाव, विषमता, विवशता जैसी तमाम विसंगतियों पर प्रकाश डाला है।

मधुकर काकड़े का एक नया उपन्यास 'रिंगण' प्रकाशित हुआ है। रिंगण यानी 'घेरा'। समाज में आपसी प्रेम-भाव के अभाव में सूखते रिश्तों की कहानी से घिरते नायक की दास्तां इसमें समेटी गई है। समाज में बेचैन व्यक्ति की छटपटाहट को इसमें अनुभव किया जा सकता है। दाहकता और आक्रोश से भरा नायक भयानक उद्विग्नता का शिकार होकर जीवन की तलाशी में स्वयं को झोंक देता है। रेखा बैजल का उपन्यास 'महावस्त्र' भी चर्चा में रहा है। स्पर्धा के इस दौर में जीवन का पीछा करते हुए अंतर्मन की खोज करने वाले इस उपन्यास में मन का सहारा देने वाली घटनाओं का उल्लेख मिलता है।

'पिपिलिका मुक्तिधाम' महत्वपूर्ण उपन्यास बाला साहेब लबड़े द्वारा लिखा गया है। इसे एक परिवर्तनकारी उपन्यास के रूप में देखा जा रहा है। इस उपन्यास की शैली बिल्कुल अलग है। कथावस्तु सीधे समाज से सवाल करती है। जाति-व्यवस्था की चीर-फाड़कर व्यवस्था का विश्लेषण बहुत गहराई से इसमें हुआ है। मुक्ति की तलाश में यह उपन्यास समाज के सभी वर्गों की पड़ताल करता है। सभी धर्मों की यात्राओं पर भी यथास्थान पर टिप्पणियाँ की गई हैं। नैतिकता और अनैतिकता की संकल्पनाओं के

अस्तित्व की तलाश की गई है। वर्तमान व्यवस्था कमजोर है और नई व्यवस्था की माँग यह उपन्यास करता है। अत्यंत संतुलित ऊहापोह के साथ प्रयोगशील शैली को इसमें अपनाया गया है।

अविनाश सोवनी का उपन्यास 'अंतिम कारनामा' रहस्य की दुनिया की एक कड़ी के रूप में है। सत्य और असत्य की सीमा रेखा के बीच गुत्थी को सुलझाने की इसमें कोशिश की गई है। इसकी कहानी रहस्यात्मक और काल्पनिक होने के बाजवूद सत्यता का आभास देने वाली है।

मनोज बोरगांवकर चर्चित कवि हैं। अब उनका एक उपन्यस 'नदीष्ट' आया है। प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते की पड़ताल इस उपन्यास में है। अस्तित्व और अनास्तित्व के बीच बहुत धूमिल और सूक्ष्म-रेखा होती है। हम, हमारी दुनिया और समांतर दुनिया के बीच कई बातें कभी-कभी आपस में विरोधाभास-सी लगती हैं। कभी वे आपस में घुल-मिल जाती हैं। इस उपन्यास में इन सारी बातों का विस्तार से ऊहापोह किया गया है। उपन्यास की शैली बहुत आकर्षक और नवीनता लिए हुए है। कहा जाता है कि अब तक शैलियों की यदि दस दिशाएँ हैं तो 'नदीष्ट' की शैली ग्यारहवीं दिशा है। नेहा कुलकर्णी का 'सुफल संपूर्ण' उपन्यास स्त्री-जीवन के विविध पहलुओं को रेखांकित करता है। जिस कालखंड में स्त्रियों को केवल घर तक ही जीवन मिला था, उस समय इस लेखिका ने अपनी नायिका को संसार से संघर्ष करते हुए दिखाकर आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता के लिए, परिवर्तन का एक माध्यम दिया।

संग्राम गायकवाड का उपन्यास 'आटपाट देश की कथा' में प्रशासन, शासन, व्यवस्था के इर्द-गिर्द सामान्य व्यक्ति की फजीहत और बेबसी की कहानी बुनी गई है। आयकर विभाग के छापे, प्रशासन की उदासी, अधिकारियों की मनमानी और जनसामान्य के सामने आती चुनौतियों का सार्थक विश्लेषण इस उपन्यास में है।

मकरंद साठे का उपन्यास 'गार्डन ऑफ इडन उर्फ साई सोसायटी' अपने शीर्षक से ही विशिष्ट लगता है। लेखक ने सामाजिक और राजनैतिक ताने-बाने में व्यक्ति के चिंतन को अधोरेखित करने की कोशिश की है। किसी प्रयोगशील फिल्म की तरह पात्रों का प्रवेश और उनकी भूमिका दिखाई देती है। हिंसाचार, विस्थापन, बीमारी, विकृतियाँ आदि स्थितियों से गुजरते हुए एक ट्रेजडी साकार होती है। बौद्धिकता की बहुतायतता युक्त यह उपन्यास पठनीयता लिए हुए है और कथानक रोचकता से परिपूर्ण है। उपन्यासकार मिलिंद जाधव ने 'सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य' नामक उपन्यास लिखा। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। हिंदी में इस विषय पर उपन्यास आ चुके हैं। लेखक ने नए सिरे से लिखकर इसे मौलिकता सौंपी है।

'फोर सीज़न्स' शर्मिला फड़के का उपन्यास है। इसे चित्रात्मक शैली की काव्यात्मक कहानी भी कहा जाता है। तमाम ऋतुओं, मौसमों के साथ पात्रों की कथा-यात्रा चलती है। विज्ञापन में विशेष महारात हासिल करने के बाद पर्यावरण कार्यकर्त्ता के रूप में कार्यरत नायिका सुंदरबन के लिए जाती है। देश-विदेश में भ्रमण करते हुए पात्र भीतर-बाहर से अपनी पहचान व्यक्त करते हैं। शैली विशेष के कारण इस उपन्यास ने अपना अलग-अलग चेहरा बना लिया है। 'फिलहाल इतना ही निजी' यह उपन्यास शर्वरी पेठकर ने लिखा है। मध्यवर्ग के जीवन में जो घटनाएँ आती हैं, उनका चित्रण इस उपन्यास में है। अपनी सीमाओं को लाँघने का प्रयास इसमें नहीं है।

कहानी

मराठी कहानियों में जीवन के विविध रूप निरंतर प्रतिबिंबित होते रहे हैं। आशा बगे को कहानी के लिए साहित्य अकादमी का सम्मान प्राप्त हो चुका है। उनकी कहानियों में स्त्री-जीवन के अछूते पहलुओं व आयामों को देखा जा सकता है। उनकी स्त्री-केंद्रित कहानियों का एक संग्रह प्रभा गणोरकर के संपादन में प्रकाशित हुआ है। शीर्षक है। 'आशा बगे की चुनिंदा कहानियाँ'। इन कहानियों के पात्र, घटनाएँ, स्त्री-संघर्ष, जीवनानुभूति, दृष्टिकोण और मूल्य केवल अतीत का स्मरण नहीं दिलाते अपितु इनमें से कई बातें आज भी उतनी ही यथास्थिति के साथ दिखाई देती हैं। आशा बगे दीर्घ कहानियाँ लिखती हैं। उन्होंने मध्यवर्ग की स्त्रियों के दुख-दर्द, अवहेलना, उपेक्षा और विवशताओं का जीवंत चित्रण किया है। इस संग्रह में ऐसी ही चुनिंदा कहानियों को शामिल किया गया है।

संतोष शिंत्रे का कथा संग्रह 'मनेर मानुबेर इंद्रजाल' पर्यावरण केंद्रित कहानियों का संकलन हैं पर्यावरण की समस्याओं में सामाजिक और राजनैतिक उलझनें, विकास, उद्योग-धंधे, सरकारी वन व वन्यजीवों की तस्करी की साँठ-गाँठ जैसी बातें इन कहानियों में समाविष्ट होती रही हैं। इन कहानियों में कुछ सत्य, कुछ तथ्य और कुछ कल्पनाओं का छौंक लगाकर महत्वपूर्ण विषय पर उल्लेखनीय कहानियों ने आकार लिया है। शुभांगी पासेबंद का कहानी संग्रह 'स्वरछायाएँ' कुछ गंभीर तो कुछ हल्की-फुल्की कहानियों से संपन्न है। जीवन की तमाम अपेक्षाओं और चुनौतियों का खाका इन कहानियों में देखा जा सकता है।

ग्रामीण कथा-संसार को कई कथाकारों ने बहुत मन से समृद्ध किया है। उन्हीं में से एक हैं यशवंत माली। उनके कथा संग्रह 'किराल' में ग्रामीण जीवन और परिवेश को बहुत सूक्ष्मता से उकेरा गया है। किसानों के लिए बैल; सखा है, जीवन है, उन्हें किसान अपनी संतानों की तरह पालते हैं। ग्रामीण जीवन, कृषि, फसल, खेत-खलिहान और प्रकृति से लबालब ये कहानियाँ गाँवों के जीवन को व्याख्यायित करती हैं।

मधुकर झेंडे का कथा संग्रह 'टर्निंग प्वाइंट' वर्तमान और हमारे परिवेश की कहानी कहता है। ये कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर सामाजिक, पारिवारिक संसार को बयाँ करती हैं। विजय चव्हाण का 'हवेली जाग गई' नामक कथा संग्रह ग्रामीण क्षेत्र की कहानियाँ लेकर आया। गाँव, गाँव वाले, उनकी श्रद्धा, रीति-रिवाज, राजनीति आदि का विस्तृत चित्रण इस संग्रह में है। गाँव के सामंतशाही और राजनीति के दबाव में मनोवृत्ति में हो रही अवनति की दास्ताँ भी इसमें है। किसानों की समस्याओं का वर्णन भी अपरिहार्य रूप में देखा जा सकता है। 'थैंक्यू बाघा' अनिल पाटिल का कथा संग्रह है। सामाजिक संदर्भों और प्राकृतिक आपदाओं से बाहर आए पात्रों की कहानियाँ इसमें समाविष्ट हैं।

कविता

कविता के क्षेत्र में इस वर्ष कई संग्रहों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इस वर्ष अनुराधा पाटील को उनके कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उन्हें महाराष्ट्र सरकार का प्रतिष्ठित सम्मान 'विंदा करंदीकर जीवन गौरव पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ है। उनके कविता संग्रह का शीर्षक है- 'शायद अब भी...'। अनुराधा पाटील की कविताओं में जीवन के विविध पहलू बहुत गंभीरता और प्रखरता से उभरकर आते हैं। अनुभूतियों की गहरी सतह में उतरकर उनकी कविताएँ बहुत स्पष्टता और सपाट शब्दों में संवाद करती हैं। वे कहती हैं, *"पर होगा कहीं तो ईश्वरा/तू हमें स्वीकार कर/ और फेर ले पीठ हमारी ओर हमेशा के लिए.."*। इस तरह अनुराधा जी जीवन से जुड़ी भावनाओं और यथार्थ को अपनी कविताओं में बाँधती हैं। एक कविता में वे कहती हैं, *पकाईए उसे/ प-पानी का और/ र-रोटी का ही होगा फिर भी/ भूख और भय का/सामना करने की रीत/ समझने दे उसे/ मनुष्यों की दुनिया में। गंवाने की आर्त सब कुछ!*

'काव्य से तिलक-दर्शन' तिलक-युग का काव्यमय दस्तावेज़ है। स्वप्निल, पोरे का यह कविता संग्रह तिलक युग की कहानी, कविता में गूँथी है। 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' कहने वाले 'भारतीय असंतोष के जनक' लोकमान्य तिलक को कविता में बखूबी ढाला गया है। लोकमान्य का व्यक्तित्व उत्तुंग था, जनमानस पर उनका प्रभाव बहुत गहरा था और तत्कालीन समाज को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व ने झकझोरा था; इन सभी घटनाओं और स्थितियों का यह काव्यमय बयाँ है।

एक और संग्रह चर्चित रहा 'कविता ही... मेरी कब्र' कवि हैं- संजय चौधरी। इन कविताओं में आसपास के परिवेश की भयावह स्थिति और मन की घुटन का सार्थक चित्र शब्दरूप में उपस्थित हुआ है। कवि को आने वाले कल की चिंता सता रही है वह सोचता है "बिना आवाज के ही यह संसार नष्ट हो जाएगा। यह किसी के ध्यान में भी नहीं आएगा।" चारों ओर जीवन बंधुआ है और साँस भी खुलकर नहीं ले पा रहे हैं। सभी ओर शोषण, विवशता अन्याय और दुख गहराते जा रहे हैं। यही बेचैनी उनकी कविताओं में स्पष्टता से प्रस्फुटित होती है।

शरणकुमार लिंबाले की आत्मकथा चर्चित रही। वे कई उपन्यासों के सफल रचयिता रहे हैं। साथ ही,

वे महत्वपूर्ण कवि भी हैं। उनका नया कविता संग्रह 'धुड़गूस' (अर्थात्-'उपद्रव') है। इस संग्रह में उन्होंने समकालीन सामाजिक, राजनैतिक विस्फोटकारी स्थितियों को रेखांकित करते हुए विचारों के उपद्रवों को संग्रह में समेटा है। सामाजिक अनुभूतियों को काव्यमय शब्दों में अनिल भालेराव ने 'घोषणा' में पिरोया है। बाल-कविता का सर्वोत्तम संग्रह पुंडलिक वझे ने 'चिऊताई, चिऊताई दरवाजा खोल' रचा है। सतीश भावसार की बाल कविता 'गाना एक फूलों का' दो भागों में संगृहीत है।

सुधाकर ठाकुर का कविता संग्रह 'माफीनामा' भी चर्चा में रहा है। प्रकृति और मानवीय का सत्य और सुंदरता को आधार देने वाली तमाम घटनाओं को इसमें समेटा गया है। बहुत संवेदनशील कविताएँ इसमें संगृहीत हैं। 'लौटने के रास्ते कब से बंद हो गए' यह कविता संग्रह डॉ. सतीश कुमार पाटील का है। सामाजिक अनुभूतियों की सार्थक अभिव्यक्ति इसमें हुई है। कवि ने सामाजिक स्थिति का इसमें खूब विश्लेषण किया है। आत्ममग्नता, जातिवाद, धर्मांधता और लोकतंत्र के मज़ाक पर कठोर टिप्पणियाँ की गई हैं। सुधा गोखले का 'नवचैतन्य' कविता संग्रह में अलग भाव-भूमि की कविताएँ हैं। प्रकृति से ईश्वर तक और प्रेम की कविताएँ इसमें शामिल हैं।

आश्लेषा महाजन सुपरिचित कवयित्री हैं। इनकी कविताएँ अत्यंत संवेदनशील अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती हैं। आत्मीय काव्य-सृजन प्रवाह में कवयित्री हौले-हौले बहती अनुभूतियों को बयाँ करती हैं। यह संग्रह 'दिगंतर की धुन' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। जीवन की अपूर्णता का अनुभव, क्षणभंगुरता, निरर्थकता और चारों ओर के आकर्षण की ओर खिंचाव का सार्थक चित्रण इसमें हुआ है। जीवन की यथार्थता की खोज इन कविताओं में है। वे कहती हैं- *यह जन्म अपना मृत्यु नहीं अपनी/इनके बीच जीने का झूला है अपना।* जीवन का व्यापक दृष्टिकोण उसके अंतरंग के विविध पहलू और सूक्ष्म अनुभूतियों को चित्रित करने का सामर्थ्य कवयित्री ने दर्शाया है।

कई रचनाकारों को लगताा है कि कविता केवल आत्म-अभिव्यक्ति का साधन मात्र है। इसलिए कई लोग आत्ममुग्ध हो अपनी कविताओं में रमते हैं। पर जो कविता की शक्ति और व्याप्ति को समझते हैं वे इसकी गंभीरता भी अच्छी तरह जानते हैं। संजीव मनोहर वाडीकर की कविताएँ इसी तरह की होती हैं, जो व्यक्ति से होते हुए समष्टि तक पहुँचती हैं। इन कविताओं में सामाजिक कविताओं का पुट सहज ही देखा जा सकेगा। महादेव गायकवाड का कविता संग्रह 'नियति' रिश्तों की कविताएँ लिए है। जाति-धर्म से परे मनुष्यता के सुख-दुख से जुड़े रिश्ते-नातों की संवेदनाएँ इसमें हैं।

प्रिया जामकर मराठी कर सुपरिचित कवयित्री हैं। उनका नया कविता संग्रह 'बिंदू में बहुत जगह है' नई संवेदनाओं का संकलन है। प्रेम, आत्मीयता, रिश्ते की अनुभूतियों की सार्थक अभिव्यक्ति इस संग्रह में शामिल हैं। कवयित्री योजना शिवानंद का कविता संग्रह 'अम्लान' चर्चा में रहा। इन कविताओं में जीवन के अनुभव की व्यापकता देखी जा सकती है। सुख-दुख अच्छे-बुरे, आशा-निराशा के भावों का उतार-चढ़ाव इन कविताओं में मिलता है। रचनाकार का सुख-दुख अभिव्यक्ति के दस्तावेजीकरण के बाद केवल निजी नहीं रह जाता, वह पाठकों तक अपनी स्थिति पहुँचाता है। कविता की विशेषता यही है कि वह सृजक और पाठक के बीच एक संवेदनशील तादात्मय स्थापित करे। 'अम्लान' की कविताएँ इसमें सफल हुई हैं।

नाटक

सदानंद देशमुख मूलत: उपन्यासकार हैं। उनके 'बारोमास' उपन्यास को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इस उपन्यास पर हिंदी में इसी नाम से फिल्म भी आ चुकी है। अब इसका नाट्य-रूपांतर हुआ है। ग्रामीण परिवेश की कहानी पर लिखा यह नाटक किसान के जीवन की त्रासदी, आत्महत्या के मुख्य कारण, शोषण, विवशता, आर्थिक विवेचना का सिलसिलेवार बयाँ है। समाज, सरकार, प्रशासन की असंवेदनशीलता से उत्पन्न जीवन के टूटन, संघर्ष और हताशा को इसमें चित्रित किया गया है। लेखक-निर्देशक संतोष वेरुलकर ने अत्यंत सूक्ष्मता से इसका नाट्य-रूपांतर किया है।

नाट्य अनुभवों पर मराठी में काफी साहित्य उपलब्ध हैं। इस वर्ष त्र्यं. वि. सरदेशमुख की पुस्तक 'अभिनेता, नाटक और हम' प्रकाशित हुई। ऐसा कहा

जाता है कि नाटक जितना मंच पर होता है उतना ही उसे मंचित करने वाले रंगकर्मी और दर्शकों के मन में निरंतर घटित होता रहता है। मानवीय संवेदनाओं को नाटकों के अनुभव प्रभावित करते रहते हैं। त्र्यं. वि. सरदेशमुख ने नाट्य-साहित्य पर अनेक अनुभव व्यक्त किए। उनकी नाट्य-सृष्टि को देखने की दृष्टि ने चिंतन को अभिव्यक्ति का रूप दिया। और यही रूप 'अभिनेता, नाटक और हम' के माध्यम से पाठकों के सामने है। लेखक ने नाटक से संबंधित सारी बातों का विवेचन इस पुस्तक में किया है। शुद्रक का 'मृच्छकटिक' हो या मराठी नाटककार गडकरी का 'पुण्यप्रभाव' हो; इनकी नाट्य-यात्रा का सार्थक विवेचन लेखक ने किया है।

त्र्यं. वि. सरदेशमुख ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि नाटककार द्वारा नाटक लिखे जाते समय और निर्देशक तथा अभिनेताओं द्वारा मंच पर उतारते समय आत्म-प्रत्यय का ध्यान रखना आवश्यक होता है। सरदेशमुख ने अपने विवेचन को शेक्सपियर, ब्रेख्त, महेश एल कुंचवार जैसे नाटककारों की कृतियों का विशेष उल्लेख किया। अमूर्त, त्रासदी, भय-द्वेष, बदला जैसे भावों को व्यक्त करने वाले नाटकों को विवेचना में उन्होंने शामिल किया।

मराठी नाटकों की सुदीर्घ परंपरा है। विजय तेंडुलकर, जयवंत दलवी, रत्नाकर मतकरी जैसे नाटककारों के नाटक आज भी मराठी मंचों पर दर्शकों को आकर्षित करते हैं। हिंदी के नाटककार मोहन राकेश के नाटक भी रंगभूमि में मराठी संस्करण के साथ उपस्थित हैं। आज भी नए नाटक लिखे जा रहे हैं। सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक नाटकों का सृजन होता रहा है और दर्शकों द्वारा उन्हें समर्थन दिया जाता है।

जीवनी-आत्मकथा

उमेश सूर्यवंशी और विजय चोकाककर लेखकों ने 'राजर्षि' नामक जीवनी राजर्षि शाहू छत्रपति महाराज जी की लिखी है। अब तक शाहू महाराज की कई जीवनियाँ विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। मराठी के प्रतिष्ठित लेखकों ने राजर्षि के संबंध में लिखा है, अब 'राजर्षि' के रूप में उनके जीवन के विविध पहलू फिर प्रकाश में आ रहे हैं। इस जीवनी को शाहू महाराज के अनेकानेक रंगीन चित्रों से समृद्ध किया गया है। इस पुस्तक के अठारह अध्याय हैं। इसमें शाहू महाराज द्वारा लोक-उत्थान के लिए किए गए कार्यों का उल्लेख है। शिक्षा-क्रांति, छात्रावास की व्याख्या, कलाकारों के आश्रय- दाता, जाति भेद निमूलक, धार्मिक-क्रांति, शिवाजी महाराज के सच्चे अनुगामी, किसानों-मजदूरों के साथी, स्त्री-वर्ग के सच्चे हमदर्द, दीन-दुखियों के उद्धारक जैसे विभिन्न रूपों में शाहू महाराज का चित्रण इस पुस्तक में समाहित है।

इसी क्रम में एकनाथ आव्हाड द्वारा लिखित 'डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम' नामक पुस्तक में अब्दुल कलाम साहब की जीवनी के महत्वपूर्ण प्रसंगों से परिचित हुआ जा सकता है। बच्चों के मन पर इस महापुरुष की जीवनी निश्चित ही सार्थक प्रभाव डालने में सक्षम है।

नरेंद्र चपलगांवकर मराठी के सुपरिचित और सम्मानित लेखक हैं। उन्होंने 'अनंत भालेराव : समय और कर्तृत्व' जीवनी लिखी है। अनंत भालेराव 'माठवाडा' दैनिक पत्र के संपादक थे। हैदराबाद मुक्ति-संग्राम में लेखन, वक्तव्य और शस्त्रों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद संपादक के रूप में लंबे समय तक उन्होंने समाज की सेवा की। लेखक ने प्रशंसात्मक लेखन न कर अनंत भालेराव के ठोस व समाजोन्मुख व्यक्ति के व्यक्तित्व को सामने उपस्थित किया है। उनके त्याग, समर्पण, साहस, नेतृत्व, शिक्षाशास्त्री, साहित्यकार, विद्रोही, प्रखर पत्रकार, अध्ययनशील और शांत-सीधे-सादे व्यक्ति का आख्यान इसमें समाविष्ट किया है। अनंत भालेराव के जीवन के कितने ही प्रसंग निरपेक्ष-भाव से प्रस्तुत किए हैं।

'सृजनशील जगतमित्र' जीवनी का लेखन किया है शुभांगी नितीन मुले ने। यह जीवनी है कई देशों में राजदूत के रूप में सेवा दे चुके ज्ञानेश्वर मुले की। कोल्हापुर के एक छोटे ग्रामीण इलाके से अपना कार्य शुरू करने वाले मुले भारत सरकार की विदेश सेवा में लंबे समय तक कार्यरत रहते हुए अनेकानेक सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। मूलत: एक दार्शनिक, लेखक, श्रेष्ठ प्रशासक के रूप में उनका व्यक्तित्व सर्वविदित है। लेखिका ने मुले के जीवन के विविध पहलुओं को

उद्घाटित किया है। लीला फरोज पूनावाला की जीवनी डॉ. वासंती जोशी ने लिखी है। इस 'अगाध लीला' में 'अल्का लावल' नामक कंपनी में ट्रेनी इंजीनियर के रूप में कार्यारंभ करने वाली लीला पूनावाला ने बाद में कंपनी के सर्वोच्च पद पर अपनी सेवाएँ दीं। इस जीवन-यात्रा को बखूबी समेटा गया है। सरिता अवार्ड की आत्मकथा 'आम रास्ता नकारते समय' काफी चर्चित रही है।

अनुवाद

मराठी साहित्य में अनुवाद की भूमिका बहुत उल्लेखनीय है। निरंतर अनुवाद विषय पर कुछ पत्रिकाएँ मराठी में प्रकाशित होती हैं। हिंदी और भारतीय भाषाओं से विविध विषयों पर अनुवाद निरंतर आते रहते हैं। कुछ प्रकाशक अधिकांश अनूदित साहित्य ही प्रकाशित करते हैं।

इसी क्रम में विविध भाषाओं के लेखक, मूल लेखक की तरह मराठी में उपस्थित हैं। इस वर्ष आर. के. नारायण का कथा संग्रह 'वटवृक्ष के नीचे और अन्य कहानियाँ' संग्रह का अनुवाद नंदिनी देशमुख ने किया है। चित्रा मुद्गल का साहित्य अकादमी पुरस्कृत उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नालासोपारा' का मराठी अनुवाद डॉ. वसुधा सहस्रबुद्धे और माधवी जोग ने किया है। इस उपन्यास की समीक्षा भी काफी आई। एक समीक्षक ने लिखा कि चित्रा मुद्गल के लेखन का विचार करने पर एक बात स्पष्ट होती है कि वे समाज-स्थिति का जब गहन विश्लेषण करती हैं, तब भी साहित्यिक कलात्मकता उनसे कभी नहीं छिटकती।

उमा कुलकर्णी कन्नड से मराठी में अनुवाद के लिए सबसे अधिक योगदान देने वालों में से अग्रणी हैं। उन्होंने भैरप्पा की लगभग सभी कृतियों का मराठी में अनुवाद किया है। पिछले दिनों शिवराम कारंत की कृति 'तनमन के भंवर में' का उन्होंने अनुवाद किया। साथ ही, एक ऐतिहासिक उपन्यास 'कित्तूर चेन्नम्मा' (मूल लेखक- डॉ. बसवराज नायकर) का मराठी अनुवाद डॉ. अरविंद हेब्बार ने किया। 1828 में कित्तूर की रानी ने ब्रिटिश सेना के विरुद्ध संघर्ष किया। लेखक ने यह दावा किया कि अंग्रेजों के विरुद्ध यह पहला सशस्त्र विद्रोह था।

'इनने रचा इतिहास' लेखक सुनील खिलनानी की इस पुस्तक का अनुवाद सविता दामले ने किया है। भारत के इतिहास को विशेष रूप से प्रभावित करने वाले 50 महत्वपूर्ण व्यक्तियों की चर्चा इस पुस्तक में है। इसमें यह बात भी रेखांकित की गई है कि भारत केवल उच्चवर्णियों का देश न होकर दलित, आदिवासी महिलाओं और अन्य धर्मियों का भी है। इसमें लोकमान्य तिलक, महात्मा फुले, महात्मा गांधी, वि. दा. सावरकर, जवाहरलाल नेहरू, रवींद्र नाथ टैगोर, बाबा साहेब अंबेडकर जैसे महापुरुषों के योगदान की चर्चा की गई है।

चंद्रकांत भोंजाल हिंदी से मराठी में साहित्य का अनुवाद करने में पूरी तरह समर्पित व्यक्तित्व हैं। लगभग साठ से अधिक पुस्तकों का उन्होंने मराठी में अनुवाद किया है। अब उन्होंने विभाजन की त्रासदी की कहानियों का अनुवाद और संपादन कार्य किया है। इन कहानियों ने विभाजन की भयावहता को मराठी समाज तक पहुँचाया है। अलग-अलग हिंदी-उर्दू के रचनाकारों की कहानियाँ इसमें शामिल की गई हैं। विभाजन के समय की क्रूरता, उन्माद, लूटपाट, खून-खराबा, धर्मांधता की दाहकता इस संग्रह में है। पाकिस्तान के हिंदू भारत में जान बचाकर भागे और भारत के मुसलमान पाकिस्तन में। इस डरावने समय में बच्चों, स्त्रियों, बुजुर्गों की दुर्गति का कोई हिसाब नहीं। ऐसे में मानवीयता, धर्म से ऊपर अपना दायित्व निभाती है और भीष्म साहनी की 'पाली' कहानी का जन्म होता है, जिसमें हिंदू पाली को मुस्लिम परिवार में सहारा मिलता है। नि:संतान मुस्लिम दंपत्ति पाली का लालन-पालन करता है, पर अंतत: उसके वास्तविक माता-पिता उसे ढूँढ़कर भारत ले आते हैं। भीष्म साहनी ने मनुष्यता को केंद्र में रखकर रचना की और ऐसी कितनी ही मनुष्यता चारों ओर बिखरी थी, तमाम क्रूरताओं के बाजवूद। अहमद नहीम की 'परमेश्वर सिंह', मंटो की 'सकीना', 'ठंडा गोश्त' पाठक को भीतर तक झकझोरती हैं। गुलजार की 'बँटवारा' और रामानंद सागर की कहानियाँ भी उस दौर की ऐसी कहानियाँ हैं जो विभाजन का सच्चा इतिहास बयाँ करती हैं। चंद्रकांत भोंजाल ने अपना सारा जीवन अनुवाद के माध्यम से हिंदी और मराठी के बीच पुल बनाने को समर्पित कर दिया है।

मिलिंद साठे ने विश्व कविता का भावानुवाद 'बिंब-प्रतिबिंब' शीर्षक से किया है। डॉ. हेमा क्षीर सागर की चुनिंदा अंग्रेजी कविताओं के मराठी रूपांतर के बारे में जो कहा गया है कि साहित्य पर संस्कृति, प्रदेश, भाषा और साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव होता है। मिलिंद साठे के अनुवाद को देखने पर यह बात स्पष्ट होती है। रॉबर्ट फ्रॉस्ट, शेली, कीट्स, लाँगफेलो, शेक्सपीयर, वर्डस्वर्थ आदि अनेक अंग्रेजी कवियों की कविताओं का अनुवाद इसमें शामिल है।

शांता गोखले अंग्रेजी की महत्वपूर्ण लेखिका हैं। उन्होंने अंग्रेजी में नाटकों पर एक विशिष्ट ग्रंथ की रचना की। माधव वझे ने इसका मराठी अनुवाद 'प्रायोगिक रंगभूमि : तीन अंक' शीर्षक से किया है। 1960 से 1990 के बीच मुंबई के प्रायोगिक रंगभूमि के मौखिक इतिहास का दस्तावेजीकरण इस पुस्तक के माध्यम से हुआ है। इस दौरान राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण की सीधे प्रतिक्रिया रंगभूमि पर दिखाई देती है। इस कालखंड के रंगभूमि से संबंधित और उसके गवाह-रंगकर्मियों के साक्षात्कार के माध्यम से यादों का खजाना सुरक्षित रखने की दृष्टि से इस ग्रंथ की रचना हुई। इस खजाने में गिरीश कर्नाड, गो. पु. देशपांडे, अलेक पद्मश्री, सत्यदेव दुबे, श्याम बेनेगल, अकबर पद्मश्री, नसिरुद्दीन शाह, डॉ. श्रीराम लागू, अमोल पालेकर, रत्नाशाह पाठक, सुलभा देशपांडे, अच्युत वझे, विजय केंकरे आदि कई रंगकर्मियों ने अपनी यादों से समृद्ध किया है।

अनुवाद के क्षेत्र में मराठी में बहुत प्रकाशन होते रहे हैं। कई हिंदी, अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के ग्रंथ मराठी में नियमित रूप से अनुवाद के माध्यम से आते रहे हैं।

विविध

महावीर जोंधले मराठी के चर्चित कथाकार और चिंतक माने जाते हैं। उनके लेखों का एक संग्रह 'झिम्मा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने दैनिक जीवन से सुंदर पक्षों को लेकर लेख लिखे हैं। ये ललित लेख बारिश, प्रकृति, मनुष्य-स्वभाव, पारिवारिक जीवन और अपने आसपास का सजीव चित्रण है। इसे आत्मीय अनुभवों का शाब्दिक आविष्कार कहा जा सकता है।

रेखाचित्र बहुत अधिक मात्रा में लिखा गया है। विलास खोले मराठी के सुपरिचित समीक्षक हैं। उनकी कलम से निकले रेखाचित्र 'उस किनारे' में संगृहीत हैं। जीवन में प्राप्त सान्निध्य, स्नेह और साथ को लेखक ने अत्यंत रोचकता से बयाँ किया है। इन लोगों में साथी लेखक, शिक्षक, मित्रों आदि का समावेश है। किसी समय मित्रता से समृद्ध समय धीरे-धीरे खाली होने लगता है और रह जाती हैं यादें..... इन्हीं यादों को विलास खोले ने अपनी पुस्तक में संजोया है।

गोविंद तलवलकर मराठी के ख्याति प्राप्त संपादक लेखक रहे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'गांधीपर्व-2' में विभाजन की आंतरिक कथा-घटनाओं का उल्लेख करते हुए तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थितियों का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए विभाजन का दाहक इतिहास ही सामने रखा है।

'आक्षिप्त मराठी साहित्य' नामक पुस्तक में डॉ. गीतांजलि घाटे ने साम्राज्यवादी सरकार द्वारा बंदी किए गए साहित्य की चर्चा की है। अंग्रेजों के शासन-काल में जिन पुस्तकों/लेखों पर; सरकार विरोधी टिप्पणी के कारण बंदी लागू की गई, उनका विस्तृत ब्यौरा इस पुस्तक में दिया गया है। लोकमान्य तिलक, वि. दा. सावरकर, शिवरामपंत परांजपे जैसे ज्वलंत मनोवृत्ति के महापुरुषों ने अपनी तेजस्वी लेखनी से तत्कालीन समस्याओं पर प्रहार किया था।

डॉ. नीलिमा गुंडी मराठी की सुपरिचित समीक्षक-साहित्यकार हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक 'विगत की गूँज' में स्त्री-जीवन के विगत-उद्गार रेखांकित किए हैं। इस पुस्तक में नीलिमा गुंडी ने स्त्रियों की आत्मकथाओं से व्यक्त होने वाली सामाजिक स्थिति, रूढ़ि-परंपरा, स्त्रियों का संघर्ष आदि मुद्दों पर व्यापक चर्चा की है। साथ ही, उन्होंने महाराष्ट्र के सामाजिक जीवन का संक्रमण किस तरह होता गया है, यह बताने की कोशिश की है। नीलिमा गुंडी की दूसरी पुस्तक लेखों की है- 'स्त्री संवेद्य'। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि यह स्त्री संवेदनाओं की पुस्तक है। नए युग की स्त्री को नई अस्मिता के साथ समाज में खड़े रहने की स्थिति की पैरवी करती लेखिका सामाजिक संदर्भों के परिवर्तनों, रिश्तों का जिक्र करती हैं। स्त्रियों के साहित्य का ऊहापोह करते हुए नई समस्याओं से

रूबरू करवाकर आत्मबल मजबूत करने पर वे जोर देती हैं। स्त्रियों की स्थिति का अतीत व वर्तमान का ब्यौरा रखती हुई लेखिका भविष्य में स्त्री की बेहतरी के लिए साहित्य निर्माण के प्रति आशान्वित होती हैं।

सिनेमा-प्रक्रिया का विवेचन डॉ. बालाजी घारूले ने 'कथात्मक साहित्य और चित्रपट' पुस्तक में किया है।

– बी-503-504, 'हाई ब्लिस', निकट कैलाश जीवन, सर्वे नं.-23, धायरी, नर्द्रे रोड, धायरी,
पुणे-411014

❑❑❑

14

मलयालम साहित्य

डॉ. बी अशोक

भाषा के सहारे किसी जाति के अंतरंग की अनुभूति की अभिव्यक्ति साहित्य करता है। इसके लिए प्रयुक्त शब्द कि अर्थ से संगति होनी चाहिए। पाठक या श्रोता के मन-मस्तिष्क को प्रभावित करने की क्षमता साहित्य का अपेक्षित गुण है। कोई भी रचनाकार अपने सामाजिक सरोकारों से विमुख हो ही नहीं सकता। अत: साहित्य अपने समय का इतिहास भी बनता है। साहित्य के चर्चित मानदंडों को आधार बनाकर 2019 के मलयालम साहित्य पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

वर्तमान मलयालम की कविताएँ आधुनिकता की संवेदना तथा नवीन परिप्रेक्ष्य का सम्मेलन है। व्यावहारिक भाषा आज मलयालम कविता की संवेदना को क्षति नहीं पहुँचाती है। छोटे-छोटे वाक्य प्रयोग, एक शब्द, बातचीत सबमें कविता भरी पड़ी है। अलंकार जैसे काव्याडंबरों में कविता आज भरोसा नहीं करती। आशय की संवेदना ही मुख्य है। यहाँ के कवियों के वैयक्तिक जीवन का कोई न कोई अंश कविता के रूप में जन्म लेता दिखाई पड़ता है। अपने भीतर की आग को शांत करने का उनका यह एक तरीका है। साहित्य की बनी बनाई परंपराओं को वर्तमान मलयालम कविता छोड़ चुकी है। उसका प्रतिबिंब 2019 की कविताओं में भी दृश्यमान है।

मलयालम के मूर्धन्य कवि मधुसूदन नायर का काव्य संग्रह है 'अच्चन पिरन्ना वीड' -पिता का जन्मा घर। संग्रह की कविताओं में शहरीकरण के बीच जीने को विवश एक पिता द्वारा अपनी संतानों के साथ प्रस्तुत मनसफर का चित्र है। मिट्टी, पानी और आकाश से वंचित एक पिता और उनकी संतानें कविता के केंद्र में हैं। हिमज्वाला, हरिचंदन जैसी अनेक कविताएँ इसमें संगृहीत हैं। अपनी परंपरा को मानने वाले पिताओं के लिए शहर एक भयानक सत्य है। मुड़कर देखना साहित्य का सबसे प्रिय विषय है। इस संग्रह की समस्त कविताओं में यह दर्शनीय है। कविताएँ ऐलान करती हैं कि वर्तमान शहरी परिवेश में मानव छटपटाहट महसूस करता है और उसकी असली शांति गाँव की शीतलता में है। शांति और प्रेम भरे गाँवों को शहरी आसक्ति जब निगलने लगती है तब संस्कृति का सत्यानाश होने लगता है। डर लगता है घर पर इस अंधियारे में - कहते हुए घर से भागने की कोशिश करने वाला कवि आधुनिक सुख-सुविधाओं के सामने प्रश्नचिह्न बनकर खड़ा है। असल में काव्य संग्रह गाँव एवं अपनी परंपरा की ओर अपने को ले जाने वाले मानव के सत्य की खोज है। काव्य में परमात्म भावना भरी पड़ी है। दूर कहीं परमात्मा का स्पर्श/सूक्ष्म, छिपा या भ्रम - इस प्रकार परमात्मा का अस्तित्व सब कहीं देखने वाला कवि पत्थर, पेड़, परिवार सब कहीं उसके दर्शन करता है। यहाँ कवि परिवार को काल्पनिक स्तर दे रहा है और कहता है कि जिस मिट्टी में पैर जमा है वह मधु है, इसमें माँ

के दुग्ध की सुवास है। लेकिन वर्तमान मानव आधुनिकता की गंधों के पीछे भागकर अपना अस्तित्व खो रहा है। आज मिट्टी क्रय-विक्रय की भूमि बन चुकी है। आज परिवार विभाजन की पीड़ा भोगने वाले ईंट-पत्थर मात्र हैं। इस प्रकार संपूर्ण कविताओं में कवि अपनी खोई सुगंध की गंध तलाशने वाले आधुनिक मानव को परखता है।

अकत्तुर अनूपा की 32 कविताओं का संग्रह है 'अम्मा उरांगुन्निल्ला' - माँ सोती नहीं। कम शब्दों में सामाजिक विद्रूपताओं पर तीखी चोट पहुँचाने वाले उनके इस संग्रह को 2019 का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। ताल-लय को समेटने वाली यह रचना डर, आशंका, पीड़ा और अशांति भरे वातावरण की ओर पाठक को ले जाती है। माँ के भीतर उमड़ने वाली अनदेखी व्यथा को पर्दाफाश शब्दों के माध्यम से अनुजा चित्रित करती हैं। कविताओं में अभिव्यक्त यह पीड़ा पाठक को कुरेदने लगती है। कवयित्री समाज की वास्तविकता को रेखांकित करते हुए लिखती हैं - *अकेली है माँ / पथभ्रष्ट भटकती होगी माँ।* इसी प्रकार वह कहती हैं - *बीच शहर की नुमाइश में / थकी-माँदी / धरती पर गिरी / छाती फोड़ लेटी हैं माँ / बिना सोए।* संग्रह की सभी कविताएँ भीड़ के बीचों-बीच खड़ी होकर चारों ओर की चिल्लाहट को अपने भीतर समेटकर शब्दों में परिवर्तित करने की अपार क्षमता रखने वाली कवयित्री अनुजा की खासियत है।

धीरे-धीरे खत्म होने वाले प्रणय की कविताओं का संग्रह है - 'बुद्धपूर्णिमा'। यह वी. एम. गिरिजा का काव्य संग्रह है। बुद्धपूर्णिमा की चाँदनी के समान भीतरी सतह पर इनकी कविताएँ शांत नजर आएँगी। ये कविताएँ स्त्री तथा मातृत्व की चहारदीवारी में बँधती नहीं हैं। यशोधरा की चिंताओं में कविता जन्म लेती है। घर से परित्याग करके देश-देश भ्रमण करते तथा बोधि वृक्ष की छाया में ध्यान मग्न होकर भगवान बुद्ध ने जिस तरह सत्य की प्राप्ति की उसी सत्य को घर के भीतर रहकर प्राप्त करने वाली स्त्री की जीत है यह काव्य।

कविता के समान वर्तमान मलयालम साहित्य कहानी के लिए भी वसंतऋतु है। रचनात्मकता को सामाजिक पहलुओं से जोड़ने की क्षमता वर्तमान कथा साहित्य का बल है। बदले हुए समय की चुनौतियों को स्वीकार करके सूक्ष्म जीवन परिवेश को कथा साहित्य रेखांकित करता है। स्त्री-पुरुष जीवन की नई परिभाषा, वर्तमान आर्थिक व्यवस्था का असर, बदलती संवेदना यह सब कहानी का वस्तु निर्माण करने में सक्षम है।

मलयालम के जाने-माने कथाकार उन्नी आर का कहानी संकलन 'वांग' में 11 कहानियाँ संगृहीत हैं। इसका प्रकाशन 2019 में हुआ। यह कथाकार का सातवाँ संकलन है। जिंदगी और इतिहास को नितांत नई दृष्टि से परखने की उनकी क्षमता अप्रतिम है। 'वांग' कहानी में कॉलेज की छुट्टी होने के एक महीने पहले रसिया अपनी सहेलियों से मन की अदम्य इच्छा प्रकट करती है। उसकी इच्छा है मस्जिद में जो वांग सुनाई पड़ती है उसी प्रकार उसे भी वांग करनी है। यह इच्छा सुनने वाली उसकी सहेलियाँ हैरान हो जाती हैं। विविधता बरतने वाले विचारों को उदात्त कथन शैली में पिरोकर एक मोहक वातावरण बुनने की क्षमता वांग कहानी संकलन की कहानियों में पाई जाती है। 2019 के मलयालम कहानी साहित्य को यह एक विशिष्ट देन है। 'इडशेरी' पुरस्कार से यह कथा संग्रह सम्मानित हुआ।

'कोल्लपाटी दया' जी. आर. इंदुगोपन का कहानी संग्रह है। साहित्य जगत की रूढ़िगत मान्यताओं को ललकारते हुए नई सोच के लिए पाठक को प्रेरणा देने वाली 16 कहानियों का संग्रह है 'कोल्लपाट्टी दया'। इस संग्रह की कहानियों में अधिकारी वर्ग एवं जनता आमने-सामने प्रस्तुत है। भविष्य की राजनीति को दिशा देने की क्षमता रखने वाली इंदुगोपन की ये कहानियाँ कला की दृष्टि से कोई संधि नहीं करती। आकार में लघु होने पर भी यह संग्रह मलयालम कहानी के इतिहास में एक मील का पत्थर होने की क्षमता रखने वाला है। संग्रह के आमुख में खुद कहानीकार ने दावा किया है कि ये कहानियाँ संसार को प्रेरणा देने वाली रहेंगी। इस संग्रह की 'गुंडा दावत', 'विश्रामालय में पुलिस', 'प्रतिनायक' जैसी कहानियाँ सामाजिक अंतरात्मा की प्रतिध्वनियाँ हैं।

के.वी. मोहन कुमार का 'उष्णराशि' 2019 के श्रेष्ठ उपन्यासों में गिना जाता है। यह पुन्नप्रा वायलर आंदोलन की पृष्ठभूमि में रचित उपन्यास है। जे एन

यू में शोध कार्य करने वाली सत्यदास की बेटी अपराजिता अपने पिता की खोज में वायलर पहुँचती है तो उपन्यास जन्म लेता है। इतिहास में जो पात्र हाशिए पर रह चुके थे वे उष्णराशि में पुनर्जीवित होते हैं। उपन्यास में 1930 से शुरू होने वाले राजनैतिक वातावरण का चित्रण है। सर्वहारा वर्ग का मृतोत्थान उपन्यास को सदा ज्वलंत रखने में समर्थ बनता है। केरलीय सामाजिक व्यवस्था को हठात् प्रभावित करने वाला पुन्नप्रा आंदोलन और उसकी प्रेरणादायक घटनाओं के साक्षी के मुँह से घटना सुनने वाली अनुभूति उपन्यास प्रदान करता है। स्वतंत्रता पूर्व केरल की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति उपन्यास में चित्रित है। निस्वार्थ बलिदान एवं संघर्ष की ज्वाला में शहीद हुए वीरों की सच्ची आख्यायिका के रूप में उष्णराशि की घटनाएँ जीवंतता देने वाली हैं।

एन प्रभाकरन का उपन्यास है 'माया मनुष्य'। उपभोक्तावादी संस्कृति द्वारा एक आम आदमी के जीवन की आत्मा के नष्ट होने की कथा 'माया मनुष्य' बताता है। यह संस्कृति, धर्म एवं राजनीति के साथ मानव के समस्त अंगों को सुनामी के समान ग्रसित कर चुकी है। उपन्यास यह बताता है कि हर मनुष्य 'माया मनुष्य' बनता जा रहा है। मध्यवर्ग इस नव संस्कृति के प्रवाह में बह चुका है। गमन नामक पात्र की यात्रा तथा तलाश में 'माया मनुष्य' की कथा विकसित होती है। मनुष्य के आपसी संबंधों में हो रही उदासीनता इसमें चर्चित है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र अपने व्यक्तिगत संघर्षों को जीने की ललक में जड़ बनता जा रहा है। हर एक का लक्ष्य अपनी अतिजीविता है। एक खोखले जमाने का सच्चा चित्र 'माया मनुष्य' पाठक के सम्मुख खोल देता है।

ईश्वर तथा मिथकों के जन्म के पीछे की कहानी बताता है वी. के. जैम्स का उपन्यास 'निरीश्वरन'। इस संसार की उत्पत्ति का हेतु मानने वाले परमात्म संकल्पना के चारों ओर फैले कुराचारों की ओर उपन्यास नजर दौड़ाता है। एंटनी, भास्करन और सफीर तीन ऐसे युवक हैं जो अंधविश्वास से जूझने वाले अपने गाँव की कुगति पर पीड़ा भोगते हैं। इसका अंत करने के लिए गाँव के प्रमुख देवगली का उन्होंने पुनर्नामकरण किया - वेश्यागली। दिन बीत जाने पर उनको लगा कि इससे गाँव के अंधविश्वास को कोई क्षति नहीं पहुँची। इसलिए उन्होंने एक नया कदम उठाया। अपनी कारीगरी से एक मूर्ति तैयार करके परमात्मा के बदले में गली के एक कोने पर रखी और नाम दिया - निरीश्वरन। प्रतिष्ठा भी अशुभ वेला में की थी। तीनों ने यह अफवाह फैलाई कि वहाँ प्रार्थना करने वालों की मनोकामना सिद्ध होगी। प्रार्थना करने वाले सभी को फल प्राप्ति होती है। ईश्वर के नाम पर होने वाले अंधविश्वास को तोड़ने की कोशिश को विफल होते देख तीनों हतप्रभ हो जाते हैं। निरीश्वरन की कथा बुनने में आख्यान का जो नयापन कथाकार जेम्स ने ढूँढ़ा वह सराहनीय है।

कथा साहित्य के समान मलयालम के गद्य की अन्य विधाओं में भी नवीन प्रयोग हो रहे हैं। सबका केंद्रबिंदु व्यक्ति है जो समय के पैरों तले कुचलकर अपने को रेखांकित करने की छटपटाहट लिए खड़ा है।

लेखन की समग्रता के दृष्टिकोण की उपज है यात्रा वृतांत 'लंदन की ओर एक सड़क यात्रा' सरल एवं सीधी रचना शैली, हृदय को छूने वाली दृष्टि, आख्यान की गतिशीलता तथा नए दृश्यों के अनूठेपन से यात्रा वृतांत में यह रचना एक नया अनुभव प्रदान करती है। भारत से निकलकर 20 से ज्यादा देशों को लाँघकर 24000 किलोमीटर दूर लंदन की ओर जाने वाली सड़क यात्रा का अनूठा अनुभव इसमें मिलता है। बैजू नायर अपनी इस यात्रा को बखूबी पाठकों तक पहुँचाते हैं। यह सचित्र यात्रा विवरण है। यात्रा के नव्यानुभव के साथ नई-नई जानकारी प्रदान करने में यह यात्रावृत्त सक्षम है।

मुनि नारायण प्रसाद की आत्मकथा 'आत्मायनम' मलयालम साहित्य को एक विशिष्ट देन है। श्री नारायण गुरु परंपरा की जाज्वल्यमान पंक्ति में मुनि नारायण प्रसाद आते हैं। गुरु दर्शन को संसार में फैलाने का दायित्व उन्होंने अपने कंधों पर उठाया। उन्होंने जातीय कटघरे से गुरु को मुक्त कराने की कोशिश की। ज्ञान की, अद्वैत की ओर की यात्रा को अपना जीवन लक्ष्य मानने वाले मुनि की जीवन गाथा है 'आत्मायनम'। श्री नारायण गुरु के साथ अन्य परंपराओं का भी जिक्र करने वाली यह रचना मलयालम के आत्मकथा साहित्य को मुनि की देन है। मनुष्य को संसार के सामने खड़े होने की ऊर्जा देने वाले

ज्ञान का भंडार खोलने वाला आत्मायनम नटराज गुरु और नित्यचैतन्ययति की परंपरा की अनुगामी रचना है।

एम.पी.सुरेंद्रन का निबंध संग्रह है 'रेडजोन'। इसमें फुटबॉल खेल के रोचक क्षणों को अतुलनीय दृष्टि से देखने वाले रचनाकार से हमारा परिचय होता है। फुटबॉल मात्र एक खेल नहीं, उससे बढ़कर अनगिनत नाटकीय तथा विस्मयकारी पल मैदान में जन्म लेते हैं। मैदान को अपने पैरों की गति से नापने वाला खिलाड़ी कभी कभार एक नर्तक की भूमिका निभाता है। गेंद एक पैर का स्पर्श पाकर दूसरे पैर की ओर बढ़ता दृश्य मोहक लगता है। खेल की खूबसूरती को इस प्रकार खिलाने वाले अनेक खिलाड़ी हैं। प्रतिद्वंद्वी के जाल की तरफ गोली जैसे गेंद मारते वक्त भी खेल की सुंदरता को बनाए रखने में खिलाड़ी कामयाब रहता है। जय-पराजय की सीमा से परे दर्शक के दिल को छूने वाले लम्हों को प्रदान करने वाले 90 मिनट! किसी खेल में किसी जादूगर का उदय होता है तो किसी में कोई खिलाड़ी बहिष्कृत होता है। मैदान में आँसू गिरे, ठहाके जन्मे। इस प्रकार के क्षणों को सुरेंद्रन अपने निबंध संग्रह 'रेडजोन' में प्रस्तुत करते हैं। समाज, व्यवहार, प्रेम, प्रकृति आदि की दृष्टि से फुटबॉल और खिलाड़ियों को यह रचना परखती है।

एस.आर.लाल की रचना 'कुंजुन्नी की यात्रा पुस्तिका' श्रेष्ठ बाल रचना है। कुंजुन्नी इसका एक साहसी पात्र है। जीवन, सचिन, कमल जैसे बालक और कैसर, शेरशा, टॉमी आदि कुत्तों की जिंदगी में अचानक कुंजुन्नी प्रवेश करता है। जीवन से वह अपनी कथा बताता है। प्रस्तुत कहानी की पूर्ति के पहले ही कुंजुन्नी गायब हो जाता है। जीवन कुंजुन्नी को ढूँढ़ने लगता है। हर बाल रचना का लक्ष्य बालक-बालिकाओं के दिल में जगह पाने का है। लेकिन बड़ों की भावना जगत से बच्चों के भोले कल्पना संसार में पहुँच पाने की चुनौती कई बार रचनाओं को लक्ष्य तक पहुँचने से रोकती है। लेकिन एस. आर. लाल की भावना और लेखनी सीमा को पार कर बच्चों की कल्पना से मिल-जुल जाती है। लोक कहानी जैसे मिथक और फैंटेसी का सहारा लेकर कुंजुन्नी की यात्रा जारी होती है। जैसे कहा गया, जीवन, सचिन, कमल आदि बच्चे और उनके साथी कैसर, शेरशा, टॉमी जैसे कुत्ते, खाना पकाने वाला प्रभाकर, सबकी प्रिय मेरी मिस और आबेलच्चन इस बाल उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। समय बीतने पर कमल की दादी और शेरशा कुत्ते की मृत्यु हो जाती है। सचिन अमरीकन परिवार में गोद लिया जाता है। जीवन अकेला रह जाता है। तब उसकी जिंदगी में नया नौकर कुंजुन्नी प्रवेश करता है। 75 साल की आयु पार करने वाला कुंजुन्नी साठ साल पहले के अपने फरार होने की घटना कहने लगता है। ब्रिटिश शासन का समय था। गाँव के जमींदार के स्कूल से निकाला गया तो कुंजुन्नी फरार हो गया। अपने मामा के बेटे वैशाख को ढूँढ़कर रेल द्वारा मुंबई पहुँचने वाला कुंजुन्नी उधर से जहाज में अफ्रीका की ओर निकलता है। कुंजुन्नी की इस यात्रा की खूबियाँ बाल रचना को आकर्षक बना देती हैं।

स्पष्ट है, 2019 का मलयालम साहित्य उर्वर रहा है। समाज की समस्त धड़कनों को आत्मसात् करके विभिन्न विधाओं के माध्यम से मलयालम साहित्य का पल्लवन हो रहा है।

– 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु पो. ओ., त्रिवेंद्रम, केरल-695043

❑❑❑

15

मैथिली साहित्य

डॉ. संगीता कुमारी

मैथिली भारत के बिहार और झारखंड राज्य तथा नेपाल के तराई क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है। यह हिंद आर्य परिवार की सदस्य है। इसका प्रमुख स्रोत संस्कृत भाषा है, जिसके शब्द 'तत्सम' या 'तद्भव' रूप में मैथिली में प्रयुक्त होते हैं। मैथिली भारत में मुख्य रूप से दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, समस्तीपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज, शिवहर, भागलपुर, मधेपुरा, अररिया, सुपौल, वैशाली, सहरसा, रांची, बोकारो, जमशेदपुर, धनबाद और देवघर जिलों में बोली जाती है।

नेपाल के 8 जिलों धनुषा, सिरहा, सुनसरी, सरलाही, सप्तरी, मोहतरी, मोरंग और रौतहट में भी यह बोली जाती है। बांग्ला, असमिया और ओड़िया के साथ-साथ इसकी उत्पत्ति मागधी प्राकृत से हुई है। कुछ अंशों में ये बांग्ला और कुछ अंशों में हिंदी से मिलती-जुलती है।

भारत की साहित्य अकादमी द्वारा मैथिली को साहित्यिक भाषा का दर्जा पंडित नेहरू के समय 1965 से हासिल है। 22 दिसंबर 2003 को मैथिली भाषा को भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मैथिली भाषा को 8वीं अनुसूची में सम्मिलित करने की घोषणा सुपौल जिला के निर्मली में की थी। 2007 में नेपाल के अंतरिम संविधान में इसे एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्थान दिया गया है। भारत के झारखंड राज्य में इसे द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्राप्त है।

मैथिली को पहले 'मिथिलाक्षर' तथा 'कैथी लिपि' में लिखा जाता था, जो बांग्ला और असमिया लिपियों से मिलती थी। परंतु कालांतर में देवनागरी का प्रयोग होने लगा। मिथिलाक्षर को 'तिरहुता' या 'वैदेही लिपि' के नाम से भी जाना जाता है। यह असमिया, बांग्ला व ओड़िया लिपियों की जननी है। ओड़िया लिपि बाद में द्रविड़ भाषाओं के संपर्क के कारण परिवर्तित हुई।

मैथिली का प्रथम प्रमाण रामायण में मिलता है। यह त्रेता युग में मिथिला नरेश राजा जनक की राज्यभाषा थी। इस प्रकार यह इतिहास की प्राचीनतम भाषाओं में से एक मानी जाती है। प्राचीन मैथिली के विकास का शुरुआती दौर प्राकृत और अपभ्रंश के विकास से जोड़ा जाता है। लगभग 700 ई. के आसपास इसमें रचनाएँ की जाने लगी। विद्यापति मैथिली के आदि कवि तथा सर्वाधिक ज्ञाता कवि हैं। विद्यापति ने मैथिली के अतिरिक्त संस्कृत तथा अवहट्ट में भी रचनाएँ लिखीं। ये वह दो प्रमुख भाषाएँ हैं, जहाँ से मैथिली का विकास हुआ। भारत की लगभग 5.6 प्रतिशत आबादी (लगभग 7-8 करोड़) लोग मैथिली को मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं और

इसके प्रयोगकर्ता भारत और नेपाल के विभिन्न हिस्सों सहित विश्व के कई देशों में फैले हैं। मैथिली विश्व की सर्वाधिक समृद्ध, शालीन और मिठास पूर्ण भाषाओं में से एक मानी जाती है। मैथिली भारत में एक राजभाषा के रूप में सम्मानित है। मैथिली की अपनी लिपि है, जो एक समृद्ध भाषा की प्रथम पहचान है। अभी 15-20 रेडियो स्टेशन ऐसे हैं, जिसमें मैथिली भाषा में कार्यक्रम प्रसारित किया जाता हैं। समाचार, नाटक, कला और अंतरवार्ता भी मैथिली में प्रसारित हो रहे है। दूरदर्शन में भी अब मैथिली में कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं।

मैथिली साहित्य का अपना समृद्ध इतिहास रहा है और चौदहवीं तथा पंद्रहवीं शताब्दी के कवि विद्यापति को मैथिली साहित्य में सबसे ऊँचा दर्जा प्राप्त है। विद्यापति के बाद के काल में गोविंद दास, चंदा झा, मनबोध, पंडित सीताराम झा, जीवनाथ झा (जीवन झा) प्रमुख साहित्यकार माने जाते हैं।

मैथिली भाषा तथा इसकी लिपि का संवर्धन और संरक्षण

मिथिलाक्षर या तिरहुत व्यापक संस्कृति वाली 'मिथिला' की लिपि है। बांग्ला, असमिया, नेबारी, ओड़िया और तिब्बती की लिपियाँ इसी परिवार का हिस्सा हैं। यह एक अत्यंत प्राचीन लिपि है और व्यापक उत्तर-पूर्वी भारत की लिपियों में से एक है। मिथिलाक्षार 10वीं शताब्दी तक अपने वर्तमान स्वरूप में आ गई थी। मिथिलाक्षरों के प्राचीनतम रूपों के प्रयोग का साक्ष्य 950 ई. के सहोदरा के शिलालेखों में मिलता है। इसके बाद चंपारण से देवघर तक संपूर्ण मिथिला में इस लिपि का प्रयोग किया गया।

14 फरवरी, 2019 को एक समिति ने मैथिली भाषा तथा इसकी लिपि के संवर्धन और संरक्षण विषय पर अपनी रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय को सौंपी। समिति द्वारा तैयार की गई इस रिपोर्ट में मैथिली भाषा के संवर्धन और संरक्षण हेतु कई सिफारिशें की गई हैं।

समिति में चार सदस्य शामिल थे- ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. रमण झा, कामेश्वर सह-दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभागाध्यक्ष डॉ. पं. शशिनाथ झा, ललित नारायण विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रो. रत्नेश्वर मिश्र तथा पटना स्थित महावीर मंदिर न्यास के प्रकाशन विभाग के पदाधिकारी पं. भवनाथ झा।

संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता

- पिछले 100 वर्षों के दौरान इस लिपि के प्रयोग में कमी आई है और इसके साथ ही हमारी संस्कृति का भी क्षय हो रहा है।
- चूँकि मैथिली भाषा की स्वयं की लिपि का प्रयोग नहीं किया जा रहा, इसलिए संवैधानिक दर्जा मिलने के बावजूद भी इसे समग्र रूप से विकसित करने की आवश्यकता है।
- इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मैथिली भाषा और उसकी लिपियों के संवर्धन और संरक्षण पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए वर्ष 2018 में इस समिति का गठन किया था।

सिफारिशों पर तत्काल कार्रवाई का फैसला

मंत्रालय द्वारा रिपोर्ट की जाँच किए जाने के बाद समिति की सिफारिशों में से कुछ पर तत्काल कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया -

1. मिथिलाक्षर के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए दरभंगा के ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय या कामेश्वर सह-दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में से किसी एक परिसर में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना की जाएगी।

2. मिथिलाक्षर के उपयोग को आसान बनाने के लिए इस लिपि को भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास संस्थान द्वारा जल्द-से-जल्द कंप्यूटर की भाषा (यूनिकोड) में परिवर्तित करने का काम पूरा किया जाएगा।

3. मिथिलाक्षर लिपि को सीखने के लिए श्रव्य-दृश्य/ऑडियो-विजुअल तकनीक का विकास किया जाएगा।

अखिल भारतीय मिथिला संघ भारत की अग्रणी मैथिली साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक संस्था है। पदाधिकारी एवं मिथिला के मूर्धन्य विद्वान उपस्थित होकर संस्था को गौरवान्वित करते रहते हैं। 2019 में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष

जेपी नड्डा समेत अनेक विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में विश्व मैथिल सम्मेलन 2020 का आयोजन 28-29 मार्च को आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

2019 में 'मैथिली भाषा में आदरसूचक शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' विषय पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पी. एच. डी. छात्र एवं छात्रा क्रमशः शिशिर कुमार एवं श्वेतांगी कुमारी द्वारा शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। हिंदी भाषा के अनुरूप मैथिली का भी शब्द क्रम कर्ता, कर्म, क्रिया है तथा मैथिली को रूपसाधकीय समृद्ध भाषा माना जाता है। मैथिली भाषा को लिंगनिरपेक्ष भाषा माना जाता है तथा इसके क्रिया पद को भी व्यापक माना जाता है। मैथिली भाषा में आदरसूचक शब्दों का स्थान महत्वपूर्ण है तथा अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिकतम भी है।

मैथिली भाषा में पाँच स्तर पर आदरसूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है:-

आदर	एक वचन	बहुवचन
उच्चतम आदर	ई	ई सब
उच्च आदर	अपने	अपने सब
मध्य आदर	अहाँ	अहाँ सब
निम्न आदर	तों	तों सब
निम्नतम आदर	तों	तों सब

परंतु मैथिली भाषा में आदर के कारण क्रिया में जटिलता पैदा होती है- इसमें मध्यम पुरुष का निर्देश प्रतिष्ठा के क्रम में निम्नलिखित रूप में किया जाता है :-

जैसे- वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत्काल में क्रिया के काल के बोधक के अनुसार क्रिया में परिवर्तन नहीं होता है-

वर्तमानबोधक	भूतकालबोधक	भविष्यत्कालबोधक
छैथ(उच्चतमआदर)	कहलथि(उच्चतमआदर)	कहताह(उच्चतमआदर)
छथिन्ह(उच्चआदर)	कहलथिन्ह(उच्चआदर)	कहथुन्ह(उच्चआदर)
छथुन्ह(मध्य आदर)	कहलहुं(मध्यआदर)	कहतहु(मध्यआदर)
छहक(निम्नआदर)	कहलह(निम्नआदर)	कहबह(निम्नआदर)
छै (निम्नतमआदर)	कहलकै(निम्नतमआदर)	कहतह(निम्नतमआदर)

हिंदी की वर्तमान क्रिया पद 'है, हैं, हो' का अनुवाद मैथिली में प्रसंगानुसार इक्कीस रूप में होता है-

क्रिया+आदरसूचक	धातु + प्रत्यय (रूपसाधक)
छी(निम्नतमआदर)	छ + इ
छिऔक	छ + इ औक
छिअहु	छ + इ अहु
छिऐक	छ + इ ऐक
छिएन्ह	छ + इ एन्ह
छँ ;(निम्नआदर)	छ + इ
छहिक(निम्नतमआदर)	छ + हिक
छहुन्ह	छ + हुन्ह
छह (निम्नआदर)	छ + ह
छहक(निम्नआदर)	छ + हक
छहुन्ह	छ +हुन्ह
अछि(निम्नतमआदर)	अछ + इ

छैक	छ + ऐक
छैन्ह	छ + ऐन्ह
छथि / छैथ(उच्चतम आदर)	छ + इथ
छथन्हु (मध्य आदर)	छ + थुन्ह
छथिन्ह (उच्च आदर)	छ + थिन्ह
छथिन्ह (उच्च आदर)	छ + थिइन्हे

इसी क्रम में भूतकाल क्रिया था, थे, थी का अनुवाद मैथिली में प्रसंगानुसार इक्कीस रूपों में होता है–

क्रिया + आदरसूचक	भूतकाल बोधक	धातु + प्रत्यय (रूपसाधक)
छली / छलहुँ (निम्न आदर)	(ल)	छल + ई / छल + हउंह
छलिऔक (निम्न आदर)	(ल)	छल + इऔक
छलिअहु	(ल)	छल + इअहु
छलिऐक	(ल)	छल + इऐक
छलिऐन्ह	(ल)	छल + इऐन्ह
छहँ / छलहिं	(ल)	छल + एं / छल + हिं
छलहिक	(ल)	छल + इहक
छलहुन्ह	(ल)	छल + हुन्ह
छलह (निम्न आदर)	(ल)	छल + ह
छलहक(निम्न आदर)	(ल)	छल + हक
छलहुन्ह	(ल)	छल + हुन्ह
छल (निम्न आदर)	(ल)	छ + ल
छलौक (निम्नतम आदर)	(ल)	छल + औक
छलहु	(ल)	छल + हु
छलैक (निम्नतम आदर)	(ल)	छल + ऐक
छलैन्ह	(ल)	छल + ऐन्ह
छलथि / छलाह (उच्चतम आदर)	(ल)	छल + थि / छल + आह
छलथुन्ह / छलथुक (मध्यआदर)	(ल)	छल + थुन्ह / छल + थुक
छलथुन्ह (मध्यआदर)	(ल)	छल + थुन्ह
छलथिन्ह / छलथिक (उच्चआदर)	(ल)	छल + थिन्ह / छल + थिक
छलथिन्ह (उच्चआदर)	(ल)	छल + थिन्ह

इसी क्रम में भविष्यत्काल क्रिया गा, गे, गी का अनुवाद मैथिली में प्रसंगानुसार इक्कीस रूपों में होता है–

क्रिया + आदरसूचक	भविष्य कालबोधक	धातु + प्रत्यय (रूपसाधक)
कहब(निम्नआदर)	(ब)	कह + ब
कहबौक(निम्नआदर)	(ब)	कह + बऔक
कहबहु	(ब)	कह + बहु
कहबैक	(ब)	कह + बैक
कहबैन्ह	(ब)	कह + बैन्ह
कहबें	(ब)	कह + बें
कहबहिक	(ब)	कह + बहिक
कहबहुन्ह	(ब)	कह + बहुन्ह
कहबह(निम्नआदर)	(ब)	कह + बह
कहबहक(निम्नआदर)	(ब)	कह + बहक
कहबहुन्ह	(ब)	कह + बहुन्ह
कहत(निम्नआदर)	(ब)	कह + त
कहतौक(निम्नतमआदर)	(ब)	कह + तौक
कहतहु	(ब)	कह + तहु
कहतैक(निम्नतमआदर)	(ब)	कह + तैक
कहतैन्ह	(ब)	कह + तैन्ह
कहताह(उच्चतमआदर)	(ब)	कह + ताह
कहथुन्ह(मध्य आदर)	(ब)	कह + थुन्ह
कहथिन्ह(उच्चआदर)	(ब)	कह + थिन्ह

मैथिली भाषा में आदरसूचक शब्दों की अधिकता तथा क्रियापद की जटिलता एवं विस्तृत होने के कारण किसी भी प्रकार के भाषाई टूल्स के निर्माण में काफी समस्याएँ पैदा होती हैं।

निष्कर्ष :

उक्त के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि मैथिली भाषा में आदर सूचक शब्दों का प्रयोग अधिकतम होता है परंतु इसमें काफी जटिलता तथा अपवाद भी है जैसे –

मैथिली में भविष्यत् काल में ब का प्रयोग होता है परंतु इसके कुछ अपवाद स्वरूप भी है –

कहत (निम्न आदर)	कहतैन्ह
कहतौह (निम्नतम आदर)	कहताह (उच्चतम आदर)
कहतहु (मध्य आदर / उच्च आदर)	कहथुन्ह
कहतैक (निम्नतम आदर)	कहथिन्ह (मध्य आदर / उच्च आदर

2019 में ही मधेपुरा में मैथिली कविता में प्रतिरोधी स्वर एवं पत्रिका विमर्श पर विचार गोष्ठी हुई। कला कुटीर परिसर में बिहार प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा आयोजित रचना विचार गोष्ठी में मैथिली के प्रसिद्ध साहित्यकार व संपादक केदार कानन ने कहा कि समकालीन मैथिली कविता में प्रतिरोधी स्वर हम लोग सर्वप्रथम यात्री जी अर्थात नागार्जुन की कविताओं में देखते हैं। उन्होंने बाल विवाह, विधवा विवाह एवं राज सत्ता के विरुद्ध जमकर लिखा जो तत्कालीन समाज के तथाकथित वर्ग के लिए नासूर बन गए। समाज में असमानता व अन्याय के विरुद्ध वे लगातार लिखते रहे। कांचीनाथ झा किरण ने भी मैथिल आडंबर के विरुद्ध लिखा। उसके बाद तो यह काव्य धारा इतनी प्रबल हो गई कि राजकमल चौधरी, रामकृष्ण झा किसुन, धीरेंद्र, सोमदेव, कीर्तिनारायन मिश्र, जीवकांत, धूमकेतु आदि मैथिली कविता में प्रतिरोधी स्वर को नए आयामों से लैस किया।

उन्होंने आगे कहा कि समकालीन मैथिली कविता अपनी धार व वैश्विक सोच के साथ अगली पंक्ति में खड़ी है। आज के मैथिली कवियों में सुकांत सोम, रामलोचन ठाकुर, महाप्रकाश, उदयनारायण सिंह नचिकेता, अग्निपुष्प, कुणाल विभूति आनंद आदि ने भी प्रतिरोध के स्वर को मजबूत किया है।

गोष्ठी में उपस्थित प्रसिद्ध कथाकार डॉ. सुभाष चंद्र यादव ने कहा कि मैथिली साहित्य में कविता के अलावा कहानियों एवं उपन्यासों में भी प्रतिरोध के स्वर मुख्य स्वर बनकर आए हैं, आज के किसी भी साहित्य में प्रतिरोध के स्वर को नई दृष्टि से हम देख सकते हैं।

गोष्ठी में उपस्थित कवि मणिभूषण वर्मा ने कहा कि आधुनिक मैथिली कविता में नारायण जी, केदार कानन, तारानंदन वियोगी, डॉ. कुमार पवन, ज्योत्सना चंद्रम, सुस्मिता पाठक, विभा रानी आदि ने भी प्रतिरोधी स्वर को वृहत्तर बनाया।

वरिष्ठ साहित्यकार हरिशंकर श्रीवास्तव शलभ ने कहा कि मैथिली कविता को किसी भी अन्य भाषा में लिखी जा रही कविताओं के समानांतर रखकर देखा जा सकता है, आज के कवियों ने अपने व्यापक फलक के दायरे में प्रतिरोध को सबसे ऊपर रखा है।

इस गोष्ठी में लघु पत्रिका पर संकट एवं दिल्ली से प्रकाशित व विनीत उत्पल द्वारा संपादित 'तीरभुक्ति' पर भी विमर्श किया गया, रचनाकारों ने एक स्वर में कहा कि यह पत्रिका निखरकर मैथिली पत्रकारिता के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बनाएगी।

9 नवंबर, 2019 को राजधानी दिल्ली के साहित्य अकादमी सभागार में तीन दिवसीय 'मैथिली लिटरेचर फेस्टिवल' का शानदार शुभारंभ हुआ।

मैथिली लेखक संघ की ओर से आयोजित इस महोत्सव में पड़ोसी देश नेपाल सहित देशभर से मैथिली प्रेमी व साहित्यकार भाग लेने के लिए उपस्थित हुए। ये दूसरी बार है जब राजधानी में फेस्टिवल का आयोजन किया गया है। निस्संदेह ऐसे कार्यक्रम से समाज, संस्कृति, कला, साहित्य आदि के प्रति नई पीढ़ी जागरूक होती है।

प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज को समर्पित इस फेस्टिवल के उद्घाटन से पहले भारद्वाज सहित दिवंगत मैथिली अभियानी किशोरीकांत मिश्र, प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, हरेकृष्ण झा, विवेकानंद ठाकुर, नरेश मोहन झा, डॉ. मुनीश्वर झा आदि मनीषियों के अवदान की चर्चा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके बाद कार्यक्रम की शुरुआत की गई तथा संचालन किसलय कृष्ण ने किया।

उद्घाटन सत्र से पहले संजीव कश्यप ने नागार्जुन लिखित मिथिला गीत गाकर लोगों को भू-भाषा के प्रति अनुराग से उद्वेलित कर दिया। स्वागत वक्तव्य देते हुए मैथिली लेखक संघ के महासचिव और उत्सव संयोजक विनोद कुमार झा ने सबका स्वागत करते हुए प्रवासी दिल्लीवासी मैथिली अनुरागियों को सहयोग- समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र झा, अशोक, वीरेंद्र मल्लिक, शेफालिका वर्मा, बुद्धिनाथ मिश्र, महेंद्र मलंगिया, मंत्रेश्वर झा, नीरज पाठक आदि गण्यमान्य लोगों ने अपने विचार रखे। इस सत्र के अंत में विभिन्न लेखकों की नौ पुस्तकों का विमोचन किया गया। सत्र का संचालन डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने किया।

अगले सत्र में गुंजनश्री के संचालन में कवि नारायणजी की कविताओं पर विद्यानंद झा, तारानंद वियोगी और कल्पना झा ने विमर्श प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कवि नारायणजी ने अपनी पाँच कविताओं का पाठ किया। इस सत्र के अंत में मैथिली पत्रिका 'पकठोस' का विमोचन किया गया।

भोजनावकाश के बाद फेस्टिवल के 'धीया-पूता' सत्र में मैथिली बाल साहित्य पर मैथिल प्रशांत के संचालन में प्रवीण भारद्वाज, कुमकुम झा, वीरेंद्र झा और अक्षय आनंद सन्नी ने विमर्श प्रस्तुत किया। बाद के सत्र में कथाकार अशोक की कहानियों पर विभूति आनंद, श्रीधरम, पन्ना झा, हीरेंद्र कुमार झा ने शुभेंदु शेखर के संचालन में विमर्श सत्र आयोजित किया। 'आउ खिस्सा सुनू' सत्र में सोमदेव की कहानी का पन्ना झा ने पाठ किया, वहीं राजीव मिश्र ने ध्वनि संयोजन किया। अंतिम दो सत्रों में बुद्धिनाथ मिश्र की अध्यक्षता में कवियों ने गीत-ग़ज़ल प्रस्तुत किया तो वहीं बुद्धिनाथ झा की अध्यक्षता में हास्य कवियों ने शमां बाँध दिया। विभिन्न विषयों पर समालोचना सत्र

सहित सोशल मीडिया, रंगमंच और सिनेमा पर भी विमर्श हुआ।

मैथिली लोक संस्कृति मंच की ओर से 2019 में लहेरियासराय स्थित पचाढी महंत आश्रम में आयोजित दो दिवसीय मिथिला महोत्सव के प्रथम दिन कार्यक्रम आयोजित किया गया। पंडित राम नारायण झा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. रामनाथ झा आदि ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के दौरान मिथिला भूषण सम्मान से सात विभूतियों को सम्मानित किया गया। इसमें डॉ. टुनटुन झा अचल, डॉ. श्रीशंकर झा, डॉ. देव नारायण यादव, काजी मोहम्मद हक, देवेंद्र मिश्र, राकेश कुमार सिंह को ताम्र-पत्र एवं चादर-पाग से सम्मानित किया गया। संस्था के महासचिव प्रो. उदय शंकर मिश्र ने कहा कि मिथिला- मैथिली के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील मैथिली लोक संस्कृति मंच उत्तरोत्तर अपने प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है। इस संस्था का उद्देश्य सिर्फ और सिर्फ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन नहीं बल्कि मिथिला- मैथिली की पौराणिक गरिमा को सकारात्मक दिशा प्रदान करना है। आगत-अतिथियों का स्वागत आलोक कुमार झा टिकू ने किया। रामकुमार झा एवं प्रदीप झा के संयुक्त संचालन में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. ममता ठाकुर ने गोस्वामी गीत गाया। विद्यापति गीत अनुपमा मिश्रा एवं लोकगीत सुषमा झा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान हृदय नारायण चौधरी विरचित कथा सुरसरि पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के दौरान साहित्यकार विनोद कुमार, अमर कुमार मिश्र, दारा प्रसाद सिंह, राघव रमन झा, रमेश झा, राघव राज आदि मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन बासुकीनाथ झा एवं चंद्रशेखर झा बूढ़ा भाई ने किया।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली और पटना चेतना समिति द्वारा मैथिली के कवि, कथाकार और अनुवादक उपेंद्रनाथ झा व्यास की जन्मशती पर 12 और 13 नवंबर, 2019 को विद्यापति भवन में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मधुबनी में जन्मे व्यास को उनके मैथिली उपन्यास 'दू पत्र' के लिए 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

मिथिला क्षेत्र की समृद्ध भाषा मैथिली बिहार को हर वर्ष सर्वोच्च साहित्य अकादमी पुरस्कार से गौरवान्वित करती रही है। 2019 में मैथिली भाषा में साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय वन सेवा में कार्यरत सुपौल जिला के कोशी के कछार में बसे गाँव बसावनपट्टी निवासी प्रसिद्ध साहित्यकार अरविंद मनीष को मिला। अरविंद मनीष का चयन उनके मैथिली कविता संग्रह 'जिनगीक ओरिआओन करैत' के लिए किया गया। बचपन से ही लेखन के शौकीन और साहित्य में रुचि रखने वाले अरविंद मनीष यात्री पुरस्कार, कीर्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान और त्रिवेणी साहित्य सम्मान से अलंकृत हो चुके हैं।

मैथिली सृजन 2002 में 'मिझायल सूर्यक नगर' (मैथिली कविता संग्रह) के लिए, यात्री पुरस्कार 2013 में 'निछच्छ बताह भेल' (मैथिली कविता संग्रह) के लिए, कीर्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान 2015 में 'निछच्छ बताह भेल' (मैथिली कविता संग्रह) के लिए, त्रिवेणी साहित्य सम्मान 2016 में झारखंड में मैथिली के लगातार सृजन के लिए प्राप्त हुआ।

मैथिली के वरिष्ठ कवि, अनुवादक एवं चिंतक हरेकृष्ण झा का चयन वर्ष 2019 के लिए मैथिली भाषा व साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार प्रबोध साहित्य सम्मान के लिए किया गया। प्रतिवर्ष प्रबोध साहित्य सम्मान मैथिली आंदोलन के अग्रणी नेता, विशिष्ट विद्वान तथा संस्कृत, फारसी, पाली, मैथिली और हिंदी के मूर्धन्य भाषाशास्त्री एवं कोलकाता विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष स्व. डॉ. प्रबोध नारायण सिंह के सम्मान में स्वस्ति फाउंडेशन द्वारा वर्ष 2004 से ही प्रदान किया जा रहा है।

वर्ष 2019 में साहित्यकार पंडित गोविंद झा को मैथिली भाषा का सर्वोच्च पुरस्कार विश्वंभर मैथिली साहित्य सम्मान मिला। विश्वंभर फॉउंडेशन की ओर से वर्ष 2018 से विश्वंभर मैथिली साहित्य सम्मान दिया जा रहा है। यह सम्मान स्वर्गीय विश्वंभर झा की स्मृति में विश्वंभर फाउंडेशन ट्रस्ट, रांची के द्वारा

दिया जाता है। मैथिली के प्रचार-प्रसार में विश्वंभर फॉउंडेशन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह सम्मान प्रथम बार मिथिला की साहित्यकार श्रीमती लिली रे को मिला था।

2019 में साहित्य अकादमी द्वारा मैथिली भाषा में युवा पुरस्कार तथा बाल साहित्य पुरस्कार क्रमश: अमित पाठक कृत कविता पुस्तक 'राग-उपराग' को और ऋषि वशिष्ठ कृत कथा-संग्रह 'ई फूलक गुलदस्ता' को प्रदान किए गए।

राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, दिल्ली की ओर से मुंगेर की साहित्यकार डॉ. मृदुला झा को वर्ष 2019 का पंडित विश्वंभर शर्मा कौशिक स्मृति सम्मान दिया गया। कहानी विधा के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। डॉ. मृदुला झा देश के साथ ही विदेशों में भी हिंदी सम्मेलन में भाग ले चुकी हैं। विदेशों में भी उन्हें हिंदी की सेवा के लिए सम्मानित किया गया है। कहानी, ग़ज़ल एवं कविता की उनकी दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

वर्ष 2019 में मैथिली में अनेक कविताएँ भी लिखी गईं, यथा- राम चंद्र मिश्र मधुकर कृत 'हम भारत देशक नारी छी', 'इतिहास भूगोल हेराय रहल', योग जीवन एवं हृद्य शंभुनाथ मिश्रा 'आसी' कृत मैथिली देशभक्ति कविता- 'जय-जय-जय हे हिंदुस्तान'।

'हम भारत देशक नारी छी' का कुछ अंश उद्धृत है:

हम दुर्गा शक्ति स्वरूपा छी, विष्णुक घर लक्ष्मी रूपा छी,
ब्रह्मा घर में ब्रह्माणी छी, गिरिजा शिव घर मे अनूपा छी,
हम बेटी बहिन बनलि जग के, हम मानव के महतारी छी।
हम भारत देशक नारी छी।

मैथिली देशभक्ति कविता 'जय-जय-जय हे हिंदुस्तान' की पंक्तियाँ :-

आब ने कत्तहु दू प्रधान अछि
रहल ने कत्तहु अलग विधान,
धुजा तिरंगा सभठां फहरय
आइ भारतक नवल विहान।।
भाल गर्व सं उच्च हमर अछि
चकमक केशर सभक लिलार।
अर्ध भाग जे भिन्न पड़ल अछि
हृदय लगाब'क करी जोगाड़।।

एक देश केर वासी हम सब
हमरा मध्य किए छल आरि।
दृढइच्छा कें संमुख अबितहि
स्वार्थ नीति सब गेलै हारि।।

मैथिली कविता : योग जीवन

योग नहि थिक कला कौशल,
योग अनुपम धर्म थिक,
योग थिक विज्ञान धन,
तन मन सुधारक कर्म थिक।

साहित्य, कला, संगीत तथा संस्कृति के सबसे बड़े महाकुंभ 'साहित्य आजतक' कार्यक्रम का आयोजन 1 नवंबर से 3 नवंबर, 2019 को दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में किया गया। इस मंच पर देश भर के नामचीन दिग्गज सम्मिलित हुए। गायिका मैथिली ठाकुर ने सूफी, बॉलीवुड और भोजपुरी गानों से कार्यक्रम में समा बाँध दिया। मैथिली ठाकुर की उम्र अभी बहुत कम है, पर उनकी सुरीली आवाज का जादू समूचे हिंदी जगत पर छाया है।

18 मार्च, 2019 को त्रिवेणी सभागार, दिल्ली में जट-जटिन मैथिली नाटक प्रस्तुत किया गया। अखिल भारतीय मिथिला संघ की मिथिलानी समूह की ओर से नवंबर, 2019 में मंडी हाउस में भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक लोक जन उत्सव सामा-चकेवा का आयोजन धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में बसी मैथिल महिलाएँ सामा-चकेवा बनाकर लाई थीं। इस पर्व के माध्यम से मिथिला में पशु-पक्षियों और वन्य जीवों के संरक्षण का भी संदेश दिया गया। कार्यक्रम की संयोजिका कल्पना झा ने बताया कि दिल्ली में काफी संख्या में ऐसी महिलाएँ हैं, जो अपने-अपने मोहल्लों में लंबे

समय से यह पर्व आयोजित करती रही हैं। यह कार्यक्रम समूह में होता है, इसलिए उन लोगों ने पिछले वर्ष की तरह इस बार भी मंडी हाउस में इसे करने का फैसला किया। इसके लिए वह अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा की आभारी हैं। विजय चंद्र झा ने भी खुशी प्रकट करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति का संरक्षण करना सभी का कर्तव्य है। इस तरह के आयोजन से अपनी परंपरा को जीवित रखकर उसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। इससे भावी पीढ़ियाँ भी उससे प्रेरित होती रहेंगी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रश्मिता झा, विभा रानी, रूबी मिश्रा, मृदुला प्रधान ने भी अपने विचार रखे।

2019 में जापान में बुलेट ट्रेन की बिहार की विश्व विख्यात मिथिला पेंटिंग्स से सजाने पर विचार किया गया। जापान की सरकार ने इस काम के लिए भारत के रेल मंत्रालय से कलाकारों की माँग की। भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल ने संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस को मिथिला पेंटिंग्स से सजाया था, जिसकी सराहना संयुक्त राष्ट्र ने भी की थी। वैसे जापानी लोग मिथिला पेंटिंग्स से पहले से ही परिचित हैं क्योंकि वहाँ जापान-भारत के सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने वाली संस्था ने मिथिला म्यूजियम भी बनाया है।

– असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत एवं वेदाध्ययन विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

❑❑❑

16

संताली साहित्य

डॉ. रेखा

राष्ट्रभाषा हिंदी ने समस्त भारतीय भाषाओं की अग्रजा के रूप में अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए उनकी सेवा में अपने अनेक यशस्वी एवं कर्मठ सपूतों को लगाया है। इतना ही नहीं उसने इस देश की अनेक विकसित तथा अर्द्धविकसित भाषाओं एवं मूल्यों के विकास को भी अनदेखा नहीं रहने दिया है ऐसी ही एक भाषा है- संथाली। संथाली मुंडा भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। यह असम, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बिहार, त्रिपुरा, बंगाल में बोली जाती है। संथाली,हो और मुंडारी भाषाएँ ऑस्ट्रो एशियाई भाषा परिवार में मुंडा शाखा में आती हैं। संथाल, भारत, बांग्लादेश, नेपाल और भूटान में लगभग 76 लाख लोगों द्वारा बोली जाती है। उनकी अपनी पुरानी लिपि का नाम ओलचिकी है अंग्रेजी काल में संथाली रोमन में लिखी जाती थी। यह अत्यधिक विकसित साहित्यिक और पूर्व वैदिक काल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है और यह वर्तमान में एस्ट्रो एशियाई समूहों के एस्ट्रो एशियाई परिवार की मुंडा शाखा के अंतर्गत आती है। परंपरागत संथाली भाषा, साहित्य का विकास और प्रचार 1870-75 के बाद से कुछ विदेशी साहित्य प्रेमियों द्वारा शुरू किया गया। आगे जी. आर्चर 1940 के दशक की शुरूआत में संथाल कविता का उल्लेखनीय संग्रह किया। उन्होंने जनजातीय कविता के विशेष संदर्भ के साथ भारत की साहित्यिक परंपरा के प्रति महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उसके बाद बहुत सारे नाटक, लोककथा, लोकगीत, संथाली शब्दकोश और पारंपरिक साहित्य प्रकाशन किया गया। संथाली भारत की अधिकारिक भाषा है। इसे 22 दिसंबर 2003 को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया। भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) द्वारा दिल्ली में 8 सितंबर 2009 को सार्वजनिक डोमेन में संथाली सॉफ्टवेयर टूल्स जारी किया गया। संथाली भाषा साहित्य के डिजिटलाइजेशन एवं विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा कार्य हो रहा है, जिनमें मुख्य रूप से ओलचिकी सॉफ्टवेयर विकास परियोजनाएँ शामिल हैं।

इस जनजातीय भाषा का श्रेय जिस व्यक्ति को जाता है वह हैं डॉक्टर डोमन साहू "समीर" यह मूलत: हिदी भाषी थे। परंतु हिंदी के विशाल क्षेत्र को छोड़कर उन्होंने इस जनजातीय भाषा एवं साहित्य को अपनी बहुमूल्य सेवाएँ अर्पित कर दी। इस काम में वह पिछले 5 दशकों से भी अधिक समय से लगे हुए थे। संथाली भाषा और साहित्य के क्षेत्र में डॉक्टर समीर के योगदान पर हम जब भी दृष्टि डालते हैं और मूल्यांकन करने बैठते हैं तो सहज ही हमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की याद आ जाती है।

इन दोनों महानुभावों में तुलना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य द्विवेदी ने जिस प्रकार और जितना सरस्वती के माध्यम से हिंदी के लिए किया, उससे स्पष्ट होता है कि उससे कुछ अधिक ही डॉक्टर समीर ने 'होड सोम्वाद' नामक संथाली साप्ताहिक पत्रिका के माध्यम से संथाली के लिए किया है। इनमें साहित्यिक प्रतिभा कूट-कूट कर भरी पड़ी थी। यदि वे चाहते तो सहज ही हिंदी साहित्य आकाश में अपनी पताका फहराकर अक्षय यश के भागी बन सकते थे। परंतु उन्हें इस उपेक्षित और विस्तृत संथाली भाषा की सेवा करना ही भाया और इन्होंने अपने जीवन के सारे अनमोल वर्ष इसी काम में खर्च कर दिए। इस प्रकार यह स्वतः ही त्यागमूर्ति महर्षि दधीचि के समकक्ष जा बैठे। उन्होंने सेवा, त्याग, लगन और स्पृहा का एक ऐसा उदाहरण हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया जो आज के युग में एकदम दुर्लभ तो नहीं विरल अवश्य है।

हिंदी साहित्य के एकांत प्रिय मनीषी जी का जन्म झारखंड राज्य में वर्तमान गोंडा जिले के पंदाहा गाँव में एक सामान्य कृषक परिवार में 30 जून 1924 को हुआ। 1942 में पटना विश्वविद्यालय में मैट्रिकुलेशन की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद, भागलपुर टी.एन.बी. कॉलेज में पढ़ने लगे परंतु इस आंदोलन में भाग लेने के कारण उनकी उच्च शिक्षा अधूरी ही रह गई। पारिवारिक विकट परिस्थितियों के चलते 1944 में उन्हें एक छोटी सी नौकरी करनी पड़ी। बिहार के तत्कालीन ख्यातिलब्ध नेता विनोदानंद झा की प्रेरणा और सलाह से ये जनवरी 1947 से 'होड़ सोम्वाद' साप्ताहिक पत्रिका के संपादक बन गए इस प्रकार इनके सबल एवं सुदृढ़ हाथों में संथाली भाषा एवं साहित्य को सजाने संवारने का भार आ गया था। जिसे उन्होंने बड़ी लगन और ईमानदारी से निभाया। इस समय की सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि संथाली भाषा अपनी शैशवावस्था में थी। ईसाई मिशनरी वाले धर्म प्रचार करने के लिए इस भाषा का उपयोग करते थे और इसे रोमन लिपि में लिखते थे। उस समय तक संथाली का कोई भी साहित्य उपलब्ध नहीं था। ईसाई धर्म संबंधी साहित्य ही तब संथाली में छपा करता था और वह भी बड़े ही सीमित रूप से। समीर जी ने 'होड़ सोम्वाद' का कार्यभार संभालने के बाद संथाली की कतिपय विशेष ध्वनियों के निए देवनागरी लिपि में कुछ नए ध्वनिचिह्न जोड़े इन ध्वनि चिह्नों के कारण संथाली भाषा में छपाई का काम भी बड़ा कठिन था। इसे सहज और सरल बनाने के लिए समीर जी ने कोलकाता की एक टाइप फाउंट्री से इन विशेष ध्वनि चिह्नों के टाइप बनवाएँ और इन्हें लाकर स्थानीय प्रशासन को दिया। तब कहीं जाकर संथाली में छपाई का काम सुचारु रूप से होने लगा।

समस्या इतनी ही नहीं थी, संथाल जनजाति में शिक्षा का प्रसार नाम मात्र का ही हो पाया था। जनजाति के लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव था जो साधारण नहीं थे वे साहित्य में रुचि रखते यह सोचना ही अतिशयोक्ति होगा। गैर संथाल भी इस भाषा में तब कोई दिलचस्पी नहीं रखते थे। जो थोड़ी-बहुत रचनाएँ और संवाद 'होड़ सोम्वाद' पत्रिका में प्रकाशनार्थ आती वह भी प्रायः सब की सब अनगढ़ ही होती थीं। समीर जी अकेले उन सारी रचनाओं को संशोधित और परिवर्तित करके अपनी पत्रिका में प्रकाशित किया करते। इसी क्रम में ऐसे अनेक अवसर आए जब इन्हें पूरी की पूरी रचना को नए सिरे से लिखना पड़ता था। इस तरह संथाली भाषा और साहित्य के विकास की यात्रा शुरू हुई। समीर जी ने तब सहस्रबाहु बनकर तन-मन-धन से इसके विकास के मार्ग को प्रशस्त करने लगे। संथालों ने जब अपनी भाषा में अपने परिचितों की रचनाएँ पढ़ी तो उनका उत्साह बढ़ने लगा। तब वे भी समीर जी जैसे कर्मठ, तपस्वी के मार्ग निर्देशन में धीरे-धीरे साहित्य में प्रवृत्त होने लगे। धीरे-धीरे ही सही संथाली साहित्य का भंडार समृद्ध होने लगा। समीर जी ने भगीरथ की तरह संथाली भाषा और साहित्य की गंगा को संथाली भाषा के बाकी लोगों के घर-घर तक पहुँचाया। आज के संथाली साहित्य के रूप को देखकर हम तो उनके अतीत का अनुमान ही नहीं कर सकते। आज संथाली प्राथमिक विद्यालयों से लेकर बिहार और झारखंड के कतिपय विश्व विद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाई जा रही है इतना ही नहीं समस्त भारतीय भाषाओं के बीच

संथाली ने अपनी एक खास पहचान बना ली है। भारत के ही नहीं अपितु विश्व के अनेक विद्वान संथाली भाषा और साहित्य में काफी रुचि दिखाने लगे हैं। यह सब समीर जी जैसे कर्मठ व्यक्ति के अथक परिश्रम का चमत्कार है। जीवनयापन के लिए कार्यरत रहते हुए भी समीर जी ने अध्ययन और ज्ञानार्जन की अदम्य पिपासा के फलस्वरूप एक स्वतंत्र छात्र के रूप में धीरे-धीरे आइ. ए., बीए ऑनर्स, बी. एल और एम.ए. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। इन्होंने संथाली भाषा और साहित्य पर महत्वपूर्ण शोध प्रबंध प्रस्तुत करके डी लिट् की उपाधि भी प्राप्त की। विशारद की उपाधि तो वे काफी पहले ही प्राप्त कर चुके थे। कतिपय संस्थाओं ने इनकी इस अनोखी सेवा के लिए मानद उपाधियों से भी सम्मानित किया। इनकी प्रकाशित पुस्तकों में 'हिंदी में संथाली भाषा' (2 भाग), 'संथाली प्रकाशिका', 'राष्ट्रपिता तथा संथाली में दिसामबाबा', 'गिदरा को रासकाक् पुथी', 'सेदाय गाते', 'अखीर आरोम', 'अकिल मारसाल' (3 भाग), 'बुल मुंडा', 'महात्मा गांधी', 'गांधी बाबा','आकिल हार','पारसी नाई','संथाली साहित्य', 'माताल सेताक' आदि हैं। इनके अलावा इन्होंने हिंदी-संथाली शब्दकोश सहित अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया था। इनकी अनेक पुस्तकें अर्थ अभाव के कारण अभी भी अप्रकाशित हैं। जिनमें हिंदी व संथाली भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, संथाली व्याकरण, संथाली-पारसी (संथाली भाषा विज्ञान) तथा स्वतंत्रता के लिए संथाली की सशक्त क्रांति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है समाज की आंतरिक और बाह्य प्रकृति के लिए साहित्य हमेशा कल्पवृक्ष होता है। संथाली साहित्य आदिवासी, गैर आदिवासी साहित्य की अध्ययन परंपरा को विभाजित नहीं करती है क्योंकि उनका जीवन-दर्शन किसी भी विभाजन के पक्ष में नहीं है। उनके समाज में समानता और समरूपता है। इसलिए उनका साहित्य भी विभाजित नहीं है। वे अपने साहित्य को ऑरेचर अर्थात् ऑरल लिटरेचर कहते हैं। उनका कहना है कि आज का लिखित साहित्य भी उनकी वाचिक यानी पुरखा साहित्य की परंपरा का ही साहित्य है।

संथाली भाषा में समाज की पूरी झलक देखने को मिलती है। संथाली साहित्य के हिंदी अनुवाद से हाल ही में यह भी ज्ञात हुआ है कि संथाल विश्व की सबसे सभ्य जाति है। इसकी संस्कृति विश्व की सभी जातियों से उच्च है। इतिहासकार मनु हेंब्रम के अनुसार, "बहुत से मौखिक एवं लिखित इतिहास के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि संथाल जाति ही सेंधव सभ्यता के लोग हैं। इनके लोकगीत इस बात को स्पष्ट करने में सक्षम हैं।" संथाली लोक गीत मुख्यत: तरुणियों के हिस्से में आए हैं। तो लोक कथाएँ प्रधानत: तरुणों के हिस्से में आई हैं। इस प्रकार दोनों के हिस्से में किस्से और कहानी दोनों आए हैं। साधारणत: कहा जा सकता है कि मधुर आवाज के चलते तरुणियों को संगीत और बाहरी व्यावहारिकता के कारण तरुणों को किस्से अधिक भाए हों। लेकिन संस्कृति और सभ्यता ऐसा कोई भेद नहीं करती। तरुणों की टोलियाँ जाड़े के दिनो में खलियानों में बनी मड़मड़्यों में या अन्य स्थानों में जमा हुआ करती हैं। जहाँ तरह-तरह के किस्से कहते-सुनते उनका समय बीता करता है। परिवार की बड़ी-बुढ़ियाँ भी जब तब बाल-बच्चों को तरह-तरह की कहानियाँ सुनाकर उनका मनोरजन किया करती हैं। संथाली लोक-कथाएँ मुख्यत: लोगों के मनोरंजन का साधन हुआ करती हैं। परंतु प्रकारांतर से वे तरह-तरह के उपदेशों और जानकारियों के माध्यम से हुआ करती हैं। फलत: चमत्कार और मनोरंजन की बातें तो उनमें रहती हैं साथ ही प्रेम, दया, करुणा, भय, साहस, परोपकार, धूर्तता तथा मूर्खता आदि के तत्व भी रहा करते हैं। ये कथाएँ प्राचीन समय से ही जीवन का मूल आधार रही हैं। जो हमारी आने वाली पीढ़ियों को किसी न किसी रूप में शिक्षा प्रदान करती रही हैं। इसलिए बुजुर्गों के सानिध्य में रहना आवश्यक है। जहाँ मनोरंजन का कोई और साधन ना हो या संचार साधन की व्यवस्था उपयुक्त ना हो वहाँ उनके सम्मुख मनोरंजन का साधन किंवदंती ही रही है। इन शिक्षाओं के माध्यम से ही उनमें नवीन ऊर्जा के साथ-साथ आचार-विचार और व्यवहार किया जाता है संथाली लोक कथाओं के विषय की प्रधानता है। जीवन और जगत संबंधी बातों या घटनाओं से संबंधित

होते हैं। संक्षेप में इन्हें निम्नांकित श्रेणियों में रखा जा सकता है-

सृष्टि कथाएँ- जिनमें पृथ्वी, मनुष्य, सूर्य, चंद्र, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि की उत्पत्ति, स्थिति आदि से संबंधित कथाएँ हैं।

संथाल लोगों के विभिन्न गोत्रों, उपगोत्रों, पर्व-त्यौहारों, रीति-रिवाजों आदि से संबंधित कथाएँ हैं।

देवी-देवता, भूत-प्रेत, ओझा-डाइन आदि से संबंधित कथा।

राजा-रानी, पति-पत्नि, भाई-बहन, सास-बहू आदि से संबंधित कथाएँ।

बाघ, सिंह, भालू, सियार, मुर्गी, चील, गिद्ध आदि से संबंधित कथाएँ।

मित्रता और शत्रुता संबंधी कथाएँ।

अन्याय कथाएँ।

संथाली लोक कथाओं के राजा-रानी आदि सामान्यतः समाज के संपन्न और तथाकथित बड़े लोगों के प्रतीक हुआ करते हैं। जैसे अन्य कथाओं में होते हैं। सृष्टि-कथाओं में 'ठाकुर जिउ' और 'ठाकरान' की चर्चाएँ हैं। जिन्हें सृष्टिकर्ता माना गया है। जबकि चांदो अर्थात् सूर्य और चंद्रमा को पति-पत्नी माना गया है, तारे जिनके बच्चे हैं। उन दोनों को भी देवता का दर्जा प्राप्त है। इन कथाओं में बहुत सारे प्रश्नो को उठाया गया है। जैसे- पृथ्वी कैसे बनी? मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई? किस गोत्र के लिए किस पशु या किस पक्षी का माँस क्यों वर्जित है? कौन सा पशु या पक्षी इस अवस्था या स्वभाव को कैसे प्राप्त हुआ? आदि के संकेत इन कथाओं में अपने-अपने ढंग से मिलते हैं। ज्ञातव्य है कि संथाल लोगों के कुल 12 गोत्र (पारिश) तथा प्रत्येक गोत्र के अनेक उपगोत्र (खूंट) हैं। जिनके कुलदेवता भिन्न-भिन्न हैं तथा उन्हें बलि भी भिन्न-भिन्न जीवधारियों की ही दी जाती है यही प्रथा भी है जो हमें आदिकाल की इन स्थितियों और उनसे संबंधित कथाओं को जानने के लिए प्रेरित करते हैं। तो हमें यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न मनुष्यों और पशु-पक्षियों के संवाद या संकेत अलग-अलग किए गए हैं और किस प्रकार से व्यवस्था और अलग स्वभाव को प्राप्त होते हैं। यदि किसी को पशु योनि प्राप्त हुई है तो वह किस अपराध के कारण हुई है। अगर कोई मनुष्य जन्म में ही विकलांग पैदा होता है तो वह किस अपराध के कारण होता है यह सब उनके देवताओं के द्वारा बताया जाता है। जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है। वे उन्हें इन शिक्षाओं के माध्यम से किसी भी बुराई से दूर रखने का प्रयास करते हैं।

एक कथा में तो कहा गया है कि आसमान पहले बहुत नीचे था। परंतु एक बार जब एक बुढ़िया ओखल में धान कूट रही थी। तब उसका मूसल आसमान से टकराया करता था। इस बात से बुढ़िया बहुत परेशान हो गई और इसी से उस बुढ़िया ने आसमान पर जोर से अपना मूसल दे मारा, जिससे आसमान ऊपर उठ गया।

पशुओं की कथाओ में सियार को मनुष्य समाज की तरह बड़ा धूर्त प्रदर्शित किया गया है। बाघ, भालू को सियार का मामा तथा सियार को उन दोनों का भांजा कहा गया है। सियार एक चालबाज, चाटुकार और विचारक के रूप में संथाली लोक कथाओं में चित्रित किया गया है। एक अन्य पशु कथा में सियार को मुर्गी का भाई बताया गया है। उस पर भी मौका पाकर अपना हाथ साफ कर डालने से बाज नहीं आता है। किंतु कभी-कभी वह दूसरों के फेरों में भी पड़ जाया करता है। वह किसी को भी संकट में डाल सकता है, तो किसी को उससे उबार भी सकता है। इस तरह से उसे एक ओर जहाँ अच्छा बताया गया है वहीं दूसरी ओर उसे बुरा भी बताया गया है। उसके व्यक्तित्व के दोनों पहलुओं को प्रदर्शित किया गया है। जहाँ एक ओर वे धूर्त हैं वहीं दूसरी ओर वह पालनकर्ता के रूप में भी सामने आता है।

बाघ को संथाली लोक कथाओं में एक पुरुष का प्रतीक माना जाता हैं वह इस ताक में रहा करता है कि किसी प्रकार किसी कृषक कन्या को अपनाया जाए परंतु बहुत बार-बार उसके मंसूबों पर पानी फिर जाया करता है। उसकी बुरी गति हो जाती है और उसे मुँह की खानी पड़ जाती है। वहीं कथा में सहायता के लिए सहनायक और मित्र के रूप में भालू होता है। कभी-कभी दोनों मित्रों में भी विवाद

की स्थिति उत्पन्न हो जाने पर उन दोनों के बीच उठे विवादों का फैसला अनेक बार सियार के ही द्वारा किया जाता है। तो किसी और को बुद्धि के रूप में माना जाता है। बाघ को शक्ति के रूप में बली माना जाता है। यह प्राचीन समय की ही परंपरा रही है कि राजा स्वयं के लिए योग्य कन्या का चयन कर सकता है। क्योंकि संतुलन के लिए हृदय और बुद्धि का समन्वय आवश्यक है।

संथाली लोक कथाएँ युगों से लोगों के कंठों में विराजित रही हैं। इसलिए भी कि संथाली भाषा आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले तक अलिखित ही थी। यह भाषा पहले पहल 1850 ईसवी के आसपास एक विदेशी मिशनरी द्वारा लिपिबद्ध की गई थी। उसी तरह संथाली लोक कथाओं के संग्रह और उनके अंग्रेजी अनुवाद पहले विदेशी मिशनरियाँ द्वारा ही किए गए हैं श्री बोसवास नामक व्यक्ति ने सन् 1909 में 'फोक लोर ऑफ संथाल परगनास' के नाम से कुछ संथाली लोक कथाओं का अंग्रेजी में अनुवाद लंदन से तथा श्री पी.ओ. बॉन्डिग नामक एक अन्य मिशनरी ने सन् 1929 में 'संथाल फोक टेल्स' के नाम से ओस्लो (नॉर्वे) में प्रकाशित करवाए थे। सन् 1944 में श्री एस.सी. मुर्मू नामक एक संथाल लेखक द्वारा इसका अनुवाद किया गया। 38 छोटी-छोटी लोक कथाओं का संग्रह संथाली भाषा में दुमका से प्रकाशित हुआ है। इसमें अन्याय, जनजीवन, व्यवस्था और समाज में प्रचलित लोक कथाएँ भी सम्मिलित हैं। सन् 1982 में श्री भागवत मुर्मू 'ठाकुर' द्वारा संगृहीत कुल 12 लोककथाओं की एक पुस्तक कोहिमा से प्रकाशित हुई है।

'चंदा बोंगा' सथाली भाषा के विख्यात साहित्यकार अर्जुन चरण हेंब्रम द्वारा रचित कविता संग्रह है। जिसके लिए उन्हें 2013 में संथाली भाषा के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। जोबा मुर्मू संथाली की चर्चित लेखिका हैं। उनको लघु कहानी संग्रह 'अलोन बहा', 'अलंकार पुष्प' के लिए साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। जोबा मुर्मू बाल विकास प्राथमिक स्कूल करनडीह मे शिक्षिका हैं वह काननू में स्नातक के साथ-साथ संथाली और हिंदी भाषा साहित्य में स्नातकोत्तर भी हैं। वह ऑल इंडिया संथाली राइटर्स एसोसिएशन की सदस्य के साथ जाहेयान कमेटी की कार्यकारी सदस्य भी हैं। उन्होंने कई संथाली पुस्तकें लिखी। जिसमें 'बहा उमुल 2009', 'बेवरा 2010', ओलोन बहा 2014', 'प्रेमचंद की सरस कहानियो का संथाली अनुवाद', 'रविंद्रनाथ टैगोर रचित गीतांजलि का संथाली अनुवाद 2015' शामिल है। करनडीह की निवासी जोबा समाजसेवी व साहित्यकार सी.आर. मांझी की पुत्री व साहित्यकार पितांबर हासंदा की पत्नी हैं। पति-पत्नी दोनों संथाली साहित्य मोगला, सोरेन आदित्य कुमार मांडी, गंगाधर हासंदा, अर्जुन चरण हेंब्रम, जमादार किस्कू, रवि लाल टुडू, गोविंद चंद्र मांझी, जदुमणि बेसरा आदि महान् साहित्यकार अपनी अनवरत साधना से संथाली को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत की अनमोल धरोहर हैं- जनजातियाँ। मनुष्य जाति में जिन विभिन्न विशेषताओं के होने की बात की जाती है वह इनमें प्रचुर मात्रा में होती हैं। फिर चाहे वह ईमानदारी, मानवता, सभ्यता, साहित्य, समभाव, आदरभाव, जिजीविषा, संतोष, प्रकृति संरक्षण, अतीत संरक्षण सम्मिलित हैं। ये सब जो लेखन के अभाव में प्रकट रूप में सामने नहीं आ पाता था। परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो इसकी नितांत आवश्यकता भी है, जिससे इन्हें समान धारा में आसानी से जोड़ा जा सके। संवाद से सब संभव हो जाता है।

हमें खुशी इस बात की है कि इस मार्ग पर हम निरंतर प्रयासरत होने के साथ प्रगति पथ पर हैं। साहित्य की यह अविरल धारा यूं ही प्रवाहित होती रहेगी।

– मकान नं.-2340, हाउसिंग बोर्ड सेक्टर-3, रोहतक, हरियाणा-124001

❑❑❑

17

संस्कृत साहित्य

डॉ. अजय कुमार मिश्र

सन् 2019 में प्रकाशित भाषा साहित्य का आकलन करते हुए हम पाते हैं कि सुनिश्चयात्मक ग्रंथों की अनुपलब्धता के आधार पर यह कहना कतई उचित नहीं होगा कि अमूक किताब मूल ग्रंथ स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ या संस्कृत भाषा से जुड़ी विविध विधाओं की पुस्तक ही उम्दा है। लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि सन् 2019 में भी कई संस्कृत कवितावली गुच्छों के साथ-साथ इस वाङ्मय के व्याकरण, पुराण, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, शब्दकोश शास्त्र तथा इतिहासपरक ग्रंथों के साथ-साथ वैसे भी महत्वपूर्ण स्वतंत्र ग्रंथ प्रकाश में आए हैं जो संस्कृत के समकालीन रचनाधर्मिता के नाना आयामों के साथ उनकी अभिनव विधाओं को समेट कर शेल्डॉन पॉलोक जैसे आज के पाश्चात्य विद्वानों के उस तथाकथित सिद्धांतों को करारा जवाब देता है जिनका मानना है कि आज की संस्कृत भाषा 'डेड लैंग्वेज' है। अतः जाने-माने वैश्विक नक़्क़ाद तथा बहुपठित संस्कृत कवि-नाटककार-उपन्यासकार ने अपने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित ग्रंथमाला में आधुनिक संस्कृत से जुड़ी किताब में इस तथ्य की पुष्टि की है कि संस्कृत साहित्य के आधुनिक युग में सर्वाधिक रचनाएँ लिखी गई हैं।

इस साल शृंगार और भक्ति के नामचीन संस्कृत गीतकार आचार्य जनार्दन प्रसाद पांडेय 'मणि' के मनोरम तथा दिल को छू लेने वाले संस्कृत तरानों के स्तबक 'सौरमेयी'[1] एक उम्दा संस्करण माना जा सकता है जो रचनावली उनके होनहार तथा बहुविध प्रतिभा संपन्न सुपुत्र आदरणीय धर्मेंद जी को समर्पित है और प्रस्तुत संग्रह में उनकी यादों में सृजित कविता 'बैरवरी याता'!! पुत्र शोकमय पिता के दर्दों की आहट बार-बार मन और मस्तिष्क को जहाँ एक ओर कचोटती है वहीं दूसरी तरफ बार-बार कुरेद कर चित्तब्रण को और हरा कर देती है। यह सच है कि एक माता-पिता जो अपने पुत्र को खोता है समय उसकी भरपाई कतई नहीं कर सकता है क्योंकि पुत्र रत्न के होने पर ही उसके माता-पिता के होने की अनिवार्यता की सच्चाई है। अन्यथा, चारों तरफ अंधेरा हो जाता है- कथं विदधानि लोकेऽस्मिन स्वकीयं जीवनं शेषम्। गतिः सर्वङ्करी याता तनय!ते स्वर्गयात्रायाम्।।5।।

प्रस्तुतः समालोच्य संस्कृत गीत गुच्छ जाने-माने वैश्विक संस्कृत विद्वान आचार्य अमिराज राजेंद्र मिश्र के नांदीवाक तथा संस्कृत के लब्ध प्रतिष्ठ रचनाकार आचार्य हरिदत्त शर्मा के प्राग्वाक से मंडित पैंतीस गीतों का ताना-बाना युगीन धर्मों पर कटाक्ष के साथ-साथ उन गीतों की व्यंजना में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा शुष्कता की घुटन में दम तोड़ते रिश्तों को भी आकर्षित किया गया है। अतः इन संस्कृत

गीतों की सिर्फ पारंपरिक शृंगारिक अभिव्यंजना ही नहीं है अपितु इन पर भारतीय आधिदेंविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक-दार्शनिकता का लेप संयोग और वियोग के भाव तथा कला पक्षों को कालजयी बना देता है। अत: संस्कृत गीतकार-कवि-मणि आचार्य जर्नाधन पांडेय ने अपने गीतों के जरिए संस्कृत कविता के पिटी-पिटाई आयामों को भी बहुविध तथा समकालीनता से ओजस्वी बना दिया है। अत: ऐसी रचनाएँ संस्कृत कविता पर लगी दकियानूसी आक्षेप का सर्वथा खंडन करता हुआ संस्कृत गीत की गेयता तथा इसके भाव प्रवणता का एक जीवंत इंद्रधनुषी जामा पहनता है।

यद्यपि प्रखर कवि 'मणि' ने अपनी इस मौलिक कृति का उम्दा हिंदी तर्जुमा भी स्वयं प्रस्तुत किया है जिसमें तत्सम शब्दों का बाहुल्य इन अनुवादों को कभी-कभी छायावादी रूझान की तस्दीक करता है और इक्के-दुक्के जगहों पर इन अनूदित हिंदी का शब्द गाँठ थोड़ा अधिक जकड़ा सा दिखता है। नजीर के तौर पर - 'समुज्जृम्भण' (पृ.23), 'सौहित्य' (पृ.33), 'दुरभि संधि' (पृ. 57), 'वैष्णवी मति' (पृ.87), 'मरंदशून्य' (पृ.91), 'पृच्छाओं' (पृ.93), 'क्वणन' (पृ.97) आदि शब्दों को भी पढ़ा जा सकता है। इसी प्रकार 'समक्षं दृशो:'।। तराने में 'एवाम्बुकाले' शब्द गुच्छ चयन में 'अम्बु' की जगह' 'वर्षाकाले' शब्द को भी पचाया जा सकता था। लेकिन अधिक सच तो यह है कि कवि मणि शास्त्र कवि के साथ-साथ लोक कवि के मणिकांचन संयोग है। अत: उनके शब्दों के क्लासिकल एप्रोच उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हो पाते हैं और किसी गीति/गीतिका की सार्थकता तभी होती है जब उसकी भावभूमि लोक जीवन से जुड़ी हो क्योंकि गीत का आधार उसका जनसमूह ही तो होता है। यही सबब है कि कवि मणि की कविता में आचार्य राधा-वल्लभ त्रिपाठी की जनवादी छाया की झलक (चतुस्त्र, 2005, साहित्य अकादमी, दिल्ली) उनकी कविता में सहज ही पढ़ी जा सकती है- लिख कवे! राष्ट्रियं किञ्चित्! नि:सहायानां त्यथानां क्रन्दनविकृतं किञ्चित। लिखें कवे! राष्ट्रियं किञ्चित्।। (पृ.68)। इसी कविता का गीतकार मणि द्वारा अनूदित हिंदी पद्यानुवाद भी गौरतलब है- "जनता वादतंत्र में नष्ट हो रही है। वह मनुजता नहीं दिख रही है। संवेदनाओं की शून्यता है। सब तरफ से संकीर्ण जड़ता है। दु:सह दुर्भिक्षराग में मनुष्य कुछ देख नहीं पा रहा है। हे कवि! कुछ राष्ट्रीय लिखो।।1।।" (पृ. 69)। कवि द्वारा राष्ट्रीयता के फलक को जनमानस की समग्र चेतना से जोड़ा जाना जहाँ सबका साथ सबका विकास तथा अंत्योदय की भावना को संपुष्ट करता है वहीं राष्ट्रीयता के उदात्त तथा सार्वभौमिक आयाम का भी उद्घाटन करता है। अभिराज राजेंद्र मिश्र की कविता - 'कस्मै खलु विषा। विधेम', जैसी सत्ताप्रतिरोधी नाराज़गी की भी गूंज-चर्चित गीतकार मणि के तरानों में गुंजायमान है- *शुष्के मानससरसि व्याप्रेडनन्त-प्रदूषणे लोके। बकवत् त्वदुदाचरणं हंस। नु चर्चाया महाविषय:* ।।10।। (अन्योक्तिमाला!! पृ. 89)। इसी तराने में कवि कालिदास के सौंदर्यचिंतन की नैसर्गिकता तथा पंडित राज जगन्नाथ की अन्योक्तियों की छवियाँ भी निहारती दिखती हैं- जब दुष्यंत शकुंतला के प्राकृतिक सौंदर्य पर लट्टू होकर इस बात का एलान करता है कि शहर के पार्क में लगे सुंदर-सुंदर संरक्षित पुष्प को जंगल में पुष्पित तथा पल्लवित फूल रूपी शकुंतला ने सभी शहरी उद्यानों के फूलों को मात दे दिया-

'दूरीकृता: खलु गुणै रूद्यानलता वनलताभि:' (1/15 अभिज्ञानशाकुंतलम)। कुछ ऐसी ही छाया निम्न गीत में भी पढ़ी जा सकती है- *कियत्काल-मुपमानं भविताऽसि त्वमधर कपोल- नयनानाम्?* कृत्रिममिह सौंदर्यं कमल! यदीत्थं प्रशस्यते हंत।।14।। (पृ. 90)।

इस प्रकार यह अनुभव किया जा सकता है कि आज के संस्कृत गीत जिस पर उर्दू ग़ज़ल का रुझान देखा जा सकता है। लेकिन ये संस्कृत ग़ज़ल अपनी भाषिक संस्कार की मौलिकता को हमेशा महफूज बनाते हुए अपने मौलिक पहचान यात्रा में निरंतर प्रवाहमान है और प्रस्तुत संग्रह में गीतनुमा कुछ संस्कृत ग़ज़ल निश्चित रूप से भदृ 'मथुरानाथ शास्त्री, आचार्य जगन्नाथ पाठक, आचार्य अभिराज राजेंद्र मिश्र तथा आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की परंपरा के बढ़ते कदम माने जा सकते हैं। लेखन और गायन का एक साथ ही किसी कवि की स्वाभाविक प्रतिभा हो

तो उस विधा में उस कवि/गीतकार/ शायर द्वारा चार चाँद लगा दिया जाना उसके लिए चुटकी का खेल होता है। आचार्य-कवि मणि इस सहकारी प्रतिभा के धनी गीतकार हैं। गौरतलब है कि 'मणि' जैसे कवियों ने कालिदास के सौंदर्य शास्त्र के लालित्य योजना के बिंब को कैसे एक समसामयिक मेटाफोर के अंदाज में पाठक समाज तक अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से एक नित्य-नूतन काव्य के क्षितिज पर इंद्रधनुष का ताना-बाना बुनते हैं। यही कारण है कि पंडित राज जगन्नाथ की अन्योक्ति जिसमें वे लिखते हैं कि आम के बगान में मंजर तथा इनके फलों के समाप्त होते ही कोयल भी अपना मुख उस जगह से मोड़ लेती है। उसी बिंब का मेटाफोर के अभिनव अंदाज गीतकार 'मणि' के संस्कृत गीतों में ध्वनित होता है- *भ्रमर-स्त्वामालिङ्गति सुतरां त्वथ्येव स्निह्यत प्रीतः। त्वां पिजहात्यापि पङ्कज! विगतमरदं क्व हा प्रीतिः?? (वही. 16)*

कवि ने इस अन्योक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहा है कि आज देश के सारे कुओं (अर्थात् जल) में स्वार्थ तथा चालाकी का भाँग ही घुली है जैसे कमल में जब जवानी की जान और सुरभि रहती है तो किस कदर भौंरा उस पर मंडराता रहता है। लेकिन जैसे ही वह कमल बेजान होता है, वह भ्रमर उस पर तनिक भी घास नहीं डालता है। अतः उन गीतों में उपमा या रूपक का गुंफन कोई घिसी-पिटी परिपाटी की तरह नहीं किया गया है। अतः रचना में ताज़गी स्वतः स्फूरित होती दिखती है जो कवि की अपनी मौलिकता है। इन कविताओं में सौंदर्य की कौमार्य भावना, आज की ज़मीनी हकीकत को करुणा तथा भक्ति के अंदाज में जिसके अंदर सामाजिक विद्रोह, श्रमिक वर्ग तथा युवा मन के सपनों पर पानी फिरने की कथा व्यथा गीत को प्रभावी जनमुखी तथा क्लासिकल के रूप में निखारता दिखता है। कवि को इस बात को लेकर बादल से काफी नाराज़गी है कि किसानों के पके गेहूँ के फलों (अर्थात् अरमानों पर) पर पानी की बौछार से उत्पात क्यों मचा रहा है-

किमिदं निरङ्कुशत्वं जलधरा किं वा त्वदीय उत्पातः। त्वं वर्षसि यदिदानीं पक्वे गोधूमशस्येऽप॥18॥ (वही. पृ. 96)

जबकि धान्य क्षेत्र में घोर सुखाड़ आने से कृषक समाज तुम्हारे आने का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। कवि वैसे छल छद्मी लोगों से दूरभाष के माध्यम से बात करने में थोड़ी भी अपनी इच्छा जाहिर नहीं करना चाहता जैसे जब किसी चूहे को। कोई हल्दी की गाँठ (टुकड़ा) मिल जाती है तो वह अपने आप को तीसमार खाँ पनसारी समझने लगता है। जैसा कि लगता है इस दर्द का तार उनके स्वर्गीय आदरणीय पुत्र धर्मेंद्र जी के रूग्नावस्था के समय अपने स्थांनांतरण को लेकर टीस की आहट की ओर संकेत भी देता है- *यस्य वाक्षुच्छुरी वा विषान्ता सुधा/तं मृषा दूरभाषैः कथं प्रार्थयै॥3॥ (यद्यसौ रावणारिः॥, पृ. 22)* गीतकार 'मणि' ने अपने इस मेटाफोर के माध्यम से यह भी साफ करना चाहा है कि लंपट तथा हृदयहीन प्रशासक जब आमने-सामने ठीक से बात नहीं करते तो वे दूरभाष पर क्या दुख-दर्द सुनेंगे क्योंकि दूरभाष पर दुख सुनने के लिए बहुत बड़ा दिल होना चाहिए अर्थात् यह आई.टी ने तकनीकी दृष्टि से दुनिया को मुट्ठी में बाँध दिया है। वहीं उस मुट्ठी के अंदर भावनात्मक सवेदना का सर्वथा अभाव है।

हिंदुस्तानी अदबी दुनिया में हाइकू संस्कृत कविता लेखन का उपजीव्य लेखनी आचार्य हर्षदेव माधव की मानी जा सकती है और मुझे वह समय भी याद है कि आज के संस्कृत कवि टोली जो आचार्य माधव के राग से राग मिलाने से कतराते थे उनमें से ही बहुत कवि इनके पीछे चल पड़े हैं। जापानी कविता हाइकू सप्तदशाक्षरी होती है जिसे गुजराती साहित्य की कविता में 'सत्तरी', 'त्रिदलम्', 'सत्तराक्षरी' के नामों से जाना जाता है जिसे क्रमशः फ्रांस तथा अमरीका में 'हाइकाउ' तथा 'हाइकु' के नाम से जाना जाता है। इस विधा को लेकर इस साल डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह देव की रचना 'सत्ताविलासः'[2] (हाइकु-काव्यम्) सत्ता और संस्कृति के विविध पहलुओं का खुलासा करती है। लेकिन ध्यान देने की बात है- इन 101 संचयन में कुछ तीखी दिखती है। लेकिन कुछ जगह स्वतः आगे बढ़ती नहीं दिखती है। लेकिन जो पैनीदार है वह अपनी अभिव्यक्ति के धार के साथ गागर में सागर की तरह कम से कम शब्दों में अपनी पूरी बातों को

कह जाना चाहती है जिसका बिंब आम जीवन के आस-पास को टच करती नज़र आती है। अत: संस्कृत कविता ऐसी शैली से लोकधर्मी 'अंदाज़ में झलकती है- *सल्वाटे ननु/ धावति कंकतिका संताविलासे।।8।।* गंजे (टकला) और कंघी के माध्यम से अतृप्त इच्छा की गंभीरता को कितने मज़ाकिया अंदाज में कवि लिखता है। उसी प्रकार स्त्री विमर्श मधुरांस्मितं/स्थगयति विवादं/सत्ताविलासे।10।। भी पठनीय है। उसी प्रकार दरबारी संस्कृति सेवया सेवा/ सेव्यते राजकुले न तु मेधया।।81।। षड्यंत्र बनाने का बिंब भङे मृणाले/ मधुपोऽपि बध्यते/ लोले संलिले।। 58।। एकेडमिक परफॉरमेस इंडीकेटर की विडंबना भी कफी कटाक्षपूर्ण है।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी तथा आचार्य सीताराम शास्त्री के क्रमश: प्रस्तावना तथा शुभाशंसनम से अलंकृत तथा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित डॉ. तन्मय कुमार भट्टाचार्य द्वारा संपादित महत्वपूर्ण परियोजना कार्य 'वङ्गीयानां संस्कृत-काव्यामृतम'[3] इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा सकती है कि संपादक डॉ. भट्टाचार्य ने पश्चिम बंगाल में उन तमाम प्रकाशित तथा अप्रकाशित रचनाओं को एक जगह पाठक समाज के लिए बड़े ही प्रामाणिक ढंग से प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है। इस सबब से शोध के एक नए आयाम का रास्ता स्वत: प्रशस्त होता मालूम पड़ता है। साथ ही साथ इस संग्रह ग्रंथ में इन रचनाओं के रचनाकारों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण भी संस्कृत के ऐतिहासिक पन्नों को सहेजने में काम का हो सकता है। ध्यान देने की बात है- सामान्यत: पारंपरिक रचनाकार अपने विषय में कुछ लिखने तथा कहने में संकोच करते हैं। यह बात अलग है कि ग्लोबलाइजेशन तथा अपने प्रोडक्ट पैकेजिंग की बहती हवा में अपने इस मूल्यबोध परक फलसफा की धज्जियाँ उड़ाने में कोई कोताही करते ज़रा भी नहीं दिखते हैं। ग्रंथ में बङ्गीय संस्कृतपण्डितैर्विरचितानां कात्याना सूची, वङ्गीयकोशकाव्यकाराणां विवरणम्, बङ्गीयसंस्कृत गद्यकात्यानां विवरणम, वङ्गीयदूतकाव्यामि तथा वङ्गीयविदुषीनां काव्यपरिचय: विषयों के अंतर्गत जो तत् संबंधित रचना, रचनाकार तथा छपने के वर्षों का जिक्र किया है वह साहित्यिक ग्राफ वस्तुत: इस ग्रंथ में वर्णित/संचयित रचनागुच्छ की चाभी या कुंजिका मानी जा सकती है।

आमतौर पर यह देखा गया है कि संस्कृत में उम्दा रचनाएँ तो छपती हैं। लेकिन उनका ऐतिहासिक/समीक्षात्मक सरोकार जाने अनजाने हाशिए पर ही धकेल दिया जाता रहा हैं। अत: यह श्रमसाध्य संग्रह कार्य काफी महत्व का माना जा सकता है। साथ ही साथ संपादक ने उपरोक्त अंतिम शीर्षकांतर्गत पश्चिम बंगाल के रचनाकत्रियों को जो प्रकाश में लाने का प्रयास किया है उसे भी दुनिया की आधी आबादी के साथ काफी न्याय संगत पहल है क्योंकि संस्कृत साहित्य में महिला रचनाकारों को प्रकाश में ठीक ढंग से न ला सकने को लेकर वैश्विक अदबी दुनिया से विरोध के स्वर सुनने को मिलते रहे हैं। प्रस्तुत संचयन में अन्य रचनाओं के अलावा श्री अरविंद के भवानी-भारती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर के 'भूगोल खगोल वर्णनम्', विवेकानंद स्वामी की 'शिवस्तोत्रम्, अम्बास्तोत्रम् गुरुवंदना', वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य के विविध सोनेट-गुच्छ सहृदय पाठक समाज को इकट्ठे पढ़ने के लिए हाथ लग जाती हैं और अमूमन सामान्य पाठक यह नहीं जानता कि इन सिद्ध पुरुषों ने संस्कृत में भी अनेक उम्दा रचनाएँ लिखी हैं। साथ ही साथ पुराण तथा महाभारत को उपजीव्य बनाकर जहाँ बहुत ही अच्छ छोटे-मझोले रचना स्तबक इस ग्रंथ के माध्यम से प्रकाश में आ सके हैं। साथ ही साथ जहाँ सर्वमङ्गलोदयम् (श्लिष्टकाव्यम्) जिसकी रचना 'पञ्चानंद तर्करत्न रचित नौ संगों' वाली रचना के अतिरिक्त लोक साहित्य के थर्मामीटर के रूप में उद्भट सागर में पश्चिम बंगाल के नाना कवियों द्वारा विविध विषयों की रचना यथा 'जयंतीदेव्या: दारिद्रयनिंदा' भी काफी गौरतलब मानी जा सकती है- शीतवस्त्रं प्रार्थयमानस्य भिक्षुकस्य सूक्तिरियम्/ रात्रौ जातु दिवा भानु: कृशानु: सन्ध्ययोर्दयो:। इत्थं शीतं मया नीतं जानुभानुकृशानुभि:।। रमणी तथा मच्छर प्रसंग भी संस्कृत कविता के बिंब को लोकजन्म के रूप में गढ़ती मालूम पड़ती है-

कायिद् विदुषी रमणी रात्रौ मशकपीडनमसदृमाना
प्रोषिमं भर्त्तारमुद्दिश्य श्लोकमिमं लिखित्वा

प्रेषयामास–जितधूमसमूहाय जितव्यजनवाधवे।
मशकाय मया कायः सायमारम्य दीयते।। (वही)।

अतः संस्कृत भाषा जितनी गंभीर है उतनी ही चुटीली तथा धारदार भी। आज की संस्कृत कविता भी प्राकृतिक सुषमा तथा उष्मा से ओत–प्रोत छायावादी कविता है जिसमें वासंतिक छटा पढ़ते ही बनती है जो शृंगार के आलंबन तथा उद्दीपन भावप्रवणता में चार चाँद लगाती है।

30 सिंतबर को अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस मनाया जाता है और सोशल मीडिया में अनुवाद के अर्थ कर्म को लेकर एक अनुवाद बड़ा ही वायरल हुआ था जिसमें एक प्रसंग है कि अपनी आँख आने की बीमारी को लेकर वह रुग्नग्रस्त और बीमारी के लिए 'आई कमिंग' के रूप में आंग्ल तर्जुमा करता है। अतः यह जरूरी है कि अनुवाद करते वक्त मक्खी पर मक्खी बैठाने की बात नहीं करनी चाहिए। साथ ही साथ अनुवाद को हमेशा उसके व्यक्तिगत संबंध के अर्थ में भी समझा जाना चाहिए क्योंकि हर भाषा की अपनी–अपनी शब्दावली तथा संस्कार होते हैं। पूरी दुनिया को भाषा तथा उसके साहित्य को अनुवाद के फ्लाइओवर के जरिए बड़ी आसानी से समझा–बूझा जा सकता है। भाषा अनुवाद को इस भाषिक प्रौद्योगिकी की दिशा में आचार्य नारायण दास का श्रमसाध्य प्रयोजना कार्य– 'संस्कृंतऽनूदितसाहित्यम्'[4] एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप माना जा सकता है जो भारतीय भाषा से संस्कृत में अनूदित रचनाओं का यथासाध्य समीक्षित संचयन है। यह तथ्य अलग है कि कुछ रचनाओं का परिचयात्मक विवरण मात्र को पढ़कर अपनी जिज्ञासा को शांत करना पड़ता है। लेकिन डॉ. दाश ने जिस खोजी नज़र से संस्कृत के भारतीय साहित्य के रिश्तों की छानबीन की है उससे इस बात की पुष्टि होती है कि संस्कृत भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य के माध्यम से अपनी ओजस्वी अनूदित रचनाधर्मिता के साथ नित्य नूतन तथा अभिनव अदबी अंदाज दिया है। वस्तुतः जो संस्कृत की भाषिक ऊर्जस्विता को ही पुख़्ता बनाता है। शेल्डन पॉलक जैसे विद्वान जिन्होंने यह भ्रम फैलाने का प्रयास किया है कि आज की संस्कृत भाषा डेड लैंग्वेज हो गई है जो अवधारणा नितांत रूप से आधारहीन है। इस शताब्दी के संभवतः सर्वाधिक चर्चित तथा विश्वविश्रूत विद्वान आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की महत्वपूर्ण अनुशंसा से प्रस्तावित है। आचार्य त्रिपाठी ने अपने प्रस्तावन की शुरुआत में अनूदित साहित्य के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– "आधुनिके काले तु संस्कृत भाषान्तरेण नैके मवीना अध्ययनविषयाः प्रवर्तिताः। तथादि, पाश्चात्यप्राच्याविद्यविद्भिः 'मेक्समूलर प्रभृतिभि' संस्कृत वेदांश्चाधीत्य तुलनात्मकं भाषा शास्त्रम तुलनात्मकं धर्मविज्ञानम तुलनात्मक पुराकथास्त्रं चेति नवीनाः विषयाः विकासं नीताः।" (प्रस्तावना, पृ. 01)। प्रस्तुत ग्रंथ– संस्कृतेऽनूदितनी काव्यानि, संस्कृतेऽनूदिताः कथा ग्रंथाः, संस्कृतेऽनूदिताः कथासङ्गहाः, संस्कृतेऽनूदितानी रूपकाणि, विविधग्रंथानां संस्कृतानुवादः तथा अनुदित साहित्ये पत्रिकाणां योगदानम् के अलावा प्रथम अध्याय के रूप में लेखक की भूमिका भी अनूदित साहित्य की एक अच्छी झाँकी प्रस्तुत करती है। इन सभी अध्यायों में संस्कृत की विधाओं की वैविध्यपूर्ण सामग्री पाठक को दिलचस्प तो लग ही सकती है। साथ ही साथ इसकी भी पुष्टि होती है कि संस्कृत अनुवाद अपनी रचनाधर्मिता के लेकर कितना पुष्कल तथा अभ्यदरणीय होकर ताज़गी से लबालब भरा पड़ा है। साथ ही साथ ग्रंथ के अंतिम अध्याय में अनूदित साहित्य की दुनिया में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका की चर्चा भी एक खोजी सामग्री मानी जा सकती है। यह तथ्य भी अलग है कि लेखक डॉ. दाश ने जिस प्रकार संभाषण संदेश का ग्राफिक टेबल प्रस्तुत किया है वैसी ही साफ झलकने वाली तालिका अन्य पत्र–पत्रिकाओं के लिए बनाया जाना जरूरी जान पड़ता है क्योंकि संस्कृत भाषा की रचनाएँ उसकी आत्मा है तो उनकी पत्र–पत्रिकाएँ धड़कन के रूप में माइट्रोकॉन्ड्रिया। अतः इन विधाओं को महफ़ूज़ रखा जाना भी अत्यावश्यक है क्योंकि ग्लोबलाइजेशन के नाम पर साहित्य की दुनिया में खतरे के अनेक बादल भी मँडरा रहे हैं। प्रस्तुत ग्रंथ ने संस्कृत भाषा तथा भारतीय साहित्य के रिश्तों को गुमनाम होने से सर्वथा बचाया है।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा अनूदित पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार कपिल सिब्बल की अंग्रेजी कविता, 'अहम ईक्षे' का भी जिक्र किया है भावों

को संस्कृत के संस्कारों के साथ भाव संवाद सही मायने में कोई सधा कवि ही कर सकता है।

क्लाइमेट जस्टिस से जुड़ी कविता भी पठनीय है- *इयमदुता विस्मयावहा व्यवस्थ नैसर्गिकी/ प्रकृतेः प्रकृष्टैर्विधा- नैर्विहिता। नेयं सार्वग्रासं नाशं नया/ निर्मज्जमानवनानां/।*

इसी प्रकार मुंशी प्रेमचंद की 'कुत्ते की कहानी' का कुकुरस्य कथा, (नारायण ढाथ) शरतचंद्र के उपन्यास, 'देवदास' (मोतिलाल चट्टोपाध्याय) कन्नड उपन्यास धर्मश्री का जर्नादन हेगड़े द्वारा संस्कृत अनुवाद, मुंशी प्रेमचंद के 'निर्मला' नामक हिंदी उपन्यास का रामदेव द्वारा संस्कृत अनुवाद, बाल साहित्य पर आधृत मराठी से संस्कृत अनुवाद (सुमन महादेव कर) भी पठनीय है। साहित्य अकादमी से प्रकाशित बांग्ला (रवींद्रनाथ टैगोर) का 'सान्द्रक्षीरपंचालिका' के रूप में संस्कृत अनुवाद भी ध्यान आकृष्ट करता है। यद्यपि इसकी कथा अत्यधिक लघुकाय है। लेकिन इसकी भाषा-शैली सरल तथा ललित और रंगीन चित्रों से सुसज्जित होने के सबब से बाल मन को जरूर रिझाएगा। रूसी कथाकार लियो टॉलस्टॉय की कथाओं का 'टाल्स्टाय कथसप्तम्' (भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी) अनुवाद भी संस्कृत साहित्य के बिंब को वैश्विक जामा पहनाता नज़र आता है। उसी प्रकार आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा जलालुद्दीन रूमी की फारसी रचनाओं का संस्कृत में रूमीपंचदशी के रूप में प्रकाश में आना भी संस्कृत भाषा की सहकारी संस्कृति को फिर से एक नए परिप्रेक्ष्य में समेटती नज़र आती है। कवि नारायण दाश की संस्कृत अनूदित कथा संग्रह 'सृष्टि' के कुछ कथाबिंबों को अधिक प्रभावशाली माना जा सकता है। उसी प्रकार नाट्य साहित्य में रवींद्रनाथ टैगोर की रचना 'डाकघर' का डॉ. ध्यानेश नारायण चक्रवर्ती द्वारा संस्कृत अनुवाद संस्कृत के अनूदित साहित्य पर प्रकाश डालता है। उसी प्रकार श्री अरविंद के व्यक्तित्व को आधार बनाकर लिखी रचना 'युगपुरुषः' भी एक अच्छा अनुवाद माना जाना चाहिए। उसी क्रम में रवींद्रनाथ टैगोर नाथ साहित्य पर आधृत- 'रवींद्ररूपकाणि' (के. टी पांडुरङ्गी के चार नाट्य-साहित्य भी पठनीय हैं। साथ ही साथ संस्कृत के गांधीवादी साहित्य में 'हिंदस्वराज्यम्' का संस्कृत तर्जुमा जाने-माने युवा कवि डॉ. प्रवीण पांडया का अति महत्वपूर्ण है।

सामान्यतः जब संस्कृत की बौद्धिक विरासत तथा इसकी पांडुलिपि संपदा की बात आती है तो बड़ी ही गरिमा के साथ कहा जाता है कि लगभग तीन-चार लाख संस्कृत की पांडुलिपियों पर कोई कार्य नहीं हुआ है। लेकिन इससे भी अधिक सच यह है कि छात्र एवं शिक्षक ने उन पांडुलिपियों को छोड़कर कुछ ऐसे विषय पर काम करना/करवाना नहीं चाहते हैं जिस पर सामग्री आसानी से मिल सके। दुर्भाग्यवश लब्ध प्रतिष्ठ स्थापित अधिसंख्य अन्वेषक भी अपने स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथों में इन पांडुलिपियों को आमतौर पर स्पेस नहीं देते हैं। लेकिन इस वर्ष नामचीन कवि-समीक्षक तथा संस्कृत परंपरा के उद्भट विद्वान आचार्य बृजेश कुमार शुक्ल जिन्हें भारत सरकार ने पिछले ही वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया है जिनके संपादन में ताजिक ज्योतिष शास्त्र की अति महत्वपूर्ण पांडुलिपि 'हायनरत्नम'[5] की बड़ी ही उत्कृष्ट समीक्षा प्रस्तुत की है। वस्तुतः प्रस्तुत ग्रंथ ताजिक ज्योतिष के गणितीय तथा फलित भाग का सांगोपांग विश्लेषण करता है। पाठ्य सामग्री संस्कृत भाषा में होने के कारण जहाँ पारंपरिक छात्रों के लिए भी उपयोगी है तथा पारंपरिक विद्या के क्षेत्र में अन्वेषण के नए आयाम भी उन्मीलित करता है। आठ अध्यायों में पल्लवित तथा पुष्पित यह ग्रंथ क्रमशः प्रथम अध्याय में- ग्रह के आयाम, राशि के स्वरूप, लग्न और भावों के साधन के साथ-साथ वर्ष प्रवेश का आनयन, दूसरे अध्याय में- विंशोपकबल, मुसल्लदेश, हद्देश, ग्रहों की ऊँची-नीची राशियाँ उदयास्त तथा दृष्ट कष्टज्ञान का निरूपण, तीसरे अध्याय में ताजिक इत्थ शालादि योगों का नजीर के साथ सविस्तार चर्चा, चौथे अध्याय में सहम का साधन और फल स्वरूप निरूपण, पाँचवें अध्याय में- 'वषैश निर्णय, फल, अरिष्ट-विचार और राजयोगों की मीमांसा, छठे अध्याय में द्वादश भावों के सामात्य फल चर्चा, सातवें अध्याय में दशा और उनकी दशाओं के फल प्रसंग का वर्णन तथा आठवें अध्याय में मास प्रवेश, अहर्गण, दिन प्रवेश, कतेरी दोष, वर्षपत्री आलेखन तथा नवांश फल आदि का

विश्लेषण ज्योतिष शास्त्र के गणीतीर्थ तथा वैज्ञानिक महत्वों को जनोन्मुख बनाता है।

न्याय दर्शन के संदर्भ में महत्वपूर्ण कृति श्रीगदाधर भट्टाचार्य के संग्राम पक्ष को लेकर लिखी गई 'अभिनवकाशिकारव्यक्रोडवत्रम'[6] का सन् 2019 में प्रकाश में आना बड़ा ही सार्थक तथा श्लाघ्य प्रयास माना जाना चाहिए। प्रस्तुत ग्रंथ से संबंधित लब्धप्रतिष्ठ विद्वान श्री रामचंद्रुल कोटेश्वर शर्मा की टिप्पणी का संलग्न होना भी जहाँ रचना के अर्थ-विस्तार का अभिनव आयाम देता है वहीं मूलपाठ के संरक्षण तथा परिवर्धन में भी अहम् भूमिका निभाता है। प्रस्तुत पुस्तिका शृङ्गेरी जगद्गुरु शीशी भारती तीर्थ महास्वामी जी द्वारा उपोद्धातः के रूप में सुशोभित है।

महाकवि श्री हनूमत्प्रणीत 'हनुमन्नाटकम्: शिल्प एवं संवेदना'[7] तथा 'उत्तर रामचरितम् का साहित्यिक वैशिष्ट्य'[8] दोनों वेद प्रकाश उपाध्याय की स्वतंत्र समीक्षित ग्रंथ राम काव्य को लेकर महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। उसी प्रकार 'अंडरएसटेगिंग आयुर्वेद'[9] भी अंग्रेजी भाषा-भाषियों के लिए आयुर्वेद के सामान्य ज्ञान के लिए अच्छी मानी जा सकती है तथा डॉ. ब्रज सुंदर मिश्रा की 'शिशुपालवधपदकोषः'[10] भी पारंपरिक शोध के लिए बड़े-काम की हो सकती है। इसकी सॉफ्ट कॉपी भी बननी चाहिए। धर्मशास्त्र को लेकर भी इस साल 'दानमयूखः'[11] (भगवंत भास्करे मीमांसकभी नीलकंठभट्ट) का डॉ. माधवजनार्दनरहाटे ने अच्छा संपादन किया है जो आचार्यनीलकंठभट्ट के भगवंत भास्कर के बारह मयूखे में एक दानमयूख का विश्लेषण है। इसमें देश, काल तथा पात्र का विचार करते हुए नाना चर्चित तथा अचर्चित दोनों की विधि तथा महत्व पर प्रकाश डाला गया है। 'आख्यानार्थ का आलोचनात्मक अध्ययन'[12] (कमल नयन शर्मा) भी पठनीय लगती है। भारतीय प्राचीन तथा आधुनिक शिक्षा को लेकर डॉ. ओम प्रकाश पारीक ने "प्राचीन साहित्य में वर्णित विद्या अध्ययन पद्धति एवं आधुनिक शिक्षा"[13] नाम ग्रंथ पाँच अध्यायों में विभक्त भी पठनीय है। सुभाष विद्यालंकर लिखित किताब 'योग एवं मानसिक स्वास्थ्य'[14] छोटे-छोटे सत्रह अध्यायों में योग की तकनीकी शब्दावली के साथ चर्चा प्रस्तुत करती है।

डॉ. नारायण दास ने जो उपरोक्त समीक्षक ग्रंथ में पश्चिम बंगाल के अनूदित साहित्य को लेकर महत्वपूर्ण कार्य किया है। उसी प्रकार फोक संस्कृति तथा क्षेत्रीय भाषा की दृष्टि से सुश्री उमा चौबे के द्वारा बुंदेली भाषा में श्रीमद्भगवतगीता का तर्जुमा 'बुंदेली भाषा अनूदित श्रीमद्भगवतगीता'[15] के रूप में संस्कृत तथा लोक भाषा के बढ़ते कदम माने जा सकते हैं जो ग्लोबलाइजेशन के घातक दौर में बड़ा ही जरूरी जान पड़ता है। 'कथक कल्पदुम'[16] चेतना ज्योतिष त्योहार भी नाट्य, साहित्य तथा संगीत जैसी समन्वित सामग्री को पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि से उत्कृष्ट सामग्री है। उसी प्रकार वैद्य फूलचंद शर्मा का 'यजुर्वेद संहिता (संस्कृत मूल एवं दोहों में पद्यानुवाद)[17] वेद के देशी मिजाज को दोहे के माध्यम से इंगित करता है। फलतः संस्कृत के क्लासिक्स तथा लोकधर्मी संबंध की पुष्टि करता है। व्याकरण शास्त्र के दार्शनिक ग्रंथ 'लघुशष्देंदशेखरः'[18] (नागेश भट्ट) के अव्ययीभावांत भाग आचार्य तेजपाल शर्मा द्वारा किया जाना भी महत्व का ग्रंथ माना जा सकता है। आचार्य पं. सत्यानंद शुक्ल द्वारा लिखित मूल रचना 'उदांत्कण'[19] महाभारत में वर्णित कर्ण के औदात्य को लेकर लिखी रचना इस साल संस्कृत महाकाव्य की विधा की श्रीवृद्धि करती है। प्रथम सर्ग में ही कर्ण के उदात्तभाव का वर्णन पढ़ते ही बनता है- *तपोधनः शस्त्रकलानदीष्णो यशोधनोभास्करतुल्यतजाः/ सूयैकमकृः सुकृती दयालूः प्रख्यातवर्णोजगतीह कर्णः ।।1/3।।* इसके हिंदी अनुवाद के सार्थक प्रकाशन की महत्ता की पुष्टि करता है। इसमें अष्टादश सर्ग कर्ण के पैरादय को निखारता है। 'ध्वन्यालोक विमर्श'[20] छात्रोपयोगी संस्करण माना जा सकता है। 'त्रिषपिट श्लाका पुरुषचरित महाकाव्यम्'[21] भी साहित्य के बाजार में स्वागत योग्य जान पड़ती है। 'मूर्तिपूजा का प्राचीन इतिहास'[22] मुनि श्रीज्ञानसुंदर जी भी रोचक हो सकती है। गीता को लेकर स्वामी सत्यानंद की जिज्ञासाओं का श्रीमत् अनिर्वाण द्वारा समाधान को लेकर छपी 'गीतानुवचन'[23] भी गीता दर्शन अनुरागियों के लिए पठनीय है। श्री अनिर्वाण के बांग्ला से इसका हिंदी अनुवाद छविनाथ मिश्र ने किया है। 'मृच्छकटिकम् का पात्र'[24] भी छात्रोपयोगी संस्करण ही माना जाना

चाहिए। उसके लेखक डॉ. प्रणव शर्मा शास्त्री है। -अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमा ही प्रथम पादस्य महाभाष्य दाष्या समीक्षात्मक अध्ययनम्[25] (साधु योगेश्वर दास जी) भी व्याकरण दर्शन की श्रीवृद्धि करती है।

सन् 2019 में स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथों में 'आजकल का संस्कृत साहित्य',[26] उत्तर आधुनिकता तथा 'संस्कृत कविता'[27] मानीखेज साया मानी जा सकती हैं। इन दोनों ग्रंथों की समीक्षित पुख्ता सामग्री संस्कृत भाषा के वरिष्ठ समीक्षक अजय कुमार मिश्र ने दी है। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पुराना नाम राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान) के लोकप्रिय साहित्य ग्रंथमाला परियोजना के अंतर्गत प्रकाशित क्रमशः प्रथम ग्रंथ परख, उपन्यास, नाटक, कविता तथा नारी विमर्श से जुड़े समसामयिक संस्कृत साहित्य को एक सहकारी तथा विपुल परिप्रेक्ष्य में अपने अभिनव तथा संश्लेषित नजरिए से प्रस्तुत किया जिसको पढ़कर इसकी पुष्टि होती है कि आधुनिक संस्कृत साहित्य का क्षितिज बहुआयामी तथा बड़ा ही ऊर्वर है जिसे किसी भी भारतीय साहित्य से कतई कमतर नहीं आँका जाना चाहिए। समीक्ष्य ग्रंथ ने केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा इसकी स्वर्ण जयंती से जुड़ी समीक्षकीय फलसफे को उठाया है बल्कि यह भी साफ किया है कि आजादी की कहानी को लेकर संस्कृत पत्र-पत्रिकाएँ कैसी स्वर्णिम तस्वीर अपने कैनवास पर खींचती है। साथ ही साथ संस्कृत ग़ज़ल के तेवर को भी समेटने का सार्थक प्रयास किया है। इस समीक्षित सामग्री में वेलेंटाइन-डे-संदेश जैसी कविता जो युवा मन को पढ़ने के लिए रिझा सकती है और आज की संस्कृत कविता की लोकधर्मीपरंपरा पर भी व्यापक प्रकाश डालती है। ग़ौरतलब है कि चिरंजीव दास सदृश कालजयी संस्कृत से हिंदी अनुवाद जिनका नाम आज के संस्कृत साहित्य के इतिहास के पन्नों से सर्वथा ओझल ही है। जिन्हें इस गुमनामी के साहित्यिक बाजार में अपनी पुष्कल समीक्षा से प्रकाश में लाने का भरसक प्रयास किया है। साथ ही साथ समीक्षक मिश्र ने कालिदास के उत्कर्ष में विद्योत्तमा की भूमिका को लेकर एक नए विमर्श का आगाज़ का जेंडर जस्टिस के नवोन्मेष का दरवाजा भी उन्मीलित किया है। ऐसे शोधपरक चर्चा से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि जैसा कि विलियम जी. डॉरी ने अपनी चर्चित किताब 'डी ट्रेशिनलजाइजेशन' में मिथक को सामाजिक आधार के ताना-बाना बुनने का सरोकार मानते हैं जबकि मैक्समूलर मिथक जिसे भारतीय दृष्टि में देवशास्त्र कहा जाता है को झूठा आधार मानता है। अतः संस्कृत के पारंपरिक विद्वानों को विद्योत्तमा को समझने के लिए कालिदास के साहित्य के लुगयेस्टिक स्टडी पर भी बल दिया जाना चाहिए। दूसरी समीक्ष्य कृति संस्कृत भाषा की आधुनिक कविता को पूरी तरह खंगालते हुए इसके मिजाज़ को दरिता के पोस्ट-मोर्डनिज़्म के फलसफा के नजरिए से आँकने का संभवतः संस्कृत की समीक्षा की दुनिया में पहल पर अविकल रूप में किया है। इस तथ्य की पुष्टि प्रस्तुत ग्रंथ में आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी के 'समाशंसा' के अंश से भी होती है- "अजय कुमार मिश्र ने अपनी इस पुस्तक में आज के संस्कृत साहित्य में उत्तर आधुनिक विमर्श के साथ अंकित हो रहे पदचिह्नों की पहचान की है। वे भूमंडलीकरण, सूचनाक्रांति, बाजारवाद तथा शोषित दमित जनों की आवाजों के संदर्भ में साहित्य के भवितंय की मीमांसा करते हैं। भर्तृहरि, आनंदवर्धन, नागार्जुन, धर्मकीर्ति जैसे संस्कृत परंपरा के महान विचारक तथा दरिंदा जैसे उत्तर आधुनिक दार्शनिक- ये सभी विखंडन की विविध प्रविधियों का उपयोग करते हैं। नागार्जुन और भर्तृहरि विखंडन के द्वारा एक मूल्यबोध से जुड़ते हैं। उत्तर आधुनिक विमर्श में यह मूल्यबोध। (पृ. vi) किताब में छपे आचार्य अभिराज राजेंद्र मिश्र के 'नांदीवाक' भी ग़ौरतलब है। यद्यपि संस्कृत भाषा के वैश्विक नदीष्ण कवि-उपन्यासकार-नाट्यकार तथा फॉक संस्कृति के भी कोकिल कंठ ने इस समीक्ष्य पुस्तक में छपी यात्रावृतांत (संस्कृत) से जुड़ी सामग्री को और जुटाने की बात पर बल दिया है। उसी तरह कम्यूटेशनल संस्कृत के बहुलब्ध प्रतिष्ठ विद्वान डॉ. गिरीश नाथ झा जिन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के माध्यम से इस अद्यतन तथा बहुपयोगी आई.टी विधा को पूरी दुनिया में स्थापित किया उनका मानना है कि उन्होंने भी इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत ग्रंथ पाँच अध्यायों में विभाजित है। समीक्षक मिश्र ने इनमें उत्तर

आधुनिकतावादी फलसफा का बड़े ही अभिनव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेकिन इसके प्रथम अध्याय- 'संस्कृत कविता और आधुनिक युग: कुछ प्रश्न-प्रतिप्रश्न' में बुद्धदेव बोस जयशंकर त्रिपाठी तथा अ.रा. आदी के समकालीन भारतीय साहित्य, अकादमी दिल्ली (क्रमशः जनवरी- फरवरी 2004 तथा मई-जून 2004) में छपे रीज्वाएनडर के रूप में संस्कृत कविता की आधुनिकता को टटोला गया है। समीक्षक मिश्र ने पुस्तक की भूमिका 'पुरोवाक्' विश्व साहित्य की समकालीनता का तबसरा भी अनुसंधानपरक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वैशम्पायनप्रकाशनम, प्रयागराज
2. वीणापाणि-संस्कृत-समिति, मध्यप्रदेश
3. वनारस मर्केन्टराइल कंपनी, कलिकता।
4. वनारस मर्केन्टाइल कंपनी, कलिकता।
5. प्रतिमा प्रकाशन, दिल्ली
6. श्रीशंकर अद्वैतशोधकेंद्रम् श्री श्री जगतगुरु शंकराचार्य महासंस्थानम्
7. दक्षिणाम्राच श्रीशारदापीठम, शृंगेरी भारती प्रकाशन, वाराणसी,
8. भारती प्रकाशन, वाराणसी
9. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर
10. कावेरी बुक्स, दिल्ली
11. द भारतीय विद्या प्रकाशन
12. हंसा प्रकाशन, जयपुर
13. साक्षर भारत, जयपुर
14. ज्ञान भारती पब्लिकेशन्स, दिल्ली
15. महालक्ष्मी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली
16. स्वाति पब्लिकेशन्स, दिल्ली
17. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
18. न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली
19. परिमल, पब्लिकेशन्स, दिल्ली
20. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
21. कुसुम प्रकाशन, दिल्ली
22. कुसुम प्रकाशन, दिल्ली
23. अक्षय प्रकाशन, दिल्ली
24. लोकवाणी संस्थान, दिल्ली
25. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
26. राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्, नव दिल्ली।
27. अभिव्यक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली।

– फ्लैट न. 2/802, ईस्ट एंड अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज-1 एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110096

❑❑❑

18

सिंधी साहित्य

डॉ. सुरेश बबलाणी

सिंध में मुस्लिम सूफी कवि हुए हैं शाह अब्दुल लतीफ। आपका जन्म सिंध प्रदेश में 1691 में हुआ था। आप सिंधी साहित्य की त्रिमूर्ति शाह, सचल एवं सामी में से एके हैं, जिन्होंने काव्य रचनाओं के माध्यम से सिंधी समाज में जाग्रति लाने का प्रयास किया है। आपकी कुछ पंक्तियाँ उदरित कर रहा हूँ-

शेवा कर समन्ड जी जिति जर वहे थे जार,
सवें निपिजनि तंहिं में हीरा मोती लाल,
जो मासो जुड़ेई माल त पूजारा पुर थींयनि, से
पूजारा पुर थिया समुन्ड सेवियो जिनि,
आन्दाउं अमीक मां जोती जवाहरनि, लधाउं
लतीफ चवे लालनि मां लहरूनि,
कान्हे कीमत तिनि मुल्हु महांगो उनजो।

भावार्थ है कि समुद्र की सेवा करो, जहाँ अथाह पानी बहता रहता है, जिसमें अनगनित जीव-जंतु पलते रहते हैं। जिसमें हीरे, मोती, जवाहर और लाल मिलते हैं, जिन्हें जोड़ने से अर्थात् इकट्ठा करने से आदमी अमीर हो जाता है। जितने गहरे जाओगे उतना ही माल तुम प्राप्त कर सकते हो, अमीर हो सकते हो।

हिंदुस्तान में सिंधी साहित्य की सेवा करना समुद्र की सेवा के समान है, जितने गहरे जाएँगे। उतने ही अच्छे हीरे, मोती और जवाहर प्राप्त होंगे। आवश्यकता है, गहरे पानी में डुबकी लगाने की और अधिक समय तक पानी में रहकर हीरे मोती जवाहर इकट्ठे करने की। मैंने वर्ष 2019 के सिंधी साहित्य के समुद्र में डुबकी लगाई है, अथाह सागर में से कुछ इकट्ठा कर पाया हूँ जिनका कुछ विवरण आपके सम्मुख रखने का प्रयास करता हूँ-

सिंधी नाटक

1. 'चांहि जी चुसकी', लेखक विक्रम शहाणी, अहमदाबाद। नाटक रंगमंच के साथ-साथ रेडियो के लिए भी लिखा जाता है, प्राप्त पुस्तक रेडियो अहमदाबाद के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले एक कार्यक्रम जिसे 'चांहि जी चुस्की' शीर्षक से प्रसारित किया जा रहा हैं, इसमें प्रस्तुत किए गए रेडियो नाटक की स्क्रिप्ट है। इस पुस्तक के संबंध में लेखक की कुछ पंक्तियाँ उदरित कर रहा हूँ- "असां जे आस-पास, असां जे जीवन में केतिरियूं ई घटनाउं घटिजंदियूं रहनि थियूं, जिन मां कुझु आसां जो होश-हवास खता करे छड्डीदियूं आहिन त कुझु अजब में विढी छड्डीदियूं आहिन इन्हनि जो असरू असां जे मन, मन जे विचार-वंहवार

ते पिण थिए थे। असां कींअ उन्हनि घटनाउनि जी सूक्षम (सकारात्मक) नजर सां ई तक तोर करे, पंहिजो जीवन सरल ऐं सहज बणाइण जे डस में उन्हनि जो इस्तेमाल कयूं कींअ पहिंजी सुजागी वधायूं ऐं पंहिजो होसलो बुलंद रखूं। इहो ही हिन चांहि जी चुसकीअ जो मकसद आहे।" रेडियो पर प्रसारित यह कार्यक्रम अत्यंत सराहा गया है, इस संबंध में पुस्तक की प्रस्तावना में श्री नंद छुगाणी लिखते हैं "चांहि जी चुस्की प्रोग्राम में सुंदर जोड़ आहे सुनीता, लगातार गडु कमु करण करे हिक बिए जे विचारनि खां बखूबी वाकिफ आहिन हिक बिए सां नाटकी गुफतंगू जरिए सुठो साथ निभायो अथाउं। वक्त ब वक्त सुनीता पिण विक्रम वांगुरू नसीहत आमेज टोटका बुधाऐ थी, विषय सां ठहकंदड़ कथा कहाणियूँ ऐं दृष्टांत जो पिण वर्णन करे थी।..... अहिड़ी तरह चांहि जी चुस्की जी कड़ियुनि में पिण तर्क संगत गाल्हियुनि ऐं दृष्टांत जरिए जीवन जा केतरा ईराज सलयल आहिन।"

2. 'बिगड़ियल घरू' लेखक स्व. गोर्वधन भारती, लिप्यंतरण डॉ. सुरेश बबलाणी, अजमेर स्वतंत्रतोपरांत भारत के विभिन्न शहरों में बसने वाले सिंधी समाज के लिए मनोरंजन का साधन सिंधी गीत संगीत की महफिल सिंधी भगत थी तो समाज के कुछ सृजनशील अध्यापकों के द्वारा सिंध में लिखे नाटकों का मंचन विद्यालयों में विद्यार्थियों से करवाकर उन्हें शिक्षा प्रदान करना था। विभाजन के बाद सृजन की कड़ी को जोड़ने के लिए 1952 में सिंधी एकांकी संग्रह का पहला प्रकाशन हुआ था तो सिंधी नाटक जो आजादी के बाद पहली बार मंच पर आया वह था अजमेर के ही रहने वाले स्व. श्री गोर्वधन भारती द्वारा लिखा गया त्रिअंकीय नाटक 'बिगड़ियल घरू' जिसे 1960 के दिसंबर माह में दिल्ली के मंच पर प्रदर्शित किया गया तथा 1972 में यह सिंधी की अरबी फारसी लिपि में प्रकाशित हुआ। जिसका सिंधी की मूल लिपि देवनागरी में लिप्यंतरण कर प्रकाशन इस वर्ष डॉ. सुरेश बबलाणी ने करवाया है। नाटक के संबंध में जीवन गुरसहानी ने प्रस्तावना में लिखा है "नाटक जे पहिरियनिं बिनि दृश्यनि में अलग-अलग मसइललि खे पेश कयो वियो आहे ऐं टिएं दृश्य में वरी इन्हनि भिड़नी मसइलनि जो हलु डिनो वियो आहे। मसइलनि जो हलु डेखारण लाइ लेखक आदर्शवाद जो सहारो वरतो आहे, पर आदर्शवाद जी झलक कुझु कुदरती नथी लगे। मुहिंजो पहिंजो रायो आहे त लेखक पछाड़ीअ वारो दृश्य वधीक असराइतो बणाउ सझो हां, जेकडहिं हू मसइलनि जो हलु कुझु वधीक सुवभाविक नमूने पेश करे हां।"

3. 'सिंधी ड्रामा', लेखक डा. जेठो लालवाणी, अहमदाबाद। डॉ. जेठो लालवाणी सिंधी साहित्य की समस्त विधाओं में लिखते हैं, आपने सिंधी के लोक साहित्य पर अपना शोध किया है। मूलतः नाटककार हैं, इस वर्ष आपकी पुस्तक का प्रकाशन राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में सिंधी नाटकों के विभिन्न प्रकार जैसे एकांकी, एब्सर्ड और प्रयोगात्मक, नुक्कड़ रेडियो, टी.वी. स्क्रीन, शैडो प्ले आदि पर विभिन्न आलेख संकलित हैं। साथ ही आपने स्वतंत्रता के बाद भारत में सिंधी नाटक के विषय पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए है, जो इस प्रकार हैं- "सिंधी नाटक सिंध ऐं हिंद जी सरजमीन ते पहिंजा पेर फहिलाऐ अगिते वधी रहियो आहे। भारत में सिंधीयुनि जो को सूबो न हुजण करे, सिंधी तइलीम बंद थियण करे ऐं नईं पीड़ीअ जी पंहिजे का, अदब, सिंधियत तरफ बेरूखीअ करे भारत में असां सिंधीयुनि जे सिंधी नाटक, संगीत, बोली, साहित्य ऐं सिधियत जी कियास जोगी हालत आहे।"

निबंध

सिंधी साहित्य में यूँ तो कई विषयों पर निबंध लेखन होता रहता है। विभिन्न साहित्यक सेमिनारों में प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों को संकलित कर उन्हें प्रकाशित करवाया जाता रहा है। तात्कालिक विषयों पर भी लेखकों के विचार प्रस्तुत होते रहते हैं। वहीं शोध निबंध भी प्रकाशित हुए हैं। शोध निबंध की पुस्तक 'हरी हिमथाणी के साहित्य में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चित्रण- एक अभ्यासु', जिसे लिखा है डॉ. सुरेश बबलाणी, अजमेर ने। हरी हिमथाणी सिंधी साहित्य के ख्यातनाम लेखक हैं।

आपके 11 कहानी संग्रह एवं 12 उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। आपके साहित्य का अभ्यास वह भी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष का, सिंधी में अपने प्रकार का यह पहला प्रयास है। वैसे आज तक सिंधी साहित्य में आजादी के बाद से कुल 50 शोध ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। यह इकावनवां है। पुस्तक की प्रस्तावना डॉ. सतीश रोहड़ा ने लिखी है, वे लिखते हैं "विषय जे खियाल खां सुरेश बबलाणीअ हरी हिमथाणीअ जे साहित्य में सिंधी समाज जे आर्थिक, सामाजिक ऐं सांस्कृतिक पहलुनि खे गोल्हण जी कोशिश कई आहे, पर हकीकत ईहा आहे त सुरेश, हरी हिमथाणीअ जे समूरे साहित्य जो अहिड़ो बारीकीअ सां अभ्यासु कयो आहे जो हरीअ जी साहित्य में सिंधी समाज जूं रीतियूं, रस्मूं, सिंधी समाज जा विश्वास, सिंधी गोठ सिधी पाड़ा, सिंधी नाला, उनसां गडु विरहाडे. खां पोइ हिंदुस्तान में अची सिंधियुनि जो वसणु ऐं उन्हनि जी आर्थिक सामाजिक स्थिति। सभ खां अहिम गाल्हि जेका हरीअ जे साहित्य जे अभ्यास में ध्यान छिकाऐ थी उहा आहे हरीअ जी भाषा शैली। हरीअ जी सिंधी भाषा जा जेके मिसाल डिना आहिन, उन्हनि खे डिसी इहो महसूस थो कजे त हरीअ जी भाषा ते हिक अलग थीसिस लिखी सघजे थी।"

2. 'सिंधी छंद अरूज, जो हैंडबुक', लेखक वासदेव मोही, अहमदाबाद। साहित्य सृजन के विभिन्न सिद्धांत होते हैं,इन सिद्धांतों का विवेचन कई लेखक अपनी पुस्तक में करते रहते हैं, सिंधी में काव्य, उसमें भी गज़ल का लेखन ज्यादा प्रचलित है। गज़ल लेखन के लिए इसके सैद्धांतिक पक्ष की जानकारी देने के लिए राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, नई दिल्ली ने इस पुस्तक की रचना करवाई है- पुस्तक विद्यार्थियों के लिए अमूल्य है ही तो सिंधी में काव्य लिखने वालों के लिए पथ प्रदर्शक भी है- पुस्तक के संबंध में लेखक के विचार हैं "किताब में इल्मि अरूज ऐं छंदि शास्त्र में मौजूदु सभि जा सभि बहिर वनज सा छंद डियण खां पासो कयो वियो आहे, पंहिजे लेखे उहे बहिर वजनि अहिम हूंदे बि सिंधीअ में उहे चलण में हुअण करे उन्हनि जो बयानु कोशिशि करे टारियो वियो आहे। नजर उन्हनि बहरूनि, छंदनि ते रखी वेई आहे, जेके सिंधीअ में कमु आंदा विया आहिन। सागी गाल्हि सनतुनि (अलेंकारनि)ऐं नज्मी सिन्फुनि (विधाउनि, फार्मिस) सां बि लागू आहे। इनजो कारणु किताब खे बेसबबि बयाननि खां आजो कररणु आहे।"

3. 'रचना संसार', डॉ. जेठो लालवाणी, अहमदाबाद। इसमें साहित्य की आलोचना एवं समालोचना करते हुए लिखे गए विभिन्न विषयों के 16 निबंधों का संकलन है। जिसमें सिंधी भाषा के साथ-साथ सिंधी समाज के विभिन्न व्यक्तियों को समाहित करती हुई है यह पुस्तक। पुस्तक के लेखक के संबंध में प्रस्तावना लिखते हुए सरिता शर्मा जी का शब्द चित्रण देखिए "जेठो लालवाणीअ लोक अदब जो खोजनीक आहे। हिन जा इन विषय ते घणाई किताब लिख्यल आहिन। इनखां सवाइ बियनि बि केतरनि ई अलग-अलग मौजुअनि ते हिनजा मयारी मजमून लिख्यल मिलन था। नसुरू नवीस जी कसौटी मजमून मञयां वेंदा आहिन। मजमून अदब जी अहिमियत भरी दाखली शाख आहे। जठो लालवाणीअ जा मजमून हिन जे घहरे अभ्यास, महिनत, लगन ऐं सदाकत जा शाहिद आहिन।"

4. 'की नोट', लेखक वासदेव मोही, अहमदाबाद। वासदेव मोही द्वारा लिखित इस वर्ष की यह दूसरी पुस्तक है, पुस्तक के शीर्षक से स्पष्ट होता है कि इस पुस्तक में कुछ ऐसा है जो कुछ अवसरों पर बोला गया है। वास्तविकता का दर्शन लेखक ने अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार कराया है "की नोटस जो मकसद सेमीनार/सिमपोज्यिम जे विषय खे बिल्कुल थोड़े में खोल-सोलू करे उन बाबत हलकी जाण डेई सेमीनार जी दिशा तय कर हून्दो हो। विस्तार सां विषय बाबत जाण लाइ मकाला मौजूद हून्दा हुआ। जेतोणीक विषय खे सिर्फ छुहियो वियो आहे।" अपने प्रकार की यह पहली पुस्तक मेरी दृष्टि में आई है।

5. 'सिंधी साहित्य जा सारथी- मोतीलाल जोतवाणी', लेखक जगदीश लछाणी, मुंबई।

सिंधी अकादमी दिल्ली की ओर से प्रकाशित पुस्तक एवं प्रयास सराहनीय हैं। सिंधी साहित्य सृजन को दशा एवं दिशा देने वाले व्यक्तियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना इसका मूल उद्देश्य है। प्रथम

पुस्तक के रूप में मेरे समक्ष सिंधी, हिंदी एवं अंग्रेजी में सिद्धहस्त डॉ. मोतीलाल जोतवाणी के व्यक्तित्व एवं कृतत्व पर सूक्ष्म अभ्यास कर प्रस्तुत करने का मुंबई के लेखक श्री जगदीश लछाणी ने भागीरथी प्रयास किया है। आप डॉ. जोतवाणी के परिचय का प्रारंभ करते हुए लिखते हैं "मोतीलाल जोतवाणी (1936-2008) सिंधीअ जी हिक घण पासाई शख्सित आहे। संदसि साहित्यिक सफर वींहीं सदीअ जे आखिरीन चालीहनि पंजेतालीहनि सालनि जो रहियो। मोतीलाल जोतवाणीअ जे अदबी जिंदगीअ जी शुरूआति वीहीं सदीअ जे पंजे डुहाके खां थी। हुन कहाणियूं लिखियूं, कविताउं रचियूं, नाविल तख्लीक कया, आलमाणा मजमून ऐं मकाला लिखिया। हू हिक ई वक्ति घाण पासाई सोच रखंदडु दानिश्वर राईटर, मजमून-निगार नईं कविता जो कवि ऐं रिसर्च स्कालर हो।" लछाणी जी ने कम शब्दो में डॉ. जोतवाणी का परिचय दिया है, जो पाठकों को मजबूर करता है कि वे पूरी पुस्तक का अध्ययन करें।

कथा साहित्य उपन्यास

सिंधी साहित्य के इतिहास की जब चर्चा करते हैं तो हमें यह 1853 के बाद का ही मिलता है क्या इससे पहले कोई सृजन नहीं हुआ था? एक प्रश्न है, जिसकी सच्चाई की जानकारी प्राप्त करेंगे तो इसकी जड़े हमें गजवा-ए-हिंद में मिलेंगी। जिसके तहत सिंधी के समृद्ध साहित्य को अरब हमलावरों ने नष्ट कर दिया और जो कुछ बचा-खुचा था उसे 1831 में सिंध के ब्रिटिश शासन के अधीन आने और 1853 में सिंध प्रांत को सिंधी भाषा की अरबी-फारसी लिपि देने, ने समाप्त कर दिया। अब जब भी सिंधी साहित्य के इतिहास की चर्चा होती है तो हम इसे 1890 या उसके आस-पास से ही शुरू करते है, जो अत्यंत पीड़ा देता है। पाँच हजार साल पहले की सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का इतिहास महज 140 वर्ष वर्ष पुराना है। उपन्यास का इतिहास 1870 से डॉ. जनरल के लिखे अंग्रेजी उपन्यास 'रासीलास' के अनुवाद से प्रारंभ होता है जिसका अनुवाद सिंधी विद्वान लेखकों सर्व श्री साधू नवलराय एवं उधाराम थांवरदास ने अंग्रेजी भाषा का अभ्यास करने के बाद किया था, जिसे सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया था। बस इतिहास का प्रारंभ ऐसे ही होता है। जिससे मैं व्यक्तिशः बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। अब जब सरस्वती नदी की खोज एवं उसके अवशेषों के कारण भारत का इतिहास पुनर्लेखन की आवश्यकता इतिहासकार प्रतिपादित कर रहे हैं, तो सिंध के साहित्य के इतिहास को भी पुर्नलेखन करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि ब्रिटेन के पुस्तकालयों को खंगालने से हमें कुछ सफलता अवश्य मिलेगी।

वर्ष 2019 में उपन्यास प्रकाशन का इतिहास इस प्रकार है-

1.'मरण-जीअण खे काई मानहा कान्हे', लेखक आनंद खेमाणी, नई दिल्ली। आनंद खेमाणी सिंधी साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार हैं, आपने उपन्यास, निबंध, कविता पर खूब कलम चलाई है। आपकी ज्यादातर रचनाएँ उत्तर आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं, आपकी रचनाओं में खुलापन है। प्राप्त उपन्यास का एक शायर एवं शायरा के जीवन का चित्रण है, जिनका परिचय एक मुशायरे में होता है। उपन्यास का एक अंश देखिए जिसमें मुख्य पात्र के औरतों के संबंध में विचार चित्रित हैं। "चयुम गर्ल फ्रैंड त आहिन। डींह जो खणीं थोड़ी देर अची विहन,पर रात त पहिंजे घर में रहन्दियूं न। अव्हां त आजाद आहियो। मूं वटि बि रही सघो था त पाण वटि बि रहाये सघो था/ तुहिंजी उमुरू घणी आहे?/ अठावीह साल। पाउ पीउ जी आखिरी औलाद आहियां। पोइ शादी छो न थो करीं? कहिं न कहिं गर्ल फ्रैंड खे चूंड।/ मां जरा गलत मिजाज जो माणहू आहियां। हिक गर्ल फ्रैंड डिघी आहे। बी सुहिणी आहे। टीं मिट्ठी आहे यानि शांत आहे। पर मूंखे पत्नि रूप में काबि पसंद कान आहे। जंहिमे इहे टई गुण हुजनि, अहिड़ीअ सां अंञा पालो कोन पियो अथम। ऐं गुस्ताखी माफ। शादीअ मां अव्हां कुझु हड़ हासिल कयव?" उपन्यास पढ़ने के बाद ही पूरी कहानी समझी जा सकती है। इसलिए अधूरा छोड़ता हूँ कि आगे क्या होता है।

2. 'बाख फुटे ताईं', लेखक अमर गोपलाणी, इंदौर। सिंधी के वरिष्ठ साहित्यकार जिनकी कलम

कहानी एवं उपन्यास पर चलती रहती है उनका यह दसवाँ उपन्यास है। उपन्यास संयुक्त परिवार के बिखराव एवं विभाजन की पीड़ा को दर्शाने के साथ-साथ प्यार मोहब्बत वह भी विधर्मियों के बीच का चित्रण प्रस्तुत है। "नूरां रांवल सां मोहब्बत जे बावजूद पंहिजे मुड़स डांहु पंहिजे फर्ज अदाई पूरीअ शिदत सां निबाहीं दी हुई। दिल खुशीअ में टुबु हुयुस इनकरे मुडुसु नूर बख्श खे बि हर तरह खुश रखंदी हुई। नूर बख्श खेसि बावफा समझंदो हो। कड़हिं बुधे त कनु न डि़नाई। कड़हिं नूरां जी निगरानी न कयांई। इनकरे नूरां बि नूर तां साहु सदके वेन्दी हुई। मालिक खेसि बि़टी खुशी बख्शी हुई। बेपनाह मोहब्बत करण वारो आशिक, भरोसे खावंद, लाखेणो लाल पीरल। रात डींह परवरदीगार खे सजदो करे अर्जु कंदी हुई त संदसि खुशी बरकरार रहे। संदसि सा जा सांई सालिम रहनि।"

कथा साहित्य - कहानी संग्रह

1. 'सिपाही सरहद जा' लेखक तेज काबिल, देवनागरी लिप्यंतरण निशा वाधवाणी सिंधू आदिपुर। तेज काबिल सिंधी के वरिष्ठ साहित्यकार हैं, आपके कुछ कहानी संग्रह एवं निबंध प्रकाशित हैं। यहाँ मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि सिंधी साहित्य ज्यादातर सिंधी की अरबी-फारसी लिपि में प्रकाशित हो रहा है। आज की युवा पीढ़ी जिसे पढ़ना पसंद नहीं करती है। कारण हिंदी एवं अंग्रेजी में शिक्षा के साथ-साथ आज के उत्तर आधुनिकता के दौर में व्यक्ति अपनी जड़ों की तलाश कर उनकी तरफ लौट रहा है। सिंधी की मूल लिपि देवनागरी है, अब युवा पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी भी अपनी जड़ों की तरफ लौट रही है और सिंधी साहित्य देवनागरी लिपि में भी अच्छी संख्या में न केवल लिखा जा रहा है बल्कि प्रकाशित भी हो रहा है तो वरिष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं का लिप्यंतरण भी हो रहा है। यह कहानी संग्रह भी लिप्यंतरित है जिसमें चौदह छोटी कहानियाँ सम्मिलित हैं। संग्रह की कहानी सुपात्र ऐसे पुत्र की कहानी है, जिसका बड़ा भाई साधू बन जाता है और दो बहनों के विवाहोपरांत माँ की सेवा में लग जाता है। शादी इसलिए नहीं करता कि क्या पता आने वाली बहू के माँ के साथ क्या रिश्ते हों। माँ के स्वर्गवास के बाद शादी करता है। परिवार बसता है पुत्र की आशा में दो पुत्रियों को जन्म देने के बाद पत्नी का स्वर्गवास हो जाता है। उसकी दोनों पुत्रियों की परवरिश का कर्तव्य निभाता हुआ, नाना बनने के बाद उसकी जीवन लीला की समाप्ति का चित्रण कहानी में है। सिंधी समाज के संघर्ष का भी थोड़ा वृतांत कहानी में मिलता है।

2. 'सैलाब', लेखक अमर गोपलाणी, इंदौर। इस वर्ष में अमर गोपलाणी की यह दूसरी रचना है। अस्सी वर्षीय रचनाकर के रचना संसार का विवरण देखता हूँ तो ज्ञात होता है कि आप उम्र के आठवें दशक में भी सक्रिय हैं। आपकी अब तक 24 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ सम्मिलित हैं। शीर्षक कहानी चार परिवारों में आए सैलाब का चित्रण है। लेखक ने कहानी का प्रारंभ व्यास नदी में आए सैलाब से किया है, जिसमें हिमाचल रोड लाइंस की बस मनाली में शिमला के लिए रवाना होती है और बादल फटने के कारण नदी में आए सैलाब के कारण रोड के किनारे रुक जाती है और ड्राइवर बस की सवारियों को ऊँचे स्थान पर शरण लेने को कहकर बस को सड़क किनारे छोड़ देते हैं। बस के पीछे ही एक कार आकर रुकती है जिसमें से एक नवयुवक आकर रुकता है। कुछ ही देर में बस और कार सैलाब में बह जाते हैं। बस में सवार एक युवती आशा और कार सवार नवयुवक अशोक का परिचय होता है। अशोक का हादसे के बाद आशा के साथ घर लौटना और आशा के परिवार से उषा और निशा का मिलना। अशोक को अपना प्यार आशा मिल जाती है। कहानी की अंतिम पंक्ति "अजु लेखराज जे घर में खुशियुनि जो सैलाब आयो हो, उनमें चार ई परिवार मौजुनि ते सुवार हुआ।"

काव्य

सिंधी साहित्य में ज्यादा पुस्तकें जिस विधा में प्रकाशित होती हैं, वह है काव्य, जिसमें छंदात्मकता के साथ-साथ आधुनिक कविता भी सम्मिलित है। इस वर्ष की प्रकाशित पुस्तकों का विवरण कुछ इस प्रकार है-

1. 'हाई वे', लेखक मोहन हिमथाणी, नई दिल्ली। सिंधी अकादमी दिल्ली ने मोहन हिमथाणी

की पुस्तक का प्रकाशन करवाया है, जो पहले सिंध में प्रकाशित हुई है। हिंदुस्तान की पवित्र भूमि जिसमें मैं सिंध को भी सम्मिलित करता हूँ, में वह शक्ति है जो 1947 में खींची गई विभाजन की रेखा को समाप्त कर सकती है। जिसका एक उदाहरण गत 22 वर्षों से नियमित रूप से लेह लद्दाख में चल रहा सिंधू दर्शन है। जो यह दर्शाता है कि सिंधी समाज की युवा पीढ़ी भी सिंधू से उतना ही प्रेम करती है जितना उनके बुजुर्ग करते थे/ हैं। सिंधी साहित्य में वह ताकत है जो विभाजन की खींची गई कृत्रिम रेखा को मिटा सके। उसका उदाहरण है सिंध के रचनाकारों का हिंद में और हिंद के रचनाकारों का सिंध में साहित्य प्रकाशित होना। प्राप्त पुस्तक पहले सिंध में प्रकाशित हुई थी जिसकी प्रस्तावना सिंध के प्रसिद्ध कवि इमदाद हुसैनी ने लिखी है, अब यह पुस्तक हिंदुस्तान में सिंधी अकादमी, नई दिल्ली ने प्रकाशित करवाई है। हुसैनी साहब ने मोहन हिमथाणी की कविता को नज़्म की संज्ञा दी है। हिमथाणी की एक नज़्म का आनंद लेते हैं *जेकी/ कुझु की रहियो आहे/ ऐं जेकी/ कुझु थियणो आहे/ उनजे विच में/ खाली लफजन सां/ भरियल/ हिकु रस्तो आहे/ उन ते ई/ हाणे हलणो आहे/ वरी बि/ उम्मेद। लफज अंजा/ बचियल आहे।* शेष आनंद तो पूरी किताब पढ़ने से मिलने वाला है।

2. 'भगवान निर्दोष जा चूंड' ग़ज़ल संपादक हिना हीर, अहमदाबाद। भगवान निर्दोष सिंधी के वरिष्ठ साहित्यकारों में सम्मिलित हैं जिनके गज़ल़, निबंध आदि की 15 पुस्तकें सम्मिलित हैं, जिनमें कई पुस्तकों को गुजरात सिंध अकादमी, एन.सी.पी.एस. एल आदि से पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। प्राप्त पुस्तक को आपकी सुपुत्री हिना ने विभिन्न पुस्तकों में प्रकाशित चुनिंदा 108 गज़लों को संकलित कर प्रकाशित करवाया है। आपकी एक गज़ल का आनंद लें- "उभ में केड़ा तारा आहिन, लग़न मगर वेचारा आहिन। कारे नाणे वारा सभई, देश में केड़ा पियारा आहिन! वांगू नेताउनि हथि आहिन, कनि जेको, वस वारा आहिन। राजु हले बि त कींअ गणतंत्र? माणहूं पर मत वारा आहिन। मिठड़े भारत जो छा थींदो द्य तहसुब जा मूझारा आहिन। रूप फिरन था हित पल-पल माणुहिन जा मन कारा आहिन। निर्दोष बणी कींअ हित रहिबो? के के दोष बि पियारा आहिन।"

अनुवाद

सिंधी साहित्य के इतिहास पर नजर डालता हूँ तो देखता हूँ कि सिंधी की अरबी फारसी लिपि के अस्तित्व में आने के बाद सिंधी में अनूदित साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हुआ जिसका प्रारंभ अंग्रेजी, उसके बाद उर्दू, हिंदी और संस्कृत के साहित्य के साथ हुआ है। सिंधी साहित्य भारत की अन्य भाषाओं में कम ही प्रकाशित हुआ है। जिसका प्रयास साहित्य अकादमी के द्वारा किया जा रहा है तो कुछ व्यक्तिगत प्रयास भी किए जा रहे हैं। यहाँ मैं सिंधी से अन्य भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों का विवरण प्रस्तुत करूंगा।

1. माया राही सिंधी साहित्य की वरिष्ठ रचनाकार हैं। साहित्य अकादमी द्वारा आपके कहानी संग्रह 'महिंगी मुर्क' को 2016 में पुरस्कृत किया गया है। आपका कहानी एवं कविता की रचना पर समान अधिकार है। इस पुस्तक में माया राही की 37 कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद है जिसे दो भागों मोक्ष (Salvation) और जोश (Passion) में विभक्त किया गया हैं, प्रथम भाग में 12 तो द्वितीय भाग में 25 कहानियाँ हैं।

2. 'खामोशी की मुस्कान' लेखक अर्जन हासिद, अनुवाद डॉ. सुरेश बबलाणी, ज्ञाप्रटे सरल एवं मनोज चावला। स्वर्गीय अर्जन हासिद सिंधी के सुप्रसिद्ध गज़लकार, कहानीकार थे। आपकी सिंधी में प्रकाशित पुस्तक 'माठि जी मुर्क' का हिंदी में अनुवाद तीन मित्रों ने मिलकर किया है, जिसमें हासिद साहब की 53 रचनाएँ सम्मिलित है। आपको 1985 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2013 में साहित्य अकादमी की फैलोशिप प्रदान की गई थी। आपके कई गीत सिंधी फिल्मों में गाए गए हैं, आपके गीत सिंधी समाज में अत्यंत लोकप्रिय हैं। आपकी एक रचना का रसास्वादन करते हैं *मुस्कुरा-मुस्कुराकर भी मुँह तो बनाते हो, जैसे खुद पर ही इतराते हो। मैं जाऊँगा चला इस रास्ते से, साथ गर चलने से टालते हो। रात अंधेरे ने किया था स्वागत, बात सबको यह भी बताते हो। नाम मेरा सुनके सकुचा न जाना, कौन सा अहसास छिपाते हो। आँखों के खेल सभी करते हैं, आज अकेले में गुनगुनाते हो। सरगोशी है, आकर*

बहलाए, आईना देखके मुस्कराते हो। किरणें दरवाजें से झाँक रहीं, सब जगहों पर खामखा देखते हो। करे गुजारिश हासिद खुद हमसे, ऐसी तरकीबें आजमाते हो।

3. 'यह मेरा घर है', लेखक वासदेव मोही, अहमदाबाद अनुवाद कैलाश शादाब, रायपुर। वासदेव मोही की इस वर्ष की यह दूसरी पुस्तक है जो सिंधी कहानियों का हिंदी अनुवाद है। शीर्षक कहानी संकलन में लेखक की 11 कहानियो का अनुवाद है। शीर्षक कहानी संकलन की पाँचवी कहानी है, जिसमें परिस्थितिवश ससुर और बहु एक ही घर में अकेले रहते हैं बेटा काम के सिलसिले में विदेश चला जाता है। जीवन सहज और मर्यादापूर्ण है पर सहजता में बाहर वालों के हस्तक्षेप से दरार पड़ने लगती है। ऐसे में बहू का पिता, उसे अपने साथ तब तक अपने घर ले जाना चाहता है जब तक दामाद/पुत्र/पति वापस नहीं आ जाता। बहू/बेटी का आत्मबल पर आधारित उत्तर रेखांकित करने वाला है "यह मेरा घर है, मैं दुनिया वालों की निराधार और बेतुकी बातों के कारण अपने घर को छोड़कर नहीं जाऊँगी।"

4. 'खामोशी को लिखता हूँ', लेखक वासदेव मोही, अहमदाबाद पुनः सृजन ढोलण राही, अजमेर। उल्लेखनीय है कि श्री मोही को उनके कहानी संग्रह 'चैक बुक' पर के.के. बिड़ला फाउंडेशन का सरस्वती सम्मान 2018 दिए जाने की घोषणा हो चुकी है। इस पुस्तक में आपकी 70 गज़ल, कुछ गीत, कुछ नई कविताएँ सम्मिलित हैं। आपने कुछ गीतों की रचना की है तो सिंधी नाटकों का हिस्सा भी बने हैं। आपके लिखे गए गज़लों को प्रसिद्ध गायक घनश्याम वासवानी ने स्वर दिए है। आपकी नई कविता फर्ज की शब्द रचना देखें जो बचपन में शरारती बच्चे को माँ कहती है किस प्रकार शब्दों में पिरोया है *बचपन में जब शरारते करता था, तू जोर से डाँटकर कहती थी, मुए चुप होकर बैठ, दाग दूँगी जलती लकड़ी से, तूने जलती लकड़ी तो दूर, कभी कोई लकड़ी भी न उठाई। आज जब तू, गहरी नींद में सोई है, पंडित महाराज ने, जलती लकड़ी हाथ में देकर कहा बड़े बेटे हो, कर्तव्य का पालन करो।* माँ बेटे के संबंध प्रेम, डाँट-डपट, उलाहना, समझना और उस पर फर्ज की अदायगी का चित्रण अद्भुत है।

इस वर्ष बाल साहित्य का प्रकाशन सिंधी अकादमी, दिल्ली के द्वारा किया गया है। रचनाकार हैं अजमेर के श्री ढोलण राही पुस्तक का शीर्षक है 'वाङणमल जी शादी', पुस्तक में बाल सुलभ मन को लुभाने वाले सरल मजाकिया गीत सम्मिलित हैं।

सिंधी साहित्य का प्रकाशन सागर की तरह अत्यंत गहरा है, मैं तैराक नहीं, तैराकी सीख रहा हूँ। गहरे पानी में मेरी पैठ नहीं है, जहाँ हीरे, जवाहरात, माणिक, मोती और लाल मिलते हैं। उपरी सतह पर तो शंख और सीप ही मिलते है। कुछ शंख और सीपें आपके सम्मुख प्रस्तुत किए है। इनके अतिरिक्त भी बहुत कुछ प्रकाशित हुआ होगा, जिस पर मेरी नजर नहीं गई है। प्रतिवर्ष कुछ पत्रिकाएँ और समाचार पत्रों का भी प्रकाशन होता रहता है। अत्यंत दुख होता है जब कोई साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है, इस वर्ष से सिपूं, प्रो. राम पंजवाणी चेरिटेबिल ट्रस्ट, शांताक्रूज मुंबई द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक सिंधी साहित्यक पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया है। सिंधी अकादमी, दिल्ली अपनी त्रैमासिक पत्रिका सिंधू जोति के नाम से प्रकाशित करती है। अब तक उसके 69 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। सराहनीय है कि उसमें नए हस्ताक्षरों को भी सम्मिलित किया जाता है। राजस्थान सिंधी अकादमी की वार्षिक पत्रिका रिहाण, गुजरात सिंधी अकादमी की मशाल और मध्यप्रदेश सिंधी अकादमी, भोपाल द्वारा भी नियमित रूप से वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद्, नई दिल्ली ने इस वर्ष अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे किए हैं। परिषद् की वार्षिक पत्रिका 'महक ऐं' बाल साहित्य की पत्रिका पोपटड़ा का प्रकाशन किया जा रहा हैं। इस वर्ष से सिंधी साहित्य का हिंदी में प्रकाशन सिंधू के शीर्षक से,एक सराहनीय कदम है। इसके अतिरिक्त कुछ पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है, जिनका विवरण इस प्रकार है।

1. 'रचना', इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सिंधालाजी, आदीपुर, कच्छ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका

2. 'कूंज', श्री नंद छुगानी द्वारा उल्हासनगर से निरंतर प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका, इस वर्ष गोल्डन जुबली अंक का प्रकाशन हुआ है।

3. 'हिंदवासी', श्रीमती शोभा लालचंदानी द्वारा प्रकाशित पाक्षिक साहित्यिक पत्रिका।

4. 'संत कंवरराम', प्रकाशक : कमल वरयानी, अजमेर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका।

5. 'सिंधी गुलशन', संपादक : अशोक शर्मा, लखनऊ।

6. 'सिंधु गर्जना', संपादक : ज्ञानप्रकाश टेकचंदानी सरल।

7. 'सिंधी लोक वरसो', संपादक : जगदीश शहदादपुरी, अहमदाबाद।

– ए-239, प्रेमप्रकाश कुंज, पंचशील नगर, अजमेर-305004

❑❑❑

19

हिंदी आलोचना

डॉ. आलोक रंजन पांडेय

आलोचना के बारे में एक बात कही जाती है कि किसी भी साहित्य की सामाजिकता को ठीक ढंग से स्थापित करने के बाद साहित्य के पाठकों के बीच उस साहित्य को लेकर जाना और समाज, साहित्य व पाठक के इस संबंध को निरंतर विस्तार देना ही आलोचना का प्राथमिक कर्तव्य है। भारतीय साहित्य की अपनी परंपरा में आलोचना शब्द तो इस तरह प्रयोग में नहीं लाया जाता था लेकिन संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र पर व्यापक चर्चा व वाद-विवाद के दौरान रचनाओं की परख, जाँच, निरीक्षण के समानार्थी भाव वाले शब्दों का प्रयोग निरंतर होता रहा है। हिंदी के मध्यकालीन साहित्य में रचनाओं पर लिखी गई टीकाओं का बहुत महत्व हुआ करता था। परंतु आधुनिक काल के प्रारंभ से आलोचना ने अपने स्वरूप में एकदम से परिवर्तन किया और यह प्रभाव उसने आधुनिकता के आने के बाद से पाश्चात्य साहित्य से ग्रहण किया। यह एक जरूरी पहल थी क्योंकि साहित्य में नई-नई विधाओं का सूत्रपात हो रहा था, हिंदी गद्य कि समस्त विधाएँ लगभग नई ही थीं और उसकी कसौटी पुरानी हो तो आलोचना में उसके साथ न्याय नहीं हो पाता। यही कारण है कि पश्चिमी साहित्य की तर्ज पर नए-नए उपकरणों के साथ हिंदी आलोचना ने अपने आप को परिपक्व किया। आलोचना के इस विकास क्रम में हिंदी साहित्य में भाववादी व सिद्धांतवादी आलोचकों ने रचनाओं को उनकी महत्ता से अवगत कराया। आलोचना के विविध स्वरूपों जैसे- मनोविश्लेषणात्मक -आलोचना, ऐतिहासिक-आलोचना, मार्क्सवादी-आलोचना, दार्शनिक-आलोचना, नई-आलोचना, रूपवादी-आलोचना, संरचनावादी-आलोचना, अस्तित्ववादी-आलोचना, मानववादी-आलोचना, समाजशास्त्रीय-आलोचना आदि अनेक ऐसे सिद्धांतों से हिंदी साहित्य का परिचय हुआ। भारतेंदु युग से लेकर आजादी के 20-25 वर्ष के बाद तक का समय हिंदी आलोचना के संवर्धन व विकास की दृष्टि से बेहतर रहा। लेकिन इसके बाद का समय हिंदी आलोचना के लिए बहुत सकारात्मक हो ऐसा नहीं कहा जा सकता है। पिछले 10 वर्षों की हिंदी आलोचना को उठाकर देखें तो पाएँगे कि सिद्धांत के नाम पर कुछ नए सिद्धांतों का प्रतिपादन नहीं हुआ है, आलोचना की उन्हीं पुरानी पद्धतियों के अनुसार आज के साहित्य का मूल्यांकन नहीं हो सकता। निरंतर बदलते हुए समय के साथ समाज बदलता है, समाज के बदलने के साथ उस समाज का साहित्य भी बदलता है और साहित्य बदलता है तो उसकी बेहतर व व्यापक समझ के लिए आलोचना को उसी के अनुसार बदलना होगा। परंतु आज आलोचना में ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा है,यह बेहद दुखद है।

आलोचना एक ऐसा शब्द है जिसका साहित्य के पाठकों व समाज के एक सामान्य व्यक्ति में अलग-अलग अर्थ ग्रहण किया जाता है। वर्तमान समाज की जो राजनैतिक-सामाजिक व्यवस्था बन गई है वहाँ आलोचना को निंदा का पर्याय मान लिया गया है। एक आम व्यक्ति के जेहन में आलोचना का अर्थ उसकी सम्यक रूप से जाँच-परख नहीं अपितु उस विषय के बारे में नकारात्मक बातों को प्रस्तुत करना है। परंतु एक साहित्य के अध्येता के लिए आलोचना का अर्थ नकारात्मक न होकर सम्यक दृष्टि होती है। साहित्य में यदि आलोचना न हो तो हम रचनाओं में मूल तक इतनी आसानी व इतनी गहराई से नहीं पहुँच पाएँगे। आलोचना ही रचना की परतों को उधेड़कर उसके सीवन तक पाठकों को पहुँचाती है। आलोचना के बारे में एक बात कही जाती है कि किसी भी साहित्य की सामाजिकता को ठीक ढंग से स्थापित करने के बाद साहित्य के पाठकों के बीच उस साहित्य को लेकर जाना और समाज, साहित्य व पाठक के इस संबंध को निरंतर विस्तार देना ही आलोचना का प्राथमिक कर्तव्य है।

मुक्तिबोध ने अपने प्रसिद्ध सैद्धांतिक निबंध 'समीक्षा की सीमाएँ' में लिखा है कि समीक्षा को भी चरित्र की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि लेखक को ईमानदारी की। उन्होंने चरित्र और ईमानदारी को आलोचकीय मानदंड बनाकर हिंदी आलोचना को नैतिकबोध से संपन्न करने का प्रयास किया था। परंतु आज हिंदी आलोचना में इस नैतिकबोध का समय के साथ क्षरण होता चला गया। आज वास्तव में आलोचना का कोई चरित्र नहीं रह गया है। मुक्तिबोध जिस खतरे को महसूस कर रहे थे आज वह खतरा हमारे समक्ष मौजूद है। हिंदी की समूची नई पीढ़ी को मिलकर इस खतरे से निबटने का उपाय ढूँढना होगा। परंतु सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस नई पीढ़ी में कौन नए आलोचक उभर रहे हैं? अगर उभर भी रहे हैं तो आलोचना के उनके मानदंड नए हैं या पुराने? अधिक मामलों में वे पुराने मानदंडों के साथ नज़र आते हैं। ऐसे में प्रश्न यह है कि अगर मानदंड ही पुराने हैं तो हम उन्हें नए आलोचक के रूप में स्वीकार क्यों ही करें?

2019 में हिंदी आलोचना में बहुत काम तों दिखाई नही देता पर इतना होने के बावजूद कुछ आलोचकों की पुस्तकों का जिक्र किए बिना न केवल उन आलोचकों के प्रति अपितु आलोचना के साथ भी न्याय नहीं हो पाएगा। यहाँ संक्षेप में 2019 में प्रकाशित प्रमुख आलोचना की पुस्तकों पर विचार किया जा रहा है। इसमें सबसे पहले विनोद शाही की पुस्तक 'हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी' को लिया जा सकता है जिसका प्रकाशन 'आधार प्रकाशन' से हुआ है। प्रकाशित हुई पुस्तक 'हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी' भी उनके भीतर अपनी वर्तमान आलोचना को लेकर लगातार उठती कशमकश को सामने लाती है। हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी यह वही बेचैनी है, जो उन्होंने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' लिखते हुए लगातार महसूस की है। शाही इस सारी विवेचना के बीच इस बात के लिए भूमिका तैयार करते हैं कि क्या हम अंतर्ध्वनि-सिद्धांत या नव-रीतिवाद जैसे सिद्धांतों के सहारे अपनी विरासत से कुछ बीज-तत्व नहीं प्राप्त कर सकते? कुल तीन खंडों 'आलोचना और सिद्धांत', 'आलोचना और विधा-विमर्श' व 'आलोचना और आधुनिक युग-धाराओं' में बँटी उनकी पुस्तक 'हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी' तेईस विभिन्न लेखों से अपनी हो सकने वाली आलोचना को विवेचना का विषय बनाती है हाल के वर्षों तक चला आया यही रास्ता सिद्धांत-निर्माण में परिणत नहीं हो सका है। शाही का मानना है कि अब हमें आवश्यकता है कि हम अपनी दृष्टि को अंतर्दृष्टि में बदलें और जितने अनुपात में प्रासंगिक होने की ओर बढ़ें उसी अनुपात में गहरे भी होते जाएँ।

हिंदी पत्रकारिता में दक्षिणपंथ की सबसे बौद्धिक आवाजों में एक अनंत विजय की किताब 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' किताब और इसके लेख एक तरह से साहित्य, संस्कृति और मार्क्सवाद को ही केंद्र में रखकर लिखे गए हैं। किताब के शुरुआती लेख में अनंत विजय जी ने जरूर किताबी हवालों का सहारा लेते हुए माओ और फ़िदेल कास्त्रो की उस विराट छवि को दरकाने की कोशिश की है जो उनको इतिहास पुरुषों के रूप में स्थापित करने वाली है। लेकिन किताब के शेष लेखों में साहित्य-संस्कृति के

क्षेत्र में मार्क्सवाद के अंतर्विरोधों को दिखाना लेखक का उद्देश्य लगता है। इसके अलावा, किताब में अधिकतर लेख 2014 के बाद देश में बौद्धिक जमात के प्रतिरोधी कदमों की आलोचना करते हुए लिखे गए, अवार्ड वापसी, धर्मनिरपेक्षता की बहाली के लिए अलग-अलग मौके पर उठाए गए कदम, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़े सवालों पर लेखक ने आलोचक रुख अख्तियार किया है। लेखक यह सवाल उठाते हैं कि वामपंथियों ने आपातकाल के दौर में चुप्पी क्यों साधे रखी और 2014 के बाद के फूल छाप के दौर में उन वामपंथी लेखकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की याद बार-बार क्यों आती रही? किताब में एक बहस तलब लेख वह भी है जिसमें लेखक ने बहस के इस बिंदु को उठाया है कि हिंदी में धर्म, आध्यात्म को विषय बनाकर लिखने वालों को हाशिए पर क्यों रखा गया।

तमाम वैचारिक असहमतियों के बावजूद उनके लेखन के केंद्र में हिंदी के वही लेखक या साहित्य है जिसको वामपंथी के नाम से जाना जाता है। उनकी लेखन शैली उनके लिए आलोचनात्मक जरूर है लेकिन उसमें छिपा हुआ एक प्यार भी है जो नामवर जी, राजेंद्र यादव जी, अशोक वाजपेयी जी आदि के प्रति दिखाई दे जाता है। वे खारिज करने वाली शैली में नहीं लिखते बल्कि बहस करने की शैली में तर्क रखते हैं। आज दक्षिणपंथ को ऐसे तर्क करने वाले लेखकों की जरूरत है जो वाद-विवाद संवाद की परंपरा को आगे बढ़ाए। खारिज करने वाली कट्टर परंपरा को हासिल कुछ नहीं होता। यह किताब बहुत से सवाल उठाती है। जाहिर है उनमें से कुछ सवाल ऐसे जरूर हैं जिनको लेकर वामपंथी संगठनों, लेखकों को विचार करना चाहिए। किसी भी तरह की कट्टरता को हासिल कुछ नहीं होता। जड़ता से निकलने का रास्ता आलोचनाओं को स्वीकार करने से भी निकलता है। किताब का प्रकाशन वाणी प्रकाशन ने किया है।

'आलोचना के परिसर' पुस्तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह की वाणी प्रकाशन से प्रकाशित एक मौलिक आलोचना की पुस्तक है। इसमें उन्होंने हिंदी आलोचना को बिना किसी ढाँचे में बाँटते हुए बिना किसी निश्चित परंपराएँ-सिद्धांतों के साथ उसको समेटते हुए आलोचना का एक सार्थक एवं सफल प्रयास किया है। गोपेश्वर सिंह की यह पुस्तक आलोचना के क्षेत्र में आए नए बदलाव का भी लेखा-जोखा हमारे सामने ले करके आती है एवं कला तथा कला से प्रभावित होने वाले समाज को वह भारतीय या भारत से इतर किसी भी आलोचना पद्धति में ना बंधकर स्वतंत्र चिंतन के रूप में हमें दिखाई देती है। इस पुस्तक में मुख्यतः तीन खंडों के अंतर्गत- हिंदी कवि और कविता, हिंदी गद्य के विविध रंग और अंतिम भाग आलोचना और समाज में एक व्यापक फलक पर साहित्य और समाज के बनते-बिगड़ते संबंधों, अंतर्विरोधों, समय और रचनाकार के अंतर्बाह्य संघर्षों और विरोधाभासों के बीच किस प्रकार कोई कवि, रचना और लेखक नए मूल्यों का स्थापक बना और क्या नई दिशा समाज और राजनीति को उसने दी, एक तरफ वह स्वंय अपने समय, समाज और परिवेश से प्रभावित होता है तो अपनी रचनाओं से भी वह समाज को प्रभावित करता है। इन सभी गंभीर और जरूरी विषयों को इन तीनों खंडों में 37 लेखों में नई समसामयिक दृष्टि से मूल्यांकित किया गया है जिनके केंद्र में समाज के सरोकार और चिंताएँ हैं। आलोचना के परिसर पुस्तक हिंदी आलोचना की एक नई संस्कृति का निर्माण करती है। लेखक-आलोचक गोपेश्वर सिंह का इस विषय में खुद मानना है- "अच्छी आलोचना अंतःकरण से ही उत्पन्न होती है। वह रचना में शब्दों के पीछे छिपे अर्थ को और नई संभावनाओं को खोजती है।"

'शब्द और साधना' प्रसिद्ध आलोचक डॉ. मैनेजर पांडेय की नवीनतम आलोचना पुस्तक है जो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इसमें डॉ. पांडेय ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप अनेक ऐसे विषयों की गहन पड़ताल की है, जिन्हें आज देखने से बचने की चेष्टा की जाती है। जो लोग डॉ. पांडेय को सैद्धांतिक आलोचक मानते रहे हैं उन्हें उनकी व्यावहारिक आलोचना का विमर्श किंचित् अचरज में डालेगा और वे इस तथ्य को समझ पाएँगे कि सैद्धांतिक रूप से प्रतिबद्ध हुए बिना आलोचना के व्यवहार पक्ष को भी बरत पाना आसान नहीं होता।

पुस्तक में कुल तेईस निबंध हैं, जो तीन खंडों में विभाजित हैं। ये सभी अपने विवेचन में नया विमर्श रचते हैं। पहले खंड में शामिल निबंधों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्व, जयशंकर प्रसाद की कामायनी और मुक्तिबोध, मुक्तिबोध और कामायनी, रामविलास शर्मा और हिंदी नवजागरण, रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि के मूल स्रोत, पंडित विद्यानिवास मिश्र और मध्यकालीन कविता तथा सूरदास का काव्य और विश्वंभरनाथ उपाध्याय जैसे निबंध नए स्तर पर विषयों की मीमांसा करते हैं तथा आज के संदर्भों में इनकी उपादेयता को परखते हैं।

'नारीवादी आलोचना', अनन्य प्रकाशन से किंगसन सिंह पटेल की नारीवादी विमर्श को समझने की एक कोशिश है। व्यवस्था से विद्रोह की घोषणा के साथ पैदा हुआ स्त्री-विमर्श स्वयं बाजार का हिस्सा बनता जा रहा है। यह लेखन के बाजार का प्रिय विषय बन चुका है। लेखक और प्रकाशक दोनों बड़ी तत्परता से ज्यादा से ज्यादा किताबें तैयार करने में जुटे हैं। अब तो यह पहचानने में भी मुश्किल होने लगी है कि कौन-सा और किसका लेखन नारीवादी है। नारीवाद की परिभाषा क्या है और हिंदी में नारीवाद की शुरुआत कब होती है, नारीवाद का सौंदर्य शास्त्र क्या है और नारीवाद को मुक्ति किससे चाहिए? भ्रम की इस स्थिति का निवारण नारीवादी आलोचना के जिम्मे था, लेकिन वह स्वयं गतिरोध का शिकार हो गई है। कारण कि एक ही नारीवादी आलोचक के पैमाने अलग-अलग लेखकों या कृतियों के संदर्भ में बदल जाते हैं। इन चुनौतियों से टकराने की एक कोशिश है यह किताब। इस किताब में हिंदी की नारीवादी आलोचना की मौजूद समस्याओं की न सिर्फ सटीक पहचान की गई है बल्कि उनकी पूर्वाग्रह मुक्त आलोचना भी इसमें की गई है। नारीवादी आलोचना की मौलिक और संतुलित दृष्टि से पड़ताल करते हुए यह किताब हिंदी में नारीवाद की एक नई नजर विकसित करती है।

वाणी प्रकाशन से डॉक्टर ब्रजबाला सिंह की 'परिवर्तन की परंपरा के कवि लीलाधर जगूड़ी' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। परिवर्तन की परंपरा के कवि के रूप में लीलाधर जगूड़ी का अपना एक अलग स्थान है और उसकी विस्तृत विवेचना इस पुस्तक में देखने को मिलती है। इसमें बड़ी बारीकी से इस बात का वर्णन किया गया है कि किस तरीके से कवि हर बात के लिए नए बिंब एवं प्रतीकों को गढ़ने की कोशिश करता है एवं उसके दोहराव से बचने की सजगता उसके काव्य में सर्वत्र मौजूद है। हिंदी की जानी मानी आलोचक ब्रजबाला सिंह ने लीलाधर जगूड़ी पर केंद्रित इस पुस्तक में उनकी रचना-यात्रा, कविता के उद्गम स्थल, चेतना के शिल्प और लंबी कविताओं को अपने आलोचनात्मक विवेक से लक्षित एवं विश्लेषित करने की भरपूर कोशिश की है। वे कविता में प्रतीकों के दिन, जब बहुत सारे प्रतीक अपनी चौहद्दी को पार कर उसमें एक नए अर्थ भर रहे थे, उसका विश्लेषण और इस पुस्तक में ऐसी चीजों की खोज मिलती है।

इस वर्ष आलोचना में एक और महत्वपूर्ण पुस्तक विज्ञान भूषण की 'समीक्षा का लोकतंत्र' अमन प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुई। विज्ञान भूषण की समीक्षा केंद्रित यह पुस्तक इस मायने में अलग है कि इसमें अभी-अभी वाली तात्कालिकता की बात की जाती है, वह नहीं है और आग्रह और प्रयोजन के साथ किसी की निंदा या सराहना भी नहीं है जो इसको अपने आप में विशिष्ट बनाती है। यहाँ रचना की प्रशंसा या उसकी निंदा में जो अति होती है उससे बचने की भरपूर कोशिश है। यहाँ समीक्षक रचना के सकारात्मक पहलुओं पर अपने को एकाग्र कर बड़ी तसल्ली से उनको बताने की कोशिश करता है। इस पुस्तक में काशीनाथ सिंह, नासिरा शर्मा, प्रियदर्शन, असगर वजाहत, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा की किताबों की समीक्षाओं के साथ-साथ मुक्तिबोध की रचनात्मकता पर भी स्वतंत्र आलेख देखने को मिल जाते हैं। अनुशासन के संतुलित उपयोग के कारण यह किताब एक अच्छी पुस्तक के रूप में जानी जाएगी।

यतींद्र मिश्र के संपादन में वर्ष 2019 में 'अख्तरी' का प्रकाशन हुआ। इस साल यह किताब काफी चर्चा में रही। इसकी वजह यह रही कि इसमें कई पुराने और नए लेखकों ने ग़ज़ल गायिका बेगम अख्तर के बारे में अपने संस्मरण और लेख साझा किए हैं। बेगम

अख्तर के ग़ज़ल के सफर और उनकी निजी जिंदगी को जानने के लिए यह बेहद दिलचस्प किताब है। इस किताब में बहुत बेबाकी से उनके बारे में चर्चा की गई है। कई नामचीन और नए लेखकों ने किताब में अपने आलेख भी लिखे हैं।

हिंदी नाटक एवं रंगमंच के क्षेत्र में सत्येंद्र कुमार तनेजा की 'समकालीन रंग-परिदृश्य' एक महत्वपूर्ण पुस्तक के रूप सामने में आई है जिसे राधाकृष्ण प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक में जितने भी लेख एवं समीक्षाएँ हैं, वे समकालीन रंगमंच एवं उससे जुड़े विविध पहलुओं को तथा उनकी तहों को ठीक तरीके से खोल पाने में पूरी तरह से सक्षम हैं। इस पुस्तक में रंगमंच के व्यावसायिक होते जाने पर बहुत सारी चर्चाएँ देखने को मिलती हैं। साथ ही साथ हबीब तनवीर, श्यामानंद जालान एवं इब्राहिम अलकाजी जैसे प्रसिद्ध रंगकर्मियों पर स्वतंत्र चिंतन यहाँ दिखाई देता है। हिंदी रंगमंच के विकास की पूरी परंपरा को इस पुस्तक के माध्यम से समझने की कोशिश की जा सकती है। यह पुस्तक रंगमंच के समकाल को ठीक तरह से दिखा पाने में सक्षम हुई है।

संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली से वीणा शर्मा की 'निराला कि काव्यभाषा' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। साहित्य में काव्य भाषा को सामान्य भाषा माना जाए या उसे विशेष भाषा माना जाए इसमें विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत हैं परंतु प्रस्तुत पुस्तक में दांते, अरस्तू, वारफिल्ड, वर्ड्सवर्थ के विचारों के परिप्रेक्ष्य में काव्यभाषा के सामान्य भाषा या विशेष भाषा के बीच के अंतर संबंध पर प्रकाश डाला गया है। विभिन्न विद्वानों द्वारा काव्यभाषा के विभिन्न प्रकारों के विवेचन में काव्यभाषा की समानता और विशेषता दर्शाने के लिए विवेचित है।

यश पब्लिकेशंस से प्रकाशित 'गांधी और हिंदी साहित्य' श्रीभगवान सिंह की एक ऐसी पुस्तक है जिसमें हिंदी साहित्य पर वो गांधी के प्रभाव को किस रूप में देखा जा सकता है, इसकी बड़ी सूक्ष्मता से पड़ताल करने की कोशिश की गई है। हिंदी साहित्य के संदर्भ में गांधी के प्रभाव को दो रूपों में देखा जा सकता है। पहला रूप वह जिसमें गांधी एक व्यक्ति के रूप में या एक राष्ट्र नायक के रूप में एक सत्याग्रही योद्धा के रूप में साहित्यिक रचनाओं के वर्ण्य विषय बनते हैं एवं उस समय के तत्कालीन रचनाकार भरपूर मात्रा में उसके प्रभाव को अपने साहित्य में लेकर आते हैं। ऐसी रचनाओं में सीधे-सीधे गांधी को संबोधित करके उनके विचारों तथा कार्यों को प्रशंसात्मक अंदाज में उतारने का उपक्रम हिंदी के बहुत सारे रचनाकारों के द्वारा दिखाई देता है जिसमें से मुंशी प्रेमचंद एवं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे महान रचनाकार भी शामिल हैं। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि गांधी के जाने के बाद भी अनेक रचनाकार उनको अपने लेखन का विषय बनाने से बिल्कुल भी कतराते हुए नज़र नहीं आते।

'गांधी और समाज' हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार गिरिराज किशोर द्वारा लिखी गई राजकमल प्रकाशन से गांधी के ऊपर विचार करती हुई एक नवीनतम पुस्तक है। गांधी के जीवन और विरोधाभासों को देखें तो कहा जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व और दर्शन एक सतत बनती हुई इकाई थी। एक निर्माणाधीन इमारत जिसमें हर क्षण काम चलता था। उनका जीवन भी प्रयोगशाला था, मन भी। एक अवधारणा के रूप में गांधी उसी तरह एक सूत्र के रूप में हमें मिलते हैं जिस तरह मार्क्स। यह हमारे ऊपर है कि हम अपने वर्तमान और भविष्य को उस सूत्र से कैसे समझें। यही वजह है कि गोली से मार दिए जाने, बीच-बीच में उन्हें अप्रासंगिक सिद्ध करने और जाने कितनी ऐतिहासिक गलतियों का जिम्मेदार ठहराए जाने के बावजूद वे बचे रहते हैं और रहेंगे। उनकी हत्या करने वाली ताकतों के वर्चस्व के बाद भी वे होंगे। वे कोई पूरी लिखी जा चुकी धर्म-पुस्तिका नहीं, वे जीने की एक पद्धति है जिसका अन्वेषण हमेशा जारी रखे जाने की माँग करता है। 'पहला गिरमिटिया' लिखकर गांधी-चिंतक के रूप में प्रतिष्ठित हुए, वरिष्ठ हिंदी कथाकार गिरिराज किशोर ने अपने इन आलेखों, वक्तव्यों और व्याख्यानों में उन्हें अलग-अलग कोणों से समझने और समझाने की कोशिश की है। ये सभी आलेख पिछले कुछ वर्षों में अलग-अलग मौकों पर लिखे गए हैं; इसलिए इनके संदर्भ नितांत समकालीन हैं; और आज की निगाह से

गांधी को देखते हैं। इन आलेखों में 'व्यक्ति गांधी' और 'विचार गांधी' के विरुद्ध इधर जोर पकड़ रहे संगठित दुष्प्रचार को भी रेखांकित किया गया है; और उनके हत्यारे को पूजने वाली मानसिकता की हिंस्र संरचना को भी चिंता व चिंतन का विषय बनाया गया है।

अनामिका पब्लिशर्स से अरुण माहेश्वरी द्वारा लिखित 'आलोचना की नई दृष्टि की तलाश' नामक पुस्तक हिंदी आलोचना की एक नई दृष्टि खोजते हुए नज़र आती है। इस संकलन में अरुण माहेश्वरी के लेखों में नए यथार्थ के संयोग से हिंदी आलोचना की अपनी प्राणी सत्ता की प्राथमिकताओं का जो नया ऐतिहासिक ठोस रूप आकार लेता हुआ दिखाई देता है वह हिंदी के किसी भी सुधी पाठक के लिए एक विशेष उपलब्धि मानी जाएगी। आलोचना में आलोचना दृष्टि किस तरह कार्य करती है, उसकी क्या आवश्यकता होती है, दृष्टि से पाठ कैसे प्रभावित होता है, इन सभी बिंदुओं को इसमें देखने की कोशिश की गई है। अभी तक हिंदी आलोचना ने जिस दृष्टिकोण का विकास किया है, वे कितनी सफल रही हैं, उसकी भी पड़ताल यहाँ आपको मिलेगी।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली से कमल कुमार की 'लोक मंच और समकालीन हिंदी रंगमंच का स्त्री विमर्श' नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई। नाटकों में दो तरह की स्त्रियाँ आती हैं, एक वे जिनकी पृष्ठभूमि में नाटक के क्षेत्र में काम करने वाले संबंधी होते हैं एवं उन्हें परिवार की ओर से प्रशंसा और सहयोग दोनों मिलता है। दूसरी तरफ इस क्षेत्र में ऐसी स्त्रियाँ भी आती हैं जिन्हें कोई आर्थिक सहयोग नहीं मिलता एवं इनके संबंधी भी इस क्षेत्र से ताल्लुक नहीं रखते। आज स्त्रियाँ स्क्रिप्ट लेखक, अभिनेता, मंच संचालक आदि अनेक भूमिकाएँ निभा रही हैं। इस पुस्तक में ऐसी ही स्त्रियों को आवाज देने की कोशिश की गई है। नरेंद्र मोहन की अमन प्रकाशन से प्रकाशित 'स्वाधीन होने का अर्थ और कविता' पुस्तक आलोचना के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान रखती है। स्वाधीनता के सही अर्थ की तलाश आजादी के बाद की कविता का एक प्रमुख स्वर ही नहीं है अपितु केंद्रीय सरोकार भी है। इस केंद्रीय सरोकार की अभिव्यक्ति लगातार अनेक कवियों में, उनकी कविताओं में बारंबार देखने को मिलती है। इसकी अभिव्यक्ति कवि दृष्टि के विभिन्न हिस्सों के तौर पर कई कविता पीढ़ियों द्वारा देखने को मिलती है। इसमें नई भाषा, नए मुहावरे एवं नई खोज शामिल होती है। यह पुस्तक इन्हीं सारी चीजों की खोज करती हुई दिखाई देती है। राजनैतिक स्वतंत्रता के बावजूद आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से स्वाधीन होने के वास्तविक अर्थ को कविता में किस रूप में कहा गया है इसमें इसकी खोज की गई है।

श्रीलाल शुक्ल हिंदी के प्रतिनिधि व्यंग्यकार भी हैं। वाणी प्रकाशन से प्रकाशित अर्चना दूबे की पुस्तक 'श्रीलाल शुक्ल : व्यंग के विविध आयाम' में उन्होंने श्रीलाल शुक्ल के व्यंगात्मकता को पकड़ने की कोशिश की है। इस पुस्तक में उन्होंने दिखाया कि वह लेखक की बौद्धिक सघनता, संवेदनात्मक गहनता, प्रतिरोध एवं वैचारिक ईमानदारी किस तरीके से उनके व्यंग को लगातार धार देते रहते हैं या यूँ कहें कि ये ही उनके व्यंग्य के मूल विषय के रूप में हमें बार-बार दिखाई देते हैं। व्यंग्य लेखन की परंपरा में श्रीलाल जी के अवदान का सही मूल्यांकन करते हुए उन्होंने बदलती सामाजिक स्थिति, मूल्य विघटन, नारी जीवन की विसंगतियाँ, पूंजी एवं अपराध जगत के गठजोड़ आदि पर विस्तार से नजर डाली है। नए आलोचक के रूप में अंकित नरवाल एक उभरता हुआ नाम है जिन्होंने 'यू आर अनंतमूर्ति : प्रतिरोध का विकल्प' नामक पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन आधार प्रकाशन ने किया है। यह पुस्तक यू आर अनंतमूर्ति के समग्र साहित्य का गहरा विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करती हुई नज़र आ रही है। सदियों से चले आ रहे संस्कार द्वारा नियंत्रित चेतना को अपने समय के अनुकूल बनाने के लिए मुक्ति करने वाली यह रचनाशीलता किसी भी पाठक के भीतर अपने मनुष्य होने को खोजने की कोशिश करेगी और यही सारी बातें इस पुस्तक में अंकित नरवाल ने प्रस्तुत करने की कोशिश की।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है की वर्ष 2019 में भले ही आलोचना की पुस्तकों का प्रकाशन

अधिक नहीं हुआ पर जो कुछ आलोचकों ने आलोचना का जो विषय बनाया उस पर ईमानदारी से काम किया है और हिंदी साहित्य का पाठक 2020 में प्रमुख आलोचकों की कलम से कुछ और आलोचना की पुस्तकों से परिचित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी, विनोद शाही, आधार प्रकाशन

2. मार्क्सवाद का अर्धसत्य, अनंत विजय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

3. आलोचना के परिसर, प्रो. गोपेश्वर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

4. शब्द और साधना, डॉ. मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5. नारीवादी आलोचना, किंगसन सिंह पटेल, अनन्य प्रकाशन

6. परिवर्तन की परंपरा के कवि लीलाधर जगूड़ी, डॉ. ब्रजबाला सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

7. समीक्षा का लोकतंत्र, विज्ञान भूषण, अमन प्रकाशन, कानपुर

8. लोक मंच और समकालीन हिंदी रंगमंच का स्त्री विमर्श, कमल कुमार, राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय, नई दिल्ली

9. समकालीन रंग-परिदृश्य, सत्येंद्र कुमार तनेजा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

10. निराला की काव्यभाषा, वीणा शर्मा, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली

11. गांधी और हिंदी साहित्य, श्रीभगवान सिंह, यश पब्लिकेशंस, दिल्ली

12. गांधी और समाज, गिरिराज किशोर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

13. स्वाधीन होने का अर्थ और कविता, नरेंद्र मोहन, अमन प्रकाशन, दिल्ली

14. श्रीलाल शुक्ल : व्यंग के विविध आयाम, अर्चना दूबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

– डब्लू ज़ैड-250 बी, निकट इंद्रपुरी एम टी एन एल, नई दिल्ली-110019

❑❑❑

20

हिंदी उपन्यास

डॉ. तरसेम गुजराल

प्रेमचंद ने अपने लेख 'सांप्रदायिकता और संस्कृति' में साफ-साफ कहा था कि "यह जमाना सांप्रदायिक अभ्युदय का नहीं है। यह आर्थिक युग है और आज यही रीति सफल होगी जिससे जनता अपनी आर्थिक समस्याओं को हल कर सके, जिससे यह अंधविश्वास या धर्म के नाम पर किया गया पाखंड, मिटाया जा सके... संस्कृति अमीरों का पेट भरने का, बेफिक्री का व्यसन है।" प्रेमचंद के उपन्यासों में स्थितियों का यथार्थपरक चित्रांकन महत्वपूर्ण है। इस यथार्थपरक उत्खनन का प्रचलन आज के उपन्यासकारों में भी मौजूद है। बेशक ये बदले हुए दौर के कथाकार हैं। अपने समय के नए हालात के प्रति सजग हैं। रचनात्मक स्तर पर बदलाव नज़र आते हैं परंतु मूल चेतना यथार्थ की तलाश ही है। 2019 के उपन्यास इसका साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। इस लेख में ऐसे कुछ उपन्यासों का आकलन है। सीमाओं के भीतर कुछ उपन्यास चुने गए हैं। कुछ छूट गए होंगे, जिनकी अवमानना का कोई इरादा नहीं। इस वर्ष प्रवासी उपन्यासकार भी सामने आए हैं। उनका योगदान स्वीकार्य है।

शिक्षक रामेश्वर उपन्यास 'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज़ था' के आरंभ में ही विद्यार्थी शाहनवाज़ को धर्म की बात संतुलित ढंग से समझा रहा है। "धर्म. ...धर्म ही वह बिंदु है, जिसके बाद इंसान जैसे हताश होकर रह जाता है। उसका सारा ज्ञान बिंदु पर आकर कुछ पुस्तकों का मोहताज हो जाता है।" भगत सिंह ने कहा था "मानव जाति को सबसे ज्यादा नुकसान धर्म ने ही पहुचाया है।" बिल्कुल सच कहा था भगत सिंह ने। मैं एक ऐसी दुनिया की कल्पना करता हूँ, जहाँ धर्म का कोई अस्तित्व ही नहीं होगा। जहाँ इंसान केवल इंसान के रूप में ही रहेगा। कोई धर्म नहीं, कोई बात नहीं। लेकिन यह बहुत ही ज्यादा आदर्शवादी व्यवस्था की कल्पना है। मैं जानता हूँ कि ऐसा कभी भी नहीं हो सकता। धार्मिक उन्माद को विस्तार देने के लिए जुनूनी लोग ऐतिहासिक प्रतीकों का इस्तेमाल करते हैं।

जब शाहनवाज़ रामेश्वर से पूछता है, "धार्मिक सत्ता के आने के कोई पूर्व संकेत नहीं मिलते क्या? कैसे समझा जाए कि किसी देश में अब धार्मिक सत्ता आने वाली है? तब रामेश्वर का उत्तर है- जब देश के लोग अचानक हिंसक होने लगें। जब उस देश के इतिहास में हुए महापुरुषों में से चुन-चुनकर उन लोगों को महिमा मंडित किया जाने लगे, जो हिंसा के समर्थक थे। इतिहास के उन सब महापुरुषों को अपशब्द कहे जाने लगें, जो अहिंसा के हामी थे। जब धार्मिक कर्मकांड और बाहरी दिखावा अचानक ही आक्रामक स्तर पर पहुँच जाए। जब कलाओं की

सारी विधाओं में भी हिंसा नज़र आने लगे, विशेषकर लोकप्रिय कलाओं की विधा में हिंसा का बोलबाला होने लगे। जब उस देश के नागरिक अपने क्रोध को काबू में रखने में बिल्कुल असमर्थ होने लगें। छोटी-छोटी बातों पर हत्याएँ होने लगें। जब किसी देश के लोग जोंबीज की तरह दिखाई देने लगें। तब समझना चाहिए कि उस देश में अब धार्मिक सत्ता आने वाली है। किसी भी देश में अचानक बढ़ती हुई धार्मिक कट्टरता और हिंसा ही सबसे बड़ा संकेत होती है कि इस देश में अब धर्म आधारित सत्ता आने वाली है।"

'जिन्हें जुर्म-ए-इश्क पे नाज़ था' (पृ. सं. 17)

धर्म को लेकर मार्क्सवादी समझ सदा विचारों के घेरे में रही है। इसमें ज्यादातर यही उक्ति प्रचलित रही- "धर्म जनता की अफीम है", सच यह है कि मार्क्सवाद का यह कथन ठीक से उद्धृत ही नहीं किया गया। मार्क्स ने कहा था "धार्मिक पीड़ा वास्तविक पीड़ा की अभिव्यक्ति तथा साथ ही साथ वास्तविक पीड़ा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी है। धर्म उत्पीड़ित प्राणी की आह है, एक हृदयहीन दुनिया का वह हृदय है, उसी तरह जिस तरह एक आत्मविहीन स्थिति की वह आत्मा है। वह जनता की अफीम है। (हीगेल के अधिकार संबंधी दर्शक की आलोचना में योगदान की भूमिका 1944)

धर्म को इसी अर्थ में अफीम बताया गया है कि उसमें एक भ्रामक संसार की रचना की उतनी ही सामर्थ्य है जितनी कि अफीम में होती है। एक उत्पीड़ित व्यक्ति के लिए धर्म राहत के लिए पलायन का रास्ता प्रदान करता है। "यह एक हृदयहीन दुनिया का हृदय है, एक आत्माविहीन स्थिति की आत्मा है।" एंगेल्स ने तो इसे एक प्रतिबिंब कहा जिसमें लौकिक शक्तियाँ अलौकिक शक्तियों का रूप धारण कर लेती हैं।

रामेश्वर की चारित्रिक दृढ़ता यह है कि एक शिक्षक होने के नाते जब कोई हिंदू उसके सामने आता है तो वह हिंदुओं की कमियों को गिनवा देते हैं, जब मुसलमान सामने आता है तो मुसलमानों की कमियाँ गिनवा देते हैं। कबीर ऐसे ही निडर थे। हिंदू मुसलमान दोनों की रूढ़ियाँ निडरता से बता देते थे। धुंधलके में साफ दृष्टि से देख पाने वाले मेधावी लोग मुश्किल से मिलते हैं। देखकर निडर होकर, बेलाग कहने वाले और भी मुश्किल से मिलते हैं। अध्यापक रामेश्वर में ये दोनों गुण भरपूर मात्रा में हैं। नैतिक दिवालियापन के शिकार, छल-प्रपंच में लिप्त आत्मप्रवंचना से घिरे लोगों को ऐसे स्वप्नदृष्टा लोग बरदाशत नहीं होते। उनका शिष्य शाहनवाज समझ रहा है कि आज का समय ऐसा नहीं है। "आजकल तो हिंदुओं के सामने मुसलमानों की और मुसलमानों के सामने हिंदुओ की कमियाँ गिनवाने का समय है।" उसे रामेश्वर को लेकर बहुत डर लगता है। उनसे कड़वा नहीं बोलने का अनुरोध किया जाता है क्यों अपने दुश्मनों की संख्या बढ़ाई जाए।

रामेश्वर घबराने वाले नहीं वे अपना दायित्व समझते हैं। उन्होंने कहा "मैं शिक्षक हूँ बेटा। मेरा काम है गलतियाँ बताना। हमारा यह समय तो इसलिए खराब हो गया है कि शिक्षकों ने गलतियाँ बताना बंद कर दिया है। और फिर तुम ही बताओ अगर रमेश का घर गंदा हो रहा है, वहाँ कचरे का ढेर लग रहा है, तो मैं रमेश को बुलाकर उससे कचरा साफ करने को कहूँ या रहीम को बुलाकर उसके साथ बैठकर रमेश के गंदे घर और कचरे की हँसी उड़ाऊँ? जिस पक्ष द्वारा गलती की जा रही है, उसी को तो कहूँगा मैं।"

अपने नाम के आगे सरनेम हटाकर धर्म से मुक्त कर लिया था रामेश्वर ने धर्म से पल्ला छूटा तो किताबें अंग-संग हो गई। "दुनियाभर के दर्शन, विचारों और ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें ही अब उसके लिए धार्मिक पुस्तकें हो गई थीं। उसका अपना एक किताबों से भरा समृद्ध पुस्तकालय था, जिसमें दुनियाभर के दार्शनिकों और विद्वानों की किताबों की भरमार थी।"

शाहनवाज़, रामेश्वर के पुराने मित्र शमीम का बेटा है। शमीम और रामेश्वर एक ही मोहल्ले से थे। तब मुहल्ले धर्म के हिसाब से नहीं बनते थे। परंतु फिर दरारें पड़ने लगी। नब्बे के दशक का शुरुआती साल था, जब पहली बार कस्बे में रामनवमी की शोभायात्रा निकाली जा रही थी। पहले त्योहारों पर इस तरह जलसे-जुलूस नहीं होते थे। जुलूस की खासियत यह हुई कि निकला तो सामान्य ढंग से

किंतु विशेष इलाके में पहुँच कर विचित्र से नारे लगने लगे। "कोई नहीं जानता कि हर दंगे में पहला पत्थर किस दिशा से आता है और कौन चलाता है। मगर यहाँ भी अज्ञात दिशा से एक पत्थर आ गया और उसके बाद पूरा कस्बा पत्थरों और आग के हवाले हो गया। कस्बे ने पहली बार जाना था कि दंगा क्या होता है।" (पृ. सं. 22) उस एक दंगे का प्रभाव सब कुछ अलग-अलग कर गया।

पंकज सुधीर की शोध प्रवृत्ति तथा सत्य की तलाश असंदिग्ध है। बताया गया कि उपन्यास की रचना के लिए उन्होंने लगभग एक सौ ग्रंथों का अध्ययन किया था। अध्ययन एक तरफ होता है। उसकी ग्रहणशीलता और वाज़िब संतुलित उपयोग अलग। यह उनके पक्ष में जाता है। उपन्यास धर्म और धर्म की कट्टरता तथा क्षति पर बल देता है। विभाजन के कारूपिक दृश्य तक सीमित रहने की जगह। जब वह नाथूराम गोडसे, गांधी या जिन्नाह को सामने लाकर खड़ा करते हैं तब जनरल डायर और किसी लार्ड को भी प्रस्तुत करते क्योंकि विभाजन में उनकी भी क्रूर भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उपन्यास की विचार पक्ष के कारण अपनी एक भूमिका तो है ही, रामदेव धुरंधर मॉरीशस से हिंदी लेखक हैं। उनका उपन्यास 'ढलते सूरज की रोशनी' 2019 में ही छप कर आया। प्रबोध सागर इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र है। प्रबोध सागर नायकत्व की चरित्रगत विशेषता को पूरा नहीं करता अलबत्ता वह एक नैतिकता विहीन अनायक है। रामदेव धुरंधर ने संभवत: कटाक्ष के रूप में उसे शिक्षा मंत्री चित्रित किया है। शिक्षा मंत्री से हमारी मुराद संस्कृति, समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों को प्रेरित करता, अपने आचरण से नैतिक इबारत खड़ी करते व्यक्ति की अपेक्षा तो रहेगी ही। प्रचलित कहावत भी है- आँख से अंधा नाम नयनसुख। स्त्री देह के प्रति वह सदा विचलित रहता है। भारत के एक होटल में कर्णिका को देखते ही वह उसे पाने के लिए तत्पर हो जाता है। कर्णिका एक भोजपुरी फिल्म में अभिनेत्री का काम कर चुकी है। कर्णिका की देह पाने के लिए वह अपने मित्र खेदन की मदद लेता है। खेदन क्रूरता से उसका परिचय दे रहा है। "यह मॉरीशस का शिक्षा मंत्री है। नाम है प्रबोध सागर। दो दिन बाद मॉरीशस से इसकी रखैल आने वाली है। नाम है आनी चंद्रन। यह अपनी रखैल को बहुत चाहता है, फिर भी उससे दगा कर रहा है। तुम्हारे लाभ के लिए तुम्हें दोनों के नाम दे रहा हूँ।" खेदन भी दूध का धुला नहीं है। ड्रग्स का बादशाह है। प्रबोध के प्रति जैसी मित्रता निभा रहा है। वह भी इस संवाद से स्पष्ट है। कारोबार प्रबोध का भी कोई विश्वविद्यालय चलाने वाला नहीं था वह भी ड्रग्स का ही धंधा करता था।

आनी जिसे प्रबोध बहुत चाहता था, उसे भी धोखे में रखे हुए था। अपने मंत्रालय में आनी के होने का फायदा उठाकर उसने उसे रखैल बना लिया था। उसे (प्रबोध को) अब से मानो दुर्भाग्य की कलम से लिखकर अपने अंदर के किसी गहन अंधेरे में चिपका लेना पड़ा हो। "अपनी कविता का सम्मोह मुझे शोभा नहीं देता।"

प्रबोध को अब अपनी दुर्गमताओं से बाहर निकलने के उपाय की तलाश थी, परंतु जीवन धारा मुट्ठियों से फिसलती चली जा रही थी। अपने खालीपन की उसकी अनुभूति बहुत ही प्रबल और भयावहता से ओत-प्रोत है।

प्रबोध नायक नहीं, प्रतिनायक के रूप में सामने आता है। वस्तु यदि नायक की कहानी है तो प्रतिनायक की कहानी भी होती है। चाहे अनचाहे वह झाड़ियों में फंसता चला जाता है। जीवन परिस्थितियों में संघर्ष की जगह सरलीकरण का चुनाव कर उसे पथरीला रास्ता चुनना पड़ता है। फिर संभल पाने का अवसर तब मिलता है जब सब कुछ तबाह हो चुका होता है। कोई जन्म से ही अनैतिक, सामाजिक मान्यताओं को तोड़ने वाला, पवित्रता को भंग करने वाला, संस्कृति विहीन नहीं होता। जीवन का टकराव, परिस्थितियाँ, रुकावटें, विरोधाभास उसे ऐसा होने के लिए विवश करते हैं।

समय पाकर आनी की मानसिक स्थिति बदल गई। सोचा कि "प्रबोध ने चोरी की हो, धोखा किया हो, लेकिन आनी को दिया तो मन से, तन से और आत्मा से।" करोड़ों की फैक्ट्री और ज़मीन आनी को देकर कभी जताया तक नहीं।

जब प्रबोध को ही आनी का केस लड़ना था तो आनी ने उसका धन उसी को लौटा देना चाहा। प्रबोध का साफ इनकार था। प्रेम के उद्‌बोधन ने प्रबोध को सतह से ऊपर उठा दिया था। आनी को बरी करवाने में उसने हर तरीके का उपयोग किया। पूरा ज़ोर लगाया और मुक्ति दिलवाई। क्योंकि उसने पुरुष जाति की नीचता को ललकारा था। रामदेव धुरंधर ने डूबते सूर्य की रोशनी की छटा प्रबोध के सिर पर पहचानी। वह छोटेपन से उभर चुका था। क्षत-विक्षत होकर भी उसने एक महिला की जी-जान से मदद की थी। जब उस महिला ने उसे आभार व्यक्त करने के लिए पुकार लिया। वह यहाँ नहीं था। हरिद्‌वार में गंगा को प्रणाम कर रहा था जो कितना कुछ बहा ले जाती है। नदी से मैत्री और एकता महसूस की जा सकती है। मोबाइल को छूए जाने सा। जिससे आनी से बात हो रही थी। मुक्त होना नहीं है क्या? खंड-खंड चित्र जो अंत: विरोध में रहा। 'ढलते सूरज की रोशनी' भारत और मॉरीशस दो देशों की जमीन को छूती है। आरंभ और अंत: भारत के मुंबई और हरिद्‌वार में हैं। अनैतिक कर्मों के अंधकार से अपने होने तक का सफर जिसमें समकालीन समाज की सामाजिक तथा राजनैतिक स्थितियों का उत्खनन करते हुए निजी स्वार्थ तथा ताकत का वर्चस्व झाँकता है। मुंबई में सुंदर अभिनेत्री कर्णिका के रूप में फिल्मी चकाचौंध और असफलता का दुख लेकर देहजीवी होकर 'एड्स' बाँट रही है। मॉरीशस में राजनीति भ्रष्टाचरण को गले लगाकर अनाप-शनाप धंधों से राजनीति में मुर्दाखोर इबारत लिख रहे हैं। पतनशीलता की इंतहा है। कथा गिरने-उठने की चारित्रिक बाध्यता में बँधी है। गिर जाना पतनशीलता है परंतु किसी का जीवन बचाना ऊपर उठना है, जिसे आपने बेशक तन-मन से चाहा हो।

हम 2019 में जीवन जी रहे हैं। जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी को, आज से सौ साल पहले, साम्राज्यवादी सरकार ने जिस नरसंहार को अंजाम दिया, उसे कोई भी भारतीय भूल नहीं सकता। साहित्य ने सदा हमारे ऐतिहासिक जख्मों, हमारी स्मृति के पुर्नजागरण का काम भी किया है। लेखक प्रोफेसर रजनीश धवन का उपन्यास 'अमृतसर 1919' जलियाँवाला बाग नरसंहार की पृष्ठभूमि पर ही रचा गया है।

उपन्यास के पात्र कथा का जरिया मात्र हैं। कोई नायक-नायिका नहीं। पवित्र ऐतिहासिक नगर अमृतसर ही नायक-नायिका हैं। उपन्यासकार का कथन भी है, "मैंने शुरू में ही कहा था ना कि इस कथा का काई नायक नहीं। अमृतसर शहर ही इसका नायक भी है और नायिका भी। बस कुछ फिजा ही ऐसी थी उन दिनों कि कब किसके तरकश से कौन-सा तीर निकल आए, यह जानना मेरे लिए भी कठिन था।" (अमृतसर 1919, पृ. सं. 53)

उपन्यास का आरंभ ही अमृतसर की ऐतिहासिक खूबियों से हुआ है- "यूँ तो अमृतसर तकरीबन साढ़े चार सौ साल पुराना शहर है, परंतु जिस धरती पर यह शहर स्थित है, उस धरती से मेरा रिश्ता कुछ सदियों का नहीं, अपितु कई युगों का हैं। मैं यहाँ तब से हूँ जब रावी और व्यास को क्रमश: इरावती और विपाशा कहकर पुकारा जाता था। मैंने यहाँ लव-कुश को खेलते देखा है। माता सीता को धरती में समाते देखा है, पांडवों को विचरते देखा है, सिकंदर को घायल होते देखा है, अल्तमश के आगमन को देखा है, हुमायुं को भागते देखा है, जहाँगीर के काफिलों को देखा है, गुरु अर्जुन देव को 'आदि ग्रंथ' का संकलन करते देखा है और अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्‌ध आजादी का बिगुल बजते भी सुना है।"

अमृतसर के स्वाभिमानी लोग अंधेरे से उजाले की ओर, गुलामी से आजादी की ओर जाना चाहते हैं। "फरवरी के महीने में ब्रिटिश सरकार ने रॉलेट एक्ट नाम का कानून पास किया था और तभी से भारत के अलग-अलग हिस्सों में इस कानून के विरुद्‌ध धरने प्रदर्शन हो रहे थे। इस विरोध की आँच से अमृतसर भी अछूता नही था। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि अमृतसर के गर्भ में एक दावानल दहक रहा था जिसकी तपिश को अशोक के पेड़ों से घिरा हुआ और ओस की बूंदों में नहाया हुआ डिप्टी कमिश्नर के आलीशान बंगले का लॉन भी कम नहीं कर पा रहा था।" गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रॉलेट एक्ट के विरोध में 30 मार्च को संपूर्ण भारत बंद का आह्‌वान कर चुकी थी। कुछ

कारणों से कांग्रेस नेतृत्व को हड़ताल की तारीख बदल कर 6 अप्रैल करनी पड़ी।

अक्सर बताया जाता है कि विश्व कला का इतिहास युद्धों पर कलात्मक अंकन का दीर्घ इतिहास है। तब परख करने वाले विद्वान कला में अपने समय की चुनौतियाँ, वैचारिकता की कला में परख करते हैं। तब यह भी सोचा जाता है कि कलाकार नए विचार को दर्ज कर कितना ग्राह्य बना रहा है या कितना अपनी ही सीमा का अतिक्रमण नहीं कर पा रहा। उपन्यासकार भी कलम और शब्द के माध्यम से दिन अंकित करता है जिसके पीछे उसकी यथार्थपरक दृष्टि काम कर रही होती है। 'अमृतसर 1919' में रजनीश धवन एक युद्ध को अंकित कर रहे हैं, जो अमृतसर की आम जनता से निकलकर आए लोगों के लिए समाज, जीवन पर लगाए प्रतिबंधों को तोड़ने का प्रयत्न है, फिरंगी सरकार के लिए दमन और सिर उठाने वालों के सिर कुचल देने का है। क्योंकि वे 1857 का विद्रोह देख चुके थे और 1857 के मिले सबक से भयभीत थे। जुल्म अवाम पर तब भी कम नहीं हुआ था। उपन्यास में डायर की प्रतिक्रिया बहुत कुछ रही है- "डायर कुछ देर के लिए खामोश होकर बढ़ गया। अंग्रेजों पर इस तरह का हमला उसने भारत प्रवास के दौरान न सुना था, न देखा था। भारत आने से पहले मिलिट्री स्कूल में उसने 1857 की फौजी बगावत के बारे में जरूर पढ़ा था और यह भी सीखा था कि उस बगावत को कुचलने के लिए उस समय की ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने कैसे बर्बर तरीके अपनाए थे। बिना मुकदमा चलाए हजारों को फाँसी पर लटका दिया था। तोपों के मुँह के आगे बाँध कर उड़ा दिया। बागियों द्वारा मारे गए हर अंग्रेज मर्द और औरत के बदले पचासों हिंदुस्तानियों को मारा गया।" (अमृतसर 1919 पृ. सं. 139)

"30 मार्च 1919 की सुबह की जो हवा अमृतसर शहर में चल रही थी, उस हवा की गंध माइल्स अरविंग को बेचैन कर रही थी"। माइल्स इरविंग अमृतसर का डिप्टी कमिश्नर बेचैन इसलिए हो रहा था कि शहर में पसरा सन्नाटा जनता के विरोध का ही प्रतिबिंब था बच्चे तक "रोडी बच्चा! हाय! हाय!" के नारों से स्वागत कर रहे थे। गुरुद्वारे के पास खड़े साधारण लोग 'महात्मा गांधी जिंदाबाद', 'हिंदू मुस्लिम एकता जिंदाबाद' के नारे बुलंद कर रहे थे।

'7 अप्रैल 1919 को अमृतसर में न तो युद्ध का खतरा था और न ही लंदन से कोई अति विशिष्ट व्यक्ति आया था। फिर इतनी बड़ी फौज। वह भी शहर के बीचों-बीच तैनात करने का मतलब दबाव और आतंक ही था।

कर्नल रिनाल्ड डायर के हवाले अमृतसर करने से पूर्व ही मार्शल लॉ लगा दिया गया। पब्लिक मीटिंग पर ही नहीं अन्य कई तरह की पाबंदियाँ डायर ने लगा दीं। आठ बजे के बाद कर्फ्यू। जनता में संदेश चला कि फिरंगियों के जुल्म का जवाब देना है तो जलियाँवाला बाग पहुँचों।

बैसाखी का पावन दिन था जब हजूम का हजूम जलियाँवाला बाग में पहुँच चुका था। नेता अंहिसात्मक सत्याग्रह पर बल दे रहे थे। डायर ने कमांड दी। सभी सैनिको की बंदूकें भीड़ की ओर तन गईं। अगली कमांड थी। 'एम ट् द राइट, शूट टू किल'।

"राइफलों के नीचे जमीन पर गोलियों के खोलों के ढेर बन चुके थे। जनरल की खून की प्यास बुझी नहीं थी। 'डेढ़ हजार से ज्यादा गोलियां चलाई जा चुकी थीं'-- लोगों के शरीर का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था, जहाँ उन गोलियों ने अपनी खूनी छाप न छोड़ी हो--। डायर उस नरसंहार को देखकर मुस्कुराता रहा।"

'अमृतसर 1919', जलियाँवाला बाग के नरसंहार का जिक्र अनेक उपन्यासों में है। परंतु जिस विस्तार से गोरी सरकार के जुल्म और स्वाभिमानी अवाम का प्रतिरोध यहाँ दर्ज है, वह महत्वपूर्ण है। कथाकार ने सांस्कृतिक ढाँचे को भी बनाए रखा। दुख, अप्रसन्नता और क्षोभ में भी लोगों का जज्बा प्रभावशाली है। उपन्यास में जितना ध्यान दस्तावेजीकरण पर है उतना कथा पर नहीं।

प्रवासी कथाकार, हंसा दीप का उपन्यास 'कुबेर' हमसे एक ऐसे व्यक्ति की जीवन गाथा साझा कर रहा है जिसकी यात्रा सबसे निचले स्तर से आरंभ हुई परंतु समय पाकर धीरे-धीरे शिखर छूने लगी, उतार-चढ़ाव के बावजूद। कहावत है "परसू परसा परसराम इस जीवन के तीन नाम" यही कुबेर उपन्यास

के नायक के साथ घटित होता है। वह 'छात्र' से 'डी पी' और 'डी पी' से 'कुबेर' बना। भारत से अमरीका तक की यात्रा में और फिर वहाँ संघर्ष है, सफलता, विफलता है, दर्द है, खुशी है और है जीवन में कुछ कर गुजरने का जज्बा। बढ़ते हुए अनेक स्थलों पर पाठक को अपनी ही कहानी लग सकती है क्योंकि डॉ. हंसा दीप वर्णन में जीवन की धड़कनों के पास रहती हैं। जिसे उपन्यासकार जगदीश चंद्र कहा करते थे, 'आई लिव विद माई करेक्टर' (मैं अपने चरित्रों के साथ रहता हूँ।)

निम्न वर्ग के परिवारों में पढ़ाई के लिए खर्च फालतू समझा जाता है क्योंकि पेट भरने का पैसा मुश्किल से जुटाया जाता है। 'कुबेर' उपन्यास का आरंभ माँ की इसी डांट से आरंभ होता है "कुबेर का खजाना नहीं है मेरे पास जो हर वक्त पैसे माँगते रहते हो।"

बालक धन्नू को माँ की इस डांट से चुप रह जाना पड़ा। बता भी नहीं पाया कि पैसे क्यों चाहिए। उसे तो कॉपी-पेंसिल के लिए कुछ पैसों की जरूरत थी। चुप इसलिए रहा कि माँ के पास पैसे होंगे नहीं। परिवार भारत के हजारों उन साधारण तबके के परिवारों में से था जो एक एक वक्त खाते हैं दूसरे वक्त का पता नहीं होता। तभी सच करने की सोची- "माँ के लिए एक दिन यह खजाना हासिल करके रहूँगा मैं।"

बचपन की ऐसी सोच सदा परवान नहीं होती परंतु उसको सफलता मिली। "स्कूल को छोड़ा, घर को छोड़ा, गाँव को छोड़ा, शहर को छोड़ा, देश को छोड़ा और अंततः इस भागमभाग को पीछे छोड़ता हुआ यह बालक धन्नू आज न्यूयार्क और लास वेगास का जाना पहचाना चेहरा है।"

भारत और न्यूयार्क के बीच गहरा संबंध सूत्र है मिशन, सेवा का मिशन। जब कोई तन-मन से किसी मिशन के साथ जुड़ जाता है तब तमाम छोटी-बड़ी परेशानियों का होना नहीं के बराबर हो जाता है घर से भागकर उसने गुप्ता जी के ढाबे पर बर्तन साफ किए 'जीवन ज्योत' मिशन के संचालक दादा से जुड़ा। धन्नू के ऊपर उठने में संयोग की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। दादा से जुड़ाव भी एक संयोग ही था। गुप्ता जी की उदारता भी सहृदयता उसके जीवन का बड़ा हिस्सा रही। दादा के मिशन से अंतरंग जुड़ाव, दुखी लोगों के प्रति संवेदना और समर्पण तभी संभव हो पाया। मिशनरी जीवन पग-पग पर परीक्षा लेता है। आपके पास पलायन का विकल्प सदा रहता है जो डी.पी के पास भी था परंतु उसने दादा की जलायी ज्योति से अपनी नजर नहीं चुराई। पंकज चतुर्वेदी की कविता की पंक्ति है-

फिर भी मनुष्य की राह
देखता रहेगा
मनुष्य ही

जीवन ज्योति के दादा के साथ उनके इलाज के लिए न्यूयार्क जाना संयोग का हिस्सा हो सकता है परंतु उनके देहांत के बाद छोटे दादा की भूमिका का निर्वाह संयोग नहीं था। यहाँ भी पीठ दिखाने का अवसर था और वह भौतिकवादी शहर न्यूयार्क में था। जहाँ धन बनाया और बचाया जाता है। यही आम रडेंसी होती है, महानगरों में। न्यूयार्क में जिंदगी दौड़ती है। बहुत चल लिया था, अब दौड़ना था उसे, जब वहाँ लोगों के साथ कामकाजी रिश्ते बन रहे थे तब दादा की बात याद रही- सब अपने हैं, सबका दुख अपना है। "विश्व हमारा परिवार है। अपने परिवार की तरह सबकी चिंता करो।" भारत यही है। यही सीख दी जाती रही है सदा। स्वामी विवेकानंद की आवाज हिंदुत्व और राष्ट्रीयता के टेक्सचर से बनी थी। उनका देखा हिंदू भारत महान था परंतु यथार्थ से दूर था। उनकी धर्म प्यास रामकृष्ण परमहंस के पास जाकर शांत हुई थी। उसी भारत की पुकार को पाना बेशक आज भी कठिन हो गया है।

जॉन के साथ जुड़कर उसने रियल इस्टेट का कारोबार समझा और संभाला। भारतीय परिस्थितियों में यह काम बीस प्रतिशत झूठ और दस प्रतिशत मक्कारी पर आधारित था। इसलिए डी पी जैसे संवेदनशील व्यक्ति का जुड़ना कुछ अजीब लगता है। हंसा दीप प्रवास चित्रण में और भी सशक्त हैं। कनाडा, अमरीका की सीमा का वातवरण भला लगा। अपने-अपने पासपोर्ट दिखाकर लोग एक से दूसरे देश की सीमा में प्रवेश कर सकते हैं। "काश! दुनिया का हर देश अपनी सीमा को ऐसी सीमा बना दे, निर्बाध

और निशक्य, आपसी प्यार और भरोसे के बीज बोते हुए।" वहाँ नए जीवन मूल्य थे। विकास की दौड़, बाजार की ताकत, तकनीक और मानवीय स्पर्श का संबंध। धन्नू भूला नहीं कि पेट की भूख के सामने हर भूख छोटी लगती है। उपन्यास में कई बातें सूत्रात्मक हैं। जैसे स्पर्धाओं के ऐन बीच तनाव को शीतलता देता- "कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता, ना ही किसी काम को करने से कोई आदमी छोटा होता है, बल्कि वह उदाहरण पेश करता है, दुनिया के सामने अपनी मेहनत का, अपनी खुद्दारी का।" उपन्यास का धीरय युवा हो रहा है डी.पी. समझ, अनुभव, निष्ठा को तकनीकी सोपान दे रहा है। हंसा दीप के उपन्यास 'कुबेर' की पठनीयता को प्रशंसा मिलती ही है।

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को बराबरी का दर्जा देने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता उसके आत्मसम्मान को न्यूनतम करने का प्रयत्न निरंतर होता रहा है। स्त्री को लैंगिक प्राणी से इतर देखने की कोशिशे तो दाल में नमक बराबर ही हुई हैं। वर्जनाएँ इतनी हैं कि अक्सर स्त्री को अपना अस्तित्व ही भूल जाता है फिर वह तयशुदा मानदंडों के मुताबिक खुद को ढालने लगती है। स्त्री को उसका आत्मसम्मान दिलाने के लिए अनेक रचनाकारों ने रचानात्मक स्तर पर प्रयत्न किए हैं। सुदर्शन प्रियदर्शिनी का उपन्यास 'पारो उत्तरकथा' उपन्यास देवदास को नहीं, पारो को केंद्र में रखने की कोशिश है।

सुदर्शन प्रियदर्शिनी भी प्रवासी कथाकार हैं। 'जालाक', 'अब के बिछड़े', 'न भेज्यों बिदेश', 'रेत के घर' जैसी पुस्तकों के बाद 'पारो-उत्तरकथा' की रचना हुई है, जिसकी घोषणात्मक पंक्ति है- प्रणय, प्राण और प्रारब्ध- एक दस्तावेजीय अवलोकन।

शरत बाबू की अति लोकप्रिय रचना 'देवदास' सन् 1900 में हुई जिसका प्रकाशन सन् 1917 में हुआ। 100 वर्ष बाद सुदर्शन जी को उत्तरकथा लिखने की जरूरत महसूस हुई। पारो को केंद्र में रखते हुए वो पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की दशा का बयान करता है। तभी वह प्रश्न उठा पाई है- "क्यों आज तक केवल स्त्री को ही घुटना पड़ता है। पुरुष तो मुँह खोलकर अपनी स्थिति, अपनी विवशता पत्नी के समक्ष एक चुनौती की तरह उतना नहीं रहता। सत्य को प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर धारण करता ही है, जो प्रेम की आँच से उजाला पाता है।"

सुदर्शन प्रियदर्शिनी 'पारो- उत्तरकथा' उपन्यास में एक तरफ प्रेम के दीप की लौ को हथेली की ओट से बचाती है दूसरी तरफ सामंती रुतबे और खोखलेपन की धज्जियाँ उड़ा देती है। राय साहब पारो से कहते हैं- तुम इस हवेली की ठकुराइन हो, हमने तुम्हारी कीमत दी है और तुम्हें ऊँची जगह दी है। तुम्हें इतनी बड़ी हवेली की एकमात्र मालकिन बनाया है। तुम कहीं स्वप्न में भी सोच नहीं सकती थी कि तुम्हें यह सब ऐश्वर्य सुख और नौकर-चाकर मिलेंगे।

पारो को चोट पहुँची- वह एक खरीदी हुई गुड़िया है और एक किराए की आया है, बाकी सब आडंबर है। वेदनाएँ पुरुष के वर्चस्व के नीचे गौण हो जाती हैं।

यह उपन्यास शरत बाबू के देवदास का आधार ही उपयोग में लाता है। प्रेम के उसी खंभे को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए अपनी मौलिक उद्भावना की महक संजोता है। सौ साल पुरानी रचना को केवल साफ और पेंट ही नहीं, बदले दौर के प्रकाश से उसे नहला दिया है। सूरत न बदलते हुए सीरत बदलने की सफल कोशिश की है जिसके लिए कंचन, महेल, राधा, रानी माँ को जीवन दान दिया है। सुदर्शन जी को एक कठिन पैटर्ल से गुजरना था। मकसद स्त्री की दशा, अनुभव का कड़वापन और संघर्ष का चित्रांकन था। प्रेम की वेदना को तो सभी पहले से जानते थे। यह कृति पारो के जीवन की पुनर्रचना है।

पति पराए मर्द का अस्तित्व तक सह नहीं पा रहा। पुरुष होने का दंभ भी है।

माँ पारो की पक्षधर है- गरीब होने से क्या मर्यादा कम हो जाती है स्त्री की। तुम जानते हो उसने तुम्हारे ऐश्वर्य का मोह कभी नहीं किया। माँ उसे एक स्वार्थी पति, सामाजिक प्राणी, एक जमींदार के रूप में आंक रही है- जो केवल अपने ही घेरे में ताकता है। वह माँ होने के साथ एक औरत भी है, जिसने उम्रभर जमींदारों के तेवर देखें हैं। चाहती है कि पार्वती के साथ अन्याय न हो, अपने जीवन में

सामंतशाही का दबाव झेला है। "कैसे इतने सालों से वह इन दीवारों के बीच इस ऊँची महलनुमा कोठी में एक अतृप्त आत्मा सी भटकती रही है। अंदर से ध्वस्त लेकिन किसी दुर्ग के स्तूप की तरह सिर निकाले खड़ी हुई अपने-आप को संभालती हुई, लड़ती हुई आज तक पिंजरे में फड़फड़ा रही है।"

सुदर्शन स्त्री उपेक्षिता का दो-दो पीढ़ियों का आख्यान रच रही हैं। देव की मृत्यु हो चुकी है परंतु पूरी कथा में पृष्ठभूमि में हाजिर है और संवाद रचा रहा है। कथा प्रत्येक पात्र का जीवन दर्शन भी बन रही है। देव मृत्यु से पूर्व पारो के यहाँ वचन निर्वाह के लिए आया। उसकी नजर में जब मनुष्य निर्धारित मार्ग पर चलकर अंतिम पड़ाव पर पहुँच जाता है तो उसकी मुक्ति हो जाती है। चंद्रमुखी को उसने पावनमूर्ति समझा अन्य आम वेश्याओं से बिल्कुल अलग परंतु वह न तो पारो थी, न पारो हो सकती थी। पारो का दर्शन है प्यार केवल मिलन का नाम नहीं है। देव, पारो, चंद्रमुखी का त्रिकोण प्रेम की अग्नि भीतर लिए, धुआँ पीते हुए जी रहा है। जहाँ देह का मूल्य रख सकता है और रखता आया है पर औरत अपने आप अपनी पीड़ा को दांतों तले चबाकर अंदर ही अंदर अपनी सिसकियों में गटक लेती है।

(पारो-उत्तरकथा, पृ. सं. 172)

रानी माँ यहाँ कंचन के दुख से आहत है। उस के साथ अन्याय हुआ है। "इतनी छोटी सी बच्ची को एक बेमेल खूँटे से बाँध देना कहाँ की अक्लमंदी थी। मालूम नहीं उस समय क्या सोचा सबने, उसमें मेरी आपकी सोच भी शामिल रही होगी कि अधखिली कली के पंख नोच लिए गए।"

प्रेमचंद के उपन्यास 'सेवा सदन' में दहेज नहीं जुटा पाने के कारण सुमन को अधिक उम्र के दुहान पुरुष से बाँध दिया गया था।

'पारो-उत्तरकथा' की कंचन अपना दुख अपने भीतर ही पीने की शहादत को जी रही है। "वह अंदर ही अंदर घुटकर मर जाएगी पर अपना घाव कभी नहीं दिखाएगी। यह उसके बचपन की आदत है कहीं चोट लग जाती तो उसका उपचार करने की बजाए उसको छिपाती फिरती थी। जैसे चोट लगना उसी की गलती है।"

सुदर्शन प्रियदर्शनी को नारी जाति की एक ही दिनचर्या से ऊब होती है। "सभी नारी जाति की एक ही दिनचर्या है घर, पति और बच्चे।" अज्ञेय की कहानी 'रोज' में यही उकताहट है कि हर रोज यही कुछ होता है। जर्मेन ग्रियर ने स्त्री पक्ष से बड़ा सवाल पुरुष के दंभ की तरफ उठाया था। "तुम लोग हमसे इतनी घृणा क्यों करते हो?" सुदर्शन कहती है- "पुरुषों के सौ गुनाह माफ" और स्त्री के लिए एक गुनाह नरक। यही रीत है हमारे समाज की। उपन्यास दिलचस्प तो है ही। स्त्री की दशा भी बयान कर रहा है।

भौतिक जीवन में एक मध्यवर्गीय व्यक्ति कई बार घोर वैयक्तिक होने लगता है। परिवेश से कट जाता है और भीतर की जिंदगी जीने लगता है। यहीं से जीवन की सार्थकता का सवाल जन्म लेता है। कभी मिथकों के भीतर उतरने की इच्छा और कभी पुराण कथाओं का सहारा। कभी धर्म का सहारा खोजना अनिवार्य हो जाता है। परंतु सत्ता धर्म के भीतरी संबंध भी होते हैं। राजा के देवी स्वरूप का प्रचलन साम्रज्यशाही में रहा है। सुरेश हंस अपने उपन्यास 'मेमना' में अधिपत्य के खंजर पर सवाल उठा रहे हैं। 'मेमना' हमारे लिए निरीह जानवर है परंतु सुरेश इसके लिए महज एक निरीह जानवर ही नहीं है वह प्रतीक है उस भोज का जो हर रोज तथाकथित देवताओं (सत्ता भोगियों) के भोज का हिस्सा बनते हैं। सत्ताएँ राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक या पारिवारिक हो सकती हैं। सभी सत्ताएँ अपने स्वभाव (अधिपत्यता) का निर्वहन करती हुई क्रूरता के किवाड़ खोलती हैं।

उपन्यास में कहा गया- यह देश परिधानों का गुलाम है। टोपी और दाढ़ी से वर्ग और संप्रदाय बदल जाते हैं। आश्रम के कार्यकर्ता ने विष्णु को समझा दिया था। विष्णु प्रवचन के नाम पर ईश्वर का नाम भुनाना जान चुका था। रामेश्वर जो कक्षा पाँच का बच्चा था हवन करवाने में सिद्धहस्त हो चुका था अब सुर लगाकर मुग्ध करने लगा था। रामेश्वर की पढ़ाई छूटती जा रही थी। आश्रम रामेश्वर के नाम पर दाँव खेलना चाहता है पिता को बताया गया कि प्रश्न

तो धर्म की रक्षा और अस्मिता का है। रामेश्वर के लिए उपन्यासकार ने कहा- "एक बच्चे की कहानी नहीं है, यह उन तमाम बच्चों की कहानी है जिनके लिए रास्ते अपनी गति से चलते हैं लेकिन कहीं पहुँचते नहीं। उनकी पीड़ा का संसार जितना व्यापक है उतना ही अभिव्यक्ति का मार्ग संकुचित है।"

रामेश्वर आश्रम की आफत और पिता के बीच भयभीत सा नजर आता है। "उसे किस जंजाल में फंसाया जा रहा है, वह कुछ नहीं जानता। आधी बातें उसे समझ आ रही थी, आधी नहीं।.... तो क्या अब उसे यहीं रहना होगा? माँ का आँसुओं से भीगा चेहरा रामेश्वर की आँखों के आगे तैर आया।"

इस संवाद से आश्रम, आश्रम के संबंध के बारे में काफी कुछ पता चल सकता है, रक्षक तो समाज को संभालने वाले हैं उनके बारे में भी- "अरे महात्मा जी, डॉक्टर और पुलिस तो सबसे अधिक बिकाऊ प्रोडक्ट हैं। आपको तो मालूम है। हम वो व्यापारी हैं, जो घाटे का सौदा न करते हैं, न करने देते हैं। काहे दुबले हुए जा रहे हैं। सरकार अपनी है। लोग अपने। माया अपनी। फिर काहे सोच में डूबे हो।" ('मेमना' पृ. सं. 58) रामेश्वर जैसे बच्चे को अवतार घोषित किया जा रहा है।

उपन्यासकार ने सत्ता का पाखंड उजागर किया है। स्त्री संवेदना और कोमल मन को समझाया है। बिंद्मा में साहस है। जब महात्मा कहते हैं- इन वस्त्रों की अपनी मर्यादा है। तब वह कहती है- तो फिर उतार दीजिए न स्वामी जी ये बनावटी वस्त्र जो हमें सबसे खूबसूरत बंधन में बाँधने से रोकते हैं। चलिए मैं भस्म होने को तैयार हूँ। उपन्यास का यह सवाल आज जरूरी सवाल है। सब लोग धर्मों को लेकर इतने लड़ते क्यूँ हैं? सुरेश हंस रोचकता बनाए रखते हैं।

अल्पना मिश्र का कथाकार यथार्थपरक दृष्टि रखता है। अंधियारे तलछट में चमका उपन्यास 'छावनी' में संग्रह की कहानियों में इस बात के पर्याप्त सबूत मिलते हैं। उनके लिए यथार्थ बोध सामने नज़र आती मेज़ नहीं है। अंतर्भेदनी दृष्टि मेज़ के पीछे बंद दराज़ और उसके अंधेरे में सोची चीजों को भी तलाश लेती है। बूढ़ा किसान हिम्मत करके कर रहा है- "ये विद्वानों का षड्यंत्र है। वे नहीं चाहते कि हमारे बच्चे पढ़े-लिखें, इसलिए बात-बात पर उन्हें दंड देते हैं। दंड भी कैसा? कि वे कहीं दूर भटकते फिरे, अपने गाँव समाज से कट जाएँ और कोई योग्यता हासिल न कर पाएँ। फिर कैसा भविष्य बनेगा इस देश का?" दिकू का मतलब ही 'दिक्कत' पैदा करने वाला।

फंतासी में भी गाँव का आर्तनाद है-

दिकू सारे जंगल खा जाएँगे।
सारी बस्तियाँ उजाड़ डालेंगें
दिकू उठाते जा रहे हैं हमारे बच्चे
हमारी धरती का गर्भ....हमारी औरतों का गर्भ लूटते जा रहे हैं...
दिकू नए-नए तरह के हथियार लिए आ रहे हैं- फौज, पुलिस, गुंडा नेता...।
न जाने कितने रूपों में दिवू हमें बेदखल करने बढ़े आ रहे हैं। *(अस्थि फूल, पृ. सं. 17)*

यहाँ भी भविष्य की चिंता है। पलायन नहीं।

राजेश जोशी की एक कविता है - 'गांधी की घड़ी।' इस प्रकार है-

गांधी तुम्हारी घड़ी बंद हो गई है।

हम एक ऐसे समय के नागरिक हैं, जिसमें न स्मृतियाँ बची हैं/ न स्वप्न/ मुट्ठी भर नमक से समुद्र में उठे ज्वार की लहरें/ वापस लौट चुकी हैं/ रेत पर सिर्फ मरी हुई मछलियाँ घोंघे और केकड़े पड़े हैं/ और हवा में दुर्गंध भर गई है। तुम्हारी ऐनक के काँच धुंधले हो गए हैं/ और उनके आर-पार दिखना बंद हो चुका है/ लोकतंत्र एक प्रहसन में बदल रहा है/ जिसमें विदूषक किसी तानाशाह की मिमिक्री कर रहा है। *'(तद्भव-40)'*

उपन्यास 'अस्थि फूल' की कथा जिस राजनैतिक मरकमे की गोद में है। यह झारखंड बनने के दिन हैं। झामुमों की रैली हो रही है। 1990 का सूर्य उदय हो चुका है। ताप जरा प्रखर है। विदेशी कंपनियों के लिए यह लूटने का सुनहरा अवसर। जश्खेज जमीन। अयोध्या

हलचलों से भर गया। राम लला के नाम पर भव्य मंदिर की पुकार। बांबे स्टाक एक्सचेंज की बत्ती बुझ गई। शेयर मार्केट अंधेरे मे डूब गई। नायक/खलनायक की तरह नाम उभरा दृष्टि मेहता अनेक लोग इसी लुटिया को लेकर परेशान/क्षुब्ध।

बुआ को घर में लकड़ी लाने की दिक्कत हो रही है। उनका जंगल उनका नहीं रहा। "एक तो जब से सरकार ने जंगल पर से हमारा अधिकार खत्म कर दिया है, लकड़ी तोड़ना मुश्किल हो गया है। जो कोई एक टहनी भी काटता दिख जाए तो सीधा हवालात में। सरकार कौन देखने आती है, मगर ठेकेदार के आदमी खबर कर देते हैं। जो एक बार हवालात पहुँच गया उसके निकलने की सूरत नज़र नहीं आती। हम गरीबों के वश का कहाँ है इतनी भाग-दौड़।"

डॉ. राजेंद्र रोकी ने कृष्णा जी के रचनाकर्म पर बात करते हुए उनकी कहानी 'यारों के यार' पर भी बात की। इस कहानी पर लगे अश्लीलता के आरोप का खंडन करते हुए उसकी तुलना मृदुला गर्ग के उपन्यास 'चितकोबरा' के अंश से की। हाल में वहाँ विद्यार्थी भी मौजूद थे। उन्हें संबोधित करते हुए डॉ. रोकी ने कहा- "उपन्यास या कहानी का कोई हिस्सा अश्लील है या नहीं इसे जानने का आसान तरीका है कि उपन्यास या कहानी को उस अंश के बिना पढ़ कर देखें। यदि उस विशेष अंश के बिना कथा की मूल चेतना पर कोई फर्क नहीं पड़ता तो वह अश्लील है फालतू है। उसके बिना भी कथा का प्रभाव जरा भी नहीं घटता।"

'अस्थि फूल' उपन्यास गंभीर प्रश्न उठाने वाला उपन्यास है। व्यवस्था का रूझान गरीबी हटाने में नहीं गरीबी छुपाने में है। हम नकली समृद्धि दिखाना चाहते हैं जबकि झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वालों की संख्या पिछले तीन दशकों में ही दोगुनी हो गई। सरकारी आँकड़ों में 2011 में मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दिल्ली में शहरी आबादी का क्रमशः 41 प्रतिशत, 29 प्रतिशत, 28 प्रतिशत, 15 प्रतिशत झुग्गी में रहता है। जहाँ औसतन 5 लोग एक ही कमरे में रहते हैं। सिर्फ दिल्ली में दस लाख लोग झुग्गियों में रह रहे हैं। अल्पना मिश्र ने एक अध्याय दिल्ली केंद्रित रखा है। जहाँ बीजू और सृजन महतो हैं। एक कथन है वहाँ, "मुझे दुख से कहना पड़ रहा है आज के संसद में एक सौ पचास मेंबर गुनाहगार हैं।" आज सर्वोच्च न्यायालय इसी पर सवाल उठा रहा है। पलाश, द्वारा पिंकी की आत्मा की कुश्लाहट पन्नों में दबी नहीं रह जाती हमारा पीछा करती है। बड़ा बाजार अपने दांत लगाए बैठा है।

विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'खिलेगा तो देखेंगे' का दूसरा पेपरबैक संस्करण 2019 में ही छपकर आया। उनका उपन्यास 'नौकर की कमीज' तथा 'खिलेगा तो देखेंगे' की भाषा की संरचना, काव्यात्मक लय तथा पेशकश के कारण पहले ही खूब प्रशंसा मिल चुकी है, परंतु इसके साथ ही एक प्रश्न उठता रहा कि क्या गद्य में सुंदर काव्यात्मक लय के कारण ही किसी उपन्यास को अपने पाठ का हिस्सा बनाना चाहिए? क्या जीवन संघर्ष जीवन यथार्थ के ऊपर काव्यात्मक लय को जगह दी जाए पुष्पपाल सिंह ने 'हिंदी उपन्यासः नब्बे के बाद का परिदृश्य' लेख में भी यही प्रश्न उठाया। 'चर्चित उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' भी बहुप्रशंसित तथा अतिप्रतिष्ठित होने के कारण महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी है। इस उपन्यास की प्रशंसा इसलिए अधिक हुई है कि इसमें काव्यात्मक शैली, लय और बनावट में एक मध्यवर्गीय अध्यापक की संघर्ष कथा और आशा-आकांक्षाओं का चित्रण है। इसके पूर्व भी उनके उपन्यास 'नौकर की कमीज' तथा 'खिलेगा तो देखेंगे' को भरपूर प्रशंसा मिली थी। इन उपन्यासों को भी काव्यात्मक लय और प्रस्तुति के लिए सराहना मिली भी। किंतु इन उपन्यासों को पढ़कर मुझे हमेशा यह प्रश्न कुरेदता रहा कि पाठक काव्यात्मक लय ढूँढ़ने के लिए उपन्यास के पास क्यों जाए?

जिस गाँव से मूल कथा संबंधित है उसकी दशा उपन्यास की पहली पंक्तियों से ही स्पष्ट है- "गाँव में केवल दो पक्के मकान थे एक ग्राम सेवक का क्वार्टर और दूसरा पुलिस थाना।" गाँव की दशा का जिक्र भी काव्यपूर्ण है- गाँव के रात और दिन के सन्नाटे में भी केवल उन्नीस-बीस का फर्क था। रात में जिवराखन की दुकान का जलता पेट्रोमेक्स शहर

की तरह उजाला देता। पर गाँव के पूरे अंधेरे से गैसबत्ती के उजाले को घटा दिया जाए तब भी नीचे अंधेरे की एक विशाल पूरी दुनिया बची होती। दुनिया जान बचायी हुई-सी बची थी। कभी लगता एक आदमी की तरह डरकर बची हुई जान थी।

फिर आगे पृष्ठ सं. 69 पर दर्ज है- "पुलिस इस गाँव में गश्त नहीं लगाती। थाने में यह गाँव बेचिराग और वीरान दर्ज था। बेचिराग गाँव में पुलिस गश्त नहीं लगाती। झगड़ालू गाँव दर्ज होता तो महीने दो महीने में गश्त लगाती। गश्त लगाते हुए गाड़ी में साग-सब्जी दिख जाती तो रखवा लेता इससे अधिक वह क्या करता। अधिक कुछ होता तो किसी चाय की दुकान में भुजिया खाकर चाय पी लेता और पान के ठेले में पान खा लेता। पैसा देना वह भूल जाता।"

रिश्वत पुलिस का अधिकार समझा गया है। छोटा गाँव छोटे लोग तो छोटी रिश्वत। यानी जिस तरह का यह पिछड़ा गाँव है। गाँवों के देश भारत में ऐसे अनेक गाँव है जो आधुनिकता की तेज रफ्तारी, तनाव और चकाचौंध से रहित हैं। दिन में भी और रात में भी वे अलग-थलग और उदास नजर आते हैं।

गाँव के बच्चों की दशा देखें- गाँव के सभी बच्चे वनंगे रहते थे। वह भी (कोटवार का नाती) नंगा थाने के बरामदे में दौड़ता रहता। उसकी कमर में काला धागा बंधा रहता, जिसमें एक जंग खायी चाबी गुँथी बंधी होती। यह चाबी कोटवार को थाने के अहाते में मिली थी। यदि गाँव के सभी बच्चे नंगे नहीं रहते तो अकेला यह नंगा उजाड़ थाने के बरामदे में दौड़ता किसी जानवर की तरह लगता।

हमारी शिक्षा व्यवस्था के पिछड़ेपन पर काफी कुछ कहा-सुना जा रहा है। जहाँ आज रोजगारपरक शिक्षा की माँग बढ़ती जा रही है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की बदहाली पतनशीलता के कगार पर है। इस शिक्षा व्यवस्था में डिग्रियाँ पाए विद्यार्थी भी ज्ञान के क्षेत्र में इतने कोरे होते हैं कि बाहर की दुनिया का सामना नहीं कर पाते। 'खिलगा तो देखेंगे' उपन्यास में जोर की आंधी आने से पाठशाला का बचा-खुचा छप्पर उलट गया। "खपरों के गिरने से किसी को चोट नहीं आई। मुन्ना के पास एक बल्ली टूटकर ठहर गई। पढ़ाई का समय नहीं था, नहीं तो पाठशाला के बच्चे खपरों के गिरने से चोट खा जाते। पाठशाला की छत बिल्कुल नंगी हो गई थी। सभी कक्षाओं से आकाश दिखाई देता था। कच्ची ईटों से बनी पाठशाला थी। गुरु जी का घर बसेरा पनाह वही था। उन्हें थाने में शरण लेनी पड़ी। थाने में रहना उन्हें अजीब लग रहा था "गलती हो गई। आज भर रह लेते हैं कोई कुछ कहेगा तो सामान उठाकर पाठशाला वापस आ जाएगा।" परंतु जल्दी कहीं ऐसा संभव न था। स्वतंत्रता सदा वरदान होती है। कितनी बड़ी अकांक्षा। लिखा गया है कि "एक दरवाजे को बंदकर हमने पूरे बाहर को बंद कर दिया है। एक छोटे से कमरे में अलग होकर स्वतंत्र हैं। अपने कमरे का दरवाजा बंद कर हमने सारी दुनिया को बाहर बंदकर दिया। सारी दुनिया हमारी कैद में है। अपने दरवाजे को खोलकर हम दुनिया के कमरे में जाते हैं। जितनी बड़ी दुनिया है उतना बड़ा उसका कमरा है।"

(खिलेगा तो देखेंगे- पृ. सं. 30)

थाने में रहने का खटका है- "वे लोग समझेंगे हमने इस थाने पर कब्जा कर लिया है। अचानक सोया हुआ दर्द प्रायः जाग उठता है और आँसू के खारेपन का स्वाद दिला देता है।"

उपन्यास में गद्य की सुंदरता और सूक्ष्म अभिव्यक्ति कमाल की हैं। मसलन- "चीजों को उसी तरह के साथ उसके अलावा भी देखने का अभ्यास होता था। पत्नी को पत्नी के अलावा देखने के अभ्यास के लिए उससे प्रेम कर लेना। लोग छोटे-छोटै संसार ढूँढने की फिराक में रहते थे। यह काम सर्राफे के किनारे बहती गंदी नाली से सोने-चाँदी के कण ढूँढने जैसा था। गुरु जी खोयी दृष्टि से संसार ढूँढते थे। कुछ देख रहे होते हैं और संसार को ढूँढ़ रहे होते हैं। कितने सारे ढूँढ़ चुके होंगे। फालतू टूटे-फूटे संसारों का कबाड़ भी इकट्ठा हो गया था।" (खिलेगा तो देखेंगे- पृ. सं. 59)

उनका यह उपन्यास उनकी कविताओं की तरह रूप गठित है। सवाल यह है कि उपन्यास कविता की लय के लिए या जीवन की लय के लिए? जीवन का भी वह रूप जो खुरदरा है, अभाव ग्रस्त है। परेशानियों, दुखों से भरपूर है जो राजनैतिक ढांचे, वर्चस्ववाद या

पूंजी की साजिश से है। काव्य का गल्प ज्ञानार्जन की सहूलियत देता है। परंतु उपन्यासकार संवेदना के साथ जीवन के उपेक्षित हलकों में जाते हैं परंतु तीखेपन के तल्ख प्रश्न ढल जाते हैं। वे एक खूबसूरत पेंटिंग हो कर रह जाते हैं। गाँव का माहौल निर्मल शाश्वत हो जाता है आंधी में स्कूल की बदहाली भी, भोले-भाले मुन्ना-मुन्नी भी चित्रलिखित हैं। जिवराखन के गिरवी रखने का धंधा भी। परंतु खूबसूरत भाषा सर्जन के लिए यह अद्‌भुत उपन्यास है।

उपन्यास लेखन की गतिशीलता निरंतर बनी रही है। इस साल भी उपन्यासकारों ने धार्मिक उन्माद, रूढ़ियों की पतनशीलता का विरोध किया है। जीवन की सार्थकता की तलाश की है। प्रगतिशीलता बनाए रखी है।

– 444-ए, राजा गार्डन, पो. ओ. बस्ती बाबा खेल, जालंधर-144020

❑❑❑

21

हिंदी कहानी

डॉ. अवध किशोर प्रसाद

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी अत्यंत लोकप्रिय और सर्वसमृद्ध विधा है। आज के कथाकार समय, समाज और देश की सांस्कृतिक चेतना के सत्य से मुख़ातिब होकर कहानियों की रचना करने में सतत संलग्न हैं। वर्तमान समय में एक ओर पुरानी पीढ़ी के स्थापित कथाकार कहानी लिखने में संलग्न हैं तो दूसरी ओर नई पीढ़ी के नवोदित संवेदनशील कथाकार कहानी विधा को समृद्ध करने में प्रयत्नशील हैं। इसलिए व्यापक कैनवास पर रची जा रही कहानी की लेखकीय गरिमा का विपुल विस्तार हुआ है तद्नुसार पाठकीयता भी बढ़ी है। कहानियों के प्रकाशन के माध्यमों में वृद्धि हुई है, तथापि इनके प्रमुख दो रूपों- कहानीकारों के संकलनों एवं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं को दृष्टिपथ में रखकर वर्ष 2019 की कहानियों के सर्वेक्षण का प्रयास किया जा रहा है।

वर्ष 2019 में वरिष्ठ कथाकारों से लेकर नवागंतुक कथाकारों के अनेकशः कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। वरिष्ठ महिला कथाकार डॉ. मृदुला झा का चौथा कहानी संग्रह 'एक सच ऐसा भी' लक्की इंटरनेशनल, नई दिल्ली में प्रकाशित हुआ है। इसमें इक्कीस कहानियाँ संकलित हैं। समीक्षक आशा प्रसाद के अनुसार 'एक सच ऐसा भी' में संकलित कहानियों के अलग-अलग आयाम हैं, जिनका वर्णन अलग-अलग घटनाक्रमों के संदर्भ में किया गया है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक परिवार की अलग-अलग स्थितियाँ होती हैं। कथाकार ने इन कहानियों के माध्यम से उन स्थितियों का सम्यक निरूपण किया है।

संकलन की पहली कहानी 'अपने पराए' में बुजुर्ग माता-पिता के साथ संतति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार का वर्णन हुआ है। बेटी शुची अपनी माँ की देखभाल करती है, किंतु उसके भैया-भाभी न तो माँ की सुधि लेते हैं और न ही बहन शुची की। यह आत्म केंद्रित संततियों की कहानी है। 'बहादुर आद्या'. '.... और वह जीत गई', 'धुरनी का संकल्प', 'तपस्या पूरी हुई' आदि दृढ़ संकल्प एवं नारी सशक्तिकरण की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में यह व्यक्त किया गया है कि यदि कोई नारी मन में दृढ़ संकल्प कर ले तो उसे कार्य में अवश्य ही सफलता मिलती है। आद्या, रेवती, धुरनी, बुधनी ऐसी ही नारी पात्र हैं जो जीवन के संघर्ष में विजयिनी होती हैं। आद्या मेहनत और लगन से पढ़ाई कर प्रशासनिक पदाधिकारी बनती है। धुरनी अपने नर्स बनने के संकल्प को पूर्ण करती है। 'तपस्या पूरी हुई' उस माँ की कहानी है, जो हवेली में ठकुराइन की सेवा-टहल कर अपने पुत्र बुचना को इंजीनियर बनाती है। 'पाती', 'जया दीदी' अच्छे संस्कार की औरतों की कहानियाँ हैं।

शीर्षकनामा 'एक सच ऐसा भी' एक अद्भुत कहानी है, जिसमें संयोग का बड़ा ही सुंदर विनियोग

हुआ है। एक गाँव में एक ही साथ दो लड़कियों की शादियाँ होती हैं। एक लड़की पढ़ी-लिखी थी जबकि दूसरी अनपढ़ थी। पिता पढ़ी-लिखी लड़की को दिखलाकर अपनी अनपढ़ लड़की राजकुमारी का विवाह एक सुयोग्य व्यक्ति से कर देता है। संयोग से दोनों दुल्हों की मुलाकात शौच के लिए बाहर जाने के क्रम में होती है। उनकी आपसी बातचीत से भेद खुलता है किंतु राजकुमारी का पति अपनी पत्नी को निर्दोष मानकर उसे अंगीकार कर लेता है। पढ़ा-लिखाकर उसे भी शिक्षिका बना देता है। 'कलसी' ग्रामीण परिवेश की कहानी है, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य ही मिलता है। इसमें काकी की बहू को सताने एवं दूसरों के साथ छल करने के लिए अंत में सजा मिलती है। 'साजिश', शीर्षक के अनुकूल, पारिवारिक षडयंत्र की कहानी है, जिसमें अनन्या ईर्ष्यावश अपनी माँ शुभांगी को सम्मान प्राप्त करने के लिए समारोह स्थल पर न पहुँच सकने के लिए साजिश रचती है। किंतु असख्य अर्गलाओं को पारकर शुभांगी समारोह स्थल पर पहुँचकर बेटी की योजना को विफल कर देती है। 'दिवानगी' अंतर्जातीय विवाह की कहानी है, जिसमें राजपूत की बेटी सुवर्णा एक दलित लड़के रविंद्र से विवाह कर लेती है। उसका जीवन तो सुखी रहता है, किंतु उसके माता-पिता संतप्त रहते हैं। 'यह क्या किया' कहानी में एक शराबी पिता अपने ही इकलौते, आज्ञाकारी, योग्य और कर्मठ पुत्र की हत्या कर देता है। 'नीलकंठ' मनुष्य के सकारात्मक सोच की कहानी है। इसमें एक पति चक्रधर अपनी पत्नी के संबंध में फैलाई गई अफवाहों को नज़रअंदाज कर नीलकंठ बनकर उन्हें पी जाता है। पत्नी की प्रतिबद्धता को सच मानकर सुखी जीवनयापन करता है। अंतिम कहानी 'स्याह रात का सबेरा' ऐसे पिता की कहानी है, जो पैसों के लोभ में आकर अपनी ही नाबालिग बेटियों को उम्रदराज व्यक्तियों के हाथ बेच देता है। किंतु अपनी अंतिम बेटी की सौदेबाजी में बेटे की चौकसी के कारण फंस जाता है और पुलिस की गिरफ्त में आ जाता है। गाँव वालों का कथन "आप इन सभी को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाएँ ताकि कोई दूसरा बाप अपने बेटियों के साथ ऐसा करने की सोचे भी नहीं", कहानी के कथ्य को सत्यापित करता है।

संकलन की सारी कहानियाँ उच्चकोटि की हैं। भाव और भाषा का समतुल्य सम्मिश्रण पाठकों को अंत तक बाँधे रहता है। मृदुला झा का कथाकार नारीगत संस्कारों की अभिव्यक्ति में अधिक रमता है। इनकी कहानियों के नारी पात्र संघर्षशील, संस्कारी और जिजीविषु हैं।

समीक्ष्य वर्ष में अयन प्रकाशन, कानपुर से वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का ग्यारवाँ कहानी संग्रह 'तुम ऐसी तो नहीं थी' प्रकाशित हुआ है। इसमें सोलह कहानियाँ संकलित हैं। बकौल कथाकार अशोक मिश्र- "गोविंद उपाध्याय की कहानियाँ परिवार, गाँव, मोहल्ले के परिवेश में रची-बसी हैं, जिनके पात्र असल जिंदगी से उठाए गए हैं। ये कहानियाँ पठनीयता, रुचि, नैतिकता, आदर्श एवं मूल्यों की बात सहजता के साथ बिना किसी वाग्जाल के कह जाती हैं। सामान्य जीवन में लोग अपना सुख-दुख अपने ढंग से जीते हैं, बयाँ करते हैं; जीवन का यही सार गोविंद उपाध्याय की कहानियों में देखने को मिलता है।" संकलन की पहली कहानी 'अम्माँ आ रही है' वात्सल्य और मातृप्रेम की अनूठी कहानी है। इस कहानी में माँ का पुत्र के प्रति एवं पुत्र का माँ के प्रति अप्रतिम प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'इंजीनियर साहब' गाँव में रहने वाले एक परिवार की कहानी है अपने तीन भाईयों में कथावाचक बीच का है, जो एक ऑफिस में क्लर्क है। बड़ा खेतिहर किसान है। छोटा इंजीनियर है, गाँव में जिसे सब इंजीनियर साहब कहते हैं। कथावाचक को पद और ओहदे की गरिमा के कारण छोटे भाई से ईर्ष्या भाव है। एक मौसी की बेटी की शादी में सभी मिलते हैं। उसी समारोह के वर्णन के क्रम में कथाकार ने इंजीनियर भाई के प्रति कथानायक के मन में होने वाली ईर्ष्या और उसकी हीन भावना का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। 'गुंजा' मानसिक रूप से विकलांग लड़की की कहानी है। इस कहानी में गुंजा की दर्द भरी कहानी के समानांतर संयुक्त परिवार में जमीन-जायदाद के बंटवारे के कारण उत्पन्न आपसी तनाव का वर्णन शंभुसिंह और नरोत्तम सिंह के आपसी झगड़े, दोनों परिवारों के

बीच बोल-चाल की बंदी, आना-जाना तथा खान-पान के बंद होने की घटनाओं का यथातथ्य वर्णन हुआ है। 'ढाई घर' शारजाह में रह रहे एक प्रख्यात आत्म प्रशंसी तथा घुमंतु जीवनयापन करने वाले कवि मयंक राज की कहानी है। भारतीय नवोदित कवि पार्थ से उसकी वार्ताओं के माध्यम से कथाकार ने उम्र के बढ़ते क्रम में मनुष्य के शारीरिक, मानसिक एवं वैचारिक रूप में होने वाले परिवर्तनों एवं विदेशी कल्चर में जीवन जीने वाले व्यक्ति के लिए स्वेदेशी कल्चर में मिक्स करने की कठिनाईयों का वर्णन किया गया है। 'तन्हाई' सकारात्मक सोच की अच्छी कहानी है'; "हम सब यहाँ अकेले आए हैं और अकेले ही जाएँगे, फिर तन्हाई से क्या शिकवा।" एक रोचक कथानक पर आधारित कहानी पाठक को अंत तक बाँधे रहती है। "जाकिर साहब के लिए जो घर शुभ था, वही घोषाल बाबू के लिए प्रेत छाया वाला कैसे हो गया" के सत्य तथ्य पर आधारित 'प्रेत छाया' तंत्र-मंत्र पर विश्वास करने वाले घोषाल बाबू की कहानी है, जो बीमारी का सम्यक इलाज कराने के बदले पंडित कृपा शंकर तिवारी ज्योतिषाचार्य की धूर्तता का शिकार होकर असमय ही मृत्यु को प्राप्त होता है। 'बहुवंश' एक विवरणात्मक कहानी है जिसका कथानक गाँव के आस-पास घूमता है। अवकाश प्राप्त मास्टर अपने अनपढ़, काहिल पर ऐयास बेटे धनेश से त्रस्त होकर वृद्धावस्था में भी ऐकांतिक जीवन जीने का दंश झेलता है। "आदमी अपने चेहरे पर अनेक चेहरे ओढ़े रहता है अलग-अलग परिस्थितयों में उसका अलग-अलग रूप होता है किंतु जब चेहरे पर मौत का मुखौटा लग जाता है, तब उसके सारे मुखौटे उतर जाते हैं"। 'मुखौटे' शीर्षक चरित्र प्रधान कहानी में कथाकार ने शराबी शिवानंद की कहानी कहने के माध्यम से इसी तथ्य को स्पष्ट किया है। 'मेड़कटवा' ग्रामीण कृषक जीवन पर आधारित गाँव के किसान तारकेश्वर की कहानी है, जो गाँव में मेड़कटवा के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका भी खेत उसकी मेड़ से सटा होता है वह मेड़ को काटकर उसके खेत को अपने खेत में मिला लेता है। पकड़े जाने पर बड़ी बेशर्मी से कहता- "तुम्हारा खेत निकलता है तो ले लो, हम कोई बेईमान आदमी थोड़े ही हैं"। जबकि सच्चाई यह थी कि वह बेईमान आदमी था। 'लक्ष्मण रेखा' पारिवारिक परिवेश में रचित अंतर्जातीय विवाह की कहानी हैं 'समय-चक्र अवकाश प्राप्त बासठ वर्षीय तारक बाबू की कहानी है, जो अपने इकलौते दामाद के फ्रांस जाने की फोन पर दी गई सूचना से भड़क तो जाता है, किंतु फिर यह सोचकर कि "किसी के आने-जाने से दुनिया का चक्र नहीं बदलता, बदलना तो स्वयं को होता है", अपनी पत्नी के साथ कुल्लू-मनाली की यात्रा पर जाने की योजना बनाने लगता है। 'सूर्यास्त' अंतर्जातीय विवाह की एक प्रेम कहानी है। 'कटही' एक चरित्र प्रधान कहानी है। इसमें जयंती अरोड़ा नामक एक विधवा कामकाजी औरत के कार्यकाल के दौरान उसके कटुतापूर्ण व्यवहार एवं रिटायर होने के दिन उसके भीतर की स्त्रियोचित ममता की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। पात्रों की गहमागहमी से भरी 'द ग्रेटेस्ट अजीतपुरियन्स' अजीतपुर के कारखाने में कार्यरत किशोर के व्यस्त जीवन की कहानी है। इसमें मोबाइल के व्हाट्सएप पर मित्रों की ग्रुप निर्मिति की नई तकनीक का विस्तृत विवरण है। शीर्षकनामा 'तुम ऐसी तो नहीं थी' संकलन की अंतिम भावनात्मक कहानी है। कर्णिका का विवाह एक शराबी परिवार में होता है, जहाँ उसका दम घुटता है। चाचा के बार-बार के मशवरे के बाद भी वह पति को नहीं छोड़ सकती है। किंतु एक दिन बाजार में भीड़ के कारण देर से घर लौटने पर सास एवं शराबी ससुर के ताने को वह नज़रअंदाज कर देती है, किंतु कैंसर पीड़ित पति आकाश, जिसके लिए ही वह जीती और मरती है उसके ताने से तिलमिला उठती है। वह घर छोड़कर अपने चाचा के घर तो चली जाती है, किंतु पति का प्यार उसे सुबह आकाश के पास खींच लाता है। किंतु तब आकाश उसे छोड़कर जा चुका होता है कहानी का अंत संवेदना उत्पन्न करता है अंतिम वाक्य "मानो कर्णिका से कह रहा हो, तुम तो ऐसी नहीं थी" कहानी के कथ्य को भी प्रकट करता है और शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करता है।

जैसा कि कथाकार गोविंद उपाध्याय ने आत्मकथा में कहा है "मेरी कहानियाँ आम जीवन में घटित

शारीरिक, मानसिक और सामाजिक अंतर्दवंद्वों की कहानियाँ हैं।" संकलन की सभी कहानियों में पारिवारिक जीवन की समस्याओं, घटनाओं का चित्रण हुआ है। इसके सारे पात्र मध्यवर्गीय परिवार, समाज और मुख्यत: ग्रामीण परिवेश से आए हैं। कहानियाँ पात्रों के घटाटोप से निर्मित हुई हैं, इसलिए इनमें घटनाओं की विपुलता है।

सस्ता साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित 'मंदिर...गाँव किनारे' वरिष्ठ कथाकार गोविंद मिश्र का दूसरा कहानी संग्रह है। इसके पूर्व इनका पहला कहानी संग्रह 'नए सिरे से' 2012 में प्रकाशित हुआ था। जैसा कि कथाकार ने भूमिका में स्वीकार किया "उपन्यासों में लगा रहा.... इसलिए कहानी पीछे छूट गई", इस लंबे गैप का यह कारण है। समीक्ष्य संकलन में तेरह कहानियाँ हैं। संकलन की पहली कहानी 'सपना' एक माँ की कहानी है जो अपने बेटे के लिए सपने संजोती है, जिसकी पूर्ति के लिए वह धर्म की आड़ लेकर निकम्मा बने पति, पुत्र को पराश्रित बना देने वाले ससुर को तिलांजलि देकर अलग रहती है। 'चिनगारी' युग-युगांतर से परतंत्रता की बेडियों से जकड़ी नारी की कहानी है, जिसके जीवन पर हर समय पहरा ही पहरा है। मायके में पिता की बंदिशें, ससुराल में पति, ससुर या सास का पहरा, जो भी करे उनसे पूछकर करे, जहाँ भी जाए, किसी को साथ लेकर जाए। इस कहानी में किशोरी वैसी ही नारी है जो पिता की इच्छा पर ब्याह दी गई, पति के दूर रहने के कारण कहीं भी जाने के लिए जेठानी को साथ लेने की बाध्यता। किंतु पी.एच.डी. के लिए थिसिस लिखने के क्रम में किशोर के संपर्क एवं उसके समझाने से उसके भीतर की चिनगारी भड़क उठती है। स्कूल में दरख्बास्त देने अकेली चली जाती है। सास के प्रश्न "बड़ी को साथ ले जाती" पर उसका उत्तर "मैं अकेली जा सकती हूँ", एक नारी के भीतर जाग्रत चेतना बोल उठती है। 'कशिश' एक चिंतन प्रधान कहानी है। इसमें कथाकार ने कथावाचक के आत्मचिंतन के माध्यम से उसके अतीत और वर्तमान को प्रस्तुत किया है। इसमें नारीगत मनोभावों की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। 'कैद' एक वृद्ध की कहानी है जो बंदिशों को तोड़कर स्वतंत्र रहना चाहता है। किंतु उसके पुत्र, पुत्रवधू, बेटी या दामाद उसे परिवार की बंदिशों में कैद रखना चाहते हैं, ताकि यह ख़बर न बने कि बेटे-बहू ने बूढ़े बाप को रखने से मना कर दिया या घर से निकाल दिया। बूढ़े पिता का तर्क है कि "अगर बेटा-बहू माँ-बाप को अपने घर में रहने को मना कर सकते हैं तो माँ-बाप भी उनके साथ रहने से इनकार क्यों नहीं कर सकते हैं"। 'उल्टी गंगा' एक प्रेम कहानी है, जिसमें सुन्नी लड़का युनुस और शिया लड़की आलिया के प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'अशक्त' शीर्षक कहानी में कथाकार ने कथावाचक के एक मित्र की जीवन दृष्टि के हवाले से इस सत्य का उद्घाटन किया है जो पुश्किन, चेखब, तुलसी के कथनों से प्रभावित होकर पुत्र एवं पौत्र के प्रति तटस्थ तो रहता है किंतु कृष्ण के कथन 'क्षुद्र हृदय दौर्बल्यं व्यक्तवोतिष्ठ परंतप' के प्रति सचेष्ट नहीं होता है।

शीर्षकनामा 'मंदिर.... गाँव किनारे' एक वास्तुविद् की कहानी है, जिसमें उसकी महत्वाकांक्षाओं, उनकी पूर्ति के सत्प्रयास एवं उसके सफल जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। संपूर्ण कहानी में एक वास्तुविद् की कल्पनाशीलता, उसकी अभिरुचि एवं सपनों को संजोने की जितनी तत्परता, लालसा और चेष्टा हो सकती है, कथाकार ने उनका यथातथ्य वर्णन किया है। 'पंपे का पानी' नकारात्मकता को एक तरफ हटाकर सकारात्मक प्रतिशोध की उत्कृष्ट कहानी है। 'उछाल' चिंतन प्रधान कहानी है जिसमें कथावाचक के चिंतन के परिप्रेक्ष्य में एक मंत्री की व्यस्तता, उसके पी.ए., एक औरत के साथ घटने वाली घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। 'कांटे' एक बाप के दर्द की कहानी है, जिसकी बेटी नौकरी छोड़कर उसकी सेवा-टहल को अपने जीवन का अभीष्ट मान बैठी है। पिता का चिंतन "बेबकूफ लड़की। माँ-बाप यही सुख नहीं चाहते कि उनके बच्चे उनकी सेवा में लगे रहें। वे अपने बच्चों को तेरी तरह नौकर नहीं, बाहर कुछ बना देखना चाहते हैं", के माध्यम से कथाकार ने एक बाप के दर्द को व्यक्त किया है। संकलन की अंतिम कहानी 'घायल' एक पति की दर्द भरी जिंदगी की कहानी है। इस कहानी में स्त्री की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

गोविंद मिश्र की वृत्ति उपन्यास में अधिक रमी है, इसलिए इनकी कहानियों का वैचारिक फैलाव ज्यादा है। मान्यता चली आ रही है कि कहानीकार को उपन्यासकार की तरह संचरण करने के लिए व्यापक भाव भूमि नहीं मिलती है, किंतु गोविंद मिश्र ने अपनी कहानियों में संचरण करने के लिए जो व्यापक भाव भूमि निर्मिति की है वह उपन्यासकार से कम नहीं है छोटी सी कथावस्तु की आधारशिला पर खड़ी इनकी कहानियों का कैनवास व्यापक है। इनमें कल्पना की उड़ान, घटनाओं की अन्विति एवं भाषा का प्रवाह है। संकलन की सारी कहानियाँ चाहे वह सपने हो, उछाल हो, अशक्त हो या चिनगारी अथवा शीर्षकनामा मंदिर गाँव किनारे हो। इस सत्य-तथ्य को पुष्ट करती हैं।

राजपाल एंड संस, दिल्ली से शैलेय का कहानी संग्रह 'यहाँ बर्फ गिर रही है' प्रकाशित हुआ है। पहाड़ी जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई संग्रह की कहानियों में समाज की विद्रूपताओं एवं विंडबनाओं से जूझते मनुष्यों की जीवन गाथा है। 'इजा की बेटियाँ' शीर्षक कहानी में विस्थापन के दर्द की अभिव्यक्ति हुई है। साथ ही साथ पहाड़ों और गाँवों के निवासियों की व्यथा कथा का भी चित्रण हुआ है। 'यह अंतहीन' कहानी में पहाड़ी जीवन की अभावग्रस्तता, प्राकृतिक आपदाएँ एवं वहाँ के निवासियों के संघर्ष एवं महानगरों की ओर पलायन की विवशता का वर्णन किया गया है। 'इस क्षमा प्रार्थना में' शीर्षक कहानी में करमू और मातादीन जैसे कामगारों के चरित्रों के माध्यम से कथाकार ने अपने निजी स्वार्थ के कारण समाज और देश को बर्बादी के गर्त में ढकेलने वाले नेताओं पूंजीपतियों एवं बड़े अधिकारियों के चरित्र को उजागर किया है। 'भरोसा' शीर्षक कहानी में वंशीधर के माध्यम से कथाकार ने समाज के सभी तरह के झंझावातों से जूझने के संकल्प एवं व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह की भावना का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

'आरोहण' शीर्षक कहानी में पहाड़ी स्त्रियों के संघर्षशील जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। घर और बाहर की जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वाह करने वाली इन स्त्रियों को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्था से जूझना पड़ता है। किंतु ये स्त्रियाँ हार नहीं मानती हैं। बीमा ताई पहाड़ी, जीवन में स्त्रियों की वेदना को व्यक्त करती है। 'टीस' एक उत्कृष्ट प्रेम कहानी है, जिसमें हेमंत और उर्मि के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि उत्कृष्ट प्रेम जीवन को नया अर्थ देता है। जीवन के सभी संकटों, संघर्षों, आपदा-विपदाओं को झेलकर जीवन को सुखमय, समृद्ध और रंगीन बनाने का माध्यम उत्कृष्ट प्रेम है।

संग्रह की अन्य कहानियाँ भी उत्कृष्ट हैं। इन कहानियों की भाषिक संरचना सरल और बोधगम्य है। आँचलिक शब्दों के प्रयोग से कहानी में आँचलिकता की खूशबू और पहाड़ी जीवन की ताजगी का आभास होता है समीक्षक कविता भाटिया के अनुसार "वर्तमान समय की संवेदनशीलता की गहराई से पड़ताल करती ये कहानियाँ गवाह हैं कि गिरती हुई कठोर बर्फ को केवल संवेदना की आँच से ही पिघलाया जा सकता है और सुंदर मनुष्यता के लिए जरूरत है - इसी आँच को बचाए-बनाए रखने की।"

शिवना प्रकाशन सीहोर से पंकज सुबीर का कहानी संग्रह 'होली' प्रकाशित हुआ है। इसमें इक्कीस कहानियाँ संकलित हैं। इनका प्रतिपाद्य, शीर्षक के अनुसार, होली है। ये कथाकार की प्रारंभिक कहानियाँ हैं, जैसा कि कथाकार ने निवेदित किया है। किसी भी स्थापित कथाकार के प्रारंभिक दौर की कहानियों का अवगाहन अपने आप में एक सुखद अनुभूति है। वह इसलिए कि उन कहानियों के पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि जिस इमारत को कथाकार ने खड़ा किया है, उसकी नींव की ईटें कितनी सुदृढ़ और सुंदर हैं। ये इक्कीस कहानियाँ उस हवेली की इक्कीस ईटें हैं जिन पर 'चौपड़े की चुडैलें' वाली हवेली खड़ी की गई है।

संकलन की पहली कहानी 'बागड़' में दो सहेलियाँ कलूड़ी और सकूड़ी एक ही घर में क्रमशः जेठानी और देवरानी बनकर ब्याही जाती हैं। जबकि उनका सारा कारोबार अलग है, उनके बीच का प्रेमबंधन अटूट है। कालक्रम से समय परिवतर्ति होता है और दोनों के बीच की छोटी सी लड़ाई विकराल रूप धारण कर लेती है। उनके बीच बोल-चाल की

बंदी के साथ उनके आंगन में बागड़ लग जाता है। किंतु उनके दिलों के बीच बागड़ नहीं लगता है और होली की रात दोनों फिर साथ-साथ होली मनाने चल पड़ती हैं। उनके आंगन का बागड़ भी टूट जाता है। 'रंग दोस्ती के' में हिंदू लड़के-लड़कियाँ सोनू, मनीषा और स्वाति मुसलमान दोस्त कादर के साथ मिलकर होली खेलते हैं, जिसकी इजाजत कादर के अब्बू देते हैं। 'संधिकाल' में पड़ोसन मंजुला भाभी के समझाने पर सुषमा अपने बेटे राहुल को परीक्षा के बावजूद, होली खेलने की इजाजत देती है। कथाकार ने संधिकाल का बड़ा ही रोमांचक विश्लेषण किया है- "शरद ऋतु संधिकाल है वर्षा और ठंड का, तो फागुन है संधिकाल गर्मी और ठंड का। संधिकाल हमेशा से ही मोहक होता है, चाहे वो ऋतु का हो, या फिर उम्र का"।

'अब चलो भी कांता' सारगर्भित भाषा में लिखी एक औरत के भीतर बनते दर्प और समय की रेत पर पिघलते दर्प की कहानी है। 'लाडी माँ' मातृत्व प्रेम की कहानी हैं होली के त्योहार के आयोजन के क्रम में एक निःसंतान औरत के मन में पति की पूर्व पत्नी के बेटों के प्रति उत्पन्न वात्सल्य का मार्मिक चित्रण हुआ है। 'फिर से लौटा सावन' शीर्षक कहानी में दादी की यादों को, उसकी पोती नंदिनी, दादी की समस्त सहेलियों को बुलाकर होली का मनभावन आयोजन कर, लौटा देती है। 'छोटी-छोटी खुशियों के रंग', शीर्षक कहानी में होली के आयोजन के साथ इसी को रूपायित किया गया है। 'रुक गया फागुन' में बहू की पहली होली पर सास-बहू के साथ रहने के अपशकुन के मिथक को तोड़कर बहू रचना अपनी सास के साथ ही रहकर होली मनाती है। 'पलाश' शीर्षक कहानी में एक साथ बचपन बिताने वाले फाल्गुनी और पलाश होली के दिन ही विवाह की संकेतात्मक सहमति देते हैं। 'फूल पलाश के ले आना तुम' कहानी में भी शीला और सुशील के प्रेम का वर्णन हुआ है। "फाल्गुनी हवाओं के स्पर्श से धीरे-धीरे हिल रही पलाश के फूलों की पंखुडियाँ किसी स्वीकृति की ओर इशारा कर रही थी।" 'रंग का मौसम' में होली की मादकता का वर्णन है। 'उसका फागुन' प्रेम कहानी है। फागुनी मस्ती के बीच प्रिया और सुधीर के अतरंग प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'कोई फाल्गुनी वसंती-सा' में होली के दिन ही सोमेश से अरूंधती की मुलाकात होती है और होली के दिन ही सोमेश अरूंधती से अधिकार माँगने आता है कि वह एक चुटकी गुलाल को सिंदुर बनाकर उसे दे दे। संकलन की अंतिम 'रूट कैनल थैरेपी' शीर्षक कहानी में एक डेंटिस्ट रीमा को उसी के बताए गए प्रोसेस के हवाले से एक पेशेंट सृजन जीवन की सीख देता है। डॉक्टर किसी के दर्द में अपने जीवन को गमगीन बनाए हुए है। यहाँ तक कि होली का त्योहार भी नहीं मनाती है। सृजन उसे उसी की भाषा में समझाता है- "सड़े हुए को निकालना पड़ता है, बिना निकाले दर्द ठीक नहीं होता है"।

संकलन की कहानियों में होली का हुड़दंग, बसंत की मादकता, फागुन की मस्ती, युवा प्रेम की गुदगुदी भरी हुई है। प्रकृति की मधुरिमा के बीच फागुनी पूर्णिमा के चाँद की चाँदनी की मदहोश कर देने वाली शीतलता के बीच प्रेम की केलि-क्रीड़ा करते युवा-युवती की मनोदशा का मनमोहक विवरण पाठक को उसी रम्यता में समेट लेता है। प्रेमी हृदय में उठते प्रेम की पीर को कथाकार ने वाणी नहीं, शब्द का रूप दिया है यहाँ प्रेमी-प्रेमिका को कुछ कहना नहीं पड़ता है, कथाकार ने प्रकृति के रम्य, उपकरणों के माध्यम से सब कुछ कहला दिया है। चाहे 'सुधियों का फागुन' की वसुधा हो, या 'कोई फाल्गुनी वासंती-सा' का सोमेश हो, 'चाहे रंगों का रस्ता चंदन का जंगल' की पूर्वा हो, या फिर 'उसका फागुन' के प्रिया और सुधीर हों : इनके प्रेम का इजहार प्रकृति करती है।

शिवना प्रकाशन सीहोर से सुधा ओम ढींगरा एवं पंकज सुबीर के संयुक्त संपादन में 'बारह चर्चित कहानियाँ' प्रकाशित हुई हैं। इसमें विभोम स्वर के बारह अंकों के बारह कथाकारों की बारह कहानियाँ संकलित हैं। इस संकलन की खासियत यह है कि ये बारह कथाकार महिला लेखिकाएँ हैं, जिनकी कहानियों को प्रमुखता दी गई है।

संकलन की पहली कहानी आकांक्षा पारे की 'कैंपस लव' है। इसमें कॉलेज में एक साथ पढ़ाई करने वाले लड़के - लड़कियों की प्रेम भरी दास्तान

का चित्रण है। 'खाली हथेली' सुदर्शन प्रियदर्शनी की प्रवाहमयी भाषा में लिखी पुरुष वर्चस्व की कहानी है। कहानी में पुरुष के पुरुष होने के अहंकार एवं किसी भी पैमाने पर पुरुष से कमतर नहीं होने वाली नारी की पुरुष की स्वाधीनता को स्वीकारने की प्रवृत्ति का बड़ा ही सटीक वर्णन हुआ है। इन्हीं दो बिंदुओं पर कहानी की रचना की गई है। नीरा त्यागी की 'क्या आज मैं यहाँ होती' शीर्षक कहानी में पत्नी के रूप में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को खोकर जीने वाली औरत की एक तलाकशुदा निर्बंध घाट-घाट का पानी पीने वाले पुरुष की जिंदगीनामे का बड़ा ही सम्यक निरूपण हुआ है। तलाकशुदा सुधा यद्यपि तलाकशुदा नलिन के संपर्क में आती है, फिर भी वह अपनी पवित्रता नहीं खोती है। तभी नलिन की बहन कहती है- 'नो शी इज नॉट लेस्बियन'। नलिन की माँ के कहने पर "जब तक दोनों एक दूसरे को ठीक से जान न लो, तब तक कैसे आगे बात बढ़ेगी" सुधा का उत्तर "आप अपने बेटे को अच्छी तरह से जानती हैं, यदि मैं भी वही करती जो और करती हैं, तो क्या मैं आपके पास यहाँ बैठी होती," एक औरत की पवित्रता की उद्घोषणा करता है और शीर्षक की सार्थकता भी सिद्ध करता है। अरुणा सब्बरवाल की 'छोटा-सा शीशमहल' कहानी में एक माँ, आशा, के दर्द की अभिव्यक्ति हुई है, जो अपने जुड़वाँ पुत्र लव की याद में तड़पती है, जिसका अवसान पच्चीस वर्ष बाद उसके दूसरे पुत्र कुश के दीक्षांत समारोह पर होता है; कहानी में घटनाओं का समायोजन बड़ी ही मार्मिकता के साथ हुआ है।

पुष्पा सक्सेना की 'मेरे बाद' लंबी कहानी में एक प्रताड़ित औरत की दर्दभरी जिंदगी एवं उसकी पुत्री के संकल्प की अभिव्यक्ति हुई है- "किसी भी परिवार में प्रताड़ित स्त्री को न्याय और उसका प्राप्य दिलाना, मेरे जीवन का एकमात्र ध्येय और संकल्प होगा"। कहानी में व्यंग्य भी है और यथार्थ भी। अनिल प्रभा कुमार की 'उसका मरना' अमरीका में एक भारतीय की मृत्यु के बाद परिजनों को बिना सूचित किए उसकी अंत्येष्टि के उपरांत परिजनों के बीच होने वाले संवाद का कथोपकथन शैली में विवरण प्रस्तुत किया गया है। अनेक पात्रों के माध्यम से अमरीका और भारत में होने वाली अंत्येष्टि यात्रा तथा अंत्येष्टि क्रिया का विवरण प्रस्तुत किया गया है। पात्रों के मौन में भी कथाकार ने कहानी के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कर दिया है। डॉ. अचला नागर की 'ढोर' गुलेरी जी की 'उसने कहा था' की शैली में लिखी बाल और युवा प्रेम की कहानी है। संतों के बाल मन में बैठी हुकुम सिह की तस्वीर हकीकत बनकर जब कुएँ के मुड़ेर पर खड़ी हो जाती है, तो वह स्तब्ध रह जाती है। हुकुम सिंह की अप्रत्याशित मृत्यु उसे सक्ते में डाल देती है। डॉ. हंसा दीप की 'वह सुबह कुछ और थी' कहानी में ऑफिस में कार्यरत नील के एक खुशनुमा दिन के विवरण के क्रम में कर्मचारियों के जीवन-क्रम चिंतन तथा मौसम की मदमस्त फिजाँ का बड़ा ही मार्मिक वर्णन हुआ है। कहानी पाठक को बाँधे रहती है।

उर्मिला शिरीष की 'नाच-गान' कहानी में अंतर्धर्मी प्रेम से उत्पन्न विरोधाभासी संभावनाओं का बड़ी ही गंभीरता के साथ वर्णन हुआ है। एक हिंदू अपनी धार्मिक मान्यताओं से समझौता कर सकता है, परंतु एक मुस्लिम ऐसा नहीं कर सकता है। डॉ. विभा खरे की 'तबे पर रखी रोटी' एक चिंतन प्रधान कहानी है। इसमें बेल कर तबे पर रोटी रखने और उसके जलने के अंतराल कथावाचिका अपने पति के विषय में चिंतन करती है। इस चिंतन के क्रम में एक व्यक्ति के चरित्र का चित्रण किया गया है। डॉ. हर्षवाला शर्मा की 'एक कायर की दास्ताँ' दिलचस्प एवं मार्मिक कहानी है। इसमें तथ्यों का समायोजन बड़े ही सुनियोजित ढंग से हुआ है। कहानी का अंत कहानी के तथ्य को स्पष्ट कर देता है। पारूल सिंह की 'ऑरेंज कलर का भूत' घटनाओं से भरी हुई एक लंबी कहानी है। पूरी कहानी में विवरणों का घटाटोप है।

एस.आर. हरनोट का कहानी संकलन 'कीलें' प्रकाशित हुआ है। इसमें सात कहानियाँ संकलित हैं। हरनोट हिमाचल प्रदेश की ग्रामीण धरती पर की उपज हैं। इनकी कहानियों में ग्रामीण जन-जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। संकलन की कहानियों में भूमंडलीकरण के दौर में पहाड़ी जीवन में होने वाले परिवर्तनों को रेखांकित किया गया है। कहानियों में वर्णित समस्याएँ व्यक्तिगत जीवन की वैयक्तिक समस्याएँ

नहीं है।, बल्कि ये पहाड़ी चेतना की वेदना की उपज हैं। इन कहानियों में केवल पहाड़ी संस्कृति की झलक नहीं मिलती है, बल्कि समकालीन, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी बारीक चित्रण हुआ है। 'भागा देवी का चाय घर' संकलन की सर्वोत्कृष्ट कहानी है। कहानियों की भाषा सरल और सुबोधगम्य है। पहाड़ी अंचल में बोली जाने वाली आँचलिक बोलियों के शब्दों के प्रयोग से भाषा में रोचकता आ गई है। गौतम सन्याल ने कहा है- "मैं इन कहानियों को सदैव आगे बढ़कर गले लगाता हूँ जो मेरी आँखों में झाँककर कहती है; तुम्हारी बुद्धि से कहा कि हर दिन वह कुछ सीखे और तुम्हारे ज्ञान से कहा कि वह हर दिन कुछ न कुछ छोड़े"।

समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार से सुरेंद्र प्रसाद यादव का कहानी संग्रह 'रंगरसिया' प्रकाशित हुआ है यह इनका चौथा कहानी संकलन है। इसमें दस कहानियाँ संकलित हैं। सुरेंद्र प्रसाद यादव की कहानियों में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इनके पात्र गाँव के निम्नवर्गीय परिवार के होते हैं। कथाकार ने ग्रामीण कृषक जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। संकलन की पहली कहानी 'बेटा लील गया' में एक पिता बेटे की कारगुजारियों के कारण मुसीबत में फँसकर आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है। 'बदचलन' कहानी में मंगली नामक युवती की बदचलनी की अभिव्यक्ति हुई है। 'मुसीबतों का पहाड़' में पत्नी ही पति के दुख का कारण बनती है। हथपकड़ा विवाह की घटनाएँ आए दिन घटती रहती हैं, जिसमें लड़की वाले किसी लड़के को उठा लाते हैं। 'भोज की भनक' शीर्षक कहानी में लड़का ही लड़की से विवाह करने की जिद कर बैठता है जिसे सब स्वीकार करते हैं। 'संगदिल' उस पत्नी मालती की कहानी है, जिसे डॉक्टर पति के व्यस्त जीवन से दैहिक सुख नहीं मिलता है। वह ड्राइवर रघु से प्रेम कर बैठती है और उसी के साथ मिलकर पति की हत्या करवा देती है। रघु पुलिस की गिरफ्त में आकर जेल चला जाता है। मालती को न तो पति मिलता है, न प्रेमी। कहानी में तथ्यों, घटनाओं का समयोजन बड़े ही सुनियोजित ढंग से हुआ है। 'रंगरसिया' में रमेश नामक पात्र के रसिक चरित्र का चित्रण हुआ है। वह रंगीन मिजाज का आदमी है, जो अपनी रंगीन दुनिया में खोया रहता है। 'गोबरचुन्नी' भारतीय प्राचीन गाँवों की याद ताजा करा देती है, जबकि गाँव में एक वर्ग की जीविका पशु-पालन, दूध-दही, घी और गोयठे की तिजारत थी। इसमें मवेशियों को लेकर चारागाह की टोह में भटकते चरवाहों और उनके पीछे-पीछे गोबर चुनने वाली अहीर की लड़कियों के कार्यकलापों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। कहानी में पारो, सजनी आदि गोबर चुनने वाली लड़कियों की प्रवृत्तियों का बड़ा ही सटीक वर्णन हुआ है। संकलन की अन्य कहानियाँ 'मतदानकर्मी', भूषण होटल, आदि भी अच्छी हैं। कहानियों की 'भाषा सरल', प्रवाहमयी एवं ओजपूर्ण है।

पांडुलिपि पब्लिकेशंस प्रा. लि. दिल्ली से 'धीरेंद्र अस्थाना' और 'वीणा वत्सल सिंह' के संयुक्त संपादन में 'सात रंग सोलह अफसाने' कहानी संग्रह का प्रकाशन हुआ है। इस संग्रह में सोलह कहानीकारों की कुल सोलह कहानियाँ संकलित है। इन कहानीकारों में 'उर्मिला शिरीष', 'हरीश पाठक', प्रियबंद, ओम शर्मा, महेश दर्पण, धीरेंद्र अस्थाना प्रियदर्शन, शर्मीला मोहरा जालान 'पंकज मित्र', पंकज सुबीर, मनीष वैद्य, विवेक मिश्र, प्रज्ञा आदि की कहानियाँ संकलित हैं।

इन संकलनों के अतिरिक्त अन्य कथाकारों के संकलन भी प्रकाशित हुए हैं। ममता कालिया का 'ठसक', संजीव का 'वह कौन थी', अभय का 'सोन चिरैया', हरियसराय का 'किस मुकाम तक', शंकर का 'जागो देवता जागो', गीता श्री का 'लिट्टी चोखा', कैलाश बानखेड़े का 'सुलगन', हरिओम का 'तितलियों का शोर', अनुकृति उपाध्याय का 'जापानी सराय', अजय नावरिया का 'मैं और मेरी कहानियाँ', आकांक्षा पारे काशिव का 'मैं और मेरी कहानियाँ' आदि के नाम उल्लेख्य हैं।

समीक्ष्य वर्ष 2019 में प्रकाशित कहानियों की उपलब्धता का दूसरा प्रमुख स्रोत पत्र-पत्रिकाएँ हैं।

देशभर से प्रकाशित बहुसंख्यक पत्र-पत्रिकाओं में कुछ कथा केंद्रित पत्रिकाएँ हैं तो कुछ में अन्य सामग्रियों के साथ कहानियों का भी प्रकाशन होता

है। दैनिक हिंदुस्तान के रविवारीय अंक के फुर्सत पृष्ठ पर कहानियों का प्रकाशन होता है, जिनमें अधिकांश कहानियाँ पुराने, ख्यात, दिवंगत कथाकारों की होती हैं। इन कहानियों का भाषिक, वैचारिक एवं शैलीगत स्तर उच्चकोटि का होता है। इन कहानियों के अध्ययन से जहाँ पुरानी पीढ़ी के वैशिष्ट्य की जानकारी मिलती है, वहीं नई पीढ़ी के कथाकारों को इनसे दिशा-निर्देश मिलता है। वर्ष 2019 के फुर्सत अंक में पुरानी पीढ़ी के दिवंगत कथाकारों की ढेर सारी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें कमलेश्वर की 'गर्मी के दिन', जैनेंद्र कुमार की 'तत्सत', दूधनाथ सिंह की 'अम्माएँ', चंद्रघर शर्मा गुलेरी की 'सुखमय जीवन', हिमांशु जोशी की 'इस बार बर्फ गिरी तो', भुवनेश्वर की 'माँ-बेटे' अमृतलाल की 'धर्म संकट', भगवती चरण वर्मा की 'दो बांके', रवींद्रनाथ ठाकुर की 'अनमोल भेंट', भीष्म साहनी की 'गौरेया' आदि प्रमुख हैं। समकालीन कथाकारों की कहानियाँ भी प्रकाशित हुई हैं। कुछ कहानियों का संक्षित विवरण प्रस्तुत है।

भारत से दूर रहते हुए जिन कथाकारों ने प्रवासी जीवन के व्यापक अनुभवों पर आधारित कहानियाँ लिखी हैं उनमें उषा राजे सक्सेना का प्रमुख स्थान है, जिनकी कहानियों में भारतीय संस्कृति के साथ-साथ विदेशी संस्कृति को अभिव्यक्त करती एक भावनात्मक कहानी है। संपूर्ण कहानी में एला के चिंतन की अभिव्यक्ति हुई है। छोटी-सी कथावस्तु पर विन्यस्त यह एक उत्कृष्ट कहानी है। व्यास सम्मान जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित चित्रा मुद्गल की 'तर्पण' एक चिंतन प्रधान कहानी है, जिसमें एक वारिस के चिंतन का वर्णन किया गया है। पचासी पार वृद्ध पिता की लापरवाहियों का विवरण देते हुए कथावाचक अपने पिता से अपेक्षा करता है कि, चूँकि उसके हाथ कांपने लगे हैं, उसका हस्ताक्षर बदलने लगा है, इसलिए उसे अपने वारिस के नाम से अपनी संपत्ति की रजिस्ट्री कर देनी चाहिए। एक गृहस्थी में होने वाली प्राय: प्रत्येक गतिविधि एवं एक स्मृति शून्य पिता द्वारा जाने-अनजाने की गई लापरवाहियों का कथाकार ने संवाद शैली में यथातथ्य वर्णन किया है। उत्तराखंड के पहाड़ी जीवन को कथाओं में उतारने वाले कथाकारों में शैलेश मटियानी का महत्वपूर्ण स्थान है। दैनिक हिंदुस्तान में उनकी दो कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। 'मिसेज ग्रीनवुड' उत्तराखंड के अल्मोड़ा के उतर काफल के वृक्षों से घिरे सिनोला वन में छोटी-सी ग्रीनवुड के जीवन को आह्लादित कर देने वाली स्थितियों का मनोरम चित्रण करती मार्मिक कहानी है, तो 'पोस्टमैन' अनपढ़ गवार ग्रामीण क्षेत्र के ब्रांच पोस्ट ऑफिस बेनीनाग के पोस्टमैन दयाराम की कहानी है, जो घर-घर चिट्ठियाँ पहुँचाता है, उन्हें पढ़कर सुनाता है, सुखद समाचार पर बक्सीस पाता है तो दुखद समाचार पर उनका कोपभाजन बनता है। 'मिसेज ग्रीनवुड' में जहाँ अल्मोड़ा के पहाड़ी इलाकों की रम्य-सुरम्य दृश्यावलियों का चित्रण हुआ है, वहीं पोस्टमैन में उत्तराखंड के ग्रामीण परिवेश का चित्रण हुआ है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित अमरकांत की कहानियों में ग्रामीण जन-जीवन के साथ-साथ नगरीय जीवन का प्रामाणिक चित्रण भी होता है। 'दोपहर का भोजन' एक आम आदमी की जिंदगी की कहानी है। इसमें 'मकान किराया नियंत्रण विभाग' के छटनी ग्रस्त चंद्रिका प्रसाद की गृहस्थी की टूटती-जुड़ती कड़ियों को उसकी पत्नी सिद्धेश्वरी, तीन बेटे-रामचंद्र, मोहन और प्रमोद के दोपहर के भोजन के विवरण के क्रम में जोड़ने का प्रयास किया गया है। 'काली चील' मधु कांकरिया की प्रतीकात्मक कहानी है। कथाकार ने आपबीती घटनाओं के परिपेक्ष्य में कम्प्यूटर युग के आगमन के फलस्वरूप सर्वत्र व्यवहृत होते कम्प्यूटर की महता को व्यक्त किया है। किंतु जब ऐन वक्त पर कम्प्यूटर की हार्ड डिस्क क्रैक कर जाती है और 203 पृष्ठों की रपट को तत्काल भेजने की समस्या खड़ी हो जाती है तो बावन वर्षीय फोनी बाबू को अपने टापइराइटर की शरण लेनी पड़ती है। सूर्यवाला की 'दादी और रिमोट' में आधुनिक जीवन की भाग-दौड़, व्यस्तता तथा मल्टीस्टोरेज-बिल्डिंग में निवास करते एक परिवार में एक वृद्धा दादी की अहमियत का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'एक और देवदास' मालती जोशी की विगत प्रेम की कहानी है।

मॉरीशस में प्रेमचंद के नाम से विख्यात अभिमन्यु अनत हाल में दिवंगत हुए हैं। हिंदुस्तान में उनकी 'जहर और दवा' शीर्षक मार्मिक कहानी प्रकाशित

हुई है। माँ, पिता, पुत्र और कामवाली सोफिया चार पात्रों की संक्षिप्त कथावस्तु पर विन्यस्त एक अद्‌भुत कहानी है। ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित कृष्णा सोबती की कहानियों में पंजाब के लोकजीवन और संस्कृति की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। पंजाब दंगे पर आधारित 'सिक्का बदल गया' इनकी मार्मिक कहानी है। दैनिक हिंदुस्तान में विदेशी कथाकारों- रस्किन बांड 'तांगें में एक जवान आदमी', ऑस्कर वाइल्ड 'शिशु देवता', खरीदा गस्तुर 'मैनू ले चले बाबूल' आदि की कहानियों का हिंदी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है।

दैनिक जागरण के साहित्यिक पुनर्नवा अंक में वर्षभर में 35-40 कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। जागरण की कहानियों का अपना नॉर्म्स एवं मिजाज होता है। वर्ष 2019 में प्रकाशित कुछ कहानियों का परिचयात्मक विश्लेषण प्रस्तुत है। नवनीत मिश्र की 'विश्वास' शीर्षक कहानी में एक वृद्‌धा के मानसिक उद्‌वेलन का वर्णन है। 'द्‌वंद्‌व' डॉ. स्कंदगुप्त की शीर्षक के अनुरूप एक शिक्षा पदाधिकारी के भीतर के द्‌वंद्‌व की कहानी है। पारा शिक्षक की नियुक्ति के लिए चुनी गई एक ग्रामीण लड़की नियुक्ति में होने वाले विलंब पर शिक्षा पदाधिकारी से नियुक्ति का आग्रह करती है, वहीं उस लड़की का पिता शिक्षा पदाधिकारी से नियुक्ति में विलंब करने का आग्रह करता है। शिक्षा पदाधिकारी का यही द्‌वंद्‌व है कि वह लड़की की बात मानकर उसकी नियुक्ति कर दे या फिर पिता की बात मानकर नियुक्ति में विलंब करे। भगवान अटलानी एक वरिष्ठ कथाकार हैं। इनकी 'वजूद' एक राजनीतिक नेता के चिंतन की कहानी है। इसमें कथाकार ने राजनीतिज्ञ के जीवन की व्यस्तता का मार्मिक विवरण प्रस्तुत किया है और यह सिद्‌ध किया है कि वजूद में बने रहने के लिए किसी भी परिस्थिति में लोगों की भीड़ जरूरी है। 'जाने पीर पराई' डॉ. वेदमित्र शुक्ल की ग्रामीण परिवेश की कहानी है। कथाकार ने ग्रामीण कृषि संबंधी समस्याओं का वर्णन करते हुए यह मान्यता स्थापित की है कि भारतीय किसानों को मशीनीकरण की दुनिया से हटकर प्राचीन कृषि पद्‌धति को अख्यितार करना चाहिए। ब्रजमोहन की 'मकान' एक भावनात्मक कहानी है। सत्यदेव नामक अवकाश प्राप्त वयोवृद्‌ध के मन में व्याप्त अपने बनाए गए मकान के प्रति मोह की भावना को व्यक्त किया गया है। 'सृष्टि' वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय की बाल मनोविज्ञान पर आधारित वात्सल्य प्रेम की अनूठी कहानी है। इसमें सृष्टि नामक एक छोटी सी बच्ची में होने वाले निरंतर परिवर्तन को रेखांकित करते हुए कथाकार ने बाल-चपल स्वभाव का वर्णन किया है।

वंदना वाजपेयी की 'लली' नारी मानसिकता की अभिव्यक्ति की एक अच्छी कहानी है, जिसमें एक उम्रदराज कमला गृह स्वामिनियों की प्रसंशा कर एवं उन्हें 'लली' कहकर घरों में काम प्राप्त कर लेती है। नीरज नीर की 'जावेद' रोमांचक कहानी है, जिसमें भूत-प्रेत के अस्तित्व को स्वीकारा गया है कथाकार ने कहानी में घटनाओं का समायोजन बड़े ही सुनियोजित ढंग से किया है।

लमही- 2019 के जनवरी-मार्च अंक में छह कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें प्रायः नारी संस्कारों, समस्याओं एवं उनकी मानसिकता का चित्रण हुआ है। मीना गुप्ता की 'यह खिड़की जो बंद रहती है' में पुरुष वर्चस्व समाज में नारी की नगण्यता की अभिव्यक्ति हुई है। डॉ. अर्चना सिन्हा की 'यह जो होता था' नारी स्मिता की अच्छी कहानी है। पुरुष वर्चस्व समाज में एक नारी की इच्छा-अनिच्छा की कोई कद्र नहीं होती है। किंतु जब उसका अहम् जाग जाता है तो वह अबला से सबला बन जाती है। जब दिव्या को नकारकर शेखर अपनी भाभी सुवर्गा के सौंदर्य पाश में आबद्‌ध हो जाता है, तो दिव्या शेखर की लाख चेष्टाओं के बावजूद पुत्र के नाम पत्र लिखकर घर छोड़कर चली जाती है। शमोएल अहमद की 'लूँगी' शिक्षा जगत में व्याप्त व्यभिचार, दुरावस्था और भ्रष्टाचार की कहानी है। विश्वविद्‌यालयों में पी. एच.डी. के नाम पर नारियों का यौन शोषण होता है, पैसे लेकर डिग्रियाँ दी जाती हैं तथा थिसिस की खरीद-बिक्री होती है। कहानी में अब्बुपट्‌टी जैसे प्रोफेसर एवं जरबहार नामक शोध छात्रा के माध्यम से इस सत्य को उजागर किया गया है। पल्लवी प्रसाद की 'कहानीकार' में एक कहानीकार रॉबिन ठक्कर के उदय और अवसान का मार्मिक वर्णन हुआ है। राजेंद्र राजन की 'जमाना बदल गया है जानू' वद्री सिंह भाटिया की 'छल्ले की जिंदगी' भी अच्छी कहानियाँ हैं।

हंस जन चेतना का प्रगतिशील कथा-मासिकी है। हंस के जनवरी-दिसंबर तक, बारह महीनों में 48-50 कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। वर्ष 2019 में प्रकाशित कुछ कहानियों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत है। वरिष्ठ कथाकार मृदुला गर्ग की 'बेनियाज मिजाज के पार' कहानी उनकी आपबीती घटनाओं के ताने-बाने से बुनी गई है। एक वृद्धा की मानसिकता, इस मानसिकता से परे कर्मठता की जिंदगी जीने की जिजीविषा, जीवन में होने वाली आकस्मिक व्याधियाँ, उनके उपचार एवं दवा की टिकियों की प्रासंगिकता-अप्रासंगिकता की बड़ी ही मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अमरीक सिंह 'दीप' वरिष्ठ कथाकार हैं। 'विषकन्या' समकालीन सोच की अच्छी कहानी है। इसमें भूमंडलीकरण के दौर में विकसित होते स्मार्ट फोन के दुष्परिणामों को अभिव्यंजित करते हुए स्मार्टफोन की तुलना विषकन्या से की गई है, जिसका एक स्पर्श जानलेवा होता है। कथाकार ने अनेक आख्यानकों एवं उपमानों के माध्यम से कथा की शृंखला जोड़ी है। 'ताबूत की कीलें' प्रितपाल कौर की दो प्रेमी युगल विधवा साहिबा और विधुर इकबाल के पुनर्विवाह और संबंध विच्छेद की कहानी है। वरिष्ठ कथाकार नरेंद्र नागदेव की 'सही तारीख' उत्कृष्ट कहानी है। दो बुजुर्ग हमटहल धनंजय बाबू और शंकुतला देवी सुबह में एक मोड़ पर मिलते हैं, पार्क में टहलते है। और फिर उसी मोड़ पर अलग हो जाते हैं। स्मृतियों के ठहराव पर आधारित, अपने-पराए एवं परिस्थितियों को लेकर विमर्श करती एक अनूठी कहानी है। मंजूला विष्ट की 'भूख का पता' में यह स्पष्ट किया गया है कि जानवर भी वफादार होते हैं। उन्हें भी भूख का पता होता है। कहानी में बरसाती रात में बॉक्स से गिरे खरगोश के बच्चे को पालतू कुत्ता मोटी मांसभक्षी होने के बाद भी नहीं खाता है, बल्कि उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख देता है।

सुषम बेदी की 'माया का ताजमहल' शीर्षक कहानी में माया के घुमंतू जीवन का विवरण प्रस्तुत करते हुए कथाकार ने भिन्न-भिन्न संस्कृतियों एवं परंपराओं का विशद वर्णन किया है। इस कहानी में विश्वभर की संस्कृतियों, राजनैतिक उथल-पुथल एवं तदनुरूप मनुष्यों की मनोवृत्तियों की सूक्ष्म पड़ताल की गई है। भावों की अभिव्यक्ति एवं तथ्यों के समायोजन की दृष्टि से यह अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की अनूठी कहानी है। कथाकार रमा गुप्ता ने एक स्थल पर लिखा है- "जो एक बार अमरीका चला गया, वह वापस नहीं आता, इस अमरीका का नाश हो जो हमारे बच्चों को आकर्षित कर लेता है, पाइड पाइपर ऑफ हेमलिन की तरह"। इसी कथ्य की भीति पर गढ़ी गई कथाकार गोविंद उपाध्याय की कहानी 'मुक्ति' का नायक नित्यानंद अमरीका में नौकरी करते हुए अमरीका में इतना रय-बस जाता है कि आई.सी.यू. में भर्ती पिता के जीवन-मरण के निर्णय तक स्वदेश में ठहर नहीं सकता है। उसकी मृत्यु निश्चित मानकर अंत्येष्टि की व्यवस्था कर अमरीका लौट जाता है। वृद्ध पिता की कद्र ना करने वाले आत्मकेंद्रित पुत्र पर यह कहानी व्यंग्य भी है और सामाजिक यथार्थ भी। 'सीरीहीन' गोविंद मिश्र की जमींदारी जमाने की शान में डूबे सिरफिरे सुरेश की पुलिस द्वारा उपचार की भावपूर्ण कहानी है। 'संशय की एक रात' अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' की हिंदु-मुस्लिम दंगे पर आधारित कहानी है। दिनेश पांचाल की 'डाकण' ग्रामीण संस्कृति में डायन बनने की प्रक्रिया, उसकी प्रासंगिकता तथा उसके समर्थन और विरोध में ग्रामीणों के तर्क का विवरण अद्भुत है। अंधविश्वास की परत खोलती ग्रामीण परिवेश की अपने ढंग की अनूठी कहानी है।

हंस के अंकों में दलित विमर्श की कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। मोहनलाल नैमिशराय की 'निजाम' दलितोद्धार आंदोलन से संबंधित कहानी है। 'जिला बदर जात सदर' विकास राजौरा की दलित विमर्श की कहानी है, जिसमें ठाकुर की मनमानी 'घोड़ी पर बारात तो सिर्फ ठाकुरों की निकलती है' के विरुद्ध खटिक पप्पैया के बेटे की बारात को घोड़ी पर निकालकर दलितोत्थान का शंख फूँका गया है। जय प्रकाश कर्दम की 'चक्रव्यूह' में रूपा नामक दलित लड़की द्वारा व्हाट्सएप और फेसबुक पर अपलोड अपने कौमार्य की बिक्री करने की सूचना के प्रसारण के माध्यम से समाज में दलित लड़कियों की मजबूरियों, असुरक्षा और प्रताड़ना का यथार्थ विवरण प्रस्तुत किया गया है। श्यौराज सिंह, 'बेचैन' की 'आँच की

जाँच' एवं 'शिष्या-बहू' कहानियों में भारतीय समाज में दलितों के प्रति व्याप्त हीनता की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। 'आँच की जाँच' व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई है, तो 'शिष्या-बहू' में एक दलित बहू के प्रति ब्राहमणी सास की घृणा की अभिव्यिक्ति हुई है। भीमसेन आनंद की 'प्रेम बंधन' अंतर्जातीय विवाह की मार्मिक कहानी है, जिसमें दलित लड़की निधि और ब्राह्मण लड़का मयंक का प्रेम उनके माता-पिता की सहमति पर विवाह में परिणत होता है। कथाकार के शब्दों में - "उन्हें ऐसा लगा, जैसे इस प्रेम बंधन ने समाज में व्याप्त जाति बंधन को तोड़ने में सफलता प्राप्त कर ली है।"

हंस में और भी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। सुषमा मुनींद्र की 'रात्रिकालीन यात्रा का सहयात्री' रविशंकर सिंह की 'काहे बियाहे विदेश', जितेन ठाकुर की 'गुमशुदा' महावीर सेठ की 'शिनाख्त', उषा राय की 'हवेली', राकेश बिहारी की 'वैष्णव जन तो तेने कहिए', रजनी गुप्ता की 'अपने-अपने घेरे' आदि।

मंजूश्री के संपादन में प्रकाशित कथाबिंब के अंकों में अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। कुछ का विवेचन प्रस्तुत है। एम. जोशी हिमानी की 'अधूरी कहानी' दो वयोवृद्धों - एक हिंदुस्तानी आशा और दूसरे पाकिस्तानी साहिल के अधूरे प्रेम की कहानी है। संतोष श्रीवास्तव की 'तुम हो तो....' अप्रतिम प्रेम की अनूठी कहानी है, जिसमें जीवनपर्यंत कोमा में रहने वाली प्रेमिका मीरा के प्रति कपिल के निस्वार्थ आत्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। 'जश्न' शीर्षक कहानी में प्राध्यापक प्रशांत पांडेय ने परंपरा से अलग हटकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन प्रयोग किया है। सामान्यत: अभिभावक फेल होने वाले विद्यार्थी को डांटते-फटकारते हैं, किंतु इस कहानी में आनंद के फेल होने पर उसके परिजन जश्न मनाते हैं। 'उपचार' प्रख्यात कथाकार राजेश जैन की एक अभियांत्रिक की कलम से नि:सृत यांत्रिकी विज्ञान की गुत्थियों को सुलझाती-समझाती अनूठी कहानी है संपूर्ण कहानी अभियांत्रिकीय सूत्रों, प्रक्रियाओं और कार्यकलापों से परिपूर्ण है। कहानी जिज्ञासा उत्पन्न करती है और गणितीय सूत्र में उलझा हुआ पाठक अंत तक कथाकार के साथ बँधा रहता है। युवा कथाकार राजेंद्र शास्त्री 'गुरु' की 'गुड मार्निंग सर' शीर्षक कहानी में एक छोटी बच्ची, सातवीं कक्षा की छात्रा, एक शिक्षक को आत्मबोध कराती है। काले रंग के कारण बारहवीं कक्षा के छात्रों के उपहास का केंद्र बने शिक्षक में, छात्रा द्वारा बार-बार गुड मार्निंग सर के अभिवादन से, आत्मचेतना का संचार होता है। दृढ़ निश्चय के साथ वह कक्षा में जाता है और छात्रों को संबोधित करता है। डॉ. गोपाल नारायण आवटे की 'ओलों की बरसात' ग्रामीण कृषकों की समस्याओं से ग्रस्त उनके पलायन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक अच्छी कहानी है। इसमें किसानों की गरीबी, उनकी सहृदयता एवं सहयोगात्मक प्रवृत्ति का बड़ा ही सटीक वर्णन हुआ है। चंद्रभान राही की 'फैसला' कहानी में कोर्ट की भाग-दौड़, महाजन की बदनीयती एवं अंत में सत्य की विजय का वर्णन हुआ है।

समीक्ष्य वर्ष 2019 में प्रकाशित कहानियों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि इस वर्ष बड़ी संख्या में कहानियों का प्रणयन हुआ है। वरिष्ठ से लेकर नवागंतुक कथाकारों के कहानी संकलन प्रकाशित हुए हैं। कथाकारों ने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी कहानी विधा की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान किया है। इन कहानियों का पाट बड़ा ही विस्तृत है। इन कहानियों में उत्कृष्ट प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है तो प्रकृति की उपत्यका के बीच 'होली' की रंगिनी का राग भी फूटा हैं भूमंडलीकरण के दौर में विकसित संचार माध्यमों को कथाकारों ने कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है, तो स्मार्टफोन (विषकन्या : अमरीक सिंह 'दीप') एवं कंप्यूटर की असुविधाओं (काली चील: मधु कांकरिया) की ओर संकेत किया है। नारी विमर्श और दलित विमर्श आधुनिक युग जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। लमही की कहानियों में, मुख्यत: महिला कथाकारों द्वारा, नारी विमर्श की कहानियाँ लिखी गई हैं तो दलितों की प्रत्येक पीड़ा को कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान करने में हंस की कहानियाँ अग्रगण्य रहीं। मानव मूल्यों को उकेरती ये कहानियाँ - (निजाम: मोहन लाल नैमिशराय, चक्रव्यूह: जय प्रकाश कर्दम, शिष्या बहू: श्यौराज सिंह बेचैन आदि) पाठकों के मन को झकझोरती हैं।

वरिष्ठ कथाकारों की कहानियों में कल्पना की उड़ान है तो, भाषा में माधुर्य का संचार नवोदित कथाकारों ने किया है।

वरिष्ठ कथाकार नरेंद्र नागदेव की 'सही तारीख' जीवन की यथार्थता का चित्र उकेरती है, तो गोविंद उपाध्याय की 'सृष्टि' सूर के वात्सल्य की याद ताजा कर जाती है। वहीं पूनम तुषामड़ ने (ठोकर) किन्नरों की जिंदगी को कथा की भूमि पर उतारने का प्रयास किया है एक अभियांत्रिक के रूप में राजेश जैन (उपचार) ने अभियांत्रिकी एवं गणितीय सूत्रों को कहानी में रूपायित किया है, तो प्राध्यापक प्रशांत पांडेय (जश्न) ने शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोग किया है। एक शिक्षक के भीतर व्याप्त हीनता की ग्रंथि को तोड़कर वहाँ चेतना का संचार करने में नवोदित कथाकार राजेंद्र कुमार शास्त्री 'गुरु' (गुड मार्निंग सर) की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आज की कहानियों में पहाड़ी की अभिव्यक्ति बड़े पैमाने पर हो रही है। समीक्ष्य वर्ष में भी कथाकारों (एस.आर. हरनोट : कीलें, शैलेश मटियानी : मिसेज ग्रीनवुड) ने पहाड़ी जीवन की अभिव्यक्ति की है। प्रेमचंद का निर्धन किसान हर युग, हर काल एवं हर समय में भारतीय समाज में उपस्थित रहा है जिसकी अभिव्यक्ति कहानियों में हुई है। इस वर्ष भी कृषक जीवन से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। विदेश में रहकर भारतीय संस्कृति, भारतीय जन-जीवन एवं प्रवासी जीवन को कहानियों में अनेक कथाकारों ने रूपायित किया है और कहना असंगत नहीं होगा, ऐसे कथाकारों में महिला कथाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी महिला कथाकारों ने कहानी लेखन के क्षेत्र में अपनी विपुल उपस्थिति दर्ज की है। ममता कालिया (ठसक), गीताश्री (लिट्टी चोखा) से लेकर नवागंतुक तराना परवीन (एक सौ आठ) ने कहानी विधा को अपने संकलन दिए हैं तो पत्र-पत्रिकाओ में बड़ी संख्या में कहानियाँ लिखी हैं। सुषम वेदी (माया का ताजमहल) ने अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति की है, वहीं नारी जीवन की चेतना, जागृति एवं जिजीविषा को डॉ. मृदुला झा (एक सच ऐसा भी) ने कहानियों में दर्ज किया है।

अनुवाद (फोर्ट विलियम कॉलेज सं. 1860) गद्य की जन्मभूमि रही है। पिछले वर्षों की तरह समीक्ष्य वर्ष में भी विदेशी एवं हिंदीतर देशी कथाकारों की कहानियों का बड़ी संख्या में हिंदी अनुवाद हुआ है। दैनिक हिंदुस्तान, भाषा, हंस, मधुमती आदि ऐसी ही पत्रिकाएँ हैं, जिनके माध्यम से अनूदित कहानियों का प्रकाशन हो रहा है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2019 में कहानी लेखन के क्षेत्र में व्यापक कार्य हुए हैं। वर्ष-दर-वर्ष हिंदी कहानी लेखन में प्रगति हो रही है और कथाकारों की उपस्थिति बढ़ रही है। इस दृष्टि से कहानी का वर्तमान तो समृद्ध है ही, भविष्य भी उज्ज्वल है।

– द्वारा कुमार राजेश, V-सी. आई. ए. ई. कैंपस, नबीबाग बैरासिया रोड, भोपाल,
मध्य प्रदेश - 462038

❑❑❑

22

हिंदी कविता

प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय

"पावस में मर गया मेघ से श्याम नील आकाश डी. लिट्. बनकर मोर कुंज में नाचा कविता का उल्लास" 'कवि और कविता : गोपाल शरण सिंह नेपाली' से कविता की अंतर्यात्रा प्रारंभ होती है। भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश' इस वर्ष की मंगल कामना करते हैं और चाहते हैं सर्वत्र सुख शांति सौमनस्य का वातावरण हो। देश की सब विधियों से रक्षा हमारा परम कर्तव्य हो।

जन जीवन के संरक्षण में/ तत्पर रहें नरेश सदा/ स्नेह, सौख्स, सौभाग्य, सुयश दे/ सबको ही सर्वेश सदा। दूसरी ओर कवि ग़ज़ल के माध्यम से गाँव की पतनावस्था, होरी का शहर की ओर पलायन तथा अपनी सरलता, सहजता छोड़कर 'गब्बर' बन जाने पर गहरी चिंता व्यक्त करता है– *प्रेमचंद ही ढूँढता है, होरी का गाँव/ मेरे गोबर अब तुम गब्बर हो गए।* (हिंदी प्रचारक पत्रिका, जनवरी 20, वाराणसी)

आनंद विल्यरे अपनी ग़ज़ल के माध्यम से देश की दुरावस्था, पतनशीलता, मूल्यहीनता पर मारक टिप्पणी करते हैं। मनुष्य के पतन पर गहरी चिंता व्यक्त करते हैं–

माना बड़ी शोहरत है, सरकस की
मेरे शेर अब तुम सियार हो गए।

(उपरिवत पृ.9)

मधुमती (उदयपुर, राजस्थान) के मार्च अंक में कई पठनीय, मननीय कविताएँ हैं। प्रयाग शुक्ल की पाँच कविताएँ हैं– 'चीजें जिन्हें हम छू सकते हैं', 'तितलियाँ उड़ती हैं', 'शब्द', 'एक दृश्य', 'सुनयना फिर यह न कहना'। कई चीजें छूकर देखीं, परखी जा सकती हैं। कारण, वे मूर्त हैं। परंतु कोई प्रेम को छूना चाहे, तो यह संभव नहीं है– *छू नहीं सकते प्रेम को पर, चीजों को छूकर प्रेम से,/ मधुर स्पर्श से,/ जान ले सकते हैं,/ कुछ तो इस प्रेम को।।* *(पृ. 110)*

पहली बार जब शब्द जन्मा, लगा चारों ओर का अंधकार छट गया है अचानक सब ओर प्रकाश झर रहा है। आचार्य मम्मट ने शब्दागम की यही स्थिति व्यक्त की है। 'शब्द' में कुछ ऐसा ही भाव है। वे धूप, वर्षा, अंधकार, प्रकाश, पगडंडी, खिड़की, छत पर कभी हौले-हौले, कभी हड़बड़ाए, सकुचाए, धीमी, तेज गति में आ जाते हैं। भर देते हैं हमें हर्ष, पुलक से। 'सुनयना यह न कहना' में कुछ नहीं कहकर भी सुनयना बहुत कुछ कह देती है। वाणी का सदा मुख पर रहना ही जरूरी नहीं है। उसका मौन रहना ही मुख का कपाट खोल देता है इस अंक में चंचला पाठक की सात कविताएँ हैं। पहली कविता में नींद भरी आकुलता का रहस्य किसी औघड़ की औपचारिकता के अघट विन्यास में खो जाता है।

उसमें अशेष का गरुड़पुराण बाँचते हुए लाँघ जाता है वह अक्षरों के ब्रह्मचर्य तक।

रवि पुरोहित की चार कविताएँ हैं 'शिल्पी के नाम', 'मिल जाऊँ शायद कहीं', 'शुक्रिया जिंदगी', और 'मुझ में खुद को छोड़ गया वह' (मधुमती) मार्च 2020, शिल्पी को कवि अपने शिल्प में परिवर्तन की सलाह देता है। कारण, सब नए-नए के अनुरागी हैं। पुराना कुछ नहीं चाहिए। 'नव-नव गुणरागी प्रायशः सर्वलोकः पान का पत्ता पीला पड़ गया, तो डाली में कब तक सटा रहेगा- *ओ पानीदार शिल्पी/ बदल ले अब,/ खंड-खंड पीला पान/ कब तक जुड़ा रहेगा/ मरियल लता से/* (मधुमती, पृष्ठ 118, मार्च 2020)'मिल जाऊँ शायद कहीं' में प्रेम, अपनत्व, आत्मीयता की ऊष्मा है, जिसके बिना जीवन लड़खड़ा जाता है जीवन कोई खेल नहीं। *जानता हूँ/ पर स्नेह ही पोषित करता है इस अबोध को।* (पृ. 119)

इश्राकुल इस्लाम माहिर अपने दोहों में जीवन के विविध रागों का तराना छेड़ते हैं। मनुष्य अपने 'स्व' को भूलकर चल पड़ता है तो वह पैकर चलने वाला घोड़ा हो जाता है, जो न दिशा जानता है, न अपना गंतव्य ही-

सारे रस्ते चल पड़े, जाने किस-किस ओर
छूटी मेरे हाथ से जब से मेरी डोर।

(मधुमती, मार्च 2019 पृ. 121)

कवि आज की मूल्यहीनता पर भी टिप्पणी करने से बाज नहीं आता है-

उसने अपना कर लिया, देकर मान-सम्मान
वरना मैं इक बावला, मेरी क्या पहचान

(मधुमती, मार्च 20 पृ. 121)

प्रकृति का इतना सुंदर मानवीकरण कितना रमणीय है-

दादी जैसी रात का आँचल है आकाश
पग-पग पर जिसकी कथा करती है प्रकाश

(उपरिवत, पृ. 122)

'मधुमती' के इसी अंक में नवीन दवे भानावत की तीन कविताएँ हैं- 'आत्महत्या', 'शब्द अक्सर तोड़ देते हैं', और 'उसका सामना'। कविता शब्दों का खेल मात्र नहीं होती क्योंकि थोपे गए अनसुलझे शब्द अक्सर तोड़ देते हैं उसके मर्म को, शब्दों से केवल आलोड़ित होती है कविता। शिल्प गढ़ने को रहती है तत्पर मर्म को जानना चाहती है और मनुष्य के विध्वंस करने की युक्तियाँ तोड़ना चाहती है। कविता भूख है, तो रोटी की तलाश भी है। राह भटकते इनसान को राह दिखाती है। ऐसा इनसान यहाँ राह पा लेता है। टूटे प्रेमी की आह यहाँ निकलती है। कविता कभी निराशा की ध्वनि नहीं निकालती। वह आशा का परचम लहराती है। कविता रात नहीं; रात की गुत्थियों के कई अनसुलझे गवाक्ष खोल देती है। वह आदमी को आदमी से जोड़ती है। पारस्परिकता विकसित करती है। 'अंह' से 'इंद' की यात्रा करती है।

यहाँ गोपाल प्रसाह सिंह नेपाली की 'कवि और कविता' का फिर ध्यान आ जाता है, जिसे चाहकर भी विस्मृति के गह्वर में नहीं डाला जा सकता-

आती ग्रीष्म जगाती, जग के कंठ-कंठ में प्यास
कविता छाँह बनी, तरुवर की, शीतल सलिल सुवास।

किसी स्त्री का विधवा होना उसके अपने वश की बात नहीं होती। यह विधि का विधान है, जिसके आगे चाहे-अनचाहे सिर झुकाना पड़ता है। उसका सामना , 'नवीन देव' में स्त्री आत्मचिंतन करती ठहर जाती है और एक ठोस निर्णय आकार लेता है-

अपशकुन मैं कैसे हुई?/ अपशकुन वहीं खुशियों का सामना या स्वार्थ। (पृ.126)

पुनीत कुमार रंगा की तीन कविताएँ हैं यहाँ 'पिता' में उसे मूर्त क्रोध का प्रतीक माना गया है। "और नहीं उसे कोई समझ पाया। बस केवल क्रोध मूर्त रूप में पाया।"(पृ. 127) 'क्या नहीं है कलम' में कलम की महत्ता की अशेष गाथा है कि यह पानी सी तरल आग की तपन, सृष्टि का सर्जन है। 'भाषा' में उसकी सीमा, विकास की शर्तो पर भी ध्यान दिया गया है-

न बाँधो मुझे रश्मों में । न करो दिखावा तुम/ करो आजाद मुझे/ शब्दकोश से। (पृ. 128)

अंतिम पक्तियाँ बड़ी मार्मिक है, *मैं भाषा तुम भाषी/ इस रिश्ते को पहचानो।* (पृ. 128)

दिनेश कुमार की चार कविताएँ हैं- 'यह जो आइना में झलक रहा होता है, वह कहाँ टूटता है', 'जवाब', 'जय बोल' और 'धोखा' पहली कविता जीवन के प्रति गहन आस्था की कोख से निकली है-

कथाबिंब (मुंबई) के जनवरी-जून 2020 अंक में ग़ज़लें और कविताएँ हैं। अहसासों की प्रेरक विलोम में लय: संदीप राशनिकर में कवि की संकल्पना है कि वह अजनबी की आँखों की पहचान बने। जो जीवित होकर भी मृतक के समान है, बुत के समान मौन है, उनकी आवाज बन उद्वेलन करना चाहता है हिंसा की खूंखार, आँखों में वह करुणा, ममता का संचार करना चाहता है। वह जानता है कि यह सब मुश्किल है फिर भी आशा छोड़ना नहीं चाहता। अपनी उद्दाम कामना को पंख देना चाहता है-

फिर भी/ चाहता हूँ/ विलोम में लगा सकूँ एक लय/ और गा सकूँ / स्वच्छंद उड़ते/ परिंदों के/ कुछ नग़मे। (पृ. 27) इसी अंक में उज्ज्वला केलकर की दो कविताएँ है- 'परचा', 'पुण्यस्मरण'। पहली कविता में मनुष्य को अपनी विवशता, फटेहाली में किए गए किसी के उपकार का कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता है, इसका मार्मिक वर्णन है-

होना ही चाहिए पूरा परचा लिखकर/ उसके मालिक को प्रथम पाँच में जो आना है/.... मुझे इतना ही करना है/ उसका परचा लिखकर देना है/ उसके द्वारा दिए गए परीक्षा शुल्क के एवज में।(पृ. 30)

किसी की पुण्यतिथि पर औपचारिक अश्रुपात, गुणगान, उनके संकल्पों को साकार करने का व्रत कितना ढोंग, हास्यास्पद है, यह यहाँ देखने योग्य है-

अनेक शब्द.../ अनेक संकल्प/ पुतले के चरणों में करके अर्पण निकल गए सारे रिक्त नयनों में/ खुले मन से,/ महापुरुष का पुतला/ समेटता रहा उनके संकल्पों के क़फ़न। यह आज की संस्कृति है, पुण्यात्मा का स्मरण है। उनके प्रति श्रद्धांजलि है। ध्वन्यार्थ यह कि हमारी संवेदना मर गई है। हम काठ के पुतले हैं। सूत्रधार कोई और है और हम आँख मूँदकर खानापूर्ति भर करते हैं। दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल याद आ जाती है। हमारी संवेदनहीनता, जड़ता पर-

वो कोई बारात हो या कि वारदात
अब किसी भी बात पे खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ
(साए में धूप)

राजेंद्र तिवारी की यहाँ दो ग़ज़लें हैं, जो मानव-मूल्यों की दिन दहाड़े हत्या का दृश्य विधान करती हैं-

सब अपने लिए करते हैं लफ़्ज़ों की तिजारत,
लफ़्ज़ों के मआनी के लिए सोचता है कौन

(कथाबिंब, जनवरी-जून 2020, पृ.33)

जनपथ (त्रैमासिक, आरा, बिहार) के 'काव्यांगन' मे कई कविताएँ हैं जो मानव की अनंत जिजीविषा, विजय भावना और संघर्षशीलता का प्रबल प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। "मन-दर्पण पर जो प्रतिबिंब एक बार बन गया, वह टूटता कहाँ है। दर्पण भले ही टूटकर बिखर जाए। आईना टूट जाए भले ही देह-सा/ पर जो आईने में झलक गया होता है वह कहाँ टूटता है।" (वह जो आईना में झलक गया होता है वह कहाँ टूटता है पृ.50) यहाँ दिनेश कुमार की दूसरी कविता है 'जय बोल' जिसमें किसकी जय मनाई जाए, इसका विवरण है। यहाँ धरती, आकाश, गुरुजन, महाशक्ति की जय का विधान किया गया है। धरती की महत्ता की व्यंजना कितनी मार्मिक है- *रे मन तू बोल जय तो/ कर शुरू उस धरती से/ जिसने तुझे कोख में लेकर/ जीवन भर अपने आपको/ सदा के लिए ममता की अक्ष पर कई डिग्री अपने आपको झुका लिया।* (पृ. 51)

गुरु की महिमा में कहा गया है-

रे मन तू बोल जय तो/ शुरू कर उस गुरु से/ जिसने कई मास भूखा रहकर/ भी तेरे मुँह में दिन-प्रतिदिन के लिए/ जान का दाना डाल दिया।
(पृ.51)

इसी अंक में प्रतिभा चौहान की कविताएँ हैं- 'सिलसिला एक बटा दो', 'संसार के ख़्वाब देश का नक्शा', 'पिता', 'कई बार देखा', 'किताबें और बुरधूया बुद्धू'। इसका भाव संसार बड़ा व्यापक है जिसमें सारी मानवता को पनाह मिलती है। पथ भटके को दिशा, निराश को आशा और विरुद्धों के मध्य समन्वय का संकेत। 'पिता' की गरीबी का वर्णन

कितना मार्मिक है- *पिता बहुत कंजूस थे। नमक खुद पीसते थे सिलौटे पर/ क्योंकि पिसे हुए नमक का दाम डेली से कुछ होता था ज्यादा/ सिर्फ होली दिवाली हम पहनते नए कपड़े। पिता जी काट देते त्योहार पुराने कपड़ों में ही।*

(जनपथ, अप्रैल-जून, 2020, पृ.53)

लक्ष्मीकांत मुकुल की कविता है 'बोधा वाला पीपल' जिसमें पीपल वृक्ष लगाने की कल्पना, क्रियान्वयन एवं तज्जन्य प्रभाव का व्यापक वितान है। वह अपने स्थान पर खड़ा सब कुछ देखता रहता है कि किस प्रकार बाढ़ से बौखलाती नदी ने बारंबार जलप्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया है। किस प्रकार पूरे गाँव को पलायन करना पड़ा है जलप्रलय से। 'उदास हैं गड़ेरिए' में भेड़ के बाल से कंबल बुनने की प्रथा के अंत से उपजी त्रासदी का मार्मिक वर्णन है।

कहते हैं आगामी विश्वयुद्ध जल के लिए होगा। कारण, नदी भर दी गई, तालाब, झरने, आदि भर दिए गए। उनपर लहराने लगी आसमान छूती इमारतें। तब जल संकट स्वाभाविक है। बूँद-बूँद के लिए मनुष्य तरसेगा। क्या जल का आयात विदेशों से किया जाएगा? यह यक्ष प्रश्न निरंतर मँडराता है पर आबादी की सुरक्षा उत्तर कहाँ पाने देती है।

किसने लूटा हमारी धरती की कोख से अमूल्य खजाना/ जिसे सहेजकर वह लाई थी सदियों से/ हमारे कंठ तर करने के लिए। (किसने कैद किया हमारे जलधारों को : लक्ष्मीकांत मुकुल, जनपथ, आरा, अप्रैल-जून 2020, पृ.55-56)

हम भारतवासी हैं और भारत के लिए मरना, मिटना हमारा कर्तव्य है। देश की रक्षा के लिए हर भारतवासी उत्सर्ग, बलिदान की किसी सीमा तक जा सकता है। यही भाव व्यक्त हुआ है प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय की कविता 'तादात्म्य' (कथाबिंब, मुंबई) में। हरपाल अरुष जंगल की रक्षा करना चाहते हैं। और मनुष्य है कि उसे नाश करने पर तूला है। 'जंगलों सावधान हो जाओं' में बड़ी शिद्दत से कवि जंगलों की रक्षा करना चाहता है। उसकी दयनीय स्थिति से परिचित कराता है क्योंकि अब आदमी हथियारबंद तानाशाह बनकर आ रहा है। इसलिए जंगल सावधान हो जाएँ (जंगलों सावधान हो जाओ, हरपाल सिंह 'अरुष', भाषा जनवरी-फरवरी 2020, पृ.108)

'अभी भी शेष है चिंगारी : विजय सिंह नाहटा' में कविता की अशेष संभावनाओं को व्यक्त किया गया है। मनुष्य हैं, उनकी कामनाएँ, कल्पनाएँ हैं, स्वप्न, अरमान हैं तो कविता भी है। कविता उन्हें ही जगाती है। हवा देती है। सही मुकाम पर पहुँचाती है। जिनके पास खौफ था, उनका नाश निश्चित था। जिनके पास आशा, विश्वास, स्वप्न, अरमान हैं उनका भविष्य उज्ज्वल है। वे मृत्यु की आत्मकथा नहीं लिखकर शेष चिंगारी को धधकाना चाहते हैं। दुष्यंत कुमार ने इसी चिनगारी की ओर संकेत किया था-

एक चिनगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों।
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।
(साए में धूप)

मनुष्य कायदे-कानून विधि-निषेध के चक्रव्यूह में पड़ा-पड़ा परेशान रहता है। अतएव, चाहता है वह एक बार मुक्त हो जाए इस तनाव से । विधि-निषेध, करणीय-अकरणीय की सारी बाधाएँ पार कर जाए- *दिन-रात जिम्मेदारियों तले बोझिल मन को/ नववधू बन जीने दो/ सुनो बस एक दिन। मुझे बेतरतीब जिंदगी जीने दो।*

(भाषा, जनवरी-फरवरी 20, पृ.110)

सुसंभाव्य (भागलपुर, बिहार) के अप्रैल अंक में कई कविताएँ, ग़ज़ल हैं जो मानव-अनूभूतियों के कई पक्ष उद्घाटित करती हैं। 'मैंने बस यूँ ही ठिठककर' : किशोर कुमार अग्रवाल में कवि अतीत की ओर लौटता है और नाना स्मृतियों में जीने लगता है- पढ़ाई, परीक्षा, आवारगी, बेचैनी, छोटी-छोटी चोरियाँ, ताक-झाँक, भविष्य की कल्पनाएँ, योजनाएँ आदि -आदि। फिर एक सहपाठिनी की मधुर स्मृतियों में खो जाता है कवि। कुछ क्षणों बाद फूट पड़ता है-

तुम थी मेरी सारी उत्सुकताओं का समाधान
मेरी बेसिर-पैर कविताओं की श्रोता व प्रशंसक।
सारी झिड़कियों उपेक्षाओं से निजात दिलाती
छोटे कामों का निरीक्षण करती मान देती तुम।
(पृ.16)

इसी अंक में मंजुल उपाध्याय, 'मंजुल' की दो। कविताएँ हैं। 'तुम्हारे इश्क के घर में' और 'देना एतबार तुम' कवयित्री स्मृतियों की नदी में डूबने-उतरने लगती है। उसकी शीतल, निर्मल, निर्झरिणी-सी हँसी, गीतों में बहती दीवानगी पर फिदा हो जाती हैं। उसके मुहब्बत का सब्जरंग उसकी देह में शनैः शनैः उतरने लगता है। उसे आकुल-व्याकुल बना देता है तो वह अपने ही भीतर सिमटने लगती है। सिमटती जाती है, 'देना एतबार तुम' में दोस्ती, विश्वास, एतबार का तकाजा है।

इस अंक में अजय कुमार मिश्र की दो कविताएँ हैं 'मन-शैशव' और 'भाई कहकर बुलाके तो देखो।' एक में बाल स्मृतियाँ हैं, जहाँ सरलता, निश्छलता है तो दूसरी में भाई के प्रति अगाध प्रेम की गाथा। आज का जीवन कितना विषाक्त हो गया है। विष की प्यास बंधु शोणित से बुझाई जा रही है। निराशा, हताशा के इस गहनांधकार में भाई के प्रति अगाध प्रेम का यह दृष्टांत अपूर्व है। आदर्श और प्रेरकः *भाई कहकर बुलाके तो देखो। मैल धुल जाएगा मन का सारा/ प्रेम अमरित झरेगा हृदय से/ एक दूजे को मिलकर सहारा*

(उपरिवत पृ.35)

इसी अंक में डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया की तीन कविताएँ हैं- 'नेह का निमंत्रण', 'रामचरन' और 'मुद्दतों के बाद', पहली कविता में प्रत्येक ऋतु अपनी विशेषताओं के अनुसार हमारा स्वागत करता है। हमें जगाता है। प्रेरित करता है और जीवन-समर में कूदने की चुनौती देता है। दूसरी कविता में रामचरन की स्थितप्रज्ञता का बयान है, बूढ़े बरगद-सा आँगन में बैठा रामचरण सब कुछ टकटकी लगाए देखता रहता है।

कवि, आलोचक, समाज सेवी डॉ. विश्रांत वशिष्ठ हमारे बीच नहीं रहे पर अपने व्यक्तित्व एवं काव्य की गरिमा के कारण आज भी अमर हैं। अपने देश और भाषा से प्यार करना कोई उनसे सीखे। सत्य का सामना कैसे किया जाता है, कितनी बाधाएँ आती हैं- यह जानकर भी वह देशहित समर्पित है। "अपने देश और भाषा से अब तक प्यार नहीं सीखा है, धर्म कई गंतव्य एक जो अब तक मुझे न दिखा है। सच्चाई का करूँ सामना अभी न ताकत मुझमें आई, मुझको तो बस यही लगा है सच का स्वाद बहुत तीखा है।" (संवाद विमर्श, दिल्ली, 21 जुलाई, 2020, पृ.6)

राम बहादुर चौधरी चंदन अपनी दो ग़ज़लों में जीवन के कई घात-प्रतिघात व्यक्त करते हैं। हमारी आँखों में उँगली डालकर, हमें आगाह करते हैं जमाने के रंग-ढंग किस प्रकार हमें भरमाते हैं, नाना चक्कर में डालते हैं। 'अपनी डफली अपना राग' सुना था। आज इसी का चलन है। चमचों की लग गई है कतार चारों ओर खुद अपना ही चेहरा न पहचान पाता चमचा। तभी वह कामना करता है चमचों को मात देने की-

मात चमचों को देता रहूँ हर समय
बस सिखा दे तू डफली बजाना मुझे

(व्यंग्य यात्रा, जनवरी-जून 2020, पृ.93)

अज्ञेय ने लिखा है कि दुख माँजता है। निखारता है तो जीवन के प्रति नई दृष्टि भी देता है। यहाँ कवि वही भाव व्यक्त करता है-

केवल वह ही लिख पाता
दुख से जिसका रिश्ता है

(वही, पृ.93)

मूसा खाना अशांत बाराबंकवी अपनी दो ग़ज़लों में जीवन के नाना घात-प्रतिघात व्यक्त करते हैं। हमारा देश हो गया है अस्त-व्यस्त जिधर देखिए धुआँ ही धुआँ भरा है। जब से हुआ वह गद्दीनशीन तबसे बहरा हो गया है। किसी की चीख पुकार, मान-मनुहार उसपर प्रभाव नहीं डालते। तब एक ही उपाय बचा रहता है प्रेम, अनंत प्रेम! यहाँ कभी हार नहीं है, जीत ही जीत है-

मुहब्बत करके देखो सब से मूसा,
नहीं हारोगे इक ऐसा जुआ है।।

(वही, पृष्ठ 93)

विज्ञानव्रत अपनी दो ग़ज़लों में वह सब कुछ व्यक्त कर देते हैं; जो आज की अपेक्षा है। मनुष्य कितना बदलता जाता है, परिस्थिति, वक्त का तकाजा पता नहीं उसे कहाँ-कहाँ भरमाएगा, भटकाएगा।

सुरेश सेठ की दो कविताएँ हैं- 'सोन चिरैया' और 'सब्र कैसे करूँ?' मौलिकता की अंधी दौड़, आर्थिक क्रांति की भागाभागी में सोन चिरैया पता नहीं कहाँ खो गई है, वैसे भी कोयल की कूक, वर्षारंभ होते ही मोर का नाचना, आधी रात को विरह की आग में जलते पपीहे का गीत आज दृश्य में नहीं है। कौन जाने हमारी मौलिकता, दृश्यहीनता उन्हें कब अपना ग्रास बना चुकी है।

इसी अंक में 'कविता और चुटकुले का संवाद' (देवेंद्र जोशी) ध्यानाकर्षक है। कारण, कवि देख रहा है कि चुटकुलेबाज धूम मचा रहे हैं। सच्चा कवि आठ-आठ आँसू बहा रहा है। मनुष्य का स्वप्न विधान कहीं मरुकांतार में खो गया है। इन विपरीत परिस्थितियों में कविता चुटकुला बन विराजेगी। सज्जनों के चित्त को भले नहीं भाए पर भांडों को यह हर्षित करेगा।

डॉ. प्रताप मोहन भागवत भारतीय ने 'प्रमाणपत्र' में बताया है कि यह कितनी बड़ी विडंबना और मानवता की पराजय है कि दुनिया प्रमाणपत्र पर चलती है। जन्म, मृत्यु, बीमारी, जाति, चरित्र, स्थायी निवासी सबका प्रमाणपत्र। वह दिन दूर नहीं है जब पत्नी के शयन कक्ष में घुसने के पहले उसके पति को अपने पति होने का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होगा।

सिद्धेश्वर 'गुमराह' में मनुष्य के भक्षक बनने की आवश्यकता पर बल देते हैं। समाज सेवक को परिस्थिति भक्षक बनने को विवश करती है। कारण वह मनुष्यता और दानवता में भेद नहीं कर पाता है। रमेश मेहंदीरत्ता जीडीपी की असलियत की पोल खोलते हैं। उपभोक्ता खरीदता है गेहूँ, चावल सौ रुपए में। किसान के बीस, बिचौलिए के साठ, रिटेलर के बीस। जीडीपी हँसता है। किसान रोता है। असली मार ग्राहक (उपभोक्ता) खाता है। पर संसार चलता ही रहता है। कहीं कुछ नहीं बदलता है। सारे प्रयास, आश्वासन धरे के धरे रह जाते हैं। और मनुष्य त्रासद परिणाम झेलने को विवश है। 'सब्र कैसे करूँ' जबकि मौत के हरकारे दिनरात घूमते रहते हैं। आदमखोर जानवरों की एक नई फसल इन सड़कों पर उग आई है फिर भी दुनिया आशा पर चल रही है।

सविता चौधरी की 'ख्वाहिश' है कि उसे एक दिन मुक्त, निर्द्वंद्व जीने का अवसर दिया जाए। वैसे मनुष्य अनंत व्यस्तताओं से घिरा रहता है। नहीं सोच पाता अपने बारे में किंचित। रहता है उसपर इतना दबाव कि अपनी 'निजता' अपना 'स्व' वह खोता जाता है। इसलिए कामना करता है- *बस एक दिन/ मुझे बेतरतीब जिंदगी जीने दे।....। सुनो, बस एक दिन मुझे बेतरतीब जिंदगी जीने दो* (ख्वाहिश: सविता चौधरी, भाषा, जनवरी-फरवरी 2020, पृष्ठ 110)

अभी भी शेष है चिनगारी: विजय सिंह नाहटा (भाषा, जनवरी-फरवरी 2020, पृष्ठ 109) में बताया गया है कि कविताएँ इतनी अमोघ और अमर हैं कि उन पर किसी तोप, बारूद, मिसाइल का प्रभाव नहीं पड़ता। कविता है कि लाख विपरीतता, विषमता के मध्य अनुकूलता, समता का मार्ग प्रशस्त कर ही लेती है। गोपाल सिंह नेपाली की 'कवि और कविता' याद आती हैं-

कविता है कवि हृदय क्षितिज में बालारुण का आना, जीवन की प्राची में उठकर मधुर-मधुर मुसकाना। आती ग्रीष्म जगाती जग के कंठ कंठ में प्यास, छाँह बनी तरुवर कविता की शीतल सलिल सुवास।

मधुमती (उद्यपुर जुलाई 2020) में ध्रुवशुक्ल की दस कविताएँ है- 'तन की आँच की सहकार', 'घर देखने की फुर्सत', 'सामूहिक मय में बसी है मृत्यु', 'रस्सी में साँप जैसा फैला है भ्रम'। लोग परस्पर आश्रित हैं। एक दूसरे के बिना जी नहीं पाते: परस्पर आश्रित है संसार (पृ.115) 'घर देखने की फुर्सत' में प्रकृति के साथ मानव के रागात्मक संबंध का कितना सुंदर विश्लेषण है-

घड़े के जल में/ दिन भर बैठा रहता है सूर्य/ रात को चंद्रमा/ अँधियारे पाँख में अंधेरा/परछाइयाँ नाचतीं हैं सबकी इस घर में।

(मधुमती, जुलाई 2020, पृ.116)

विपदा आती रहती है बार-बार पर कवि हारता कहाँ है, सारी विपरीतता-विषमता का करता रहता है उपचार।

– 'वृंदावन', मनोरम नगर, एल. सी. रोड, धनबाद, झारखंड-826001

❑❑❑

23

हिंदी ग़ज़ल

डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना

वर्ष 2019 हिंदी ग़ज़ल या हिंदी में ग़ज़ल के लिए अन्य काव्य शैलियों की भाँति ही उपलब्धि परक वर्ष रहा है। इस वर्ष विभिन्न ग़ज़लकारों के एकल ग़ज़ल संग्रह, संपादित ग़ज़ल संग्रह अनेक शोध आलेखों के संपादित संग्रह प्रकाशित हुए हैं। अभिनव प्रयास जैसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हिंदी ग़ज़लों की धूम रही है। हिंदी ग़ज़ल की चर्चा एवं सफलताओं को लेकर इस क्षेत्र में राजनैतिक संक्रमण व्याप्त हो गया है। मसीहा बनने अथवा प्रवर्तक बनने की होड़ में अनेक शिविराग्रही लोग सक्रिय हैं। हिंदी ग़ज़ल के वास्तविक शोधकर्ताओं की उपेक्षा करके उनका स्थान लेने के लिए भी प्रयास चलते रहे हैं।

प्रस्तुत आलेख में हम निष्पक्ष रूप से वर्ष 2019 के हिंदी ग़ज़ल साहित्य का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन एवं आकलन पर चर्चा करने जा रहे हैं।

इस वर्ष ग़ज़लांजलि साहित्यिक मंच, उज्जैन (म. प्र.) ने वहीं के कवि ग़ज़लकार श्री जगदीश चंद्र पाण्ड्या 'अक्स' की ग़ज़लों का संग्रह 'मुहब्बत तू कहाँ है' शीर्षक से सजिल्द प्रकाशित किया। इनकी ग़ज़लों में इश्क मोहब्बत के साथ-साथ जिंदगी के विभिन्न पहलुओं से जुड़े विचारों को रंग दिया गया है। पण्ड्या जी ने इन ग़ज़लों के मक्तों में अक्स उपनाम या तखल्लुस का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। उदाहरणार्थ- "शुक्रिया शाइरी की करता हूँ। 'अक्स' को रोशनी दिखाई है।" पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे उर्दू के कठिन शब्दों के अर्थ सरल हिंदी में दिए गए हैं। आकर्षक मुखपृष्ठ वाली प्रस्तुत ग़ज़ल कृति में कवि ने अपने परिपक्व दृष्टिकोण से प्रेम सौंदर्य एवं जीवन के अन्यान्य विषयों को पूर्ण गंभीरता से अभिव्यक्ति दी है।

इस वर्ष इसी प्रकाशन से कवि जगदीश पण्ड्या 'अक्स' के जिंदगी खुदा, मज़हब, दर्शन, अहंकार, मुहब्बत, अश्क, सुख-दुख, मैखाना, मौत आदि विषयों से संबद्ध उनकी ग़ज़लों से चुने हुए शेर और भावार्थ 'काव्या' शीर्षक से सजिल्द प्रकाशित किया गया है। यह अपने ढंग की निराली कृति है।

इसी वर्ष समन्वय प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश) से डॉ. कुमार प्रजापति जी की 90 ग़ज़लों का संग्रह 'ख़यालों का सफर' शीर्षक से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ है। कृति के अंतिम दो पृष्ठों पर कवि के चुनिंदा शेर भी दिए गए हैं। संकलित ग़ज़लों की संप्रेषणीयता पाठकों के दिलों से सीधे संवाद करने में समर्थ हैं प्रेम की बहुरंगी प्रस्तुतियाँ उनकी ग़ज़लों में देखिए-

याद बहुत आते हो, मिलने आओ ना/मुश्किल है तो अपने पास बुलाओं ना 'उसे इन्कार करने दो अगर इन्कार करता है/ मुझे मालूम है वो शख्स मुझसे प्यार करता है। अथवा सब्रो सुकूँ से काम ले, आँखें न

अश्क बार कर/ किसने कहा था दिल लगा/ किसने कहा था प्यार कर।

बड़ी सरलता से गंभीर से गंभीर बातें कह जाना डॉ. कुमार प्रजापति जी की ग़ज़लों की प्रमुख विशेषता है वरिष्ठ कवि-ग़ज़लकार एवं विषय विवेचक डॉ. मधुसूदन साहा एवं भाई अनिरुद्ध सिन्हा की भूमिकाएँ कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली हैं। कृति की स्तरीयता निश्चय ही असंदिग्ध है।

इसी प्रकाशन से वर्ष 2019 में ही डॉ. प्रजापति जी की ग़ज़लों की नई कृति 'भावनाओं की बस्तियाँ' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। कवि के पास ग़ज़ल कहने का अपना अलग हुनर एवं शिल्प सौष्ठव है। यहाँ कवि के अनुभव परक दो शेर उदाहरण स्वरूप दृष्टव्य हैं-

जो मुकद्दर को सब कुछ समझता रहा/ उम्र भर उसकी किस्मत में धोखा रहा।

मुझको न इस तरह तू निगाहें बदल के देख/ हो जाऊँ मैं भी नर्म अगर तू पिछल के देख।

हिंदी ग़ज़ल के सूत्रधार भाईजान प्रकाश विवेक जी की भूमिका प्रस्तुत संकलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इसी क्रम में भाई विजय राठौर का ग़ज़ल संग्रह 'सच का गोमुख बंद है' विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसे वे ग़ज़ल के स्थान पर विधा के रूप में प्रतिस्थापित करना चाहते हैं। अपनी इन रचनाओं में कवि ने नुक्ता के प्रयोग से भी परहेज किया है। मुझे यह नहीं लगता कि उनका यह आग्रह कहाँ तक उचित है? फिलहाल उनके एक दो शेर देखिए *बनेगी ये बिगड़ी बात जरा धीरज धर/ कटेगी ये अँधेरी रात जरा धीरज धर। और हमें उनको दिल से भुलाना न आया/ उन्हें भी मुहब्बत निभाना न आया?*

वर्ष 2019 में ही वरिष्ठ कवि डॉ. अश्वघोष जी का स्तरीय ग़ज़ल संग्रह 'बयान ज़िंदा है' सौम्या बुक्स दिल्ली-51 से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। वे गीत और ग़ज़ल दोनों के ही सिद्ध हस्ताक्षर हैं। संग्रह की अधिकांश ग़ज़लें छोटी बहरों में बड़ी बात कहने में समर्थ हैं। उदाहरणार्थ- *देखा जब उजियारा उसने/तब मुझसे स्वीकारा उसने, जब तक जुबान जिंदा है/ मेरा बयान जिंदा है।* इन ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प का अनूठा संगम हुआ है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है।

इसी वर्ष अमृत प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली - 32 से डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली' का 384 पृष्ठीय ग़ज़ल संग्रह 'वरक दर वरक' प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। सभी ग़ज़लें एक से बढ़कर एक सुंदर, सरस एवं भाव प्रवण हैं। अतः पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे कठिन शब्दों के अर्थ दे दिए गए हैं। उनकी ग़ज़ल का एक शेर देखें- *अँधेरे छट गए दिल के उजालों का सफर आया/ खुदा से जब जड़ा रिश्ता तो जीने का हुनर आया।* डॉ. नाज़ली जी की ये ग़ज़लें गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करती हैं।

वर्ष 2019 में ही गगन स्वर बुक्स ग़ाज़ियाबाद-5 ने भाई अनुराग मिश्रगैर की बोलचाल की भाषा में कही गई 101 ग़ज़लों का संकलन 'खेत के पाँव' शीर्षक से सजिल्द प्रकाशित किया है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से कवि की ये ग़ज़लें निर्दोष एवं परिपक्व हैं। इस संदर्भ में कुछ शेर उद्धरणीय हैं- *जहाँ फूलों का खिलना भी ख़ता था/ मैं इस गुलशन में बचपन से पला था/ और मर गया आँखों का पानी क्या लिखूँ/ आदमी तेरी कहानी क्या लिखूँ?*

इसी प्रकार सुश्री ममता शर्मा 'अंचल' की 91 ग़ज़लों का प्रथम संकलन दृष्टि प्रकाशन, जयपुर (राम) से 'ओ मेरे मन' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इन ग़ज़लों में प्रेम सौंदर्य एवं विरह वेदना की अनुभूतियों को मार्मिक अभिव्यक्ति दी गई है। यथा- *खुशबू तुम्हारे तन से कब आ रही है हमको/ मन की महक ही केवल महका रही है हमको।* कविवर सोम ठाकुर एवं डॉ. कुँवर बेचैन की सम्मतियाँ कृति के लिए सोने में सुगंध के समान हैं।

वर्ष 2019 में ही हिंदी परिवार प्रकाशन, इंदौर (म. प्र.) ने हास्य व्यंग्य के सुपरिचित हस्ताक्षर भाई प्रदीप नवीन की 143 ग़ज़लों का संकलन 'साथ नहीं देती परछाईं' शीर्षक से प्रकाशित किया है। इन ग़ज़लों में शिल्प की अपेक्षा कथ्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। इन ग़ज़लों में निहित व्यंग्य के तेवर प्रशंसनीय हैं। उदाहरणार्थ- "तथ्य सारे सामने आने लगे/ लोग ऊँचे स्वर में चिल्लाने लगे।"

इसी प्रकार शारदा प्रकाशन, ठाणे, महाराष्ट्र से भाई एन.बी. सिंह 'नादान' की 135 ग़ज़लों का संग्रह 'ख्वाब जो सज न सके' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक ग़ज़ल के नीचे उनका एक-एक मुक्तक भी संकलित किया गया है। इन ग़ज़लों की विषय वस्तु प्रेम भाईचारे के साथ-साथ दुनिया जहान के अन्य विषयों से जुड़ी हुई हैं। उदाहरणार्थ *इंसान सही अपना जो किरदार निभा दे/ दुनिया के अमन-प्यार असरदार बना दे। अथवा जिंदगी खूबसूरत हुई है/ जब से उनसे मुहब्बत हुई है।*

वर्ष 2019 में ही डॉ. विनोद कुमार गुप्त 'शलभ' जी की 101 ग़ज़लों का संकलन 'आओ नई सहर का नया शम्स रोक लें' के श्री एम. प्रकाशन दिल्ली - 7 से प्रकाशित हुआ है। सभी ग़ज़लें अपने समय के सच को रेखांकित करने वाली हैं। यथा- *सम्हलने को कोई मौका नहीं है/ मुहब्बत में से डर अच्छा नहीं है। अथवा जिंदगी है न इसे तू न आब बार कर/ अपने किरदार को यूँ न बेकार कर।* प्रस्तुत संकलन पर डॉ. कुँवर बेचैन ज्ञान प्रकाश विवेक, अनिरुद्ध सिन्हा और विजय कुमार स्वर्णकार के सम्मतिपरक आलेख कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाले हैं।

इसी प्रकार बोधि प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान ने वरिष्ठ ग़ज़लकार भाई ऋषिपाल धीमान जी की 100 ग़ज़लों का संकलन 'तस्वीर लिख रहा हूँ' शीर्षक से प्रकाशित किया है। प्रस्तुत ग़ज़लों में कवि ने आधुनिक यथार्थ के विविध रंगों को कथ्य के कैनवास पर बड़ी शिद्दत से उकेरा है, जिनमें कथ्य और शिल्प का अनूठा संगम उल्लेखनीय है। उदाहरणार्थ दो शेर देखें दौलत की अहमियत भी अपने जगह जरूर/ कुछ लोग मुफलिसी में भी जीते हैं शान से। कसमसाकर रह गई दिल में ही दिल की हसरतें/ जी रहे हैं ले के हम आधी-अधूरी हसरते। संकलन में डॉ. कुँवर बेचैन जी की प्रस्तावना सोने में सुगंध के समान है। कृति पठनीय एव संग्रहणीय है।

इसी वर्ष भाई हमीद कानपुरी जी की 101 ग़ज़लों का संग्रह 'एक टुकड़ा आम' बी. पी. पब्लिकेशन्स नौबस्ता, कानपुर, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित हुआ। कवि की ग़ज़लें आम-आदमी के जीवन से विलक्षण जुड़ाव रखती हैं। भाषा के अनेक रंग भी इन ग़ज़लों में निहित हैं। यथा *जो प्रदूषण बाहरी था/ घर के अंदर आ गया है। और गहरी इंजरी कीजिए/ सर्जरी ठीक है, सर्जरी कीजिए।*

इसी क्रम में विभोर प्रकाशन, कोलार रोड, भोपाल, मध्य प्रदेश से प्रकाशित वरिष्ठ ग़ज़लकार, भाई किशन तिवारी जी की 110 ग़ज़लों का संग्रह 'धूप का रास्ता' भी उल्लेखनीय है। यह कवि का छठा ग़ज़ल संग्रह है। उनकी ये ग़ज़लें पाठकों के दिलों तक सहज रूप से संप्रेषित होने का सामर्थ्य रखती हैं। जिंदगी के बारे में कवि पाठकों से अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहता है- *जिंदगी जैसी मिली थी जी लिया/ जो हमें अच्छा लगा वो ही किया/ अथवा सामने छाया थी फिर भी धूप का रस्ता चुना/ सब हकीकत में जिए मैंने मगर सपना चुना* निश्चय ही कवि की यह ग़ज़लें रसिक एवं गंभीर पाठक अरसे तक याद रखेंगे।

इसी वर्ष समर्थ कवि भाई प्रकाश पुरोहित की 80 ग़ज़लों का संभलन 'कर्फ्यू लगा है' कश्यप पब्लिकेशन्स, ग़ाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित हुआ है। संकलित ग़ज़लें आधुनिक समाज के कटु यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। ग़ज़लों में यत्र-तत्र अंग्रेजी के शब्द भी प्रयोग हुए हैं। यथा- *छोटा था तब दूध बहुत पीता था/ अब अच्छी लगी है बीयर बेटे को/ कभी बड़ों के पाँव नहीं छूने देता/ महानगर का इंगलिश कल्चर बेटे को।* इन ग़ज़लों में आधुनिक समय के सच को रेखांकित करने की सहज सामर्थ्य विद्यमान है।

इसी वर्ष किताब गंज प्रकाशन, गंगापुर सिटी, राज. से भाई अनिरुद्ध सिन्हा जी की 86 उम्दा ग़ज़लों का संकलन 'तो मैं ग़ज़ल कहूँ' का सफल प्रकाशन हुआ।

इसी वर्ष इसी प्रकाशन से बहुआयामी प्रतिभा के कवि भाई अशोक अंजुम जी की 80 खूबसूरत ग़ज़लों का संकलन 'ग़ज़लें डायरेक्ट दिल से' प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। संकलित ग़ज़लें कथ्य शिल्प एवं तग़्ज़ुल' की त्रिवेणी में अवगाहन करने हेतु पाठकों को विवश कर देती हैं।

प्रेम सदैव से ग़ज़लों का मूल स्वर रहा है। सचमूच प्रेम में कवि को सब कुछ कितना अच्छा

लगता है। जरा देखें- *चाँद का अक्सर छत पर आना, कितना अच्छा लगता है/ तुम से घंटो तक बतियाना कितना अच्छा लगता है।* यही नहीं प्रिय का साहचर्य सफ़र को कितना रेशमी बना देता है कवि के शब्दों में- *सामने बर्थ पर एक हसीं आ गई/ हो चला लो हमारा सफ़र रेशमी।* वास्तव में प्रेम की पहचान छिपाए नहीं छिपती है। वह चेहरे के हाव-भाव एवं संकेतों से प्रकट हो ही जाती है। यथा- *आँखों में नशा होठों ये मुस्कान तैरती/ चेहरा बता रहा है, गई रात के किस्से।* सत्य तो यह है कि प्रेम की भावनाएँ जब घनीभूत हो जाती हैं तो एक अच्छी ग़ज़ल का जन्म होता है। बकौल कवि अशोक अंजुम की 'भावना जब प्रबल हो गई/ एक अच्छी ग़ज़ल हो गई।

प्रेम के अतिरिक्त दुनिया-जहान के दर्द को भी कवि ने अपनी ग़ज़लों में पिरोया है। तभी तो इनकी शायरी इतनी लोकप्रिय हो सकी है। कवि की मान्यता है कि "इनमें भर दो दर्द जहाँ का, लहू मिलाओ सीने का/ 'अंजुम' गीतो-ग़ज़ल आपके महफ़िल तक भी पहुँचेंगे।'

भाई अंजुम जी मंच-मर्मज्ञ भी हैं। वे जानते हैं कि मंचों पर ग़लेबाज़ों एवं चुटकलेबाज़ों के आ जाने से अच्छी शायरी वहाँ से तिरोहित हो गई है। यथा 'मंचों पर हैं गलेबाज अब/बैठे शायर खाली-खाली।'

आधुनिक सामाजिक एवं राजनैतिक जगत में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों एवं विद्रूपताओं पर भी स्फुट रूप से कवि ने टिप्पणियाँ की हैं। मज़हब को जुनून की हद तक पसंद करने वाले लोग निश्चय ही समाज में विष वमन कर रहे है ऐसे लोगों को कवि की सलाह है कि- *वे जो मज़हब की दुकानें, खोलकर बैठे हुए/ उनसे कह दो अब न वे बच्चों में डर पैदा करें।* इसी संदर्भ में कवि की यह दार्शनिक चेतना भी दृष्टव्य है- *प्यार से सुलझाइए, हल गुत्थियाँ हो जाएँगी/ जब तलक संसार है, ये फलसफा ज़िंदा रहे।* कवि आपसी मेल-जोल एवं शांति के पथ पर चलकर ही समस्त समस्याओं से मुक्ति पा लेना चाहता है। उदाहरणार्थ- *जिस पे चलकर हम वहाँ पहुँचे, जहाँ पर अम्न हो/ आओ मिलकर यार अब ऐसी डगर पैदा करें।*

कुलमिलाकर इन ग़ज़लों का जादू पाठकों के सिर पर चढ़कर बोलने वाला है। नीरज जी की समीक्षात्मक संस्तुति कृति के कलेवर में चार चाँद लगाने वाली है। अशोक अंजुम जी की इन ग़ज़लों से गुजरते हुए डॉ. उर्मिलेश की ग़ज़ल कृति 'आईने आह भरते हैं' की स्मृति अनायास ही हो आती है।

अंत में कालजयी ग़ज़लकार श्रद्धेय भाई चंद्रसेन विराट के ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल कह रहा हूँ' शीर्षक के प्रकाशित हुआ।

प्रस्तुत संकलन में विराट जी के परिपक्व अनुभवों की चाशनी में पकी हुई छोटी-बड़ी लगभग 100 ग़ज़लें संग्रहीत हैं। प्रत्येक ग़ज़ल को शीर्षक दिया गया है। प्रेम की पृष्ठभूमि पर रची गई कवि की ग़ज़लें क्या खूब बन पड़ी हैं। ग़ज़ल लिखना जैसे किसी पूजा या ध्यान के दौर से गुजरना से प्रतीत होता हैं यथा- *मैं पूजा में हूँ, इस समय ध्यान में तुम/नहा धो के आओ ग़ज़ल कह रहा हूँ।* अथवा *लगाया ध्यान था प्रभु का, मगर तुम ध्यान में आईं। मुझे संकोच है पर सत्य झुठलाया नहीं जाता।*

आधुनिक नई पीढ़ी को माता-पिता के महत्वपूर्ण पदों की महिमा से परिचित कराते हुए कवि ने कहा *एक मृदल नवनीत सरीखी, एक कठोर कि जैसे श्रीफल/माँ ममता की मूर्ति, पिता भी सख्त बहुत पर क्रूर नहीं है।* इसी प्रकार टूटते बिखरते संयुक्त परिवारों की पीड़ा का दंश झेलते हुए वृद्ध माँ-बाप अपनी दुर्दशा बताते हुए बेटे का कुशल क्षेम पूछना नहीं भूलते- *हम दोनों हैं अनाथ अकेले ही देस में/ परदेस में हो बेटे! कहो तुम कुशल तो हो।*

इसी प्रकार सियासत से जुड़े हुए कुछ शेर भी अच्छे और मार्मिक बन पड़े हैं। कवि ने तथाकथित राजनेताओं से निवेदन किया है कि- *कर्ज लेकर पढ़, निकल आया मगर बेकार है/ खूब गुस्से से भरे उस नौजवाँ तक भी चले।* अथवा *क्यों जी न पा रहा है, ये सोचा है कभी क्या/क्यों आज का किसान जहर माँग रहा है?*

इसी क्रम में अपनी एक छोटी सी ग़ज़ल में कवि ने अपने जीवन दर्शन को इस प्रकार व्यक्त किया है- *प्राण जुलाहा -तन चादर/ साँसे ताना-बाना है/ जन्म कि जैसे नींद खुले/मौत कि फिर सो जाना*

है। विराट जी ने मिथकों के सफल प्रयोग से अपनी ग़ज़लों के तग़ज्जुल में इजाफा किया है। एक शेर देखें- *हम दशानन खूब ज्ञानी दुष्ट लेकिन मन से हैं/दूसरों के सुख की सीताओं को भी हरते हैं हम?*

कवि ने ग़ज़लों से संबंधित अपने अनुभवों को इस प्रकार साझा किया है- *गुलकारी ग़ज़ल की दो कलाओं से बनी/ गायकी अपनी जगह है, शायरी अपनी जगह।* इसी प्रकार एक अच्छी ग़ज़ल की शर्तें और पहचान कवि ने इस प्रकार बताई हैं- *ग़ज़लियत हो, सही हो बहर काफिये/तक अच्छी ग़ज़ल की ये पहचान हैं?* अथवा *हो ग़ज़ल में ग़ज़लियत, संकेत मय भाषा कहन/कुछ अनूठी लाक्षणिकता, व्यंजना अनिवार्य है।*

संकलन में कवि की लंबी बहरों वाली ग़ज़लें भी संकलित हैं। एक शेर देखें- *फिर युद्ध न हो मैदानों में, पहले मेजों पर हर उलझन/सुलझेगी तुम सुलझाने की, कोशिश तो करो, कोशिश तो करो।* प्रस्तुत शेर में कवि आधुनिक युद्धोन्माद एवं खूनखराबे को सुलझाने के लिए आशावादी संदेश देता है।

कुल मिलाकर विराट जी के प्रस्तुत चौदहवें संकलन की ग़ज़लों में कथ्य एवं शिल्प का अनूठा संगम हुआ है। अपने बहुआयामी कृतित्व का मूल्यांकन करते हुए कवि ने स्वयं स्वीकार किया है कि- *ले दे के हैं यश के लिए, कुछ गीत ये कुछ ग़ज़लें/अब ये ही बिछावन हैं, अब ये ही उठावन हैं।*

पेपर बैक संस्करण से प्रकाशित विराट जी का यह अन्यतम ग़ज़ल संकलन है जो ग़ज़ल के रसिक पाठकों एवं शोधार्थियों के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय प्रस्तुति है। निश्चय ही शुद्ध हिंदी भाषा में लिखी गई इन ग़ज़लों के लिए विराट जी सदैव याद किए जाएँगे। उनकी इन ग़ज़लों का रंग कभी फीका नहीं पड़ेगा?

इन एकल ग़ज़ल संकलनों के अतिरिक्त कुछ संपादित संकलन भी इस वर्ष प्रकाशित एवं चर्चित हुए हैं।

किताबगंज प्रकाशन गंगापुरी सिटी (राज.) से भाई के. पी. अनमोल जी के सुसंपादन में इसी वर्ष 101 महिला ग़ज़लकार शीर्षक संकलन का प्रकाशन हुआ। इतनी संख्या से साफ-सुथरी ग़ज़लें कहने वाली कवयित्रियों को खोजकर उनकी दो-दो ग़ज़लें जुटाना, निश्चय ही एक श्रम साध्य कार्य है। यदि संकलन में कुछ अन्य वरिष्ठ महिला ग़ज़लकारों को भी सम्मिलित किया जाता तो संकलन की गुणवत्ता बढ़ सकती थी। इसी प्रकाशन से अनमोल जी के संपादन में इसी वर्ष 'समकालीन ग़ज़लकार' नामक संकलन भी प्रकाशित और चर्चित हुआ है।

किताबगंज प्रकाशन ने ही इसी वर्ष चर्चित कवि भाई अशोक अंजुम जी के सुसंपादन में '101 प्रतिनिधि हिंदी ग़ज़लकार' शीर्षक से एक बेहतरीन ग़ज़ल संग्रह का प्रकाशन किया जो इधर काफी चर्चा में रहा है। सभी संकलित स्तरीय कवियों को अकारादि क्रम में प्रस्तुत किया है।

इन्हीं के संपादन में 'नए दौर की ग़ज़लें' शीर्षक से एक नया और महत्वपूर्ण संकलन इसी वर्ष रवि प्रकाशन, मेरठ शहर (उत्तर प्रदेश) से आया है जो इन दिनों काफी चर्चा में है।

इसी प्रकार हिंदी ग़ज़ल के लिए निरंतर कुछ न कुछ करते रहने वाले सक्रिय एवं ऊर्जस्वी रचनाकार भाई अनिरुद्ध सिन्हा जी के संपादन में 'हिंदी के युवा चेहरे' नामक संकलन इसी वर्ष बेस्ट बुक प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। संकलन में 51 ग़ज़लकारों की प्रतिनिधि ग़ज़लें उनके विस्तृत मूल्यांकन परक परिचय सहित प्रस्तुत की गई हैं। संकलन में युवा किंतु स्तरीय ग़ज़लकारों को सम्मिलित किया गया है।

वर्ष 2019 में ही प्रस्तुत आलेख के लेखक डॉ. रोहिताश्व अस्थाना के संपादन में 'चुनिंदा हिदी ग़ज़लें' शीर्षक से एक संकलन ज्ञानधारा पब्लिकेशन, दिल्ली-32 से सजिल्द प्रकाशित एवं चर्चित हुआ। 184 पृष्ठीय प्रस्तुत संकलन में 44 कवियों की चार-चार ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं। संपादक ने कालजयी कविवर गोपाल दास नीरज एवं चंद्रसेन विराट जी की पुण्य स्मृति में संकलन को समर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी है।

इस वर्ष हिंदी ग़ज़ल को लेकर शोध और समालोचना संबंधी अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। इस क्षेत्र में डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल जी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनके ग़ज़ल संबंधी अवदान पर

डॉ. दीपक पाटिल जी ने अपनी शोधपरक कृति 'गिरिराज शरण अग्रवाल की ग़ज़लों में आशावाद के स्वर' प्रस्तुत किए हैं, जो हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उत्तर प्रदेश) से इसी वर्ष प्रकाशित हुई है। ग्रंथ चार अध्यायों में विभक्त है। पहले अध्याय में डॉ. अग्रवाल के हिंदी ग़ज़ल संबंधी योगदान को रेखांकित किया गया है। दूसरे अध्याय के अंतर्गत उनकी ग़ज़लों में सामाजिक आशावाद के स्वरों को तलाश किया गया है। तीसरे अध्याय में उनकी ग़ज़लों में सांस्कृतिक आशावाद के स्वरों को उकेरा गया है। चौथे और अंतिम अध्याय के अंतर्गत अन्य आशावाद के स्वरों की खोज-परख की गई है। इस प्रकार 268 पृष्ठीय प्रस्तुत ग्रंथ में डॉ. अग्रवाल के व्यक्तित्व और कृतित्व को ग़ज़ल के विशेष संदर्भ में निरूपित किया गया है। कुल मिलाकर यह ग्रंथ शोधार्थियों एवं गंभीर पाठकों के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय शोध ग्रंथ बन गया है।

इसी प्रकार ग़ज़ल के क्षेत्र में डॉ. महेंद्र अग्रवाल जी का सुपरिचित नाम है। वे 'नई ग़ज़ल' पर बहुत शोधकार्य कर चुके हैं। वे नई ग़ज़ल का संपादन भी कर रहे हैं। अब तक उनके छह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस वर्ष ग़ज़ल संबंधी उनके दस शोध परक आलेखों का संग्रह 'नई ग़ज़ल की समकालीनता' शीर्षक से उनके निजी प्रकाशन द्वारा शिवपुरी (मध्य प्रदेश) से प्रकाशित हुआ है। ये आलेख हैं-1. ग़ज़ल कैसे पढ़ें 2. नई ग़ज़ल: लफ़्ज, शिल्प और लहजे का सवाल 3. नई ग़ज़ल और समकालीनता 4. ग़ज़ल की प्रगतिशील परंपरा 5. राष्ट्रीय एकता और नई ग़ज़ल 6. ग़ज़ल परंपरा में हास्यव्यंग्य 7. अरबी-फारसी बहरों का मायाजाल 8. ग़ज़ल की सांस्कृतिक परंपरा 9. बेखुदी बेसबब नहीं गालिब और 10. दुष्यंत की ग़ज़लों में रूमानियत। कुल मिलाकर प्रस्तुत कृति एक शोधग्रंथ की भाँति पाठकों एवं शोधार्थियों के मन मस्तिष्क में ग़ज़ल से संबंधित समस्त प्रश्नों एवं अवधारणाओं को स्पष्ट करने में सक्षम है।

इसी वर्ष सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल (हरियाणा) से भाई तेजिंद्र जी द्वारा किया गया शोधकार्य 'हिंदी ग़ज़ल एवं अन्य काव्यविधाएँ' शीर्षक से 248 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है। हिंदी ग़ज़ल को केंद्र में रखकर किया गया प्रस्तुत शोध कार्य पाठकों के बीच अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

इसी वर्ष भावना प्रकाशन, नई दिल्ली से हिंदी साहित्य के वरिष्ठ हस्ताक्षर, कवि समालोचक भाई हरेराम समीप जी की समालोचनात्मक कृति 'समकालीन हिदी ग़ज़लकार: एक अध्ययन' का चतुर्थ खंड प्रकाशित हुआ। इस भाग में समीप जी ने भाई प्रताप सोमवंशी, डॉ. कुमार विनोद, के. पी. अनमोल, विजय किशोर मानव अभिनव अरुण, अशोक आलोक, वीरेंद्र खेर 'अंकेला', डॉ. सुरेंद्र सिंघल, पुरुषोत्तम यकीन, डॉ. अजय 'जनमेजय' सदृश 35 सशक्त ग़ज़लकारों पर उनके कृतित्व से संबंधित विस्तृत समालोचनात्मक आलेख अपनी कलम से प्रस्तुत किए हैं। इन आलेखों में समीप जी ने ग़ज़लकारों की उपलब्धियों पर हिंदी ग़ज़ल के मर्मज्ञ जनों की सम्मतियाँ भी यथास्थान उद्धृत करके आलेखों की गुणवत्ता की अभिवृद्धि की है। ध्यातव्य हो कि इसके पूर्व विगत वर्षों में समीप जी ने प्रस्तुत कृति के तीन खंड और लिखकर इसी प्रकाशन से प्रकाशित कराए हैं। कुल मिलाकर ये चारों खंड हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा को रेखांकित करने वाले हैं और अनौपचारिक रूप से हिंदी ग़ज़ल पर एक वृहद् शोधग्रंथ की हैसियत रखते हैं।

इसी प्रकार एक अन्य विलक्षण शोधपरक समालोचनात्मक ग्रंथ 'हिंदी ग़ज़ल की परंपरा' भी समीप जी ने प्रस्तुत किया है जो वर्ष 2019 में ही किताबगंज प्रकाशन, (राज.) से प्रकाशित हुआ। 500 पृष्ठीय इस ग्रंथ में अमीर खुसरों, कबीरदास, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, रूद्र काशिकेय, शमशेर बहादुर सिंह बलवीर सिंह 'रंग', त्रिलोचन शास्त्री, रामावतार त्यागी, दुष्यंत कुमार आदि। 105 ग़ज़लकारों के ग़ज़ल संबंधी अवदान को रेखांकित करते हुए प्रत्येक कवि की ग़ज़लों से प्राय: 20-20 चुनिंदा शेर भी दिए गए हैं। यह अपने ढंग का अनूठा ग्रंथ है, जो हिंदी ग़ज़ल की विकास यात्रा को नए अंदाज में प्रस्तुत करते हुए भाई हरे राम समीप जी को एतद्विषयक सफलता के नए शिखरों तक पहुँचाने वाला है।

इसी अवधि में भाई अनिरुद्ध सिन्हा के संपादन मे 'हिंदी ग़ज़ल: सामूहिक संवेगों का आख्यान'

शीर्षक ग्रंथ समन्वय प्रकाशन ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत संकलन में हिंदी ग़ज़ल से जुड़े हुए अनेक चिंतकों एवं विद्वानों के आलेख सोदाहरण सम्मिलित किए गए हैं। निश्चय ही यह समालोचनात्मक प्रस्तुति अपने ढंग की अनूठी पठनीय एवं संग्रहणीय कृति है।

इस वर्ष भी पत्र-पत्रिकाओं में ग़ज़लों की धूम रही। हिंदी के वरिष्ठ नवगीतकार एवं ग़ज़लकार भाई रामावतार चेतन अपने समय में हिंदी हास्य व्यंग्य त्रैमासिक 'रंग चकल्लस' का संपादन प्रकाशन वोरीवली(प.) मुंबई से किया करते थे। अब उनके सुपुत्र श्री असीमचेतन एवं पुलकित चेतन इसे देख रहे हैं। वर्ष 2019 में 46 वर्ष पूरे कर रही पत्रिका के जुलाई-सितंबर एवं अक्तूबर-दिसंबर अंक हमारे सामने हैं इनमें गद्य-सामग्री के साथ-साथ क्रमशः भाई रऊफ परवेज़ एवं अशोक अंजुम की हास्यव्यंग्य परक ग़ज़लें भी प्रकाशित हुई हैं। हास्यव्यंग्य को ग़ज़ल की शैली में परोसना भी एक सुखद अनुभव है। कवि के शब्दों में *पिट रहा मोहन बिचारा चाँद-सूरज क्या करें/लुट रहा हे देश सारा चाँद-सूरज क्या करें* (रऊफ परवेज़) *सियासत की नदी में जो उतरते जा रहे हो तुम/जरा रहना सम्भलकर है बहुत इसमें मगर भइये। अथवा हर डगर चिल्लपों, हर सफर चिल्ल पों/ अब जिधर देखिए है उधर चिल्ल पो।* (अशोक अंजुम)

वर्ष 2019 में ही जोधपुर (राज.) से प्रकाशित 'ग़ज़ल गरिमा' त्रैमासिकी का जनवरी-मार्च अंक वहीं के सुप्रसिद्रध ग़ज़लकार भाई भानुमित्र जी की ग़ज़लों पर केंद्रित विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत अंक में कवि की 91 ग़ज़लों के अतिरिक्त कई आलेख साक्षात्कार विद्वानों की सम्मतियाँ आदि प्रकाशित हुई हैं।

इस क्रम में श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर (मध्य प्रदेश) की शताब्दी की ओर अग्रसर मासिक पत्रिका 'वीणा' के सितंबर, 2019 अंक में वरिष्ठ ग़ज़लकार भाई चंद्रभान भारद्वाज का आत्मकथा परक आलेख 'हिंदी ग़ज़लः विकास यात्रा' वास्तव में पठनीय है इसी अंक में श्री हमीद कानपुरी की ग़ज़ल भी बहुत कुछ कहना चाहती हैं यथा- *दिलों को मिलाएँ-यही चाहते हैं/वतन को सजाएँ-यही चाहते हैं।* वीणा के ही नवंबर, 2019 अंक में प्रकाशित डॉ. अशोक गुलशन की दो ग़ज़लें भी पठनीय हैं। भाई कमलेश भट्ट कमल जी की ग़ज़लें भी इस वर्ष वीणा में पढ़ने को मिली।

इसी प्रकार समकालीन अभिव्यक्ति (त्रैमासिक) नई दिल्ली - 30 के जनवरी-जून (संयुक्तांक 2019) में भाई विज्ञान व्रत, रिदा खान, महेंद्र जैन एवं अशोक अंजुम की उम्दा ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं।

अपनी काव्य केंद्रित त्रैमासिकी 'अनांतिम' के संपादक श्री सतीश गुप्त ने भाई हरीलाल मिलन के अतिथि संपादन में जुलाई-दिसंबर 2019 अंक ग़ज़ल विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया है। 'अतिथि संपादक की कलम से' के अंतर्गत मिलन जी ने ग़ज़ल के ऐताहिसिक शिल्पगत एवं भाषाई प्रसंगों को सार्थक ढंग से प्रस्तुत किया है। पत्रिका रंगजी की तीन ग़ज़लों से आरंभ होती है। प्रस्तुत शेर तो सर्वथा उद्धरणीय है- 'रंग' का रंग ज़माने ने बहुत देखा है। क्या कभी आपने बलवीर से बातें की हैं? यहाँ यमक अलंकार का सही प्रयोग हुआ है। 'धरोहर' स्तंभ की ग़ज़लें पाठकों को ऐतिहासिकता से जोड़ती हैं। हिंदी ग़ज़ल पर आधारित अनेक आलेख समीक्षाएँ और ढेर सारी ग़ज़लें अंक को पठनीय एवं संग्रहणीय बनाती है।

इस संदर्भ में गंगा-जमुनी साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका 'शैलसूत्र' का अक्तूबर-दिसंबर, 2019 अंक भी उल्लेखनीय है। इसके मुख पृष्ठ पर निदा फाज़ली साहब का शेर दिया गया है- *बच्चों के नन्हें हाथों को चाँद सितारे छूने दो/चार किताबे पढ़कर ये भी हम जैसे हो जाएँगे।* अंदर के पृष्ठों पर विभिन्न कवियों की सात मनमोहन ग़ज़लें प्रकाशित की गई हैं। पत्रिका की संपादिका सुश्री आशा शैली ने बड़े यत्नपूर्वक पत्रिका को सजाया-सँवारा है।

इसी क्रम में उत्तर प्रदेश हिदी संस्थान लखनऊ द्वारा 'धर्मयुग' पुरस्कार प्राप्त त्रैमासिक पत्रिका 'अभिनव प्रयास' के इस वर्ष के चारों अंकों में संपादक भाई अशोक अंजुम ने अन्य काव्य विधाओं के साथ ही 'ग़ज़लें' तथा 'ब्रज ग़ज़लें' स्तंभ के अंतर्गत स्तरीय सामग्री पाठकों के लिए प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत की है। निश्चय ही अशोक जी की यह पत्रिका विशेषकर ग़ज़लों के लिए जानी-मानी एवं पहचानी

जाती है। इस वर्ष ग़ज़लें प्राय: देश की अन्य पत्रिकाओं में भी विपुल-मात्रा में प्रकाशित होती रही हैं।

निष्कर्षत: हिदी ग़ज़ल को लेकर जो भी एकल एवं संपादित संकलन तथा शोधग्रंथ आदि वर्ष 2019 में प्रकाशित हुए हैं, वे हिंदी ग़ज़ल की विपुल संपदा हैं। पत्रिकाओं ने भी हिंदी ग़ज़ल के प्रचार-प्रसार में इस वर्ष महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस समस्त सामग्री को पढ़ना, संभालना एवं सहेजना हर पाठक का कर्तव्य है। कुल मिलाकर यह वर्ष 2019 हिंदी ग़ज़ल के क्षेत्र में एक उपलब्धि परक वर्ष रहा है।

– निकट बावन चुंगी चौराहा, 802 आलू थोक उत्तरी हरदोई, उत्तर प्रदेश-241001

❑❑❑

24

हिंदी नाटक एवं रंगमंच

डॉ. अनुराग सिंह चौहान

भारतवर्ष में नाट्य साहित्य की पुरातन एवं सुदीर्घ परंपरा विद्यमान है। वैश्विक दृष्टिकोण से संस्कृत नाट्य साहित्य परंपरा श्रमजीवी कलेवर लिए नाटक को काव्य की उपमा प्रदान करता रहा है। 'काव्येषु नाटकं रम्यं' सनातन दृष्टि लिए भारतीय नाट्य परंपरा आदिरूप ऋग्वेद के संवाद, सूक्तों में फलीभूत होती है। नाटक शब्द की उत्पत्ति नट् धातु में निहित है, उसका प्रयोग प्रायः अभिनय संबंधी अर्थाभिव्यक्ति में किया जाता है। नाटक एवं रंगमच ने भारतेंदु काल से अद्यतन (2020) तक के कालखंड में सामाजिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश निर्मित किया है। परिवेश जन्य मनोविचारों में व्यक्ति अपने आपको अनुभूत कर पाता है। ये अनुभूति अतीत व वर्तमान का संश्लिष्ट रूप प्रस्तुत करती है। वस्तुतः युगीन परिवेश की स्वतंत्र वैचारिक पृष्ठभूमि एवं अस्मिता सौंदर्य के मूल में पूर्ववर्ती, जीवन-मूल्य व्याप्त रहते हैं।

साहित्यकार युगीन सत्यों से साक्षात हो मार्मिक व शाश्वत साहित्य का सृजन करता है। परिवेश की महत्ता नाटक सृजन का प्राणतत्व है, "परिवेश की चेतना से विहीन आत्मा निर्जीव है, अभिव्यक्ति के सर्वथा अयोग्य है। परिवेश विभिन्न ऋतुओं के समान है। उसमें रचनारूपी पौधे को अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होने में सहायता मिलती है। परिवेश काल वह सामयिक अंश है, जिसमें प्रताड़ित, पीड़ित अथवा आनंदित, उद्वेलित और प्रेरित होकर कोई रचनाकार किन्हीं उज्ज्वल शुभ उद्देश्यों की सृष्टि करता है और इस प्रकार अपनी कृति को सामयिकता की सीमा से परे काल की परिधि में ले जाता है।"[1]

साहित्य के मर्म को जानने एवं तद्नुकूल रचनाकार के सर्जनात्मक व्यक्तित्व का सूक्ष्मान्वेषण नाटक का ध्येय लक्ष्य है। रचनाकार सृजन को स्पष्ट शब्दों में वास्तविक अभिव्यक्ति प्रदान करें। उसकी विचारधारा रंगमंच को सीमा से परे स्थान व समय की कैद से दूर हो... दर्शकों को आत्ममुग्धता से वंचित कर पात्र को दर्शक व दर्शकों को पात्र में परिवर्तित कर युगीन सत्य को प्रस्फुटित करे, यही नाटक का मूल सूत्र है। कलाकार, दर्शक एवं रचनाकार परिवेश एवं रचना के प्रति तीव्र सजगता रखते हैं। वस्तुतः काव्य रूप की निर्धारित परिभाषा, उसके विशिष्ट परिचय में निहित है, वह पूर्ण पहचान की द्योतक है।

भारतेंदु के 'नाटक' निबंध से विदित है कि नाटक शब्द के अर्थ, संदर्भ व दिशा नाट्यशास्त्र में प्रश्रय पाते हैं। नाट्य साहित्य भारतीय जीवन मूल्यों को यथार्थवादी जीवन स्तर पर परखता है। अभिव्यक्तियाँ समसामयिक परिवेश व बुद्धिवाद का मूलाधार ग्रहण कर कल्पना को संभाव्य रूप देती है। नाटककार की ईमानदारी, जीवन सत्य की ग्राह्यता नाटक में यथार्थवाद का चित्रण प्रेष्य बनाती है। मानवीय समस्याओं का दिग्दर्शन मनोवैज्ञानिकता का पोषण प्राप्त कर दर्शकों

के मन पर विशिष्ट प्रभाव अंकन करने में सक्षम होता है अंततः कथा वैशिष्ट्य अभिनय प्रदर्शन द्वारा पूर्ण कलात्मक प्रस्तुति लिए नाटक रूप ग्रहण करता है। नाटक का नाट्यव्यापार रंगमंच प्रदर्शन द्वारा पूर्ण कलात्मक प्रस्तुति लिए नाटक रूप ग्रहण करता है।

विवेचनात्मक पक्ष उसकी विषयवस्तु, कथानक संगठन, पात्र द्वंद्व, भाषाई टकसालीपन, आधार सत्य लिए रंगाभूमि में कार्य साधन प्राप्ति हेतु नित नव रूप गढ़ता है। रचना प्रक्रिया समसामयिक परिवेश में व्यक्ति के आंतरिक पक्ष का प्रस्फुटन है। नाटक की सृजन प्रक्रिया मंचीकरण से गुजरती हुई दृष्टव्य प्रदर्शन को आत्मसात करती हुई जीवन व्यापार का अभीष्ट रूप पाती है लेखकीय जीवन दृष्टि हिंदी नाट्य परंपरा के संवादमूलक कृतित्व को रंगमंचीय अभिव्यंजना प्रदान करती है।

भारतीय भाषाओं भोजपुरी, मैथिली, मगही में सृजित नाटकों से सुविदित है कि हिंदी नाट्य परंपरा का उद्भव संस्कृत एवं लोक नाट्य धारा के मिलन से हुआ किंतु इतर पक्ष यह है कि देवालयों में जनभाषा के आधार पर संस्कृत की आत्मीयता अंगीकार कर लोक भाषाओं में व्यक्त वैष्णव लीलाओं में परिणत हुआ। वस्तुतः सन् 1950 से पूर्व हिंदी नाट्य परंपरा के उद्भव के संदर्भ में असमंजस की स्थिति थी, विद्वानों का बड़ा वर्ग संस्कृत नाट्य साहित्य से हिंदी नाट्य परस्पर निसृत मानता था। वहीं एक वर्ग 'प्रबोध चंद्रोदय' के अनुवाद (1700 वि.सं.) से हिंदी नाट्य परंपरा का श्रीगणेश मानता है।

हिंदी नाटक एवं रंगमंच के इतिहास मूल में विविध दृष्टिकोण यथा नाट्येतिहास दृष्टि, नाट्य-निर्देशक दृष्टि, पत्रकारिता दृष्टि, विश्वविद्यालय शिक्षण दृष्टि आदि अपना अस्तित्व तलाशते प्रतीत होते हैं। मूलतः नाटकों के अवयवों का निर्धारण भरतमुनि के कालखंड में आकार ग्रहण कर चुका था। क्रमशः नट, (स्त्री पात्र), नृत्यवाद्य, संगीत, कथावस्तु एवं रंगमंच से सुसज्जित नाट्य कला की उत्पत्ति संभवतः बाल कल्पना की देन है जो उत्तरोत्तर विकास के नव प्रतिमान गढ़ रही है। खड़ी बोली हिंदी के प्रस्फुटन काल में भारतेंदु युग नाट्य विधा का जनक रहा। परिवेशजन्य परिवर्तनों ने नाट्य परंपरा के रंगमंच से साक्षात् करवाया।

नायक-नायिका के आदर्श चारित्रिक गठन ने सामाजिक जागृति के नवद्वार खोले, जहाँ आधुनिक काल के विकास में नाटक ने जीवन की समस्याओं को चित्रित करते हुए संभाव्य समाधान प्रस्तुत किए। वस्तुतः नवशोध निष्कर्ष नाटकीय महत्ता को सूक्ष्मांकित करते सहज लभ्य हैं;

नाटक में जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित करके उसको सजीव पात्रों के द्वारा चलते-फिरते सप्राणरूप में अंकित किया जाता है। नाटक जीवन की सांकेतिक अनुकृति नहीं है। वरन् सजीव प्रतिलिपि है। नाटक में फैले हुए जीवन व्यापार को ऐसी व्यवस्था के साथ रखते हैं कि अधिक प्रभाव उत्पन्न हो सके।"[2] नाट्य अपनी काव्यात्मकता के चलते 'काव्येषु नाटकं रम्यं' के रूप में प्रतिष्ठा अर्जन करता रहता है। इसका आदिरूप ऋग्वेद के संवाद सूक्तों में नाटकीय कथोपकथन की विशिष्टताएँ सहेजे संवेदनात्मक प्राणवपन करता जीवन रस संप्रेक्ष्य कर रहा है मानव जीवन की तमाम गुत्थियों और कुंठाओं को खोलने का अनवरत प्रयास करता नाट्य साहित्य मानव जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओं का मंथन द्वारा रेचन करता है।

भारतीय परिवेश एवं सामाजिक ताना-बाना परस्पर इस कदर गुँथा हुआ है कि मानवीय चिंतन के विविध आयाम इनमें समाहित प्रतीत होते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि अपने अंतरिम फलसफों को नाटक में जी उठती है। नाटककार सदैव अनछुए-अनसुलझे की तलाश में स्वयं को भटकता पाता है। यह भटकाव ही उसे व्यक्ति की पीड़ा से सरोकार करवाता है। मनोसामाजिक बेड़ियों में जकड़ा मानव सुकून की तलाश में अनगिनत जकड़नों से जकड़ा जाता है। यहीं नाटककार को अवसर प्राप्त होते हैं, और वह सहज संवाद के रास्ते खोलता है। साहित्यिक कालखंड अनंतर परिवर्तनों के द्योतक रहे हैं। कला की अंतर्निहित शक्तियाँ पूर्ण जीवंतता लिए विसंगतियों एवं असंयमों पर विजय पाती रही हैं। संयोजित एवं संगत विचार नाटककार को संवेदनशील बनाते हैं, जिसका परिणाम कृति की संप्रेषणीयता में निहित होता है।

वैदिक युग में नाटक प्रवीणता पर ऋग्वेद गहन विश्लेषणात्मक दृष्टि डालता है। इन्हीं उपलब्ध साक्ष्यों को प्रो. मैक्समूलर ने स्वीकृत किया है, "यज्ञावसर पर

इंद्र और मरूत का प्रतिनिधित्व करने वाले दो पक्ष जो परस्पर संवाद करते थे, वही कथोपकथन भारतीय नाटक का प्रारंभिक रूप था।"[3] वैदिक कालीन संवाद गद्य-पद्यात्मक स्वरूप रखते हुए इंडो-यूरोपियन कालखंड के प्रतिनिधि बन उभरे। गद्यांश अनिश्चित प्रारूप लिए लुप्त हो गए एवं पद्यांश का संसाधन बन सुरक्षित हो उभरे। वैदिक काल में नाट्य व्यापार प्रमुखत: शैलूष जाति द्वारा किया जाता था। वाजसनेय संहिता के तृतीय अध्याय में शैलूष जाति का बोध प्राप्त है,

नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय समाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेमं हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखं प्रमदे

कुमारी पुत्रं मेधायै रथकारं धैर्य्याय तक्षाणम्।[4]

नाटकाभिनय के मूल में नृत्य व गीत परंपरा कार्य करते हैं। इन्हीं का निर्वहन सूत्र एवं शैलूष (नट) द्वारा किया जाता है। वस्तुत: वैदिक काल में नाट्य परंपरा का मौलिक स्वरूप विद्यमान रहा था। संभवत: धार्मिक उत्सवों में नाट्कला का अतर्संबंध विद्यमान रहा होगा। महाभारत एवं रामायणकाल में भी नाटकों का परिचय मिलता है। महाभारतकालीन नाटकों, रामायण नाटक एवं कौबेर रम्भाभिसार नाटक पात्र चयन एवं निर्वहन कार्य हेतु उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। कालांतर में बौद्धकाल नाट्यकला का प्रारूप विनयपिटक में दर्शनीय है। वहीं कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नाटक के मूल अंग दृष्टव्य होते हैं, "उस समय नट, नर्तक, गायक, वादक, कथा सुनाकर जीविका कमाने वाले, कुशलीव (नृत्य के साथ गाने वाले), सौमिक (ऐंद्रिजालिक), चारण आदि विद्यमान थे"[5] रामायण, शुक्लयजुर्वेद, महाभारत, अर्थशास्त्र एवं बौद्ध जैन कथाओं द्वारा नाटक के पौराणिक पक्ष सहज उद्घाटित होते हैं।

अभिनय की बढ़ती प्रतिष्ठा ने उत्सवों को प्रेक्षागृहों (स्थाई रंगशाला एवं अस्थाई रंगशाला) में मनाने की परंपरा का प्रचलन आरंभ किया। यहीं से नाट्य परंपरा में लोक नाट्यशैली का प्रवर्तन हुआ। वस्तुत: संस्कृत भाषा के क्लिष्टत्व दोष से भावार्जन करने में प्राय: अक्षम रहा। परिणामस्वरूप साहित्यिक नाटक मनोविनोद के संसाधन नहीं बन पाए।

अंतत: अंतरिम विकल्प के रूप में जन लोक नाट्य अस्तित्व में आने लगे व नाटक में हास्य-विनोद का समावेश होता चला गया। देशी भाषाओं में साहित्यिक भाषा शैली से परे लोक नाट्य पनपने लगा यथा : राजस्थानी में रास, ढ़ोला मारू, घूमर, ब्रज, पूर्वी हिदी एवं खड़ी बोली में नौटंकी, रास, स्वांग, भांड, बिहार में विदेशिया, बांग्ला में कीर्तनिया एवं यात्रा नाटक, आंध्र प्रदेश में भगवतमेल, महाराष्ट्री में लड़िते और तमाशा, गुजराती में भवाई आदि। नाटकों की इस परंपरा में यात्रा नाटक ने लोकप्रिय मुकाम पाया। ये नाटक प्राय: खुले मैदान में मंचित किए जाते थे। मान्यता है कि यात्रा नाट्य शैली वैदिककाल से पूर्व विद्यमान रही होगी, "यहाँ तक कि वैदिक युग भी यात्रा से परिचित था। यात्रा आर्यों की प्राचीन प्रसिद्ध पैतृक सम्पत्ति है। ऋग्वेद के देवताओं की स्तुति संगीतमय जुलुस में हुआ करती थी। सामवेद के कई मंत्र आदिम यात्रा नृत्यों के असंस्कृत विनोद की सीमा तक पहुँच जाते हैं।"[6]

यात्रा नाटक के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं पर नवीन शैली में नाट्य का प्रभाव दृष्टव्य हुआ यथा, विधासुंदर, ध्रुवचरित्र, दक्षयज्ञ, हीराफूल, नलदम्यंती एवं परसिया प्रसून नाटक आदि। गीत नाट्य शैली के ये नाटक हिंदी नाटकों की आत्मा बनकर उभरे। मानवीय संवेद के विविध अवयव रोना, हँसना, वार्तालाप आदि गेय पदो में प्रदर्शित हों। नृत्य, गीत और वाद्य प्रयोग द्वारा नाट्य रूपांतरित होते हैं। हिंदी भाषा की उत्पत्ति के साथ-साथ स्वांग का प्राचीनतम नाट्य स्वरूप उभरता है। स्वांग नाट्य डोमनियों द्वारा रचा जाता है। जायसी ने पद्मावत काव्य में वेश्या द्वारा जोगिन के सफल स्वांग की प्रस्तुति अलाउद्दीन द्वारा चित्तौड़ भेजने में किया है।

पातुरि एकहुति जोगि सवांगी। साह अखोर हुत ओहि मांगी।।

जोगिन भेस वियोगिन कीन्हा। सींगी सबद मूलतत लीन्हा।।

पदमिनि, पहँ पठई करि जोगिनि। बेगि आनु करि

विरह वियोगिनी।

भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न नाटकों में पुरानी हिंदी का प्रभाव लभ्य है। असमी नाटककार

शंकर देव ने आसाम में वैष्णव धर्म के प्रचार हेतु परिजातहरण, रामविजय, केलि गोपाल, पत्नी प्रसाद एवं कालिय दमन सरीखे नाटक मैथिली भाषा में असमी प्रभाव लिए लिखे। पत्नी प्रसाद नाटक की भाषा मनहरण है,

जय जय जगत महेश्वर। ब्रह्माशंकर याहे किंकर

जय भकतक भयहारी। नमो हरिचरण तोहारी।।

तब हारे (पारेगू) अतऐ साधि। भजि पापी अपराधी।।

वहीं ओड़िया नाट्य साहित्य में महाराज कपिलेंद्र देव सृजित परशुराम विजय नाटक उल्लेखनीय है,

चंद्रबदना....अमररामेण मीयते

केवल मुनि कुमर परशुदक्षिणकर

वामेण सोहे धनुरार ना

कोपेण बोलदू वीरता तु से मो बधिलु तात

आज तोरे छेदिवइ माय ना।

देशीभाषाओं में हिंदी प्रयोग की यह परंपरा विद्यापति से प्रभावी होती हुई, संस्कृत नाट्य साहित्य में सघनीभूत होती है। संस्कृत एवं प्राकृत नाटकों में अन्य भाषाओं का प्रयोग रोचकता लाने लगा। भाटों ने भाषाई प्रयोग जीवंत किए। महाराष्ट्री भाषा के लेखक नयनचंद्र द्वारा अपने उत्कृष्ट सट्टक 'रम्भामंजरी' में प्रयोग नाट्य साहित्य के पुरातन स्वरूप के अभिनव सकारात्मक परिवर्तन को अनुभूत करवाते हैं;

जरि पेखला मस्तकावरी केश कलापु।

तारे परिस्खलिला मयूरांचे पिच्छ प्रतापु।।

जरि नयन विषय केला वेणीदंड्।

तरि साक्षाज्जाला भ्रमर श्रेणी दंडु।।

भाषा के ये नाट्य प्रयोग देश-काल वातावरण की परिधि से परे विदेशी धरती नेपाल तक जीवंत हो चले। देशी भाषा मैथिली में सृजित नेपाली नाटक विद्याविलाप नाट्यकला विकास का जीवंत उदाहरण है। नेपाली नाट्यकार जगज्योतिर्मल्ल सृजित मुदितकुवलयस्य, कुंजबिहारी, हरगौरी विवाह उल्लेखनीय नाटक हैं।

नेपाली नाट्य की भाषाई सुगढ़ता डॉ. बागीची की पुस्तक में मुद्रित होती है,

सघन बरसिए मेहा।

सुमरि सुबंधुमहा।।

नवी छटपर भी नींद न आवए

विरह दगध देहा।।[7]

यह नाट्य परंपरा विक्रम की बारहवीं शताब्दी में अपभ्रंशात्मक भाषा शैली के रासक रूप में उभरा। अप्रभंश मिश्रित पश्चिमी राजस्थानी भाषा में अब्दुल रहमान कृत 'संदेश रासक' ने नाट्य को नव परिभाषित कर रासक की महत्ता ज्ञापित की,

कह न ठाह पडवेइहि बेउ पयासियइ।

कहबहु रूविणिवद्धउ रासउ भासियइ।।

मूलत: रासक काव्य पूर्णतया विकसित नाटकों का वह प्रारूप था जो अभिनय की पूर्णता पाकर श्रव्य काव्य से दृश्य में परिणत हो रहा था। 'गयसुकुमार रास' राजस्थान रास साहित्य परंपरा एव ब्रजभाषा में श्री बोपदेवचरित श्रीमद् भागवत रास साहित्य के अनछुए पक्षों को अनावृत करते हैं। वृंदावन की रासलीला उपस्थित जन समुदाय को भाव-विभोर कर जयदेव के गीत गोविंद, हितहरिवंश सृजित आदि स्रोतों में भाव भगति की पुनरावृत्ति करती है।

ब्रजभाषा के प्रारंभिक रास-लीला विषयक नाटक नंददास द्वारा सृजित हैं। उनके रासों में नि:श्रेयस्, मन:रंजन एवं अभ्युद्य विद्यमान है। उनका नाट्यकाव्य 'गोवर्धन लीला' सूत्रधार के शब्दों में, "कलिमल हरन मंगलकारनी। मनहरनी श्री शुकमुनिवरनी"। दर्शकों को सहजाकर्षित करता है। वहीं ब्रजकवि ध्रुवदास कृत मानलीला, दानलीला ने रास नाट्य परंपरा को सर्वोच्च स्तर पर पहुँचाया;

कृष्ण : दान हमारी लगत कछु कहौ प्रिय सो जाई।

ललिता जी : यह वन राधा कुंवरि को, इक छत राजत राज

ब्रेजभाषा का यह सौंदर्य पंद्रहवी शताब्दी तक बना रहा। शंकर देव ने संस्कृत भाषा में लोकनाट्य समाहित करते हुए अंकिया नाटक परंपरा का प्रवर्तन किया इस परंपरा के प्रमुख रचनाकार गोपाल अत्ता (1533 से 1608), रामचरण ठाकुर (1521-1600),

द्विजभूषण (1507-77) ने रासझूमरा, जन्मवाचा, अंकिया नाटक गोपी उद्धव संवाद सरीखे नाट्य सृजन किए।

शंकर देव ने 'नान्चन्ते सूत्रधार' नामक पद्धति को नाटकीय अनुशीलन प्रदान किया। देव अराधना में यह पद्धति मुखर व्यंजित हुई है;

जय जग जीवन मुरार
पावे परनाम हमार (ध्रुव)
पंचमुहे याहे तुति वुलि
शिरैहर घर पद धूलि
नृपसव छेदल वाणै।
कृष्ण किंकर एहु भाणै।।

नाट्य विद्या यहीं से नवाचारों से निखरती गई। अनुवाद प्रक्रिया से अनेक नाटक गुजरे प्रबोध चंद्रोदय नाटक, मोहपराजय (कवि यशपाल), धर्म विजय (भूदेव शुक्ल), चैतन्य चंद्रोदय (कवि कर्णपूर), अमृतोदय (मैथिल गोकुलनाथ), राधावनसी विलास नाटक, विश्वातीत विलास नाटक, शकुंतला नाटक (अनुवाद कविवर नेवाज) करुणाभरण (कृष्णजीवन लच्छीराम) आदि नाटकों ने रंगमंच को नवदिशा प्रदान की। अठारहवीं शताब्दी के इन नाटकों ने नाटककारों को दृष्टिकोण विशद् किया। जिसका प्रभाव उन्नीसवीं शताब्दी के नाटकों रामलीला विहार नाटक, प्रद्युम्न विजय नाटक, रामायण नाटक, आनंद रघुनंदन नाटक, जानकी रामचरित नाटक में अनुभव किया गया नाटककारों ने आश्रयदाताओं की रूचिनुसार नाट्यग्रंथ प्रणयन प्रारंभ किया। वहीं अंत:प्रेरणा से फलीभूत भगवद् विषयक नाटक उल्लेखनीय रहे;

शुभ लच्छन दच्छन सुदेश कविराम विच्छनं।
कृष्णदासतनु कुल प्रकास जस दीपक रच्छन।
रघुपति चरित्र तिन यथामति प्रगट करें शुभलगन गणि।
दे भक्तिदान निर्भय करहु जय रघुपति रघुवंश मणि।।[8]

वस्तुत: धार्मिक नाट्य वस्तु नाट्यकारों के उत्थान की प्रेरणा में विद्यमान होती है। संवत् 1900 वि. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना से पूर्व भारतेंदु अपने नाटक ग्रंथ में प्रभावती, देव माया प्रपंच एवं आनंद रघुनंदन को नाट्य रीति पर रचित मान चुके थे। आनंद रघुनंदन को हिंदी का सर्वप्रथम नाटक मानने का मुख्य कारण संस्कृत नाट्यशैली में विद्यमान सूत्रधार, नंदी एवं विषकम्भक का मुखर प्रयोग है। यद्यपि विद्वानों द्वारा विक्रम की तेरहवीं शताब्दी में सृजित रासरूप 'गीतिनाट्य' को प्रथम नाटक माना गया है।

रसनिष्पति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम नाटक माना जाता है, 'नाट्यमेव रस: रससमुदायो हि नाट्यम' की विविध शैलियाँ भारतेंदु युग में प्रचलन में आईं। प्रमुखत: ब्रज में रासलीला, यात्रा नाटक, विश्वनाथ शैली (संस्कृत नाटक प्रभाव), स्वांग(जननाटक), उत्तर भारत में रामलीला आदि। भारतेंदु युग में गोपाल चंद्र गिरधरदास कृ नहुष नाटक (सं. 1914 वि.)गहन प्रभावशाली रहा है। उसमें प्रस्तावना सहित छह अंक हैं एवं इसकी कथावस्तु महाभारत के अनुशासन एवं उद्योग पर्व पर आधारित है। अन्य प्रभावशाली नाटकों में विद्या सुंदर, पाखंड विडंबन (सं. 1929 वि.) वैदिक हिंसा हिंसा न भवति (सं. 1930 वि.), धनंजय विजय (सं. 1930 वि.), सत्यहरिश्चंद्र (सं. 1932 वि.) प्रेमयोगिनी (सं. 1932), कर्पूरमंजरी (संवत् 1932 वि.) चंद्रावली (सं. 1933 वि.) विषस्य विषमौषधम् (सं. 1933), मुद्राराक्षस (सं. 1935), भारत दुर्दशा (सं. 1937), दुर्लभ बंधु (सं. 1937) उल्लेखनीय हैं।

भारतेंदु युगीन नाटकों ने मनोरंजनात्मक/व्यंग्यात्मक शैली में तत्कालीन भारतीय परिवेश का यथार्थवादी चित्रण किया है। देश की दयनीय दशा चित्रण एवं जन जागरण के चित्र अंकन करना, भारतेंदु युगीन नाट्य साहित्य की सूक्ष्म विशिष्टता रही है। भारत दुर्दशा नाटक इसका यथार्थ बिंब प्रस्तुत करता है;

सोई वंश रूधिर वही, सोई मन विश्वास।
वही वासना चित वही, आसय वही विलास।।
कोटि-कोटि ऋषि पुन्य तन कोटि-कोटि अतिसूर।
कोटि-कोटि बुध मधुर कवि मिले यहाँ की धूर।।
सोई भारत की आज यह भई दुर्दशा हाय।।

वस्तुत: भारतेंदु युगीन साहित्यकारों ने शताब्दियों से वंचित वर्ग को कलामय वातावरण एवं आमोद-प्रमोद के साधनों से जोड़ते हुए ग्रामीण जीवन की त्रुटियों

को दूर करना प्रमुख उद्देश्य रखा। ग्रामीण जनता में छोटे-छोटे पदों द्वारा राष्ट्रीयता का संचार करना इन नाटकों का प्राणतत्व रहा;

चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।

चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।

चूरन हाकिम सब जो खाते। सब पर दूना टिकस लगाते।

भारतेंदु युगीन नाट्यकारों ने विविध प्रवृत्तियाँ देशभक्ति, जनजागरण, धार्मिक वृत्ति आदि को रास नाटकों में पिरोते हुए रंगशालाओं व लीलाओं के मंचन में वृद्धि की। इन नाटकों में प्रमुखत: ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत सीता वनवास (1995), रामलीला रामायण (1904), बंदीदीन कृत सीताहरण और सीता स्वयंवर (1999), देवकीनंदन सृजित सीताहरण (1876) और रामलीला (1879), बदरी नारायण प्रेमधन का प्रयाग रामागमन (1904), उल्लेखनीय है। सामाजिक समस्यात्मक नाटकों में साधु पाखंड व बाल विवाह पर मुखर चोट की गई इनमें प्रमुखत: विवाहित विलाप (1883), वृद्धावस्था विवाह (1888), बाल विवाह दूषक (1885), बाल विवाह (1881) गण्य हैं, वहीं हास परिहास युक्त हासरस नाटकों ने सामाजिक विद्रूपताओं का नग्न चित्रण किया। ये नाटक मनोरंजनात्मक व्यंग्य की करारी चोट लिए दर्शक वर्ग पर अपनी छाप छोड़ने में सफल हुए।

इनमें कलि कौतुक(1886), तन-मन-धन गोसाईं जी के अर्पण (1890), वेश्या नाटक (1893), देशी कुत्ता विलायती बोल (1898) अग्रगण्य हैं। इन नाटकों ने सामाजिक बुराईयों पर व्यंग्य करते हुए प्राप्त दुष्परिणामों को हास-परिहास में व्यंजित किया है। भारतेंदु युग में नाटकों को वाद दृष्टिकोण से यथार्थवादी, आदर्शवादी, राष्ट्रवादी, समाज-सुधारवादी एवं स्वच्छंदतावादी में वर्गीकृत कर प्रयोगधर्मिता स्थापित की गई। नाट्यकारों ने प्रहसन लेखन में सहबोध जीवन शैली एवं तीक्ष्ण व्यंग्य का समावेश कर यथार्थवादी नाट्य सृजन को गतिशीलता प्रदान की।

इन्होंने प्रतिकूल परिस्थियों में अनुकूल वातावरण का सामना कर तमाम विरोधों का सामना किया। उनके व्यापक दृष्टिकोण ने प्राप्य समस्त वस्तुओं से जीवन का उपादान ग्रहण किया, इस प्रक्रिया में सहज औदार्य, नैसर्गिक सौहार्द व सहज प्रेषण साधन बना। यह नाट्य वैविध्य प्रसाद युग में नव स्वरलहरी बिखेरता चला। इस कालखंड में विविध भाषाओं के नाट्य साहित्य का अनुवाद हिंदी में होने लगा। गिरीशचंद्र घोष, द्विजेंद्रलाल, दीनबंधु मित्र, माइकेल मधुसुदन दत्त ने अनूदित नाटकों के सौंदर्य से उत्तर भारत को अवगत कराया। क्लाईमेक्स एवं अंतर्द्वंद्व ने रसग्राहिता में अनुपम वृद्धि की। करुणा, भावोन्माद पश्चिमी नाट्य साहित्य की अभिनेयता ने नाट्य मंचन को रोचक बना दिया।

पारसी थियेटर के प्रभाव व हरिश्चंद्र काल की नाट्यशैली को नाट्य में समाहित करते हुए प्रसाद जी ने सज्जन नाटक का प्रणयन किया। इस नाटक में भारतेंदुकालीन नाट्य परंपरा के नांदी सूत्रधार को केंद्र में रखा गया, जिससे नाट्य प्रभावोत्पादकता में वृद्धि हुई। प्रसाद नाट्य साहित्य क्रमश: सज्जन (1968 वि.) कल्याणी परिचय (1970 वि.) प्रायश्चित (1971 वि.) ने पाठक व दर्शक वर्ग को नाट्य परंपरा के गंभीर पक्ष से अवगत कराया।

वहीं करुणालय (1969 वि. गीति नाट्य ने सामाजिक जीवन मूल्यों के संरक्षण, संवर्द्धन व संप्रेक्षण की नई आधारशीला रखी। पद्यात्मक कथोपकथन ने मंचन प्रक्रिया उद्वेलित कर दी। नाट्य इन्हीं जीवन मूल्यों का सार्वजनिक प्रदाता है। प्रसाद कृत राज्यश्री नाटक राजनैतिक, धार्मिक समस्याओं का सटीक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। वर्तमान भारतीय राजनीति में धर्म व शांति के द्वंद्व को तत्कालीन नाट्य साहित्य में गूढ़ तार्किक अनुभव से व्यक्त किया गया है।

राज्यश्री नाटक के पात्र शांति भिक्षु (विकटघोष) का संवाद वर्ष 2020 के भारतीय राजनैतिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर सशक्त तमाचा है, "मूर्ख शांति को मैंने देखा है। कितने शवों में वह दिखाई पड़ी। शाति को मैंने देखा है, दरिद्रों के भीख माँगने में। मैं उस शांति को धिक्कारता हूँ। चर्म को मैंने खोजा, जीर्ण पत्रों में। पंडितों के कूट तर्क में उसे बिलखते पाया, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं सांसारिक सुख

अतृप्ति, असंतोष व अनवरत अभिलाषाओं का द्योतक है। प्रसाद साहित्य जीवन में व्याप्त दरिद्रता, दुख को उधेड़ता है;

सखी री, सुख किसको हैं कहते।
बीत रहा है जीवन सार केवल दुख ही सहते।
करुणा कांत कल्पना है बस, दया न पड़ी दिखाई
निर्दय जगत, कठोर हृदय है और कहीं चल रहते।[1]

प्रसाद नाट्य साहित्य यथा; अजातशत्रु (स. 1979 वि.), जनमेजय का नागयज्ञ (संवत् 1983 वि.) कामना (संवत् 1984 वि.) स्कंदगुप्त (सं. 1985 वि.) भारतीय समाज में राष्ट्रीयता के भावों का पल्लवन कर सभ्यता व संस्कृति का निखरा रूप वर्णित करते हैं;

खेल लो नाथ विश्व का खेल।
कहाँ रही प्यारी मानवता, बढ़ी फूट की बेल।।
रूदन, दुख तमनिशा निराशा,
इन द्वंद्वों का मिटे तमाशा।

स्मित आनंद उषा और आशा एक रहे कर मेल।

वहीं 'चंद्रगुप्त (सं. 1988 वि.) ध्रुवस्वमिनी (सं. 1990 वि.) मानव मन में उत्साह का संचार करते हैं। इनके मंचन ने रंगमंचीय जीवन में वीर रस का उद्घोष स्वरमान कर दिया था,

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयं-प्रभा, समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो बढ़े चलो।

वस्तुत: रंगमंच का कार्य वर्तमान सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का निराकरण करना रहा है। रंगमंच ने अपनी भूमिका का सशक्त निर्वहन किया है। 14-15 दिसंबर 1933 को काशी रत्नाकार रसिक मंडल ने न्यू सिनेमा हॉल में चंद्रगुप्त नाटक का मंचन किया। वहीं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की शांता गांधी ने स्कंदगुप्त का रंगमंचीय रूपांतर प्रस्तुत किया।

पूर्व में पारसी थियेट्रिकल कंपनी (रंगमंचीय नाटक कंपनी) के अमानत कवि ने इंद्रसभा के रूप में नृत्य-संगीतपूर्ण गीत नाट्य प्रस्तुत किया। ओरिजनल थियेट्रिकल कंपनी (संवत् 1927 वि.) के कलाकारों क्रमश: सोहराव जी, कावसजी खटाऊ एवं जहाँगीर जी ने इंसाफ-ए-महमूदशाह (संवत् 1939), शीरी-फरहाद, चाँद बीबी, अलीबाबा, गुल-सरोवर हातिमताई नाटकों को मंचित कर प्राणवान कर दिया।

विक्टोरिया नाटक कंपनी (संवत् 1934) के अभिनेता बल्लीवाला, मिस खुरदेश, मिस मेरी फेंटन ने 'दिलेर दिलशेर', 'गोपीचंद', 'निगाहे गफलत' का मंचन किया। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि थियेट्रिकल कंपनी के नाटकों में हिंदी भाषा प्रचलन का श्रेय प. नारायण प्रसाद बेताज को प्राप्त है। इनके द्वारा प्रकाशित पत्रिका शेक्सपीयर एवं नाटकों फरेबे-मुहब्बत, गोरख-धंधा, महाभारत, कृष्ण-सुदामा ने हिंदी गीतों के माधुर्य का नाटकीय मंचन में समावेश किया।

करुणा, प्रेम आदि मनोभावों को रोमांचकारी घटनाक्रमों के केंद्र में रखकर सृजन करने वाले आगा हश्र (हिंदुस्तानी मॉरलो) द्वारा सृजित नाटकों गंगावतरण, सीता बनवास, वन देवी, श्रवण कुमार, माधो मुरली, तस्वीरे वफा, ठंडी आग, मीठी छुरी ने दर्शकों के मनोभावों में गहन उथल-पुथल मचाई। भारत विभाजन के समय मुंबई में पृथ्वी थियेटर की स्थापना हुई। परिभाषित सृजनात्मक शैली एवं अश्लीलता से परे यथार्थवादी कथानकों के नाटक गद्दार, आहुति, दीवार पठान आदि ने जनसाधारण को आकृष्ट किया।

वहीं भारतीय संस्कृति को संगीतमय नाटकों द्वारा वैश्विक पटल पर रखने का दुरूह कार्य 'नागरी नाट्यकला प्रवर्तन मंडली' द्वारा किया गया। बीसवीं शताब्दी में नाट्य साहित्य में आमूलचूल परिवर्तन हुए, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, स्त्री शिक्षा प्रचार, सामाजिक समस्याओं का अंकन नाट्य के केंद्र में रहे, परिणामस्वरूप समस्या नाटक अस्तित्व में आए।

इनके जन्मदाता प्रयोगधर्मी नाट्यकर्मी लक्ष्मीनाथ राय मिश्र द्वारा संन्यासी (1988 वि.), राक्षस का मंदिर (सं. 1988 वि.), मुक्ति का रहस्य (सं. 2006 वि.) अन्य नाटककारों यथा; वृंदावनलाल वर्मा, बांस की फांस (स. 2004 वि.), उपेंद्रनाथ अश्क छठा बेटा (सं. 2007 वि.), कैद और उड़ान (स. 2008 वि.), वृंदावनलाल वर्मा, खिलौने की खोज (सं. 2007 वि.), पं. गोविंद वल्लभ पंत अंगूर की बेटी (सं. 1994 वि.), मणि गोस्वामी (सं. 1988 वि.) ने

समस्या नाटकों में स्वचछंदतावाद का विरोध करते हुए यथार्थतत्व पर बल दिया। यथार्थवादी नाट्यकारों इब्सन 'लब्स कॉमेडी' (1862), फेड्रिक हेबल, सडरमैन, आस्त्रावस्की, चेखव, बनार्ड शॉ ने रूढ़िवादी विचारधाराओं को नाट्य प्रयोग से संपृक्त किया। इब्सन की रचनाओं में घोस्ट्स व डाल्स हाउस ने सामाजिक संबंधों के उतार-चढ़ाव के वर्णन के चलते नाट्यकारों को प्रभावित किया।

सांस्कृतिक नाट्य विचार धारा पर भारतेंदु युग के संरक्षणात्मक विचार अपना प्रभाव छोड़ते दर्शकवर्ग को आत्ममंथन पर विवश करते हैं। लक्ष्मीनारायण मिश्र, सियाराम शरण गुप्त, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविंददास ने सांस्कृतिक चेतना प्रधान नाटक का सृजन किया। पुण्य पर्व, नारद की वीणा, दशाश्वमेध, शक-विजय, वत्सराज, गरूड़ ध्वज नाटकों ने संस्कृति उद्धार को नव दशा प्रदान की।

नाटककार लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत 'अशोक' (सं. 1983 वि.), प्रतिज्ञा भंग क्यों, वृंदावनलाल वर्मा 'पूर्व की ओर' (सं. 2007 वि.), जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद' कृत 'समर्पण' (सं. 2007 वि.), प्रताप प्रतिज्ञा, गौतमनंद (सं. 2009 वि.) ने सामाजिक व सांस्कृतिक नाटकों की आधार भूमि रखी। कालांतर में गीत नाट्य पथ रूपक लिए उत्कृष्ट प्रभाव उत्कीर्ण करने लगे। सियाराम शरणगुप्त 'उन्मुक्त', उदयशंकर भट्ट 'मत्स्यगंधा', 'कालिदास', 'राधा', 'विश्वामित्र', मैथिलीशरण गुप्त 'अनघ', हरिकृष्ण प्रेमी 'स्वर्णविहान', भगवती चरण वर्मा 'कर्ण', 'द्रौपदी', 'महाकाल', सुमित्रानंदन पंत 'फूलों का देश', 'शुभ पुरुष', 'शिल्पी', 'ध्वंस शेष', 'शरत चेतना', रामधारी सिंह 'दिनकर', 'मगध महिमा', धर्मवीर भारती' 'अंधा युग', निराला 'पंचवटी प्रसंग', आरसी प्रसाद मिश्र 'धूप-छांव', सिद्धनाथ 'संघर्ष', 'विकलांगों का देश' आदि काव्य रूपकों ने जीवन सौंदर्य का प्रत्येक कोना-कोना झाँका। नाट्य साहित्य में इसी दौर में लगभग 1932 के आस-पास रेडियो प्रसारणार्थ रूपक अस्तित्व में आए।

वर्ष 1936 ई. में ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली केंद्र से प्रथम रेडियो नाटक प्रसारित हुआ, यह बांग्ला नाट्यानुवाद था। हिंदी भाषा का प्रथम नाटक 'राधा कृष्ण' माना जाता है। रेडियो रूपक ने कई विधाओं फीचर (रूपांतर), फैंटेसी (भावनाट्य), संगीत-रूपक, स्वोक्ति नाटक (मोनोलॉग), प्रहसन एवं झलकियों को जन्म दिया। रेडियो रूपककार भगवती चरण वर्मा 'राख और चिनगारी', लक्ष्मीनारायण मिश्र 'अशोकवन', 'ताजमहल के आँसू', 'अहल्या', डॉ. रामकुमार वर्मा कृत 'कौमुदी मोहत्सव', 'चारूमित्रा', 'औरंगजेब की आखिरी रात', 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया', सत्यप्रकाश संगर कृत 'अच्छे पड़ोसी', 'कॉफी हाउस वाली लड़की', 'धर्मराज का टेपरिकार्डर', स्वदेशकुमार रचित 'शादी की बात', 'पति-पत्नी', 'अजनबी', जगदीश चंद्र माथुर सृजित' 'विजय की बेला', 'खंडहर', 'भोर का तारा', कृष्ण किशोर 'बेवकूफ की रानी', 'धुँधले चित्र', 'मछली के आँसू', भृंगु तुपकारी कृत 'सबके दाता राम', 'फूल ओर पत्ता', दोहरी, सरीखे रूपक लिखे। इन से विकसित विधाओं में गिरिजाकुमार माथुर चिरंजीत व सुमित्रानंदन पंत, सरीखे रचनाकारों ने संगीत रूपक सृजन में ध्वनि की सशक्त प्रेषणीयता उत्पन्न की।

वहीं भृंगु तुपकारी व अनिल कुमार ने उपन्यास काव्य, कहानी का लघु रूप नाट्यांतर में फीचर विधा पल्लवन में अनुभूत कराया अद्र्धविक्षिप्तावस्था/ स्वप्नावस्था की अनुभूतियाँ प्रणयचित्र द्वारा भावनाट्य (फैंटेसी) में जीवंत हुई। विष्णु प्रभाकर सृजित अद्र्धनारीश्वर, शलभ और ज्योति इसके सशक्त हस्ताक्षर हैं। वहीं जीवन के अंतर्द्वंद्व को एक पात्रीय नाटक में व्यक्त करने का कौशल सेठ गोविंददास द्वारा सृजित स्वोक्ति नाटक 'चतुष्पथ' से अस्तित्व में आया।

हिंदी नाटकों के उन्नयन एवं परिवद्र्धन में विभिन्न प्रकाशनों का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। नाट्यकृतियों को आकर्षक स्वरूप प्रदान कर पाठक वर्ग को सुलभ करा उन्हें नाट्य उद्देश्यों से सहज सरोकार करवाया है। वर्ष 2019 में विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित निम्न नाट्यों ने समसामयिक वैविध्यों को स्वरबद्ध किया है। किताब घर प्रकाशन से प्रकाशित सुमन ओबेरॉय कृत 'यह भी खूब रही' चार उत्कृष्ट हास्य व्यंग्य नाटकों का संग्रह है। प्रथम नाटक 'यह भी खूब रही' मामूली झगड़े से उत्पन्न तनाव व संवाद शून्यता के चलते नव विवाहित पति-पत्नी के व्यवहार से मित्रों के स्वार्थ व मनोरंजन का विषय है।

आपसी नासमझी एवं तनाव से उपजी परिस्थितियाँ तलाक तक पहुँचकर अप्रत्याशित रूप से सुखद परिवर्तन में परिवर्तित हो जाती है। वहीं 'हम नहीं सुधरेंगे' नाटक की नायिका ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो स्वयं नहीं सुधरते और दूसरों को सुधारने का दम भरते हैं। इनके सुधार के नाम पर विचित्र एवं हास्यास्पद कार्य दूसरों को परेशान करते हुए बड़ी विचित्र मुसीबत में डाल देते हैं, यह नाटक गंभीर समस्याओं को समेटते हुए जागरूकता का संदेश प्रेषित करता है। अन्य नाटक 'बर्थ डे' पत्नी को सरप्राइज गिफ्ट देना एक बेचारे पति की कथा है। दो पुरुषों के एक जैसे नाम और दोनों की पत्नियों की एक जैसी जन्मतिथि से उपजी गलतफहमी दोनों पतियों को पत्नियों का कोप पात्र बनाती हैं। बेचारे दोनों जितना स्थिति संभालने का प्रयत्न करते हैं, उतना ही उलझते जाते हैं।

नाटक 'नरक यात्रा' पृथ्वी के दुष्ट, ढीठ, मक्कार प्राणियों के क्रिया व्यापारों से पृथ्वी पर पनपने वाली विसंगतियों, विकृतियों को हास्योक्तियाँ द्वारा ब्रह्म, यम, चित्रगुप्त की दुखद मनःस्थितियों को व्यक्त करती है। पृथ्वीवासियों के कुकर्मों एवं कुतर्कों से संवाद रोचक बन उठे हैं। वहीं काका हाथरसी एवं गिरीराजशरण कृत 'श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य एकांकी' नाट्य समसामयिक व्यवस्थाओं के विकृत स्वरूप पर चोट करते हुए सशक्त व्यंग्याघात करता है। आम लोगों के मध्य पनपी विद्रूपताएँ जीवन के अनावृत पक्षों को मुखर करती हैं। ये हास्य-मिश्रित व्यंग्य समाज के अपेक्षित परिवर्तनों के नग्न रूप दिखाते हैं।

वहीं शंकर शेष कृत 'कोमल गांधार' के पात्र पौराणिक परिवेश लिए वर्तमान समसामयिक व्यवस्थाओं, सामाजिक चरित्र की अधुनातन राजनैतिक व्याख्या करते हैं। इस नाटक के पात्र क्रमशः भीष्म, धृतराष्ट्र, संजय, गांधारी, शकुनि, दुर्योधन व दासी आदि जीवन के उलझे हास्य खोजते नजर आते हैं। अपने आपके आत्मद्वंद्व को जीना/ ढोना आधुनिक मानव की विडंबना है, जिसे लेखक ने शब्दबद्ध किया है।

वहीं वाणी प्रकाशन से नादिरा जहीर बब्बर कृत 'दयाशंकर की डायरी' एक अकेले आदमी की कथा है। उसकी अपनी दुनिया की वास्तविकताएँ एवं भ्रांतियाँ हैं। दयाशंकर अपनी अंदरूनी दुनिया जीता है। एक ऐसा असफल आदमी जो छोटे से कस्बे से मुंबई फिल्म स्टार बनने का सपना लिए आता है, किंतु मामूली क्लर्क बनकर रह जाता है। वो जिंदगी की इस कटु सच्चाई के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाता और जीवन की आर्थिक एवं सामाजिक उलझनों में जकड़ जाता है। दयानंद अपने आप को बहुत अपमानित व बहिष्कृत महसूस करता है उसकी इस घुटन के लिए कहीं न कहीं हम सब/पूरा समाज उत्तरदायी है। वहीं राजेश कुमार का नाटक 'अंबेडकर और गांधी' भारतीय समाज की अछूत समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है संपूर्ण नाटक गांधी की छवि महात्मा रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि अंबेडकर का व्यक्तित्व दलित मुक्ति उद्धारक के रूप में निरूपित हुआ है। ये दोनों नायक ज्वलंत सामाजिक प्रश्नों पर संवाद करते, समस्याओं से भरे इतिहास के उस जटिल दौर में नवीन राहें तलाशते तथा वैचारिक रूप में गुत्थम-गुत्था होते प्रतीत होते हैं। नाटक की पृष्ठभूमि में उभरते संवाद इस तथ्य के साक्षी हैं कि तमाम मतभेदों के बावजूद अंबेडकर एवं गांधी एक-दूसरे से घृणा नहीं करते थे। नाटक राजनैतिक एवं ऐतिहासिक दस्तावेज बनकर उपस्थित होता है। यह विचारों की दुर्लभ रंगमंचीय पेंटिंग है और पक्ष-विपक्ष में बहस के लिए उत्तेजना प्रदान करता है।

वस्तुतः भारतीय समाज श्रेणीबद्ध जातियों का ऐसा समूह है, जो समता और भ्रातृत्व को उपजने ही नहीं देता। प्रस्तुत नाटक राजनैतिक/आर्थिक शक्ति को केंद्र मे रखते हुए दलित वर्ग की यातनाओं के शमन का मार्ग प्रशस्त करता है। नाटककार अरविंद गौड़ कृत 'नुक्कड़ पर दस्तक' नाटक मजदूर, किसानों, दलितों, आदिवासियों के संघर्ष से लेकर भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में बुनियादी भूमिका का आधार व्यक्त करता है। ये नुक्कड़ नाटक नाट्य की उस उर्वरा शक्ति का प्रतीक है, जिसे सिस्टम और कॉर्पोरेट अधिग्रहण कर अपनी सत्ता के प्रचार और मार्केट के लिए पिछले कुछ दशकों से टूल्स की तरह इस्तेमाल करते रहे हैं।

प्रस्तुत नाटक व्यक्ति के स्थान पर समूह, चरित्र के बदले घटना, भाषा-बिंब प्रस्तुत करता है।

घुमा-फिराकर कहने की बजाए सीधी बात व्यक्त करता है। नाटक घटनाक्रम को किसी अंधी गली में छोड़ने की बजाए एक निर्णय पर ले आता है। नाटक जिस इंटेसिटी से महिला उत्पीड़ण के सवाल को उठाता है और पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर चोट करता है। दर्शकों को अपने पक्ष में करने के लिए कारगर सिद्ध होता है। 'नुक्कड़ पर दस्तक' नाटक का कथानक नए तरीके से संवादों, बिंबों में समाहित हैं जिनका प्रभाव दूर तक पड़ता है। भागती-दौड़ती जिंदगी में जब लोगों के पास समयाभाव है, प्रस्तुत नाटक समाज सापेक्ष होते हुए समय बोध को समय के भीतर एवं समय के पार ले जाते हैं। राजपाल प्रकाशन से प्रकाशित असगर वज़ाहत कृत 'महाबली' नाटक ने वर्ष 2019 में सुर्खियाँ बटोरी।

अकबर एवं तुलसीदास भारतीय इतिहास के दो कालजयी पात्र हैं। इन्हें अपनी कल्पना के केंद्र में रखते हुए वज़ाहत ने महाबली नाटक का सृजन किया। गोस्वामी तुलसीदास बनारस के घाट पर ध्यान, साहित्य चिंतन किया करते थे। वहीं मुगल सल्तनत के महाबली बादशाह अकबर उन्हें अपने दरबार की शोभा बनाना चाहते थे। राजसत्ता का मद एवं कलाकार की स्वाधीनता इस नाटक की केंद्रीय विषयवस्तु है। अकबर के अनुरोध को तुलसीदास अस्वीकार कर देते हैं। वस्तुतः तुलसीदास ने मध्यकाल में निर्भीकता पूर्वक कथावाचक ब्राह्मणों के एकाधिकार को चुनौती देकर तोड़ा। तुलसीदास ने राजसत्ता से कोई समझौता नहीं किया। सम्राट अकबर अपने दरबार में नौ रत्न सरीखी प्रतिभाओं को जमा करने का शौक रखता था। उसके दरबार में भाँति-भाँति के कलाविद्, धर्मशास्त्री एवं विद्वान थे।

मूलतः सत्ता और कला के संबंध सार्वभौमिक एवं शाश्वत हैं। संसार की अनेक संस्कृतियों में ऐसे कवि/लेखकों का उल्लेख है जिन्होंने राजसत्ता का संरक्षण नहीं लिया या लेने से इनकार कर दिया। महाबली नाटक के दोनों विषय-राजसत्ता तथा कला के संबंध एवं विचार का लोकतंत्रीकरण आज भी महत्वपूर्ण हैं। इनकी समसामयिकता मुखर रही है। यद्यपि नाटक का कथानक 16वीं शताब्दी का है तथापि इसकी समकालीनता गहन परख प्रेषित करती है।

इतिहास में कहीं भी तुलसीदास एवं अकबर के मिलने के साक्ष्य नहीं मिलते, किंतु राजसत्ता एवं कला के पारस्परिक संबंधों पर विस्तृत चर्चा हेतु लेखक नाटक के अंतिम दृश्य में स्वप्न/कल्पना में तुलसी व अकबर का मिलन करवाता है। मुगल बादशाह अकबर किताबी ज्ञान की अपेक्षा सामान्य ज्ञान को विश्वसनीय मानता था। तर्कसंगत तथ्य उसे प्रभावित करते थे।

अकबर का व्यक्तित्व प्रतिभा व जिज्ञासा से परिपूर्ण था। संभवतः इसी कारण से वह स्वयं को महाबली कहलवाना पसंद करता था। नाटक के अंत तक आते-आते यह विवाद प्रबल हो उठता है कि महाबली कौन है। अकबर या तुलसीदास। नाटक अंततः इन प्रश्नों का तर्कपूर्ण समाधान प्रस्तुत करता है। वर्ष 2019 में राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रख्यात नाट्यकर्मी गिरीश कर्नाड एवं प्रोफेसर राम गोपाल बजाज का नाटक 'अग्नि और बरखा' रंग मंच पर इतिहास, पुराण और लोककथाओं का सर्वाधिक समृद्ध प्रेरक व आकर्षक कथा बीज प्रस्तुत करता है। नई दृष्टि एवं संवेदना का संवहन अतीत से आकार ग्रहण कर मिथकीय कथानकों से समसामयिक व आधुनिक समस्याओं का चित्रण संप्रेष्य करता है।

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु के केंद्र में महाभारत का वन पर्व है। वनवास काल में भटकते पांडवों को महर्षि लोमष यवक्री 'यवकृत' की कथा सुनाते हैं। यह कृपा अपने भीतर कई गंभीर अर्थ छिपाए है। नाटककार कारनाड अतीत के प्रकाश में वर्तमान धुंधलके को उजाला करने के प्रयास में विविध अभिप्रायों की गिरह खोलते सहज लभ्य होते हैं। वहीं राजकमल प्रकाशन से सौरभ शुक्ला का नाट्य 'बर्फ' सही और गलत के द्वंद्व के बीच राह तलाशता प्रतीत होता है। वस्तुतः नाटक अनुभव की संवेदना को उधेड़ता चलता है। रंगमंच की दुनिया को चमत्कृत करने में सक्षम 'बर्फ' नाटक सच की बेहतरीन प्रस्तुति है मानवीय संवेदनाओं को झकझोरता नाटक जीवन मूल्यों की कथावस्तु को उकेरता है।

आम जनजीवन में विद्यमान विडंबनाएँ यत्र-तत्र अपने अस्तित्व तलाशती प्रतीत होती हैं। इनकी भयावहता दर्शक को मंत्रमुग्ध कर समस्यात्मक निदान की अंतः प्रेरणा प्रदान करती हैं जीवन के अंतहीन संघर्षों से

उलझता मानव सत्य की तलाश में खुद को उलझा पाता है। उसकी तमाम जद्दोजहद 'बर्फ' नाटक में जीवंत हो उठती है वहीं आधुनिक जीवन की बढ़ती महत्वाकांक्षा विजय तेंदुलकर की नाट्यकृति 'विट्ठला' में व्यक्त होती है। सामाजिक विसंगतियों, धर्माडंबरों एवं कुरीतियों पर तेंदुलकर ने सटीक रूपक प्रयोग किए हैं। जीवन की सहजता भाग-दौड़ से परे सुकून तलाशती है अति महत्वाकांक्षाएँ जीवन को अंधकार भरे मार्ग में ढकेलती हैं। नाटक का केंद्रीय पात्र विट्ठला अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति है। पारिवारिक मर्यादा को भूलकर वह ऐशोआराम का जीवन जीना चाहता था।

वह ऊँचे परिवार की विधवा से प्रणय कर बैठा और अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसकी अतृप्त आत्मा भटकती है, पश्चाताप करने के लिए लेकिन उसे कोई उपयुक्त पात्र नहीं मिलता, जिसकी मदद करके वह भूत योनि में भी कुछ पुण्य अर्जित कर सके। वस्तुतः आज के आदमी की सटीक मनोवैज्ञानिक व्याख्या है 'विट्ठला'। वैदिक साहित्य संस्करण लिए राधावल्लभ त्रिपाठी की नाट्य रचना 'कथा शकुंतला की' वैदिक काल से संबंधित है, इसके पात्र वेद कालखंड से संबंधित हैं।

शकुंतला-दुष्यंत की कथा को सहेजती इस नाट्य प्रस्तुति को इसका काल बोध एवं तत्कालीन परिवेश का तथ्य निरूपण विशिष्ट बनाता है। वस्तुतः दुष्यंत के पुत्र भरत का उल्लेख वेदों में भी मिलता है।

इस नाटक में महाभारतकालीन सामंती मूल्यों से परे दुष्यंत-शुकंतला कथा के वैदिक संस्करण को केंद्रीय आधार प्रदान किया है। इसके परिप्रेक्ष्य में आदिम मूल्य बोध कार्य करते हैं। नाट्य कथा मूलतः मातृसत्तात्मक समाज को व्यक्त करती है, जहाँ लड़कियों को अपना जीवन-साथी चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त है, जैसे कि शंकुतला भी करती है। नाटक में भूख व अकाल के चित्र भी खींचे गए हैं, जिन्हें वेदों के कुछ प्रसंगों के आधार पर निर्मित किया गया है। संवाद रचना, भाषा एवं प्रसंगानुकूल दृश्य विधान नाटक को सहज आकार प्रदान करते हैं। वहीं आधुनिक रेडियो रूपकों का सशक्त संग्रह रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'हे राम' नाट्य संग्रह के रूप में लोकभारती प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है।

महात्मा गांधी, महर्षि रमण, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों को आधार बनाकर रूपक लिखे गए हैं। इनमें महापुरुषों के प्रेरक जीवन की झलकियाँ जीवन दर्शन लभ्य हैं। आधुनिक दृष्टिकोण लिए युवा नाटककार पीयूष मिश्रा का नाटक 'वो अब भी पुकारता है' राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। यह नाटक भारत में जाति व्यवस्था की समस्या को अंकित करता है। जो आधुनिक सदी में अपनी जड़े जमाए बैठा है। चंबल क्षेत्र में अछूत जाति के साथ अत्याचार की पृष्ठभूमि पर सृजित यह नाटक बुंदेली बोली एवं कसे ताने-बाने के चलते चर्चा में हैं। हरिजन जाति के युवक मंगल का ठकुराइन सुमंती को 'भौजी' कह देना ठाकुर हरिभान सिंह को नागवार गुजरता है। वह उसकी हत्या कर देता है और हत्या का मुकदमा ठाकुर अपने प्रभाव के चलते जीत जाता है। इससे उपजे अनगिनत सवालों के जवाब पीयूष मिश्रा पूर्ण बेबाकी से देते हैं। मिश्रा के ही एक अन्य नाटक ने इस वर्ष रंगमंच पर अनगिनत तालियाँ बटोरी है।

वर्ष 2019 में सृजित व प्रकाशित 'सन् 2025' नाटक दो पात्रों द्वारा एक लेखक के रहस्यमय जीवन व लेखन से अनेक पर्दे उतारता हैं एवं गड़गड़ सूफी जासूम लेखक के चर्चित पुरस्कृत उपन्यासों की बारीकी से पड़ताल करता है और लेखक को स्पष्टतः बताता है कि आप द्वारा सृजित हत्या कथाओं में वर्णित हत्याएँ आपने ही की हैं। लेखक सच स्वीकार कर लेता है। झूठ और सच के तिलस्म से बना यह नाटक यथार्थ के कटु अनुभवों की सशक्त बिंबात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता हैं। वस्तुतः नाट्य सृजन में समसामयिक नाट्यकार अभिनव प्रयोग कर रहे हैं, जिनका पूर्ण दोहन आधुनिक रंगकर्म कर रहा है।

नाटक विधा को आम लोगों तक संप्रेषित करने में भारतीय नाट्य विद्यालय संघ (इप्टा 1943 ई.), संगीत नाटक अकादमी (1953 ई.), राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (1959) की महती भूमिका रही है। इनसे प्रशिक्षित नाट्यकर्मियों ने भारतवर्ष में विभिन्न स्थानों पर देशांतर नया थियेटर, प्रयाग मंच, अभियान, जन नाट्य, मंच, रूपांतर, दर्पण, मेघदूत, थियेटर, यूनिट आदि नाट्य संस्थाओं की स्थापना की। वहीं सत्यवीर दुबे, नारायणलाल, हबीब तनवीर, सरीखे मंझे रंगकर्मियों

ने भारतीय रंगमंच को आधुनिक रूप प्रदान किया है।

आधुनिक रंगमंच को प्रभावशाली बनाने हेतु घूमने वाले मंच, स्वच्छंद मंच, रवींद्र रंगशाला, आकाश रेखा, संयुक्त पीठ मंच आदि नवतकनीक रंगमंच प्रेक्षाग्रह निर्मित किए गए हैं। समकालीन हिंदी रंगमंच के वर्तमान स्वरूपों में नुक्कड़ नाटक का अभूतपूर्व योगदान है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, सफदर हाश्मी ने रंगकर्मियों को स्टेज से मुक्त करते हुए मद्य निषेध, बेटी बचाओ आंदोलन आदि की जीवंत प्रस्तुति में नुक्कड़ नाटक को सड़क, मैदान, विद्यालयों, महाविद्यालयों की धरती पर उतार दिया है। हिंदी साहित्य के अनेक नाटकों/काव्यकृतियों की धरती पर उतार दिया है। हिंदी साहित्य के अनेक पाठकों/काव्य कृतियों यथा, कुआनो नदी, राग दरबारी, अंधेरे में, मित्रों मरजानी, पटकथा आदि का सशक्त नाट्यरूपांतर कर रंगमंच पर अभिनव प्रयोग किए हैं।

विगत कुछ समय से श्री गुरु गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स की नाट्यशाला मंचतंत्र द्वारा 'चिड़िया की कहानी', शिवाजी कॉलेज के रंगमंच संस्थान, व्यायाम द्वारा 'जानवर ना मान', शहीद भगत सिंह महाविद्यालय के नट्यूव नाट्यमंच द्वारा 'जड़वा नुक्कड़' नाटक मंचित किए गए। वर्ष 2019-20 में राज्य टी.बी. कार्यालयों द्वारा 'नुक्कड़ नाटक कुछ नहीं मुश्किल' के द्वारा स्वास्थ्य समस्या टी.बी. पर प्रकाश डाला गया। महिला स्वास्थ्य जनजागरूकता हेतु 'औरत नुक्कड़' नाटक का मंचन किया गया। कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज द्वारा 'सैकंड की रेड लाईट', केशव महाविद्यालय द्वारा नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया।

गुरु तेगबहादुर तकनीकी संस्थान द्वारा 'प्यारेलाल खिलौना दुकान', गार्गी कॉलेज दिल्ली द्वारा 'चाचा चौधरी और दीनानाथ', श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज द्वारा 'मशीन की ओर स्वागत है', हंसराज ड्रामेस्टिक सोसाइटी कृत 'तमाशा' नाटक समसामयिक विषयों के जीवंत उन्नयन का पर्याय बने। रामानुजन कॉलेज नई दिल्ली के जज्बा थियेटर समूह द्वारा मंचित 'भूख' नाटक रंगमंच के अभिनव प्रयोग साक्षी बना। वहीं इब्टिडा रंगमंच समूह के प्रशासन तंत्र पर कटाक्ष करते नाटक 'जरूरत क्या थी' ने दर्शकों से सहज संवाद स्थापित किया। रामजस कॉलेज के नुक्कड़ नाटक 'रखवाले' ने 'शैन्य' थियेटर समूह के रंगमंचीय वातावरण को तिलस्मी रूप प्रदान किया।

वस्तुतः आधुनिक नाट्य साहित्य लेखकीय दृष्टिकोण को समसामयिक परिवेश से समृद्ध कर रहा है। रंगमंच नवीन प्रयोगों के चलते प्रासंगिक व प्रभावशाली हो चला है। युवा नाटककार अनछुए प्रयोगों को नाट्य की विषय वस्तु बनाते हुए मानव जीवन को परत दर परत उधेड़ते चल रहे हैं। इस प्रक्रिया के साक्षी हैं समय, कलावद्र्धिता, भाषाई प्रयोग और मानवीय अपेक्षाएँ। रंगकर्म की आत्मा, नव प्रयोगों को आत्मसात् कर जीवन की समस्याओं को प्रासंगिकताओं से उभार रही है। नाट्य की इस अक्षुण्ण पुरातन परंपरा को नए कलेवर में ढालते हुए सामाजिक सरोकारों से जोड़े रखने की कवायद भारतीय समाज के अधनातुन रूप को सशक्त बनाए रखने का सफल अंकन है, जिसे आम आदमी हृदय से सघनीभूत स्वीकृति प्रदान करता चल रहा है....।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. संपादक डॉ. वचनदेव कुमार, लेखक और परिवेश पृ. 01
2. हिंदी गद्य की विविध विधाएँ, श्रीमती नमिता चौहान, पृ. 37, गौतम बुक कंपनी जयपुर, प्रथम संस्करण 2012
3. Max Muller's version of the RigVeda, Vol. 01,P.173
4. यजुर्वेद संहिता, 30वाँ अध्याय छठा मंत्र।
5. हिंदी नाटक उद्भव व विकास, डॉ. दशरथ ओझा, संस्करण 1999, राजपाल एंड संस, पृ. 93
6. द संस्कृत ड्रामा-डॉ. कीथ, पृ. 16
7. डॉ. ए. सी. बागचीस् बुक-नेपाल, भाषा नाटक, पृ. 172
8. हनुमन्नाटक, कविराम, प्रकाशक भारत जीवन, काशी, पृ. 427
9. जयशंकर प्रसाद, विशाख नाटक, प्रथम अंक प्रथम दृश्य

– विभागाध्यक्ष (हिंदी), वेदांता स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रींगस, सीकर, राजस्थान

❑❑❑

25

हिंदी निबंध एवं लेख

डॉ. विदुषी शर्मा

निबंध का अर्थ है बाँधना या अच्छी तरह से बँधा हुआ। किसी विषयवस्तु से संबंधित ज्ञान को क्रमबद्ध रूप से बाँधते हुए लिखना निबंध कहलाता है। दूसरे शब्दों में, किसी विषय पर अपने मानसिक भावों या विचारों को संक्षिप्त रूप से क्रमानुसार लिपिबद्ध करना या नियंत्रित ढंग से लिखना निबंध कहलाता है। निबंध को लेख, प्रबंध आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

विषय के अनुसार निबंध के चार प्रकार होते हैं-

वर्णनात्मक निबंध

किसी सजीव या निर्जीव पदार्थ के वर्णन को वर्णनात्मक निबंध कहते हैं। इस प्रकार के निबंध किसी व्यक्ति, वस्तु, ऐतिहासिक स्थान, परिस्थिति, दृश्य, पर्यटन स्थल आदि को आधार बनाकर लिखे जाते हैं। जैसे राम, होली, दीपावली, ताजमहल, चारमीनार, ओलंपिक खेल आदि पर लिखे गए निबंध वर्णनात्मक निबंध कहलाते हैं। इस प्रकार के निबंधों में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करना अति आवश्यक होता है।

विवरणात्मक निबंध

किसी ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक या आकस्मिक घटनाओं, संस्मरण, यात्राओं, उत्सवों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, त्योहारों और व्यक्तियों का परिचयात्मक विवरण करना विवरणात्मक निबंध कहलाता है जैसे- रेल यात्रा, मेला, वर्षा ऋतु, फुटबॉल मैच, संस्मरण, विद्यालय का वार्षिकोत्सव आदि का विवरण। इस प्रकार के निबंधों में किसी भी रीति-रिवाजों परंपराओं और त्योहारों इत्यादि को मनाने के पीछे के इतिहास की जानकारी भी प्रदान की जाती है जिससे ये निबंध शोध से भी संबंधित हो सकते हैं।

विचारात्मक निबंध

किसी विचार, गुण, समस्या, दोष, मनोभाव, धर्म, आध्यात्मिक विषय, दर्शन, शिक्षा, ज्ञान, समसामयिक घटना, सामाजिक जीवन से संबंधित कोई समस्या आदि के विषय में परिचयात्मक, व्याख्यात्मक लेखन विचारात्मक निबंध कहलाता है। इस प्रकार के निबंध में बुद्धित्व की प्रधानता होती है और इनमें लेखक के मनन, चिंतन, अध्ययन, धारणाओं और मान्यताओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है। जैसे मित्रता, दहेज प्रथा, नारी सशक्तिकरण, दूरदर्शन और शिक्षा, विज्ञान के लाभ और हानि आदि। इस प्रकार के निबंधों में निबंधकार की शिक्षा, ज्ञान, अनुभव, दूरदृष्टि, विषय पर पकड़, गत्यात्मकता इत्यादि का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। निबंधकार उतना अधिक शिक्षित, अनुभवी, संवेदनशील, क्रियाशील और सक्रिय होगा समाज के प्रति उसका दृष्टिकोण जितना सकारात्मक होगा वह इस प्रकार के निबंधों को रुचिपरक, ज्ञानवर्धक बना सकता है।

भावनात्मक निबंध

जब किसी लेखन में किसी आकस्मिक घटना

विशेष, भाव विशेष के आधार पर हृदय में उत्पन्न होने वाले भावों और रागों, संवेदनाओं, रुचियों आदि को दर्शाया जाए तो उसे भावनात्मक निबंध कहते हैं। इस प्रकार के निबंध में भाव की प्रधानता होती है। इस प्रकार के निबंध कवित्वपूर्ण और प्रवाहमय प्रतीत होते हैं। जैसे पतित पावनी माँ गंगा, जननी जन्मभूमि, जहाँ सुमति वहाँ संपत्ति नाना, परोपकार, देशप्रेम, सदाचार, राष्ट्रभाषा आदि।

प्रस्तुत विवरण निबंध की जानकारी प्रदान करता है। परंतु सामान्यता इस प्रकार की जानकारी स्कूली जीवन और महाविद्यालय जीवन तक सीमित हो सकती है क्योंकि वहाँ पर इस प्रकार निबंधों को वर्गीकृत किया जाता है। जब हम साहित्य के क्षेत्र में आते हैं तो अधिकतर भावनात्मक निबंध ही प्रस्तुत किए जाते हैं जिनकी विषय वस्तु अधिकतर साहित्य से संबंधित, किसी साहित्यकार से संबंधित, उसकी किसी विधा से संबंधित या समसामयिक विषयों से संबंधित होती है। निबंधों पर बात करने के बाद अब हम बात करते हैं लेख की या आलेख की।

लेख का अर्थ

लेख साहित्य की एक मूलभूत विधा है जिसमें हम किसी भी विषय को विस्तार से लिखते हैं। इसके तीन भाग... आदि, अंत और मध्य होते हैं। अनेक अनुच्छेदों में विषय को विभाजित किया जाता है और विषय से संबंधित जानकारी (क्या, कब, क्यों, और कैसे) करे रोचक तरीके से समझाने का प्रयत्न किया जाता है। लेख केवल रचनात्मक साहित्य भी हो सकता है और सूचनात्मक साहित्य भी। विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान और कला के विषयों पर भी लेख लिखे जा सकते हैं। ये सूचनात्मक होते हैं अर्थात् इनमें विषयों से संबंधित विभिन्न प्रकार की तथ्यात्मक एवं सारगर्भित सूचनाएँ होती हैं। रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत अनेक प्रकार के लेख आते हैं जिनमें मौलिकता, रोचकता, जानकारी और रचनात्मक सौष्ठव के साथ-साथ अनुसंधान, (शोध) का भी मिलाजुला प्रभाव होता है। ऐसे लेख साहित्य की श्रेणी में आते हैं।

कभी-कभी लेख शब्द का प्रयोग किसी दूसरे शब्द के साथ किया जाता है, तब इसका अर्थ बदल भी सकता है जैसे शीर्ष लेख या पाद लेख। इन शब्दों का प्रयोग किसी पन्ने पर ऊपर या नीचे टिप्पणी, पृष्ठ संख्या या अन्य जानकारी लिखने के लिए होता है। सुलेख शब्द का प्रयोग हाथ से लिखे गए सुंदर अक्षरों के लिए होता है। इसी प्रकार आलेख शब्द का प्रयोग पत्र या छोटे लेख के लिए भी होता है और श्रुतलेख का प्रयोग सुनकर लिखे गए लेख के लिए किया जाता है। पहले स्कूलों में तख्ती के प्रयोग में श्रुतलेख का ही अनुसरण किया जाता था।

निबंध और लेख दो शब्द हैं जो अक्सर उनके अर्थों में भ्रम के कारण समान होने का भ्रम पैदा करते हैं। जबकि इन दोनों शब्दों के बीच मतभेद है, लेख छोटा और किसी विशेष सूचना का एक वर्णनात्मक शब्द संग्रह है।

दूसरी ओर, निबंध एक घटना या एक अवधारणा या ऐतिहासिक घटनाओं का एक लंबा व चरणबद्ध शब्द संग्रह है। जैसे कि निबंध यानि निर्बंध होकर या स्वतंत्र होकर लिखने को कहा जाता है। यह लेख और निबंध के बीच मुख्य अंतर है।

निबंध को स्कूल या कॉलेज के शिक्षण के महत्वपूर्ण भाग के रूप में विस्तृत रूप में लिखा जाता है। दूसरी ओर, लेख एक सामग्री लेखन के रूप में लिखा जाता है। लेख समसामयिक विषयों पर, घटनाओं पर, किसी विषय के अनुसंधान पर, व्यक्ति विशेष पर, किसी साहित्यकार के जीवन पर, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी हो सकता है। किम बहुना लेख वर्तमान समय में प्रचलित सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है जो विभिन्न प्रकार के साहित्यकारों, लेखकों या मीडियाकर्मियों के द्वारा अपनाई जाती है। लेखों का लेखन परिस्थिति के अनुसार, बाजार माँग के अनुसार भी किया जाता है आलेख आमतौर पर कम या अल्प विस्तृत होते हैं, जो 1500 शब्दों तक होते हैं दूसरी ओर, निबंध बहुत लंबे और वर्णनात्मक होते हैं जो आमतौर पर 3000 शब्दों तक लिखे जाते हैं। लेख और निबंध के बीच एक और महत्वपूर्ण अंतर यह है कि निबंध में विभिन्न लेखकों और विशेषज्ञों के विचार या कथन शामिल होते हैं। दूसरी ओर, एक लेख में आमतौर पर विशेषज्ञों और लेखकों के उद्धरण नहीं होते हैं। एवं यह मूल रूप से सारगर्भित सामग्री लेखन है। एक निबंध आमतौर पर अपने समापन के

साथ एक निष्कर्ष देता है तो दूसरी तरफ, एक लेख के अंत में कोई निष्कर्ष नहीं होता है।

निबंध और लेख की पृष्ठभूमि में अंतर

निबंध ऐतिहासिक घटनाओं, पौराणिक और ऐतिहासिक पात्रों, वैज्ञानिक प्रयोगों, महान जीवन, विशिष्ट व्यक्ति, महान व्यक्तित्व, इतिहासकार, संगीतकार, कलाकार और उनकी जीवनियों पर भी लिखे गए हैं। दूसरी ओर, लेख आमतौर पर विभिन्न प्रकार के व्यवसायों, प्रचलित विषयों पर लिखा जाता है, जैसे कि व्यापार वजन घटाने, स्वास्थ्य, यात्रा, तकनीक, पुस्तक समीक्षा, उत्पाद की समीक्षा, अध्यात्म, शिक्षा, दर्शन, पर्यटन, शोध, सामाजिक जीवन, समसामयिक घटनाएँ आदि। आलेख एक पेशे से जुड़ा है जैसे ब्लॉगर, लेखक, पत्रकार आदि से संबंधित जबकि निबंध लेखन स्कूल शिक्षण, एवं पाठ्यक्रम में शामिल होता है।

निबंध और लेख पर विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के बाद अब हम वर्ष 2019 में प्रकाशित निबंधों और लेखकों के विस्तृत विवरण पर आते हैं। यहाँ मैं अग्रिम क्षमा याचना करना चाहूँगी क्योंकि हर चीज की एक सीमा होती है। यदि किसी महत्वपूर्ण निबंध या लेख को मैं किसी भी कारणवश प्रस्तुत आलेख में सम्मिलित नहीं कर पाई हूँ या उसकी जानकारी मुझ तक किसी भी माध्यम से पहुँचना संभव नहीं हो पाया है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह आलेख या निबंध किसी भी दृष्टि से कम महत्वपूर्ण है। इसी के साथ मैं यह भी स्पष्ट करना चाहती हूँ कि इसका यह आशय कदापि नहीं है कि संक्षेप में चर्चित या उल्लिखित निबंध या लेख ही महत्वपूर्ण, प्रामाणिक, पठनीय, संग्रहणीय अथवा प्रशंसनीय या चर्चा के योग्य हैं। इन सभी ने यथा साध्य हिंदी वांङ्मय की धारा को निरंतरता, गति और शक्ति प्रदान करने में अपना यथासंभव योगदान प्रदान किया है जिसका अभिवादन में करबद्ध रूप से करती हूँ। इसीलिए जिन निबंध या आलेखों का वर्णन प्रस्तुत आलेख में नहीं हो पाया है इससे यह सिद्ध नहीं होता कि वह साहित्य का हिस्सा नहीं है या उनकी महत्ता कम है।

निबंध सर्वेक्षण

निबंधों की शृखंला में सबसे पहले हम जिस संस्था की बात करते हैं वह है 'नेशनल बुक ट्रस्ट' या राष्ट्रीय पुस्तक न्यास। यह भारत की सबसे बड़ी संस्था है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा के अधीन एक शीर्ष निकाय है जो लगभग 62 वर्षों से पुस्तक प्रकाशन व ज्ञान के प्रसार के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय है। अभी तक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अधीन 32 भाषाओं में लगभग 17000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है जिसमें मूल पुनर्मुद्रण, भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी में अनुवाद शामिल हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित निबंधों की शृंखला में जिन निबंधों की बात कर रहे हैं वह कालजयी हैं, सर्वकालिक हैं। एवं समय-समय पर इनका पुनर्मुद्रण होता रहता है जो कि पाठकों की माँग पर भी निर्धारित होता है। सबसे पहले जिस निबंध की बात हम कर रहे हैं वह है 'काली माटी के आंचल से' तमिल भाषा से अनूदित इस पुस्तक में तमिलनाडु के ग्राम्य अंचल की जनता के जीवन की समस्याएँ, उसके आचार-विचार, रहन-सहन आदि के दृश्य चित्रित हुए हैं। ग्रामीण अंचल की सुगंध से सुवासित इन निबंधों में लेखक के ग्राम्य संबंध भी दिखाई देते हैं। इसके अनुवादक बालासुब्रमण्यम जी है। तमिलनाडु के ग्रामीण परिवेश के दर्शन लेखक के द्वारा बहुत ही सुंदर तरीके के शब्द चित्र से सुसज्जित कर प्रस्तुत किए गए हैं। इसके बाद 'आबे हयात' नामक निबंध संग्रह आता है जो उर्दू भाषा साहित्य के उद्भव से लेकर सन् 1880 तक का प्रामाणिक इतिहास जो उर्दू अदब की धरोहर है पर प्रकाश डालता है। मूल रूप से यह मोहम्मद हुसैन आजाद द्वारा लिखित कृति है जिसका अनुवाद जाफर रजा द्वारा किया गया है। इसी शृंखला में 'गति और रेखा' नामक यह संचयन हिंदी की उस विधा की ओर संकेत करता है जो ललित निबंध के रूप में जानी जाती है। इसमें संकलित निबंधों के रचनाकार हैं- प्रेमघन, अनाम, बनारसीदास चतुर्वेदी, राय कृष्णदास, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, रघुवीर सहाय, अज्ञेय, रघुवंश, विद्यानिवास मिश्र और कृष्ण नाथ। यह पुस्तक विद्यानिवास मिश्र द्वारा संपादित की गई है। 'गुजराती ललित निबंध' जो प्रवीण जी द्वारा संपादित की गई है और जिसका अनुवाद गोपालदास नागर

द्वारा किया गया है। गुजराती ललित निबंध के क्रमिक विकास एवं वर्तमान स्वरूप को चिह्नित करता यह श्रेष्ठ ललित निबंधों का संग्रह जहाँ अपने वजूद के साथ साहित्य भी है और समाज भी, एक अनोखी मिसाल है और अपने आप में साहित्य और समाज दोनों का अनूठा संगम भी।

'डबरे पर सूरज का बिंब' (मुक्तिबोध की गद्य रचनाएँ) चंद्रकांत देवताले द्वारा संपादित निबंध संग्रह को स्वतंत्रता काल के हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि एवं चिंतक गजानन माधव मुक्तिबोध के चुने हुए निबंधों से सजाया गया है जिसमें जीवन से संबंधित उतार-चढ़ाव, जीवन से संबंधित अनेक परिस्थितियाँ, सुख-दुख, लाभ हानि, जय-पराजय इत्यादि का बहुत ही सुंदर एवं मार्मिक वर्णन किया गया है। मुक्तिबोध अपने आप में ही बहुत प्रसिद्ध साहित्यकार माने गए हैं जिनकी रचनाओं में यथार्थ वर्णन बहुत ही प्रभावशाली रूप से चित्रित किया जाता है, यह निबंध संकलन इस बात का श्रेष्ठ प्रमाण है। इसके बाद 'देवीशंकर अवस्थी : संकलित निबंध' नामक जिसे मुरली मनोहर प्रसाद द्वारा संपादित किया गया है हिंदी के श्रेष्ठ आलोचक देवीशंकर अवस्थी के चुने हुए निबंधों का संकलन है जिसमें प्रत्येक रंग का दर्शन कराया गया है।

इसके उपरांत 'रामधारी सिंह दिनकर : संकलित निबंध' जो वीरश कुमार द्वारा संपादित है। इसमें राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के श्रेष्ठ निबंधों का संकलन है। ध्यातव्य है कि रामधारी सिंह 'दिनकर' (23 सिंतबर 1908-24 अप्रैल 1974) हिंदी के प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित हैं। उन्हें 'पद्य विभूषण' की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' तथा 'उर्वशी' के लिए 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया।

इसके पश्चात् 'भारत की पहचान' गिरिश्वर मिश्र द्वारा संपादित इस निबंध संग्रह में भारत राष्ट्र, भारतीय मूल्य और परंपराएँ, भारत की सभ्यता संस्कृति तथा भारत के लोक एवं धर्म के संबंध में मूर्धन्य विचारक, लेखक विद्यानिवास मिश्र के विचार आज भी बेहद प्रासंगिक है। विद्वान लेखक गिरीश्वर मिश्र द्वारा उनके ऐसे ही 31 लेखों का संचयन भारत की पहचान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भारत दर्शन के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है एवं इस पुस्तक की विशेषता यह है कि जो विदेशी लोग भारत के बारे में अनभिज्ञ है, उसकी सभ्यता एवं संस्कृति, उसके स्वर्णिम इतिहास के बारे में अनभिज्ञ हैं वह इस पुस्तक के माध्यम से दूर बैठे ही भारतीय सभ्यता एवं संपूर्ण भारतीयता के उत्कृष्ट दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

इसी के साथ समसामयिक साहित्य के अंतर्गत कृष्ण दत्त पालीवाल के 'प्रतिनिधि निबंध' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसके संपादक कृष्ण दत्त पालीवाल जी हैं। इसके बाद तरुण भारती शीर्षक के अंतर्गत 'क्रिकेट विज्ञान' लेखक धर्मेंद्र पंत, 'प्रेरणा प्रदीप' लेखक आचार्य महेश चंद्र शर्मा, 'हौसलों को उड़ने दो', लेखक बालेंदु शर्मा दाधीच, 'हमारी माँ तुम्हारी माँ' लेखक रामकुमार कृषक इसमें सम्मिलित हैं।

सतत शिक्षा के अंतर्गत 'हरियाली बढ़ाते लाख के कीड़े' रीति थापर कपूर द्वारा लिखित निबंध महत्वपूर्ण है।

इसके बाद कुछ महत्वूपर्ण प्रकाशन समूह की बात करते हैं। इस शृंखला में राजकमल प्रकाशन समूह, दरिया गंज, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित 'श्रेष्ठ ललित निबंध भाग 1 एवं 2' संपादक कृष्ण बिहारी मिश्र, 'कब्रिस्तान में पंचायत' लेखक केदारनाथ सिंह, 'नई गुलिस्ता भाग-1 एवं भाग-2' लेखक कैफी आज़मी, 'साहित्यिक निबंध' लेखक गणपति चंद्रगुप्त', 'लौट आओ धार' लेखक दूधनाथ सिंह, 'यह हमारा समय है' लेखक नंद चतुर्वेदी, 'स्कोलोरिस की छाँव में' लेखक पुरुषोत्तम अग्रवाल आदि।

इसके अतिरिक्त प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा लिखित निबंध भी समय-समय पर पुनर्प्रकाशित होते रहते हैं जिसमें रामधारी सिंह दिनकर, यशपाल, महादेवी वर्मा, मनोहर श्याम जोशी, प्रेमचंद इत्यादि प्रमुख हैं।

निबंधों की इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए डॉ. विजय कुमार वेदालंकार और डॉ. अर्चना आर्य के संयुक्त संपादन में 'वाग्देवी प्रकाशन, सोनीपत' द्वारा प्रकाशित 'हमारे आलोक-स्तंभ' 48 निबंधों

का संग्रह है जिसमें भारत के महान व्यक्तियों के परिचय एवं उनकी विशिष्टता के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इस पुस्तक का आरंभ 'जगतगुरु शंकराचार्य' के निबंध से होता है। इसके बाद क्रमानुसार 'गौतम बुद्ध', 'संत कवि कबीर दास', 'गुरु नानक देव', 'संत ज्ञानेश्वर' आदि यानी निबंध संग्रह का आरंभ भक्ति धारा के साथ किया गया है। इसी के साथ-साथ जिन्होंने विज्ञान, तकनीकी और कला में अपना तथा भारत का नाम पूरी दुनिया में रोशन किया है उनके बारे में भी निबंध प्रस्तुत किए गए हैं जैसे महान वैज्ञानिक 'बीरबल साहनी', महान दार्शनिक 'डॉ. राधाकृष्णन', क्रांतिकारी बाबू 'शिवप्रसाद गुप्त', करुणामयी माँ 'मदर टेरेसा' इत्यादि। कुल मिलाकर यह गागर में सागर की तरह एक निबध संग्रह है जो भारत के स्वर्णिम इतिहास को उजागर करने में सक्षम है।

इसी शृंखला को गति प्रदान करते हुए संवदिया प्रकाशन, अररिया, बिहार से प्रकाशित होने वाली रचनात्मक साहित्यिक पत्रिका 'संवदिया' में प्रकाशित 'घोंसला', सुशांत सुप्रिया द्वारा लिखित एक मार्मिक निबंध है। 'एक औरत की डायरी में' की लेखिका उमा झुनझुनवाला ने एक औरत के मन में उठने वाली भावनाओं को बहुत ही सुंदर तरीके से व्यक्त किया है। 'गुत्थी', जहीर कुरैशी द्वारा लिखित महत्वपूर्ण निबंध कहे जा सकते हैं।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अभिक्रम के अनुसार 'हिंदी समय' यूजीसी जनरल में प्रकाशित आनंद वर्धन द्वारा लिखित निबंध 'श्मशान में कविता' एक अलग ही प्रकार का निबंध कहा जा सकता है। इसके बाद 'मनुष्य मत बनाना' इस निबंध में आनंद वर्धन ने वर्तमान में मनुष्य द्वारा अपनाए गए विभिन्न प्रकार के अनैतिक कार्यों के प्रति रोष प्रकट करते हुए यह कहा है कि मनुष्य मत बनना। उसके बाद 'लंगड़ साव की जलेबी' निबंध में अलग ही तरह की विषय वस्तु प्रस्तुत की गई है।

जब लेखों की शृंखला में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित कृतियों पर दृष्टिपात करते हैं। इनमें 'अनोखी यायावरी' महेश चंद्र द्विवेदी द्वारा लिखित है। इसके बाद आकाशवाणी साहित्य संपदा भाग 1, भाग 2 और भाग 3 जो शशि शेखर पीएम (प्रधान संपादक) और संपादक फैयाज शहरयार, अशोक त्रिपाठी (अतिथि संपादक) के संपादकत्व में प्रकाशित हुए है।। इसके बाद 'देखा समझा देश-बिदेस' प्रताप सहगल, 'पारावार के पार' गोप बंधु मिश्र, 'भारत की पहचान', गिरीश्वर मिश्र द्वारा संपादित लेख संग्रह है जो आदान-प्रदान अंतरभारतीय पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित हुई है। इसी के साथ 'भारत: देश और लोग भारत में जनसंख्या स्थितिकरण की तलाश' आशीष बोस द्वारा लिखित तथा अनुवाद हरिशंकर राठी, 'भारत में जल परिवहन' अरविंद कुमार सिंह द्वारा लिखित बहुत ही प्रासंगिक लेख है। 'हमारा संविधान: भाव एवं लेखांकन' लक्ष्मीनारायण भाला (लक्खी दा) द्वारा लिखित कुछ महत्वपूर्ण आलेख हैं। इसी के साथ-साथ लोक संस्कृति और साहित्य नामक शीर्षक के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण लेख भी पठनीय है जिनमें 'बंगाल की लोक संस्कृति के विविध आयाम', महिपाल सिंह राठौर, 'सहरिया आदिवासी : जीवन और संस्कृति' प्रमोद भार्गव द्वारा लिखित मुख्य लेख हैं।

लेखों की शृंखला में राजकमल प्रकाशन समूह, दरिया गंज, नई दिल्ली के प्रकाशन में 'रूसी संस्कृति: उद्भव और विकास' कमलेश द्वारा लिखित लेख है। 'अहिंसा और संस्कृति: आधार और आयाम' लेखक नंदकिशोर आचार्य, 'भारत का स्वराज्य और महात्मा गांधी' लेखक बनवारी, 'अस्तित्व की खोज' रेखा मोदी द्वारा संपादित, 'महिला सशक्तिकरण : दशा और दिशा' लेखक योगेंद्र शर्मा, 'तीन तलाक की मीमांसा' लेखक अनूप बरन पाल द्वारा लिखित बहुत ही समसामयिक लेख हैं क्योंकि जब तीन तलाक का बिल पास हुआ उसके बाद समाज में बहुत तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त की गई उसी से संबंधित यह महत्वपूर्ण आलेख है। 'लहज़ा' लेखिका रोहिणी भाटे द्वारा लिखित एक प्रासंगिक विषय पर आधारित लेख है। इसके बाद 'संचार का मूल सिद्धांत' ओमप्रकाश सिंह द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण लेख है।

इसके बाद अखिल भारतीय साहित्य परिषद नई दिल्ली द्वारा एक महत्वपूर्ण लेख संग्रह 'अखिल भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता आंदोलन' जिसकी लेखिका डॉ. उषा श्रीवास्तव है एक महत्वपूर्ण लेख संग्रह है

जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन के चित्र को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें आलेख संग्रह में जिन विभिन्न लेखकों के आलेखों को सम्मिलित किया गया हैं उन सभी ने अपने-अपने दृष्टिकोण से इसके बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इस तरह यह पुस्तक एक इंद्रधनुष की भांति बन गई है।

वर्तमान में साहित्य जगत में लेख संग्रह अत्यधिक मात्रा में प्रकाशित हो रहे हैं उनमें भी शोध आलेखों की संख्या बहुत अधिक है जिनका संपूर्ण विवरण प्रस्तुत करना असंभव है क्योंकि शोध क्षेत्र में नित नए शोधकर्ता नए-नए शोध विषयों पर अपने-अपने शोध पत्र प्रस्तुत करते हैं। वह भी शोध आलेख की श्रेणी में आते हैं उसके बाद इन्हीं शोध आलेखों को एक संग्रह के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है और इसकी एवज में उन शोधार्थियों से सहयोग राशि भी ली जाती है यह एक बहुत बड़ा व्यापार बन चुका है। इसी के साथ बहुत से समाचार पत्र पत्रिकाओं में भी समसामयिक विषयों पर बहुत से आलेख प्रकाशित होते रहते हैं जो न केवल प्रासंगिक होते हैं अपितु संग्रहणीय भी होते हैं।

इसी श्रृंखला को गति प्रदान करते हुए संवदिया प्रकाशन, अररिया, बिहार से प्रकाशित होने वाली रचनात्मक साहित्यिक पत्रिका 'संवदिया' में प्रकाशित' स्मृति पाठ समकालीन कहानियाँ', डॉ. संजय प्रतीक्षा/ डॉ. मोहन तिवारी आनंद, कुमार सिंह द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण आलेख कहा जा सकता है। 'समकालीन हिंदी यथार्थ और उत्तर आधुनिकता का सदर्भ' डॉ. अरुण कुमार तिवारी द्वारा लिखित यह आलेख हिंदी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अभिक्रम के अनुसार 'हिंदी समय' यूजीसी जनरल में प्रकाशित देश-प्रदेश के अंतर्गत डॉ. राजीव रंजन राय द्वारा लिखित लेख 'गिरमिटिया अनुभव एवं सांस्कृतिक लोक मानस' प्रवासी भारतीयों के जीवन से संबंधित है। इसके बाद परंपरा के अंतर्गत मृत्युंजय द्वारा लिखित लेख 'रामचंद्र शुक्ल' : नवजागरण और राष्ट्र' हिंदी साहित्य जगत के महत्वपूर्ण स्तंभ रामचंद्र शुक्ल को आधार बनाकर लिखा गया है। जो हिंदी से संबंध रखने वाले हिंदी से प्रेम करने वालों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण लेख है इसके अतिरिक्त 'मानव ही मानव की तीसरी आँख है' विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा लिखित एक संवेदनशील लेख है। श्रीमती अर्चना वार्ष्णेय द्वारा लिखित 'प्रेम विवाह: उचित या अनुचित, 'वार्ष्णेय दर्शन' (मासिक पत्रिका) वैवाहिक विशेषांक, दिसंबर (प्रकाशित-वार्ष्णेय समाज चंदौसी) एक वैचारिक रचना है। डॉ. रामकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित 'जीवन की प्रणम्य कसौटी : आंजनेय जयते' ओजस प्रवाह (आध्यात्मिक मासिक पत्रिका) इसके साथ डॉ. श्रीकांत शर्मा के (ब्लॉग वार्ता) शिक्षक के लिए जरूरी है शिक्षण का मनोवैज्ञानिक ढंग, 'स्वदेश' दैनिक समाचार पत्र, इंदौर, 2019 तथा देश के लिए निजीकरण एक बाध्यता या जरूरत, 'स्वदेश' दैनिक समाचार पत्र, इंदौर, बुधवार 30 अक्तूबर 2019 कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण कहे जा सकते हैं। जैसा कि हमने पहले भी कहा है की वर्तमान में शोध आलेखों पर बहुत काम किया जा रहा है उन सभी सम्मिलित करना संभव नहीं है। इसीलिए यहाँ पर इनका समापन मैं कादंबरी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित लेख संग्रह जो हिंदी भाषा के संवर्धन, संरक्षण और प्रचार-प्रसार में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है का जिक्र करना चाहती हूँ जिसका विमोचन केंद्रीय हिंदी निदेशालय के अध्यक्ष महोदय प्रोफेसर अवनीश कुमार जी के कर कमलों द्वारा विश्व पुस्तक मेले जनवरी 2020 में प्रगति मैदान में संपन्न हुआ था। 'राजभाषा' हिंदी : विविध विमर्श', 'राजभाषा हिंदी : विविध परिप्रेक्ष्य' संपादन डॉ. विदुषी शर्मा। हिंदी भाषियों एवं, हिंदी प्रेमियों के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण लेख संग्रह हो सकते हैं।

निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य जगत में लगभग सभी विधाओं में बहुत सी सामग्री प्रकाशित होती रहती है इनकी जानकारी हमें समय-समय पर सोशल मीडिया और समाचार पत्र-पत्रिकाओं से प्राप्त होती रहती है यही वर्तमान समय की माँग है कि हम समय के साथ चलते हुए इन सभी पर आवश्यक दृष्टिपात करते रहें।

– एल-108, कृषि नगर, रानी बाग, दिल्ली-110034

❑❑❑

26

हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य

डॉ. सी. जय शंकर बाबु

मानव का व्यष्टि से समष्टि तक के विकास के साथ ही धीरे-धीरे समाज में सूचना-प्रसार के लिए जनसंचार प्रणालियों का विकास हुआ। जनसंचार के विकास के क्रम में पत्रकारिता का विकास एक सबसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। पराधीनता के युग में पत्रकारिता का जो उद्‌गम हुआ, वह स्वाधीनता की चेतना से भरपूर होने के साथ-साथ अभिव्यक्ति स्वाधीनता का प्रबल साधन भी साबित हुआ। भारत की स्वाधीनता में पत्रकारिता ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। ऐसी ऐतिहासिक महत्व की भारतीय पत्रकारिता की ढाई सदियाँ शीघ्र ही पूरी होने वाली हैं। आगामी 2030 में भारतीय पत्रकारिता के 250 वर्षों का उत्सव हम मनाएंगे। हिंदी पत्रकारिता भी द्‌वैशताब्दी की बिंदु पर पहुँच रही है और आगामी 2025 से हम हिंदी पत्रकारिता द्‌वैशताब्दी उत्सव शुरू कर सकते हैं। 'उदंत मार्तंड' से लेकर आज तक दो सदियों में हिंदी पत्रकारिता ने कई पड़ाव पार किए हैं। हिंदी पत्रकारिता के गौरवपूर्ण इतिहास के बावजूद 21वीं सदी तक पहुँचते हुए पत्रकारिता पर कई दाग लग रहे हैं, ऐसे में हिंदी पत्रकारिता अपवाद बनकर नहीं रह गई है।

पत्रकारिता की परंपरा, इतिहास आदि पर केंद्रित पुस्तकें पढ़ने से हमें यह जानने का अवसर मिलता है कि भारत में पत्रकारिता के साथ एक मिशन की भावना जुड़ी हुई थी। ऐसी पुस्तकों में अतीत के पत्रकारों के त्याग, तपस्या, वीरता के बारे में भी पढ़ते हुए सहज ही पाठकों के मन में उनके प्रति श्रद्‌धा जागृत हो जाती है। ऐसी पुस्तकों के अध्ययन से निश्चय ही ऐसी धारणा मन में कायम होगी कि पत्रकारिता एक पवित्र सेवा-कार्य है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने पत्रकारिता को एक 'सेवा' के रूप में ही परिभाषित किया था।

लोकतंत्र के पक्षधर व पत्रकारिता के प्रशंसक पत्रकारिता को लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मानते हैं और उसके पक्ष में कई दलीलें पेश करते हैं। राजतंत्र को अभिव्यक्ति के अधिकार के वंचक के रूप में तथा लोकतंत्र को अभिव्यक्ति की आज़ादी के पोषक के रूप में देखने की नज़र भी इन्हीं दलीलों के बीच उपस्थित हो जाती है।

भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति की आज़ादी व लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली के लिए उपलब्ध प्रावधानों के आधार पर पत्रकारिता सचेत व सक्रिय भूमिका निभा रही है। लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका एक प्रहरी की भूमिका है और इस भूमिका की बड़ी प्रासंगिकता है। भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति के अधिकारों की प्रतिष्ठा के क्रम में समय-समय पर

माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा पत्रकारिता को (नए अर्थों में मीडिया को) अपनी आज़ादी से वंचित करने के प्रयासों को निरस्त करने और संवैधनिक मूल्यों को लगातार बचाने संबंधी प्रयासों से लोकतंत्र में मीडिया के भविष्य को लेकर हम आश्वस्त हो पाते हैं। मीडिया की आज़ादी और मीडिया की पक्षधरता, मीडिया की कुछ निरर्थक और स्वार्थी चालें, मीडिया का बदलता चरित्र आदि आज चर्चा, आलोचना और विमर्श के विषय बन गए हैं। ऐसी चर्चा, आलोचना व विमर्शों के क्रम में कई पुस्तकें हिंदी में भी लगातार हर वर्ष प्रकाशित हो रही हैं।

पहले जो अच्छा लिख सकता था और सेवा व साहस भावना रखता था, वह पत्रकार बन जाता था। मगर आजकल जैसे कि हर क्षेत्र के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम विकसित हुए हैं, मीडिया के लिए भी पेशेवर व कुशल कर्मियों को तैयार करने, प्रशिक्षित करने हेतु कई पाठ्यक्रमों का विकास हो चुका है और कई संस्थाएँ विकसित हुई हैं। परंपरागत कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में भी पत्रकारिता, मीडिया, जनसंचार संबंधी कई तरह के पाठ्यक्रमों का विकास हो चुका है। मीडिया प्रतिष्ठानों, संगठनों के अपने प्रशिक्षण विद्यालय भी हैं। जनसंचार एवं पत्रकारिता संबंधी अलग संस्थानों, विश्वविद्यालयों की स्थापना भी हुई है। जनसंचार के साधनों का भी अभूतपूर्व विकास हुआ है। आज हर किसी व्यक्ति की मुट्ठी में इतना सशक्त व सक्षम साधन है, उसके माध्यम से पल भर में कोई भी सूचना समूची दुनिया से साझा की जा सकती है। ऐसे में स्पष्ट है कि पत्रकारिता से मीडिया तक के विकास में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विभिन्न साधनों के अलावा आज अंतर्जाल आधारित विश्वव्यापी जाल की वजह से डिजिटल व वेबमाध्यम अपनी-अपनी पूरी क्षमता के साथ उपस्थित हैं। इस मीडिया के लिए अपेक्षित साधन लगभग आधी से अधिक आबादी के पास हैं। आज हर पल कई रूपों में सूचनाओं रूपी अथाह सागर की सुनामी लहरें हर पल गर्जन करती नज़र आती हैं। सूचना प्रसारण की अभूतपूर्व प्रगति हुई है। इन तमाम अकादमीय प्रयासों में, शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तकों और संदर्भ ग्रंथों की भी बड़ी जरूरत होती है। शुरू में अंग्रेजी पुस्तकों पर निर्भर होना पड़ता था। विगत अर्धशती से हिंदी में भी जनसंचार, मीडिया के विविध आयामों पर केंद्रित कई कृतियाँ नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। कई कुशलताओं के प्रशिक्षण के लिए औपचारिक प्रयासों के क्रम में पुस्तकों का निरंतर प्रकाशन निश्चय ही आशाजनक उपलब्धि है। इसका श्रेय पत्रकारिता संबंधी चिंतकों, हितैषियों, पत्रकारों, लेखकों, शिक्षकों व अन्य उत्साहियों को जाता है, जो नियमित लेखन से इस ज्ञान क्षेत्र को विकसित करने की कोशिश करते रहे हैं।

आज विकसित विश्वरूपी मीडिया के इस विकास के पीछे पत्रकारिता तंत्र की भूमिका को हम नहीं भुला सकते हैं। वास्तव में इस विकास का मूलाधार एक तरफ पत्रकारिता व संचार के कौशल हैं तो दूसरी तरफ संचार प्रौद्योगिकियाँ भी अपनी भूमिका अदा कर रही हैं। भले ही संचार व्यवस्था व समाचार आदान-प्रदान कई रूप में विकसित होने के क्रम में अख़बारों का विकास हुआ हो, मगर अख़बारों के प्रकाशन से यदि हम मीडिया के विकास की यात्रा को समझने की कोशिश करेंगें, कई दिलचस्प बातें हमारे सामने आती हैं। वैसे आज के इस बाज़ारवादी उत्तर-उत्तराधुनिक युग में समाज, व्यक्ति, अख़बार के संबंध धीरे-धीरे खत्म होकर बाजार, उपभोक्ता (पाठक) के संबंधों के विकास के साथ पत्रकारिता व प्रेस से मीडिया तक का विकास हो गया। इस विकसित मीडिया की कई रूपों में आलोचना हम सुन रहे हैं और कई पुस्तकों में पढ़ रहे हैं। इस दौर में हम केवल मीडिया के रूप में प्रसार माध्यमों के विकास को ही नहीं देख पाएँगे, मगर आम आदमी से रिश्ता काटकर उपभोक्ता बाज़ार की वस्तु के रूप में तब्दील होते महसूस कर पाएँगे। सत्य और न्याय के साथ समन्वयात्मक जनपक्षधरता की जगह बाज़ार मूल्यों और बाज़ार की विभिन्न ताकतों की रीतियों व नीतियों की पक्षधरता से गलत जनमत विकसित कर स्वार्थी तत्वों के हितों के पोषण में अग्रणी भूमिका निभाने की आलोचना भी कई मीडिया संस्थानों के संदर्भ में विगत दशकों में हम देख-सुन-पढ़ चुके हैं। ऐसे पत्रकारों के रूप में मीडिया जगत में प्रवेश करने वाली नई पीढ़ी को सीखने और सिखाने के लिए क्या

रह गया है, यह सबसे बड़े सवाल के रूप में उभरकर सामने आता है। मीडिया की आलोचना में विडंबनात्मक स्थितियों की आलोचना के क्रम में चर्चा व विमर्श के साथ कई कृतियाँ भी सामने आ रही हैं। आजकल प्रकाशित कुछ पुस्तकों में अवश्य परंपरागत मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयास नजर आता है। मीडिया पर विमर्शपरक विश्लेषण के साथ प्रस्तुत कृतियों से नौसिखिया पत्रकारों, नवोदित व नावगत पत्रकारों, मीडिया के विद्यार्थियों, मीडिया कर्मियों को विवेकपूर्ण ढंग से आगे बढ़ने के लिए अपेक्षित मार्गदर्शन व मूल्यों की शिक्षा आदि पुस्तकों से मिल जाती है। मीडिया जगत का विस्तृत परिदृश्य, जिसमें अतीत और वर्तमान के मूल्यों को एक साथ देख पाने का मौका भी वर्तमान पीढ़ी को मिल जाता है। भविष्य के पत्रकारों के लिए 'किं कर्त्तव्य' प्रबोधन भी कई कृतियों में प्रत्यक्ष किया जाता है। पत्रकारिता, जनसंचार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, वेब माध्यम, डिजिटल माध्यमों आदि से संबंधित कई कृतियों का हिंदी में हर वर्ष प्रकाशन हिंदी में मीडिया शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए, विमर्श, शोध-अध्ययनों के लिए निश्चय ही उपयोगी व स्वागत योग्य है।

वैसे मीडिया की वर्तमान स्थिति पर विमर्श, समीक्षा, आलोचना, बहस, समर्थन, प्रतिरोध, इतिहास लेखन, शिक्षण-प्रशिक्षण आदि कई रूपों में जो आवाज़ें कृतियों में हम देख, सुन, पढ़ पा रहे हैं, ये सब प्रकाशन अनुभवी पत्रकारों व विद्वानों की कलमों से सृजित होने की वजह से कई दृष्टियों से इन्हें प्रामाणिक दस्तावेज़ों के रूप में मानने, इनका विश्लेषण करके उचित निर्णय, निष्कर्ष पर पहुँचाने में मददगार हो सकते हैं।

आलेख की रूपरेखा व सीमाएँ

वर्ष 2019 के दौरान प्रकाशित 'हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य' पर केंद्रित इस सर्वेक्षणात्मक आलेख के दायरे में हिंदी में प्रकाशित जनसंचार, पत्रकारिता, मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विषयक पुस्तकों के अलावा नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम विषय के दायरे में आने वाली पुस्तकों का आकलन शामिल है। आलेख का आकार, वस्तु विवेचन की सीमा को ध्यान में रखते हुए आलोच्य वर्ष के दौरान प्रकाशित सभी कृतियों की विस्तृत चर्चा या परिचय इसमें शामिल कर पाना संभव नहीं था; इसका कदापि यह आशय नहीं है कि संक्षेप में चर्चित या केवल नाम उल्लिखित पुस्तकें प्रामाणिक या चर्चा के योग्य नहीं हैं, उन सभी पुस्तकों का हिंदी वाङ्मय धारा को सुसमृद्ध बनाने में उल्लिखित योगदान है, इसमें दो राय नहीं हैं। इस आलेख की प्रस्तुति में प्रयुक्त वर्गीकरण भी सर्वेक्षण की सुविधा के लिए परिकल्पित वर्गीकरण है।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान मीडिया विषयक पत्रिकाओं के कुछ विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। अन्य पत्रिकाओं में भी मीडिया विषयक कुछ विशेष सामग्री प्रकाशित हुई है। मीडिया विषयक पत्रिकाओं में तथा कुछ अन्य पत्रिकाओं में संचार, पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नई मीडिया आदि के विभिन्न आयामों से संबंधित आलेख प्रकाशित हुए हैं, इनका सामान्य आकलन इस सर्वेक्षण में शामिल है। दैनिक अख़बारों में भी आमतौर पर मीडिया-चिंतन, विमर्श, विश्लेषण, नई प्रौद्योगिकी, नव माध्यमों से संबंधित आलेख समय-समय पर विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत प्रकाशित होते रहते हैं, इलेक्ट्रॉनिक व वेब माध्यमों में भी ऐसी चर्चाएँ-परिचर्चाएँ होती हैं, उनका आकलन या उल्लेख इस आलेख में शामिल नहीं है। कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी विषयक सामान्य व विशिष्ट विषय विवेचन की कई कृतियाँ अलग-अलग प्रयासों से प्रकाशित होती रहती हैं, उनकी चर्चा भी इस आलेख में शामिल नहीं है।

सर्वेक्षण की अवधि में प्रकाशित हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य

वर्ष 2019 हिंदी में पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकों का पर्याप्त संख्या में प्रकाशन हुआ है। विगत दो-चार वर्षों की तुलना में कम पुस्तकें ही प्रकाशित हुई हैं, गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टि से भी। हाँ, कुछ कृतियाँ स्तरीय ज़रूर हैं, मगर कुल मिलाकर वर्ष के दौरान प्रकाशित मीडिया की पुस्तकों में संख्यात्मक समृद्धता में कमी नज़र आती है, मगर गुणात्मक समृद्धता की दृष्टि से कई प्रकाशन उल्लेखनीय हैं। इस वर्ष हिंदी में पत्रकारिता, मीडिया, नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम से संबंधित लगभग चार दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इन कृतियों में मीडिया चिंतन, इतिहास, सैद्धांतिक और व्यावहारिक

विश्लेषण, तकनीकी कुशलताएँ, आलोचना, शिक्षण-प्रशिक्षण, पत्रकारिता-कोश, निर्देशिकाएँ, शोध, पत्रकारों के व्यक्तित्व-कृतित्व पर केंद्रित कृतियाँ, जीवनपरक, आत्मकथात्मक कृतियाँ आदि शामिल हैं। नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें हिंदी में इस वर्ष कम संख्या में प्रकाशित हुई हैं। मगर मीडिया संबंधी कतिपय कृतियों में प्रौद्योगिकी संबंधी चर्चा, मीडिया जगत पर प्रौद्योगिकी एवं उसके प्रभाव से विकसित नए तंत्रों तथा नई व्यवस्थाओं की चर्चा नज़र आती है। नई प्रौद्योगिकी एवं नव माध्यम पर हिंदी में स्तरीय पुस्तकों के प्रकाशन की बड़ी आवश्यकता है। इस दिशा में हिंदी में प्रकाशन के प्रयासों की अपेक्षा है।

सामयिक मीडिया विमर्श

मीडिया जगत का अभूतपूर्व विकास हुआ है आज सूचना तंत्रों के विकास के क्रम में मीडिया की अपार क्षमता है। मीडिया के परंपरागत मूल्यों, लक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में आज उसकी दिशा और दशा को लेकर कई दृष्टियों से विचार-मंथन बुद्धिजीवियों, चिंतकों, पत्रकारों और शैक्षिक जगत के दिग्गजों के बीच विमर्श का विषय बन चुका है। इस क्रम में कई आलेखों और पुस्तकों का नियमित प्रकाशन हो रहा है। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान मीडिया विमर्श विषयक सामयिक चिंतन की लगभग तीन-चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र पत्रकारिता के इतिहास की चेतना से ओतप्रोत लगभग आधा दर्जन पुस्तकें समय-समय पर लिख चुके हैं। उनकी पुस्तक 'हिंदी पत्रकारिता : आश्वस्ति और आशंका' इसी इतिहास व परंपरा की चेतना से सर्जित कृति है। भारतीय समाज की जागृति में पत्रकारिता की कई दृष्टियों से भूमिका रही है। कोलकाता से हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत लगभग दो सदियों पहले हुई थी। हिंदी पत्रकारिता के आविर्भाव से जातीय अस्मिता की जागृति में विशिष्ट भूमिका रही है। अत: पत्रकारिता की परंपरागत भूमिका आज गायब होती जा रही है इस बात को लेकर आलोचना और तर्क की बातें भी हम जो सुनते हैं, उन तमाम आलोचनाओं की दृष्टि से आज जो मीडिया विमर्श विकसित हुआ है, उसके एक पक्ष में जातीय अस्मिता की चेतना और उसके लिए अपेक्षित समर्पण निष्ठा का विवेचन भी महत्वपूर्ण है। हिंदी पत्रकारिता की परंपरा व अतीत के साथ जुड़ी जातीय अस्मिता की चेतना मीडिया विमर्श की दिशा में आस्वस्ति भर देने में इस कृति की उपादेयता सिद्ध होती है।

रवीश कुमार की पुस्तक 'बोलना ही है; लोकतंत्र, संस्कृति और राष्ट्र' में कई विमर्श हम देख सकते हैं। यह पुस्तक कई भाषाओं में प्रकाशित है। 'बोलना ही है' में उन्होंने लोकतंत्र, संस्कृति और राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में कई मुद्दों को उठाया है, जो उनकी दृष्टि में वर्तमान में प्रासंगिक हैं। जिन मुद्दों का इस पुस्तक में संस्पर्श है उनमें भीड़ का न्याय (मॉब लिंचिंग), लोगों को भीड़ न बनने का आग्रह, मीडिया की जिम्मेदारी व जवाबदेही, भारतीय शिक्षा व्यवस्था की स्थिति, बोलने की आज़ादी पर खतरे के बादल, सामाजिक माध्यमों का भरपूर दुरुपयोग, अल्पसंख्यकों की स्थिति, जाली खबरें (फेक न्यूज), फालतू व भटकावी मुद्दे, इश्क की चुनौतियाँ, निजता का अधिकार आदि। सामायिक मीडिया विमर्श में ये तमाम मुद्दें अहम् माने जाते है। लोकतंत्र, संस्कृति और राष्ट्र में जिनके लिए खतरे हैं, उनकी ओर पाठकों को इंगित करने का भरपूर व सोदाहरण प्रयास इस पुस्तक में नज़र आता है। ज्ञातव्य है कि रवीश कुमार 2019 के 'रेमन मैगसेसे' पुरस्कार से सम्मानित हैं।

समकालीन मीडिया विमर्श में मीडिया के विभिन्न रूपों में उसके स्वार्थी तत्वों की वजह से उसके बिगड़ते चरित्र को लेकर कड़ी आलोचना नज़र आती है। कहीं उसके वर्तमान स्वरूप के समर्थन का स्वर भी सुनने में आता है। बदलती दुनिया और बदलती परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हर व्यवस्था में परिवर्तन सहज है। मीडिया भी इसी रूप में परिवर्तित है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाज़ारीकरण आदि परिघटनाओं, नीतियों, परिस्थितियों की वजह से मीडिया का व्यावसायीकरण और उसके साथ तथाकथित कई अवगुणों के जुड़ जाने की आलोचना कई दृष्टियों से सार्थक व सामयिक भी लगती है। परंपरागत रूप से जो मूल्य हम पत्रकारिता में देख सकते थे, जो मिशन की भावना इसके साथ जुड़ी हुई थी, ये सब आज

गायब होकर व्यापारी दृष्टि और चाल से चलने वाली व्यवस्था रूपग्रहण करने की स्थितियों से बचाना ही इस विमर्श की मूल चेतना है। इस चेतना को पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं में अक्षरबद्ध करने जैसे स्वागत योग्य प्रयास हो रहे हैं। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान इस तरह मीडिया विमर्श को किसी हद तक संबल मिल पाया है। वैसे गंभीर, शोधपरक वैज्ञानिक विमर्श की आवश्यकता है। भविष्य में ऐसी कृतियों की आशा की जा सकती है।

प्रो. कमल दीक्षित की पुस्तक 'मूल्यानुगत मीडिया : संभावना और चुनौतियाँ' समकालीन मीडिया विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति है। मीडिया की मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता की संभावना और चुनौतियों पर विवेचन निश्चय ही वर्तमान दौर में जब मीडिया से मूल्यों के गायब होने का आरोप लगाया जा रहा है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका कहना है, "मीडिया ने अपने मूल्यों को दरकिनार किया है तथा मानवीय मूल्यों से भी उसके संबंध कमजोर हुए हैं। उसने भारतीय तथा जातीय संस्कृति को प्रभावित करते हुए पाश्चात्य तथा उपभोक्तावादी संस्कृति का विस्तार किया है। भाषा को लेकर भी प्रो. कमल दीक्षित की चिंता जाहिर है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव सभी आयामों पर नज़र आता है, भाषा भी इससे प्रभावित हुई है। आज के कई हिंदी अख़बार भाषिक दृष्टि से हिंदी में हिंदी के शब्दों की जगह अधिकांश अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं, उसको लेकर दीक्षित जी ने अपनी इस कृति में बड़ी चिंता जाहिर की है। पुस्तक में शामिल अपने 60 आलेखों के माध्यम से कई चिंताएँ जाहिर करते हुए प्रो. कमल ने यह आशा जताई है कि मीडिया में मूल्यों की पुन:स्थापना साकार हो।

मीडिया विषयक शिक्षण-प्रशिक्षण में उपयोगी कृतियाँ

मीडिया के निरंतर विकास और विस्तार के साथ मीडिया-क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित कुशल जनबल की आवश्यकता होती है। इसी दृष्टि से मीडिया के अलग-अलग रूपों, इकाइयों के लिए अपेक्षित पाठ्यक्रमों का विकास विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों-संगठनों में होने के साथ-साथ मीडिया प्रतिष्ठानों के अपने प्रशिक्षण केंद्रों का भी विकास हुआ है। पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, नव माध्यम, दृश्य संचार, विभिन्न माध्यमों से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों का स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध-उपाधियों के अलावा डिप्लोमों, स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों का संचालन भी हो रहा है। पत्रकारिता विषयक अलग से कई विश्वविद्यालय भी संस्थापित हैं। विभिन्न संस्थानों में शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यों के लिए कई पाठ्य-पुस्तकों, संदर्भ व सहायक ग्रंथों की अपेक्षा है। इस अपेक्षा की पूर्ति की दिशा में उपयोगी कई पुस्तकों का प्रकाशन हर वर्ष हो रहा है। पाठ्यक्रम में शामिल करने के उद्देश्यों से न लिखे जाने के बावजूद कई पुस्तकें पाठ्यक्रम के अनुरूप विषयों के साथ लिखी जाती हैं या छात्रोपयोगी शैली में लिखी जाती हैं। हिंदी में मीडिया शिक्षण-प्रशिक्षणपरक विषयक स्तरीय पुस्तकों की माँग हमेशा बढ़ रही है।

सर्वेक्षण वर्ष के दौरान शिक्षणोपयोगी कृतियाँ लगभग दो दर्ज़न प्रकाशित हुई हैं। सभी पुस्तकें इसी उद्देश्य से भले ही न लिखी गई हों, मगर उनकी वस्तु-सामग्री अकादमिक दृष्टि से छात्रोपयोगी भी है। ऐसी तमाम पुस्तकों के अवलोकन के पश्चात् उनमें वर्णित विषय-वस्तु के आधार पर वर्गीकरण में पत्रकारिता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जनसंचार, प्रसारण मीडिया, मासमीडिया, सोशल मीडिया, सिनेमा, फिल्म एवं रंगमंच, विज्ञापन जगत, मीडिया के लिए सामग्री उत्पादन एवं सृजन कौशल आदि वर्गों की पुस्तकों का संक्षेप में आकलन यहाँ प्रस्तुत है-

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विषयक कृतियों में पुष्पेंद्र वैद्य की पुस्तक 'द ट्रूथ बिहाइंड ऑन एयर' उल्लेखनीय है। भारत में टीवी माध्यम ने भले ही लगभग चार दशक पूरे किए हैं, मगर निजी टीवी चैनलों के संदर्भ में यह अवधि केवल ढाई दशक (पच्चीस साल) है। आज उपस्थित संचार माध्यमों को लेकर कई मीडिया आलोचक टीवी माध्यम की कड़ी आलोचना करते नज़र आते हैं। पुष्पेंद्र वैद्य ने अपनी पुस्तक 'द ट्रूथ बिहाइंड ऑन एयर' (टीवी के रूपहले पर्दे के पीछे का सच) के माध्यम की यात्रा का सच इस ढंग से पेश करने का प्रयास किया है कि मीडिया के विद्यार्थी ही नहीं

आम पाठक भी इस कृति के सहारे टीवी माध्यम के कार्यों के तमाम पहलुओं को निकट से समझने का अनुभव कर सकते हैं।

अख़बार की तुलना में टीवी के लिए खबरों की प्रस्तुति में कड़ी मेहनत की अपेक्षा है। इतनी मेहनत के बावजूद कतिपय चैनलों की वजह से इस माध्यम की जो आलोचना होती है और इसी क्रम में इन चैनलों के बीच भी जो प्रतियोगी होड़ मची हुई है, इसके आलोक में सच्चाइयों को जानने का अवसर इस कृति में पा सकते हैं।

जनसंचार, प्रसारण मीडिया, माससमीडिया, सोशल मीडिया – डॉ. संदीप उपाध्याय की 'जनसंपर्क : सिद्धांत एवं व्यवहार' में जनसंपर्क प्रणालियों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक आयामों पर विश्लेषण प्रस्तुत है। डॉ. चंद्रा त्रिखा और डॉ. मीनाक्षी वशिष्ठ की पुस्तक 'मीडिया यात्रा', डॉ. एम. रहमतुल्लाह की कृति 'मीडिया और जनसंचार', कुमार कौस्तुभ की पुस्तक 'मीडिया का मायालोक' आदि मीडिया विषयक उल्लेखनीय पुस्तकें हैं। इसी क्रम में प्रो. प्रणिमा दास की पुस्तक 'सोशल मीडिया के दौर में लघु पत्रिकाएँ', प्रो. अनिल कुमार उपाध्याय की पुस्तक 'पत्रकारिता एवं विकास संचार', अभिनव सिन्हा एवं अभिनव सोलंकी की पुस्तक 'आर्टिकल 15', पवित्र श्रीवास्तव और सी. के. सरदाना की पुस्तक 'जनसंपर्क के विविध आयाम' आदि भी उल्लेखनीय हैं। श्यामलाल यादव की पुस्तक 'आर. टी. आई. से पत्रकारिता : खबर, पड़ताल और असर' प्रकाशित हुई है। आर. टी. आई. के माध्यम से पत्रकारिता आज पत्रकारिता के लिए सामग्री संग्रह के एक नए तरीके के रूप में अपनाया जा रहा है। ऐसी पत्रकारिता के विविध आयामों पर इसमें विवेचन, विश्लेषण प्रस्तुत है।

पत्रकारिता – सरोज कुमारी के संपादन में 'हिंदी पत्रकारिता : चुनौतियाँ और समाधान' प्रकाशित हुई है, जिसमें इस विषय में लेख संगृहीत हैं। गिरीश पंकज की पुस्तक 'पत्रकारिता है क्या? पत्रकारिता पर कुछ जरूरी विमर्श' प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का आमुख प्रो. संजय द्विवेदी ने लिखा है। इस पुस्तक में पत्रकारिता, हिंदी पत्रकारिता, पत्रकारिता कानून, सोशल मीडिया, कुछ साहित्यकारों की पत्रकारिता, मीडिया और साहित्य आदि विषयों पर केंद्रित गिरीश पंकज जी के आलेख शामिल हैं। सुशील उपाध्याय की 'सैद्धातिक पत्रकारिता', मुकेश भारद्वाज की 'सत्ता का सत्य' आदि उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

सिनेमा, फिल्म एवं रंगमंच – सर्वेक्षण वर्ष के दौरान हिंदी में सिनेमा और फिल्म माध्यम पर केंद्रित लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। अनिल भार्गव की पुस्तक 'विश्व सिनेमा का इतिहास', डॉ. रमा की पुस्तक 'हिंदी सिनेमा में साहित्यिक विमर्श', 'लोकप्रिय और सामाजिक यथार्थ' के शीर्षक से प्रो. जवरीमल्ल पारख की कृति, 'हिंदी सिनेमा के बहुरंग' शीर्षक से मुनीश शर्मा की पुस्तक, 'भोजपुरी सिनेमा का सफर' शीर्षक से अंशु त्रिपाठी की पुस्तक, अजित सिंह तोमर की कृति 'फिल्म पत्रकारिता : समीक्षा और संवाद' आदि उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक 'रंगकर्म का स्वर्ण-काल' शीर्षक से जयदेव तनेजा की एक कृति तक्षशिला प्रकाशन के माध्यम से प्रकाशित हुई है। इस कृति में भारत में रंगकर्म के विकास युग का विस्तृत विवेचन रंगमच के विभिन्न आयामों की दृष्टि से किया गया है।

विज्ञापन जगत – डॉ. सुजाता वर्मा की पुस्तक 'जनसंचार, जनसंपर्क एवं विज्ञापन' उनके मरणोपरांत विकास प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुई है। जनसंचार, जनसंपर्क और विज्ञापन जगत के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री से यह कृति सुसज्जित है।

मीडिया के लिए सामग्री-सृजन एवं उत्पादन कौशल – नए पत्रकारों के लिए मीडिया जगत में उनके भावी कार्यों, भूमिका के अनुरूप प्रशिक्षण पर आज अधिक महत्व दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान मुख्यत: उनके कार्यों से संबंधित विभिन्न कौशलों के विकास को ध्यान में रखते हुए भी कई पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

संदीप खरे की पुस्तक 'रेडियो लेखन की प्रक्रिया' प्रकाशित हुई है, जिसके माध्यम से रेडियो लेखन की कला में अभ्यास अवसर मिल सकता है। रेडियो के लिए लेखन में ज़रूरी कुशलताएँ व सावधानियाँ सीखने में यह कृति उपयोगी है।

क्षेत्रीय, आँचलिक पत्रकारिता विवेचन

मध्य प्रदेश सरकार की राजेंद्र माथुर अध्येतावृत्ति

योजना के तहत वरिष्ठ पत्रकार हरीश पाठक ने सप्रे संग्रहालय, भोपाल की सहायता से आँचलिक अख़बारों के राष्ट्रीय पत्रकारिता में उल्लेखनीय स्थान को कई उदाहरणों से रेखांकित करने का प्रयास किया है। राष्ट्रीय स्तर पर किसी एक मीडिया संगठन के अधिकार को हम नहीं देख सकते हैं, क्योंकि विभिन्न भाषाओं और भिन्न अंचलों में अलग-अलग अख़बारों की अपनी अहमियत है। ऐसे में आँचलिक पत्रकारों के द्वारा ही राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव सुनिश्चित किया जा रहा है। आँचलिक पत्रकारों की इस भूमिका पर विश्लेषण से यह कृति सार्थक बन गई है।

मीडिया संबंधी बहु-आयामी शोध कार्य

मीडिया विषयक विभिन्न आयामों में शोध कार्य हिंदी में नियमित रूप से संपन्न हो रहे हैं।

'स्वाधीनता आंदोलन के आइने में मॉरीशस एवं भारत की हिंदी पत्रकारिता' पर केंद्रित इसी शीर्षक वाली शोध-कृति सामने आई है, जिसके लेखक हैं डॉ. कृष्ण कुमार झा। मॉरीशस भारतवंशियों का राष्ट्र है। भारत दो-तीन सदियों तक पराए शासन में रहा है। आज़ादी की तड़प दोनों देशों में देखी जा सकती है। इन दो राष्ट्रों की हिंदी पत्रकारिता पर इस तरह के तुलनात्मक अनुसंधान का कई दृष्टियों से बड़ा महत्व है।

डॉ. आशा पी. के. की एक शोध कृति 'हिंदी पत्रकारिता और युग प्रभाव' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। हिंदी प्रदेश से सुदूर दक्षिण में हिंदी में कई पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थीं, उन सबके इतिहास की भारतीय पत्रकारिता में बड़ी उपादेयता है। भारत के हिंदीतर प्रदेशों से प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं का इतिहास, योगदान भी भारत की हिंदी पत्रकारिता के लिए निश्चय ही बृहद्, सर्वांगीण व बहु-आयामी साबित हो सकता है। दक्षिण में ऐसे उदाहरण मिल जाते हैं कि तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम के अख़बारों ने हिंदी में सामग्री प्रकाशन के लिए अपने पृष्ठों को आबंटित किया था। कतिपय मीडिया प्रतिष्ठानों ने हिंदी में भी पत्र-पत्रिकाएँ निकालीं। अतीत में यह प्रवृत्ति प्रबल रही है, आज भी यह जारी है। 'युग प्रभात' इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है। मलयालम का प्रतिष्ठित अख़बार मातृभूमि के संरक्षण में इस अख़बार के प्रतिष्ठान द्वारा 'युग प्रभात' का प्रकाशन नवंबर, 1956 से दिसंबर 1975 तक नियमित रूप से होता रहा। डॉ. आशा पी. के. ने अपने शोध ग्रंथ में 'युग प्रभात' के प्रदेयों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में शामिल सात अध्यायों में युग प्रभात की संपादकीय चेतना, साहित्यिक, सांस्कृतिक चेतना तथा राष्ट्रीय चेतना व हिंदी प्रचार के आयामों पर विस्तृत प्रस्तुत किया है। दक्षिण से हिंदी की अनूठी सेवा करने वाले कई प्रयासों के विस्मृत होते दौर में ऐसे विस्तृत शोधकार्यों व कृतियों का प्रकाशन निश्चय ही स्वागत योग्य व प्रासंगिक प्रयास है।

मीडिया के परिप्रेक्ष्य में महिला, दलित, अल्पसंख्यक व सांप्रदायिक विमर्श

उत्तर-आधुनिक अस्तित्ववादी चेतनाओं के विकास के क्रम में आज हम दलित चेतना, स्त्री चेतना, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सांप्रदायिक विमर्श आदि की चर्चा करते हैं। इन अस्तित्ववादी विमर्शों के परिप्रेक्ष्य में मीडिया को लेकर जो आलोचना उपस्थित हो रही है, उसमें वे उपेक्षित केंद्र में रहेंगे। महिलाओं को केंद्र में रखकर मीडिया की स्थिति पर हम चिंतन करने लगेंगे, तो कई ऐसे तथ्य सामने आएँगे, जिससे हम अध्ययन, चिंतन, मनन, सर्वेक्षण करके यह साबित कर पाएँगे कि मीडिया की स्त्री-दृष्टि क्या है, महिलाओं की समस्याओं के प्रति मीडिया का रवैया क्या है, विभिन्न मीडिया रूपों, उनके संगठनों में महिलाओं की क्या स्थिति है, ऐसे तमाम बहुआयामी दायरे हैं, जिन पर चिंतन किया जा सकता है। मीडिया में और मीडिया के परिप्रेक्ष्य में ऐसे चिंतन पर केंद्रित पुस्तकें समय-समय पर हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। मीडिया में उपेक्षितों की दृष्टि से इन विमर्शों की बड़ी प्रासंगिकता है।

डॉ. मंगला अनुजा की पुस्तक 'आधी दुनिया की पूरी पत्रकारिता' महिला पत्रकारिता पर एकाग्र कही जा सकती है। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की विभिन्न भूमिका व महिला पत्रकारिता के विवेचन पर केंद्रित विवेचन से सुसज्जित इस कृति में मीडिया के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की विविध भूमिकाओं और मीडिया के हर क्षेत्र की प्रमुख महिलाओं पर केंद्रित सामग्री है। काल की गति में मीडिया के

क्षेत्र में लगभग सभी भूमिकाओं में महिलाओं की सक्रियता पर विश्लेषण और महत्वपूर्ण विवेचन शामिल है। पुस्तक की सामग्री में भारत में महिला पत्रकारिता, भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता में महिला सहभागिता, महिलाओं द्वारा संपादित पत्र-पत्रिकाएँ, विविध भूमिकाओं के अंतर्गत महिला संवाददाता, महिला स्तंभकार, स्वतंत्र महिला पत्रकार, महिला साक्षात्कारकर्ता, महिला फोटो पत्रकार आदि शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, वेब पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिकाओं के विवेचन सहित महिला पत्रकारों के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ और अवदान पर भी आकलन प्रस्तुत है।

डॉ. अनु चौहान की एक कृति 'महिला पत्रकार : कल और आजकल' (चुनौतियों भरा सफर..) प्रकाशित हुई है, जिसमें महिला पत्रकारों के समक्ष अतीत और वर्तमान में उपस्थित चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

दलित चेतना को लेकर लगातार काफ़ी चिंतन का विकास हुआ है। ऐसे चिंतन को मीडिया के विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत स्थान मिल रहा है। जहाँ यह माना जा रहा है कि मुख्य धारा के माध्यमों में दलित वंचित रह गए हैं, उन संदर्भों की कई दलित पत्र-पत्रिकाओं का भी विकास हो रहा है। मीडिया में दलितों की स्थिति को लेकर भी कई अध्ययन हुए हैं। दलित चेतना संबंधी कई पुस्तकें निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। दलित पत्रकारिता संबंधी पुस्तकें भी समय-समय पर प्रकाशित हो रही हैं। अश्वनी कुमार की एक पुस्तक 'भारतीय दलित पत्रकारिता' के शीर्षक से सामने आई है। बड़ी निष्ठा के साथ लेखक ने देश के कोने-कोने से प्रकाशित दलित पत्र-पत्रिकाओं व अन्य आयामों पर काफी उपयोगी सामग्री इस कृति में प्रस्तुत की है। यह दलित पत्रकारिता संबंधी कुछ आयामों में संदर्भ ग्रंथ के रूप में भी उपयोगी है।

मीडिया भाषाई विमर्श व भारतीय भाषाई पत्रकारिता

संचार साधन निश्चय ही भाषा के माध्यम से सूचनाओं, विचारों का संप्रेषण करते हुए भाषा के प्रसार में योगदान देते हैं। विभिन्न संचार साधनों के माध्यम से भाषा का संवद्र्धन होता रहा है। पत्र-पत्रिकाओं ने भाषा के विकास में कई रूपों से योगदान दिया है। आज भूमंडलीकरण के युग में बाज़ारीकृत दुनिया में भाषा के बिगड़ते स्वरूप को लेकर इन्हीं माध्यमों के जरिए कई चिंताएँ जाहिर की जा रही हैं। दूसरी तरफ मीडिया की भाषा को लेकर अकादमिक विमर्श भी हम देख सकते हैं। इसी क्रम में मीडिया भाषाई विमर्श पर केंद्रित पुस्तकें समय-समय पर प्रकाशित हो रही हैं। हिंदी के अलावा भारतीय भाषाओं में मीडिया की स्थिति, प्रगति पर विवेचन, विश्लेषण भी समय-समय पर हिंदी में हो रहा है। ऐसे प्रयासों में सर्वेक्षण वर्ष के दौरान प्रकाशित चंद कृतियों की संक्षिप्त चर्चा आगे प्रस्तुत है।

पत्रकारिता सूचना संप्रेषण के साथ-साथ भाषा संवर्धन का माध्यम भी है। कई पत्र-पत्रिकाओं ने अतीत में हिंदी को सजाया व सँवारा है। मगर आज अख़बार व अन्य माध्यमों में जिस रूप में भाषा-प्रयोग हो रहा है, उसको लेकर कई हिंदी प्रेमी, भाषा-आलोचक चिंता जाहिर कर रहे हैं। प्रो. हरिमोहन ने अपनी कृति 'नए माध्यम नई हिंदी' में इसी तरह की चिंताएँ जाहिर की हैं। जहाँ नई प्रौद्योगिकी की वजह से संचार के नए-नए रूपों का विकास हो रहा है, वहीं भाषा इन तकनीकी आयामों में बिगड़ रही है। इन साधनों में भाषा प्रयोग की सुविधाओं के विकास के बाद भी यदि भाषा बिगड़ रही है, इसका दोष भाषा प्रयोक्ताओं का ही है। विभिन्न माध्यमों में भाषा के बिगड़ते स्वरूप के संबंध में विवेचन इस कृति में गंभीर रूप से किया गया है। प्रो. हरिमोहन लिखते हैं - "आज के तकनीकी युग में जहाँ ज्ञान और सूचना ही शक्ति है भाषा का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो गया है। जनसंचार माध्यमों के अनियंत्रित और कहें अराजक प्रसार ने दुनियाभर की भाषाओं के समक्ष अनेक तरह के प्रश्न, अनेक तरह की दुश्चिंताएँ और आशंकाएँ खड़ी कर दी हैं। हिंदी के सामने भी यह संकट कम नहीं है।" इसी पुस्तक में एक दूसरी जगह वे लिखते हैं - "जीवन के कार्य-व्यापारों में व्यापक प्रयोग और तकनीकी शब्दावाली के आ जाने से हिंदी का जो नया रूप- हिंग्लिश/ हिंग्रेजी उभरा है, वह कभी-कभी चिंता में डाल देता है। यह ठीक है कि तकनीकी शब्दवाली का हम ठीक-ठीक अनुवाद नहीं कर सकते और उस मूल शब्दवाली को हमें अपनाना ही पड़ेगा; किंतु अंग्रेजी शब्दों की अनावश्यक मिलावट

भाषा को हास्यास्पद और भ्रष्ट कर देती है। मीडिया की जो हिंदी उभरी है वह इसी मिलावट से भरी हुई है। लेकिन यह मुख्यत: मनोरंजन की भाषा है, और इसे इन्हीं क्षेत्रों तक ही सीमित रखना श्रेयस्कर रहेगा।" मीडिया भाषाई विमर्श पर पुस्तकों के प्रकाशन के क्रम में प्रो. हरिमोहन की यह कृति भी उल्लेखनीय है।

'संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग' शीर्षक से डॉ. नाना साहेब गोरे के संपादन में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसमें लेखकों ने विभिन्न संचार माध्यमों में हिंदी के स्वरूप पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है।

उर्दू भाषा की पत्रकारिता पर प्रो. संजय द्विवेदी के संपादन में एक पुस्तक 'उर्दू पत्रकारिता का भविष्य' के शीर्षक से सामने आई है। इस शीर्षक में भविष्य शब्द में सरासर भारतीय भाषाई पत्रकारिता के समक्ष भूमंडलीकृत दुनिया, बाज़ारवादी नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम से उपस्थित चुनौतियों की ओर परोक्ष रूप से इंगित कर रहा है। विगत दिनों में 'मीडिया विमर्श' पत्रिका का उर्दू पत्रकारिता विशेषांक प्रकाशित हुआ था, वही अब यह पब्लिकेशंस द्वारा पुस्तकाकार में सामने लाया गया है। इस कृति में भारत में उर्दू पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर सार्थक विमर्श, विश्लेषण के रूप में तहसीन मुनव्वर, फिरोज़ अशरफ़, डॉ. अख्तर आलम, असद रज़ा, शाहिद सिद्दीकी, फ़िरदौस ख़ान, रघु ठाकुर, एहतेशाम अहमद ख़ान, डॉ. ए. अज़ीज अंकुर, डॉ. मरीज़या आरिफ़ डॉ. हिसामुद्दीन फ़ारूक़ी, डॉ, अरिफ़ अज़ीज़, डॉ. राजेश रैन, शारिक नूर, इशरत सग़ीर, एज़ाज़ुर रहमान, संजय कुमार, डॉ. मजिद हुसैन, अरिफ ख़ान मंसूरी, डॉ. जीए क़ादरी, मासूम मुरादाबादी और धनजंय चोपड़ा आदि के आलेख व अन्य सामग्री प्रस्तुत हैं। भारतीय भाषाई पत्रकारिता के तमाम मुद्दों का हिंदी में विश्लेषण का बीड़ा उठना स्वागत योग्य प्रयास है। इस क्रम में प्रो.संजय द्विवेदी व उनके मित्रों के प्रयासों से 'मीडिया विमर्श' के अब तक उर्दू के अलावा गुजराती, तेलुगु, मलयालम मीडिया विशेषांकों का प्रकाशन हुआ है। भविष्य में अन्य भाषाओं के विशेषांकों के प्रकाशन की योजना जारी है। वर्तमान कृति में उर्दू पत्रकारिता के विवेचन से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है कि तमाम चुनौतियों के बावजूद उर्दू पत्रकारिता अपने अस्तित्व और अस्मिता को बरकरार रखते हुए पाठकों को उर्दू में समाचार-विचार परोसकर आवश्यक जनमत तैयार करने में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर रही है। उर्दू के कई अख़बार मालिकों की मिशन की भावना की वजह से जीवित हैं। इसके कई अनूठे उदाहरण हमें मिल जाते हैं। सीमित पाठकों के बावजूद उर्दू अख़बारों का नियमित प्रकाशन अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। इस पुस्तक में प्रकाशित विवेचन से यह बात स्पष्ट है कि तमाम चुनौतियों के बावजूद उर्दू पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है। उर्दू पत्रकारिता के अतीत, वर्तमान, भविष्य पर अनुभवी लेखकों, पत्रकारों के विश्लेषण से इस पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। प्रो. संजय द्विवेदी फिलहाल भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक हैं। उम्मीद है कि उनके सक्षम नेतृत्व में संस्थान की विभिन्न योजनाओं के तहत भारतीय पत्रकारिता के विकास की दिशा में शिक्षण-प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रकाशन की गतिविधियों में तेजी आएगी।

पत्रकारिता का साहित्यिक, सांस्कृतिक पक्ष

बाज़ारीकृत दुनिया में सबसे ज्यादा नुकसान साहित्यिक पत्रकारिता को हुआ है। कई प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ बंद हो गई हैं। सेवा, मिशन की भावना जैसे सद्गुणों व सांस्कृतिक, सामाजिक, वैचारिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए पूरी प्रतिबद्धता परंपरा से साहित्यिक पत्रकारिता का अभिन्न अंग रहा है। कई प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं का असामयिक अंत चिंता का विषय है। कई पत्रिकाएँ अस्तित्व के खतरे में फंसी हुई हैं। 20वीं सदी में प्रकाशित 'अजंता', 'कल्पना', 'धर्मयुग', 'युग प्रभात', 'युग मानस' आदि पत्रिकाएँ कई रचनाकारों को संबल देती रही हैं। संरक्षण के अभाव में इन पत्रिकाओं का अंत होने के कारणों पर चिंतन-विश्लेषण भी अपेक्षित है। साहित्यिक पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका के विवेचन पर केंद्रित कृतियों की कमी रही है। ऐसी कमी की पूर्ति की दिशा में इस वर्ग में गणनीय चार-पाँच कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

साहित्यिक पत्रकारिता पर केंद्रित विवेचनात्मक आलेखों का संग्रह अरुण तिवारी के संपादन में 'साहित्यिक पत्रकारिता का परिदृश्य' शीर्षक से प्रकाशित

हुआ है। अरुण तिवारी, भोपाल से प्रकाशित त्रैमासिकी 'प्रेरणा' के संपादक हैं। इस पुस्तक में 38 लेखकों के आलेखों के माध्यम से साहित्यिक पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर विचार-विमर्श प्रस्तुत है। डॉ. सुजाता वर्मा की पुस्तक 'मीडिया : साहित्य और संस्कृति' मीडिया से साहित्यिक और सांस्कृतिक विवेचन पर केंद्रित है। सचिन मिश्र की पुस्तक 'हिंदी साहित्य और मीडिया' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। यह साहित्य और संस्कृति के विवेचन में मीडिया की भूमिका पर केंद्रित है। प्रो. जगदीश चतुर्वेदी की पुस्तक 'आधुनिकतावाद, साहित्य और मीडिया' आधुनिकतावाद दृष्टि से साहित्य और मीडिया के विभिन्न आयामों की आलोचना पर केंद्रित है।

मीडिया समग्र, कोश और निर्देशिकाएँ

बहुभाषी भारत में हिंदी पत्रकारिता का आकार बृहद् है। लगभग दो सदियों के इतिहास वाली हिंदी पत्रकारिता के इतिहास, परंपरा, विभिन्न पड़ाव आदि पर अनुसंधान कार्यों के लिए कई संदर्भ ग्रंथों व सहायक सामग्री की आवश्यकता होती है। हिंदी पत्रकारिता संबंधी समय-समय पर प्रकाशित पुस्तकें इस ज़रूरत को किसी हद तक ही पूरी कर सकती हैं। पत्रकारिता संबंधी कोशों, निर्देशिकाओं, मीडिया समग्रों, सर्वेक्षणात्मक आलेखों के नियमित प्रकाशन से क्रमिक विकास, इतिहास को समझने, शोध करने में बड़ी मदद मिल सकती है। संग्रहालयों और पुरालेखों की भी विशिष्ट भूमिका होती है, जहाँ विभिन्न प्रकाशनों, शोध सामग्री को सुरक्षित करने का प्रयास किया जाता है, जिससे अनुसंधान कार्यों के लिए कई आधार मिल जाते हैं। भोपाल स्थित माधव राव सप्रे पत्रकारिता संग्रहालय के अलावा कई अन्य संग्रहालय भी इस दिशा में भूमिका निभा रहे हैं।

एक बहु उपयोगी कृति के रूप में डॉ. अर्जुन तिवारी की बृहद् कृति 'मीडिया समग्र' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। मीडिया विषयक कई कृतियों के लेखक डॉ. अर्जुन तिवारी की यह पुस्तक मीडिया के कई सारे आयामों पर प्रकाश डालती है।

पत्रकारिता-शोध के लिए अपेक्षित मानव-संसाधनों के संपर्क सूत्र देने की दृष्टि से पत्रकार-निर्देशिकाएँ पूरक की भूमिका निभाती हैं। मुंबई से अफ़ताब आलम के संपादन में पत्रकारिता कोशों का प्रकाशन उल्लेखनीय प्रयास है। इनके संपादन में हर वर्ष कोशों के प्रकाशन की शृंखला में 700 पृष्ठों का 'पत्रकारिता कोश 2019' में प्रकाशित हुआ है, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर कई पत्रकारों के संपर्क सूत्र संकलित हैं। आलम जी द्वारा पत्रकारों के कोश के प्रकाशन का यह 19वाँ वर्ष है। लगातार दो दशकों से नियमित रूप से पत्रकारिता कोश का प्रकाशन अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

पत्रकारों, मीडिया के दिग्गजों पर केंद्रित पुस्तकें

पत्रकारिता संबंधी संस्मरण और प्रमुख पत्रकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित पुस्तकें, पत्रकारों और मीडिया दिग्गजों की जीवनियाँ आदि भी हर वर्ष प्रकाशित हो रही हैं।

प्रो. (डॉ.) अर्जुन तिवारी की पुस्तक 'राष्ट्रपिता की पत्रकारिता' प्रकाशित हुई है। गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर गांधी जी की पत्रकारिता पर विस्तृत विवेचन की यह कृति स्वागत योग्य है। मानवता-मूलक सरोकार, सहयोग, सहकार एवं अन्याय के प्रति प्रतिकार जैसे मूल सिद्धांतों को अपनाकर गांधी जी ने जिन पत्र-पत्रिकाओं को चलाया, जिनमें लेखन किया, उन पर विस्तृत विवेचन हम इस कृति में देख सकते हैं। 'विश्ववंद्य बापू के निमित्त' के शीर्षक से अपने आमुख में तिवारी जी ने गांधी जी पर प्रमुख विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत करने के साथ ही गांधी जी की महानता का विवेचन किया। तत्पश्चात् भारतीय पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति का विंडबनात्मक स्वरूप, चरित्र पर चिंता जाहिर करते हुए गांधी जी की पत्रकारिता की महत्ता को स्पष्ट किया है। उन्होंने लिखा है - "ऐसे परिप्रेक्ष्य में जब हम डेढ़ शताब्दी पहले के रूप पर गौर करते हैं तो महात्मा गांधी की पत्रकारिता का एक अलग ही स्वरूप दिखलाई पड़ता है। पीड़ित, दलित मानवता की आवाज सुनना और अन्याय के प्रति आग्रहपूर्वक विरोध दर्ज करना गांधी जी की पत्रकारिता का मूल स्वर रहा है। यहाँ पूज्य बापू के व्याख्यान, लेखन सब में स्पष्ट अनुशासन की छवि देखी जा सकती है। वे शब्दों के साधक थे, उनकी शैली सरलता और ललित्य से परिपूर्ण है। गांधी

जी की पत्रकारिता की शैली प्रश्नों, सरोकारों को जिस तरह उठाती है और बेबाक ढंग से मनुष्यता के तर्क के आधार पर प्रतिकार, सहयोग और सहकार का आवाह्न करती है, वह पाठक पर जादुई असर करने में सफल होती है।" आरंभिक छह अध्यायों में गांधी जी की महानता व वैचारिक विवेचन के बाद 'पत्रकारिता में गांधी जी के प्रवेश' को लेकर 'इंडियन ओपिनियन: एक वैश्विक विचार-पत्र', 'यंग इंडिया और निष्पक्ष पत्रकारिता', 'नवजीवन', 'हरिजन : अप्रतिम विचार-पत्र', 'गांधी का संपादन कौशल', 'विज्ञापन और गांधी जी' आदि अध्यायों के अलावा अन्य प्रमुख आयामों पर गांधी जी की पत्रकारिता, भाषा, विचार विषयक विस्तृत विवेचन हम इस कृति में देख सकते हैं। यह कृति 150वीं जयंती के अवसर पर गांधी जी के प्रति हिंदी पत्रकारिता जगत की अक्षर श्रद्धांजली कही जा सकती है। डॉ. बंशीलाल तोहाना की कृति 'हिंदी-पत्रकारिता और अंबेडकर' भी प्रकाशित हुई है।

बृजेश सती की पुस्तक 'जंग के मैदान में हरिश्चंद्र चंदोला' (अख़बारी जीवन का सच) उत्तराखंड के वयोवृद्ध वरिष्ठतम पत्रकार के अख़बारी जीवन की सच्चाइयों पर केंद्रित संस्मरणों का भंडार है। जीवनीपरक इस कृति में हरिश्चंद्र चंदोला के पत्रकार जीवन की कई उपलब्धियाँ हम जान सकते हैं। आज संचार साधनों के विकास के दौर में पत्रकार की भूमिका निभाना आसान कार्य है, मगर इन साधनों के अभाव के पुराने दौर में युद्ध के मैदान से ख़बरे लिखने वाले पत्रकार के रूप में चंदोला जी का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। नब्बे पार आयु में उत्तराखंड के पहाड़ी अंचलों में निवास कर रहे हरिश्चंद्र चंदोला जी दुनिया के प्रमुख युद्ध पत्रकारों में पहचाने जाते हैं। 1968 से लेकर 1993 तक के सभी महत्वपूर्ण युद्धों व क्रांतियों के बारे में घटना स्थल पर जाकर उन्होंने ख़बरें लिखी हैं। वे कई जंगो के प्रत्यक्षदर्शी हैं। अमरीका-वियतनाम युद्ध, ईरान-ईराक युद्ध, कुवैत पर ईराकी हमलें आदि की खबरें जंग के मैदान से अंग्रेजी अख़बारों को लिखते रहे है। नागा भूमि संघर्ष के दौर में भूमिगत नागाओं से मुलाक़ात करके उन्होंने रिपोर्टिंग की थी। ऐसे अनूठे अनुभवी पत्रकार के जीवन की कई सच्चाइयाँ युवा पीढ़ी को निश्चय ही प्रेरित कर सकती हैं। बृजेश ने इस जीवनीपरक कृति में पत्रकार चंदोला के जीवन के कई तथ्यों को शामिल करने का अच्छा प्रयास किया है।

जाने-माने टीवी पत्रकार करण थापर की एक पुस्तक 'मेरी अनसुनी कहानी और मशहूर टीवी कार्यक्रम डेविल्स एडवोकेट के दिलचस्प किस्से' के शीर्षक से सामने आई है। यह थापर की अंग्रेजी में प्रकाशित कृति 'डेविल्स एडवोकेट' का हिंदी अनुवाद है। अनुवादक मनोज दुबे हैं। यह संस्मरणात्मक, आत्मकथात्मक कृति है। इसमें थापर जी के व्यक्तिगत जीवन, परिवार, पढ़ाई आदि पर भी सामग्री है इसके अलावा ख़ास सामग्री देश-विदेश के प्रमुख नेताओं से लिए गए साक्षात्कारों से संबंधित बातें हैं। थापर ने अपनी विशेष शैली में जो साक्षात्कार समय-समय पर बड़े-बड़े नेताओं से लिए थे, उनके कई मज़ेदार किस्से उन्होंने इस पुस्तक में लिखे हैं। ज्ञातव्य है कि लंदन में 'द टाइम्स' अख़बार से अपनी मीडिया जीवन-यात्रा शुरू करने वाले थापर, कुछ ही सालों बाद टेलीविजन माध्यम के साथ जुड़ गए थे।

भारत की आज़ादी की लड़ाई के दौर के लोकप्रिय व प्रतिष्ठित हिंदी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी पर केंद्रित एक पुस्तक 'अंतर्वेद प्रवर: गणेश शंकर विद्यार्थी' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। जीवनीपरक इस कृति के लेखक हैं अमित राजपूत। अमित ने गणेश शंकर विद्यार्थी के जीवन व व्यक्तित्व के कई आयामों, प्रसंगों को अपनी इस कृति में शामिल किया है। चूँकि विद्यार्थी स्वाधीनता आंदोलन के दौर के थे और आदोलन से स्वंय जुड़े हुए थे, अत: उनसे संबंधित कृति में आंदोलन के कई प्रसंगों का सामने आना सहज संभव है। अमित की शोधात्मक दृष्टि से यह कृति पठनीय व संग्रहणीय बन गई है।

मीडिया विषयक पत्रिकाएँ / मीडिया पर केंद्रित विशेषांक

मीडिया प्रोफ़ेशनलों के आत्मचिंतन और आत्ममंथन के प्रकल्प के रूप में प्रकाशित जनसंचार के सरोकारों पर केंद्रित त्रैमासिक पत्रिका 'मीडिया विमर्श' ने चौदह वर्ष से अपनी निरंतर यात्रा के दौरान

कई उल्लेखनीय विशेषांकों का प्रकाशन किया है। भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता का आकलन, विस्तृत विमर्श प्रस्तुत करने की दृष्टि से गुजराती पत्रकारिता विशेषांक, उर्दू पत्रकारिता विशेषांक, तेलुगु विशेषांक के सफल प्रकाशन के बाद जुलाई-सिंतबर 2019 संयुक्तांक मलयालम मीडिया विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया है। 'मीडिया विमर्श' पत्रिका के संपादक प्रो. श्रीकांत सिंह हैं और कार्यकारी संपादक प्रो. संजय द्विवेदी हैं। मलयालम मीडिया विशेषांक के अतिथि संपादक हैं - डॉ. सी. जय शंकर बाबु । इस विशेषांक में मलयालम मीडिया के विविध आयामों पर केंद्रित उल्लेखनीय सामग्री आलेखों, साक्षात्कारों, विश्लेषण-मूल्यांकन शोध, संस्मरण आदि कई रूपों में प्रकाशित हुई है। 'इतिहास-विकास' स्तंभ के अंतर्गत प्रसीता पी., डॉ. रजनीश कुमार मिश्र, डॉ. सूर्य बॉस, डॉ. शबाना हबीब, अश्विन आर. एस. के आलेख प्रकाशित हुए हैं। 'पत्रकारिता' स्तंभ के अंतर्गत प्रो. के. वनजा, डॉ. जे. रामचंद्रन नायर, सुप्रिया ई., 'स्त्री-शक्ति स्तंभ' के अंतर्गत फसीला एम., डॉ. लीना. बी. एल., डॉ. सुप्रिया पी., विजय चंद्रन के आलेख, 'मूल्यांकन-विश्लेषण' के अंतर्गत प्रो. मोहनन एन., षिजु एस. जी., डॉ. पी. आर. हरींद्र शर्मा के आलेख प्रकाशित हुए हैं। 'साहित्य और मीडिया' स्तंभ के अंतर्गत रम्या वी, रेशमी एस., शोध-पत्र के अंतर्गत गीता कुमारी, 'साक्षात्कार स्तंभ' के अंतर्गत मलयालम पत्रकार डॉ. एम. पी. पद्मनाभन, सुरेश उन्निथान, मलयालम फिल्म अभिनेता मणिकंठन आचारी, टीवी माध्यम के अभिलाष मोहनन, शिक्षा-राजभाषा क्षेत्र के अनील कुमार टी. के. के साक्षात्कार प्रकाशित हुए हैं। 'वेबमीडिया' के अंतर्गत डॉ. पी. प्रिया, डॉ. रंजित एम., डॉ. के. वत्सला किरण, अमृता ए. नायर, डॉ. डी. रेजी कुमार, जिबिन फ्रांसिस एवं डॉ. बी. बेनसन का आकलन, 'रेडियो-टेलीवीजन' के अंतर्गत डॉ. रंजित रविशैलम, क्रिस्टलिन मेरी तोमस, सी. श्रीवैष्णवी के आलेख प्रकाशित हुए हैं। 'गतिशील और प्रगतिशील है मलयालम मीडिया' के शीर्षक से प्रकाशित तिथि संपादकीय में डॉ. सी. जय शंकर बाबु ने लोकतंत्र में मलयालम मीडिया की गतिशील भूमिका व विविध आयामों पर विस्तृत आकलन प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि मलयालम मीडिया का 172 वर्षों का इतिहास है। मलयालम मीडिया की विकास-यात्रा पर केंद्रित यह उल्लेखनीय विशेषांक है और शायद हिंदी में मलयालम मीडिया के समग्र आकलन का यह पहला प्रयास है जिसमें मलयालम पत्रकारिता का इतिहास, प्रमुख अख़बारों की विकास-यात्रा, पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो व टेलीविजन, मलयालम सिनेमा, वेब मीडिया आदि पर विस्तृत विचार मंथन से यह विशेषांक शोध-संदर्भ स्रोत के रूप में निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होगा।

'समागम' पत्रिका (संपादक मनोज कुमार) के कतिपय अंक मीडिया पर केंद्रित सामग्री से प्रकाशित हुए हैं। जनवरी 2010 का अंक महात्मा गांधी जी पर तथा फरवरी 2019 का अंक चुनौतियों के बीच पत्रकारिता पर केंद्रित सामग्री से सुसज्जित है। अप्रैल, 2019 के अंक में पी. आर. और पत्रकारिता पर केंद्रित सामग्री है।

'जन मीडिया' मीडिया शोध पर केंद्रित मासिक पत्रिका (संपादक अनिल चमाड़िया) है। इसके अंको में मीडिया के विभिन्न आयामों पर शोध आलेखों का नियमित प्रकाशन हो रहा है। जनवरी, 2019 अंक में खबरों के चयन में राजनीतिक दृष्टि, हिंदी पत्रकारिता में अंग्रेज़ी का वर्चस्व, हिंदी खबरों में रोमन लिपि में अंग्रेज़ी शब्द, जन स्वास्थ्य के प्रति मीडिया का रुख आदि पर विश्लेषणात्मक आलेख हैं। मार्च, 2019 में इस पत्रिका ने सात वर्ष पूरे कर लिए हैं। मार्च के अंक में समाचार माध्यमों में महिलाओं की दुनिया, स्त्रियों के मानवाधिकार और न्यूज़ चैनलों की भूमिका पर सर्वेक्षण (दमनप्रीत कौर), भारत में केबल टीवी की स्थिति आदि पर आलेख हैं। मई के अंक में पेड न्यूज़ की बुराई पर, जून के अंक में हिंदी प्रिंट मीडिया की यात्रा, जनमत को प्रभावित करती फर्जी खबरों पर सामग्री है। अगस्त के अंक में 20वीं सदी में मीडिया शिक्षा पर, पत्रकारिता के खिलाफ़ कानूनी तौर-तरीकों का इस्तेमाल, गांधी की पत्रकारिता में विज्ञापन की रीति-नीति, गांधी युगीन महिला पत्रकारिता, लोकतंत्र और नई प्रौद्योगिकियाँ आदि पर विवेचनात्मक सामग्री है। सिंतबर अंक में बी बी सी हिंदी और उर्दू में भिन्न

रिपोर्टिंग, आर्थिक समृद्धि और जलवायु परिवर्तन की रिपोर्टिंग, लोकसभा चुनाव (2019) पर सोशल मीडिया का असर, कश्मीर की अभिव्यक्ति की आज़ादी और भारतीय मीडिया पर, दिसंबर, 2019 के अंक में पत्रकारिता और संसदीय विशेषाधिकार पर शोधपरक सामग्री प्रकाशित है। हिंदी के माध्यम से मीडिया शोध की दिशा में 'जन मीडिया' महती भूमिका अदा कर रही है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान की पत्रिका 'गवेषणा' (अंक 115) जनवरी-मार्च, 2019 के अंक 'महात्मा गांधी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसमें महात्मा गांधी की पत्रकारिता के विवेचन पर केंद्रित कुल 5 आलेख प्रकाशित हुए हैं। 'महात्मा गांधी की पत्रकारिता' शीर्षक से सभापति मिश्र का आलेख, 'गांधी की पत्रकारिता' प्रबंधन का स्वरूप के शीर्षक से कमल किशोर गोयनका का आलेख, 'गांधी जी की पत्रकारिता' के शीर्षक से सुनीता कुमारी चौरसिया का आलेख, 'महात्मा गांधी की पत्रकारिता' के शीर्षक से अरुण कुमार भगत का आलेख, 'गांधी और पत्रकारिता : एक पड़ताल' के शीर्षक से राकेश कुमार दुबे का आलेख प्रकाशित हुए हैं।

2020 के आरंभ में विमोचित पुस्तकें

वर्ष 2019 के दौरान लेखनबद्ध होकर 2020 के आरंभ में विमोचित मीडिया विषयक लगभग एक दर्जन पुस्तकें विमोचित हुई हैं।

डॉ. दयानंद उपाध्याय की पुस्तक 'महिला सशक्तिकरण में जन माध्यमों की भूमिका', शैलेंद्र तिवारी की पुस्तक 'डिजिटल मीडिया : खबर, फेसबुक और यूट्यूब', डॉ. राधिका शर्मा की कृति 'भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान', 'आधुनिक मीडिया विमर्श से केशव मौर्य और रवींद्र यादव की पुस्तक, 'वाया मीडिया' (एक रोमिंग कॉरस्पॉन्डंट की डायरी)। गीताश्री का मीडियाकर्मी केंद्रित उपन्यास जो 90 के दशक की महिला पत्रकारों की रोमांटिक दास्तान (खंड-1) के रूप में प्रकाशित है। डॉ. एम. फ़िरोज़ खान एवं डॉ. शिप्रा किरण की पुस्तक 'सिनेमा की निगाह में थर्ड जेंडर', डॉ. प्रदीप कुमार की 'मीडिया साक्षरता : दूसरी परंपरा', डॉ. पवन मलिक के संपादन में 'नागरिक पत्रकारिता', डॉ. सौरभ मालवीय एवं लोकेंद्र सिंह के संपादन में 'राष्ट्रवाद और मीडिया' प्रकाशित हुई हैं।

नई प्रौद्योगिकी और नई मीडिया संबंधी साहित्य

नई प्रौद्योगिकी पत्रकारिता की गतिविधियों व गति में बड़े परिवर्तन के कारक साबित हुई हैं। मीडिया के साथ जुड़ी नई प्रौद्योगिकियों के परिप्रेक्ष्य में नव माध्यम साकार हो पाए हैं। नई प्रौद्योगिकियों का स्वरूप, अभिलक्षण, नव माध्यम सैद्धांतिकी, व्यवहारिकी आदि पर निरंतर विस्तृत विवेचन, विमर्श जारी है। नई प्रौद्योगिकियों की वजह से समूची दुनिया प्रभावित हुई है। कई गतिविधियों में परिवर्तन हम देख पा रहे हैं। सूचनाओं का भंडारण, पुनःप्राप्ति, संसाधन, प्रदर्शन, प्रसारण-संप्रेषण आदि गतिविधियों में नई प्रौद्योगिकियों की बड़ी भूमिका है। संचार व प्रसार साधन अब हर किसी के हाथों तक पहुँचाना इन्हीं प्रौद्योगिकियों की वजह से संभव हो पाया है। नवाचारों और सस्ते दामों में कई प्रौद्योगिकीय उपकरणों, साधनों का उपलब्ध हो पाना सूचना-संचार जगत को इस ढंग से प्रभवित कर चुका है कि एक समांतर व्यवस्था के रूप में सोशल माध्यम व अन्य माध्यमों का विकास हो पाया है, जिसके दावेदार प्रत्येक नागरिक हैं। आज मोबाइल पत्रकारिता, नागरिक पत्रकारिता जैसी अवधारणाओं तथा व्यवस्थाओं के विकास में इन नई प्रौद्योगिकियों की बड़ी भूमिका है।

सूचना प्रौद्योगिकी के परिवेश में कार्यों में गति, विश्वनीयता, गुणवत्ता, सुनिश्चितता आदि के बढ़ जाने से इनकी ओर दुनिया का सहजतः आकर्षण बढ़ गया है। मीडिया के जिस किसी रूप की हम बात करते हैं, उनमें इन नई प्रौद्योगिकियों का जबरदस्त हस्तक्षेप है। इनके अलावा विश्वव्यापी जाल के सहारे पत्रकारिता ने एक नए रूप के विकास को साकार किया, जिसे आज कई संज्ञाएँ दी जाती हैं, यथा - इंटरनेट (अंतरजाल) पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, डिजिटल पत्रकारिता आदि। इन प्रौद्योगिकीय उपकरणों की पहुँच बढ़ने के साथ ही पत्रकारिता की गतिविधियों में सक्रिय लोगों की संख्या भी बढ़ गई है। जो किसी

मीडिया प्रतिष्ठान से जुड़े बिना अपनी हथेली में उपलब्ध स्मार्टफोन के जरिए सूचनाओं के संचार-संप्रेषण, पत्रकारिता जैसी गतिविधियाँ सार्वजनिक रूप से करता है, उन्हें आमतौर पर नागरिक पत्रकारों की संज्ञा दी जाती है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक बृहद् क्षेत्र के रूप में उभर चुका है। अतः इस क्षेत्र के तमाम विषयों पर केंद्रित बड़ी संख्या में विभिन्न शीर्षकों की पुस्तकें अंग्रेज़ी में प्रकाशित होती रहती हैं। हिंदी में भी आजकल ऐसी कई पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं। प्रौद्योगिकीय शिक्षण-प्रशिक्षण की कृतियों की संख्या भी काफी बड़ी होती है। उन तमाम पुस्तकों की चर्चा इस छोटे आलेख में करना अव्यावहारिक है। मुख्यतः मीडिया से जुड़ी नव प्रौद्योगिकियों की वजह से विकसित नव माध्यमों की चर्चा यहाँ निश्चय ही प्रासंगिक है। नव माध्यमों के ठिकाने परंपरागत माध्यमों के लिए भी आश्रय स्थल बन गए हैं। विभिन्न माध्यमों का वेब पर आश्रय पाने से प्रौद्योगिकीय अभिसरण भी विकसित हुई है।

नव माध्यमों के कई विशिष्ट अभिलक्षण हैं। इन अभिलक्षणों में नएपन को समझने की बड़ी आवश्यकता है। बहुमाध्यम क्षमता नव माध्यमों का एक महत्वपूर्ण अभिलक्षण है। पाठ, चित्र, ध्वनि, दृश्य, अनुप्राणन (एनिमेशन) के अलावा इस मीडिया की एक बड़ी विशेषता है - आभासी यथार्थ यानी आभासी वास्तविकता। आभासी यथार्थ के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति व विकास हम देख सकते हैं। संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता, मिश्रित वास्तविकता (जिनके लिए अंग्रेज़ी में क्रमशः ए. आर., वी. आर. एम. आर. की संज्ञाएँ प्रचलित हैं) जैसी अवधारणाओं तथा उनके उपयोग के विशिष्ट उपकरणों, साधनों के विकास से दृश्य व अनुभव की दुनिया में एक बड़ी क्रांति पैदा हो गई है। नई मीडिया के परिवेश में सामाजिक मीडिया का विकास और उनका प्रयोग करते हुए सूचनाओं के प्रसार में सक्रिय नागरिकों के संदर्भ में नागरिक पत्रकारिता की अवधारणा भी सार्थक लगने लगी है। नव माध्यमों ने जहाँ कई रूपों में मीडिया के विकास को साकार बनाया, वहीं दूसरी ओर बाज़ारवादी मूल्यों को अपनाने से मीडिया के चरित्र को कई आशंकापूर्ण दृष्टियों से भी परखने की चेष्टाएँ हो रही हैं। ऐसे तमाम विमर्शों पर केंद्रित पुस्तकें हर वर्ष प्रकाशित हो रही हैं।

नई प्रौद्योगिकी के दायरे में चर्चा की जाने लायक सर्वेक्षण वर्ष के दौरान तीन-चार पुस्तकें ही प्रकाशित हुई हैं।

अंग्रेज़ी से हिंदी में अनूदित पुस्तक 'इंडिया कनेक्टेड : न्यू मीडिया के प्रभावों की समीक्षा' (संपादक - सुनेत्रा सेन नारायण और शालिनी नारायणन) अंग्रेजी की प्रमुख प्रकाशन संस्था सेज द्वारा सामने आई है। मूल अंग्रेज़ी में प्रकाशित इस कृति का अनुवाद प्रवीण गौतम ने किया है। अपने शीर्षक के अनुसार ही यह पुस्तक न्यू मीडिया यानी नव माध्यमों के भारतीय समाज पर प्रभाव के अध्ययन-विश्लेषण का परिणाम है। नई प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ ही कई कारणों से इसके प्रसार, विस्तार की योजनाएँ एक तरफ लागू हो रही हैं, दूसरी तरफ इस नव प्रौद्योगिकीय परिवेश में कई सेवाएँ शुरू हो चुकी हैं। भारत में न्यू मीडिया के विकास व उसके प्रभावों के समीक्षात्मक परीक्षण की दृष्टि से सर्जित इस कृति में उन तमाम सिद्धांतीकरण के प्रयासों, चुनौतियों पर विचार मंथन किया गया है। सोशल नेटवर्क का शासन, व्यवसाय - कार्पोरेट का भरपूर इस्तेमाल करते हुए जो हासिल किया जा रहा है, उसका इस कृति में अवलोकन किया गया है। मीडिया को प्रभावित करने वाले कई पहलुओं पर भी इस कृति में विश्लेषण है, यथा - डिज़ीटाइजेशन, अभिसरण, अंतः क्रियात्मकता, सर्वव्यापकता आदि। नव माध्यम सैद्धांतिक अभिलक्षण व व्यावहारिक पहलुओं के परिप्रेक्ष्य में इस अध्ययन के खास मायने हैं। इस पुस्तक में जिन मुद्दों पर विवेचन हुआ है, उनमें सामाजिक माध्यमों में राजनैतिक दलों, नेताओं की सक्रियता के विश्लेषण भी एक प्रमुख मुद्दा है। इसी मुद्दे पर एक और पुस्तक सर्वेक्षण वर्ष के दौरान ही प्रकाशित हुई है।

'सोशल मीडिया एक्टविज्म : एक राजनैतिक हथियार' के शीर्षक से प्रकाशित दिवाकर दुबे की पुस्तक नव माध्यमों के प्रभाव क्षेत्र के विश्लेषण की दृष्टि से महत्वपुर्ण है। नव माध्यमों में आज कई सामाजिक माध्यमों के ठिकानों का विकास हुआ है

– यथा फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग आदि। नव माध्यमों के परिवेश में उपस्थित व उपलब्ध इस तरह के सामाजिक माध्यमों में सक्रियतावादी व्यवहार को ही अंग्रेज़ी में 'सोशल मीडिया एक्टिविज्म' कहा जाता है। आज सर्वत्र हर कोई इनका प्रयोग करके प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रबल बनने की कोशिश में नज़र आते हैं। राजनीति से जुड़े व्यक्ति आज इनका भरपूर प्रयोग कर रहे हैं।

उक्त प्रस्तावित नए माध्यमों (इंटरनेट पर विकसित सामाजिक माध्यम, फेसबुक, ब्लॉग आदि) में हिंदी भाषा के प्रयोग के स्वरूप के विश्लेषण की दृष्टि से 'नए माध्यम नई हिंदी' के शीर्षक से प्रो. हरिमोहन की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है।

नई प्रौद्योगिकियों ने कई कार्यों को सरल बनाया है। आज लगभग 70 प्रतिशत आबादी तक स्मार्ट फोन की पहुँच है। नेटवर्क या वाई-फाई की सुविधा के माध्यम से यह बहुत ही प्रभावशाली संचार साधन बन जाता है। मीडिया जगत के कई लोग आज केवल हाथ में मोबाइल के जरिए ही समाचार संग्रह, प्रसारण आदि काम भी कर सकते हैं, मोबाइल पत्रकार इसी तरह समाचार संग्रह करते हैं, उनकी रिपोर्ट बनाकर प्रसारण भी कर सकते हैं, अत: इस प्रक्रिया या गतिविधि को चूँकि यह मोबाइल केंद्रित है, अत: 'मोबाइल पत्रकारिता' की संज्ञा दी गई है।

इस मोबाइल पत्रकारिता का प्रयोग न केवल मीडिया से जुड़े व्यक्ति कर सकते हैं, आम नागरिक भी कर सकते हैं, आम नागरिक द्वारा पत्रकारिता की इसी प्रवृत्ति को 'नागरिक पत्रकारिता' की संज्ञा दी गई है।

डॉ. कुमार कौस्तुभ की पुस्तक 'मोबाइल पत्रकारिता' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। यह मोबाइल पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए हर किसी के लिए उपयोगी है। इस पुस्तक में कुल 20 अध्यायों मे विषय विवेचन है। मोबाइल पत्रकारिता के उद्भव, विकास, मोबाइल पत्रकारिता को व्यावहारिक रूप से अपनाने के लिए अपेक्षित अतिरिक्त साधन, संसाधन और उनसे संबंधित तमाम तकनीकी पहलुओं का सरल विश्लेषण इस पुस्तक में प्रस्तुत है।

मीडिया स्टडीज ग्रुप द्वारा प्रकाशित 'जन मीडिया' मासिक पत्रिका के अंकों में नई प्रौद्योगिकी एवं नव माध्यमों से संबंधित सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित होती रही है। जनवरी 2019 के अंक में 'गुरू और ग्रामोफोन : मिश्रा और आधुनिक टेक्नोलॉजी की कहानी' के शीर्षक से अमांडा विडमैन के आलेख (पृ. 240) में 20वीं सदी में कर्नाटक संगीत का उल्लेख उनकी प्रामाणिकता का पता लगाने और टेक्नोलॉजी जनित सच्चाइयों में से इसका संबंध स्थापित करने का प्रयास नज़र आता है। फरवरी 2019 के अंक में 'डिजिटल साक्षरता की दिशा में सरकार का हासिल' विषयक रिपोर्ट, मार्च के अंक में 'भारत में केबल टीवी की स्थिति' पर, अप्रैल अंक में 'सोशल मीडिया और भारतीय राजनीति', मई अंक में 'चुनावी राज्यों में व्हाट्सएप के उपयोग' पर एक सर्वेक्षण (करिश्मा मेहरोत्रा), 'निजी जानकारी भेजने पर सवाल और सरकार के जवाब' (राकेश सिंह), 'सेट टॉप बॉक्सों का देश में सफर' पर रिपोर्ट आदि नई प्रौद्योगिकी तथा उसके प्रभावों के परिणामों के विश्लेषण से संबंधित सामग्री प्रकाशित है। 'जन मीडिया' के जुलाई अंक में 'सोशल मीडिया के लाइक और मतदान का अंतर्संबंध' (वैशाख ई. हरी) और 'वीडियो गेम का बच्चों की मानसिक संरचना पर प्रभाव' (रजनी यादव), अगस्त के अंक में 'लोकतंत्र और नई प्रौद्योगिकियाँ' के शीर्षक वाले शोध-अध्ययनपरक आलेख में यह उल्लेख मिलता है – "बीसवीं सदी के अंत में मशीनरी तथा प्रौद्योगिकी की 'निर्जीव' दुनिया ने किसी को भी कष्ट दिए बिना ही सामाजिक बीमारियों का उपचार करने की जिम्मेदारी संभाल ली है। प्रौद्योगिकी रूपांतरण के पैरोकारों ने मूलगामी राजनीति के सामाजिक सपनों पर अपना दावा कर दिया है और यह वादा कर रहे हैं कि यथास्थिति को बदले बिना ही, वे इन सपनों को सच कर सकते हैं।...." अक्तूबर अंक में 'रोबोट पत्रकारिता' के परिप्रेक्ष्य पर संजय कुमार का आलेख, 'सर्वेक्षण' के अंतर्गत 'सूचना तकनीक का शिक्षण संस्थानों' के छात्र-छात्राओं पर प्रभाव (डॉ. अमित), 'भारत में दूरसंचार क्रांति' के विषय पर डॉ. देवव्रत सिंह की शोध सामग्री, नवंबर अंक में 'मध्य प्रदेश : स्वास्थ्य क्षेत्र में मोबाइल

संचार' पर डॉ. ललित कुमार का अध्ययन प्रकाशित हुआ है।

जैसे कि स्पष्ट किया गया है विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष नई प्रौद्योगिकी व नव माध्यम विषयक पुस्तकें कम संख्या में सामने आई हैं। नई प्रौद्योगिकियों की उपस्थिति में समाज कई रूपों में प्रभावित हो रहा है। इसी तरह मीडिया जगत भी प्रभावित है। इन तथ्यों पर सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण इस वर्ष प्रकाशित एकाध कृतियों में हम देख पाए हैं। भविष्य में इस विषय पर केंद्रित अधिक प्रकाशनों की अपेक्षा की जाती है।

– सहायक प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी– 605014

❑❑❑

27

हिंदी बाल साहित्य

डॉ. पुष्पेंद्र कुमार शर्मा

वर्षभर साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकें खूब लिखी और छापी जाती हैं। हर वर्ष हजारों किताबें छपती और पाठकों के हाथों में आती हैं। कुछ की समीक्षाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती भी हैं और कुछ की नहीं भी छपती हैं। इससे मालूम होता है कि किस लेखक की कौन-सी कविता, कहानी, उपन्यास आदि की किताबें इस वर्ष आईं। साहित्य के वास्तव में अनेक आयाम हैं। दूसरे शब्दों में साहित्य न केवल भाषाई संपदा में बढ़ोत्तरी करता है बल्कि वह पाठकों की संवेदना भी बनाए रखने में मदद करता है, और जब साहित्य बच्चों के साथ जुड़ता है तब साहित्य का उद्देश्य और भी व्यापक हो जाता है। भाषाविदों और बाल मनोवैज्ञानिकों एवं बाल कथाकारों का मानना है कि साहित्य से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनशीलता का विकास होता है। यदि कल्पनाशीलता और सृजनात्मक शक्ति में साहित्य मदद करता है तब तो यह अनिवार्य हो जाता है कि बाल साहित्य की पड़ताल की जाए।

हिंदी बाल साहित्य

बच्चे मनुष्य समाज का मूल आधार और देश के भावी कर्णधार होते हैं जिनकी भूमिका देश और समाज के विकास को न केवल प्रभावित करती है बल्कि उसकी दिशा को भी निर्धारित करती है। बच्चों के भविष्य में ही परिवार, समाज तथा देश का भविष्य और उनके हित में ही देश का हित छिपा हुआ होता है। काफी लंबे समय से देश में ऐसी स्थिति बनी हुई है कि बच्चों के विकास के लिए समुचित व्यवस्था का काफी हद तक अभाव ही रहा है। परिवार, समाज तथा सरकार के स्तर पर उठाए जाने वाले कदमों के प्रभावहीन हो जाने की स्थिति में बच्चों को और विकसित, अर्ध-विकसित या गलत दिशा में विकसित होते हुए देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चों को सही दिशा की ओर मोड़ने की जिम्मेदारी हम सभी की बनती है अर्थात् संपूर्ण समाज इसके लिए जिम्मेदार है जिसमें संपूर्ण राष्ट्र ही नहीं बल्कि पूरा मानव समुदाय समाया हुआ है।

बच्चों की प्रथम पाठशाला उसकी माँ को बताया गया है और फिर परिवार के अन्य सदस्य, समाज, विद्यालय का परिवेश तथा ज्ञानी गुरु साथ ही पूरा देश, परंतु उसके सही समुचित विकास के लिए श्रेष्ठ साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए क्योंकि साहित्य के माध्यम से उसे समुचित सही-सही जानकारी और ज्ञान मिलता है तथा विभिन्न क्षेत्रों एवं देशों में काम करने की प्रेरणा, प्रोत्साहन और बल मिलता है जिससे बच्चों में आत्मविश्वास की बढ़ोतरी होती है साथ ही आध्यात्मिक

चेतना को भी शक्ति मिलती है। परिणामस्वरूप हिंदी में बच्चों के लिए श्रेष्ठ पुस्तकें उपलब्ध होना बच्चों के सही दिशा में विकास के लिए अति आवश्यक कदम कहा जाना चाहिए। बाल साहित्य को एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में मान्यता मिल चुकी है जो कि सहज स्वाभाविक और बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत में गुरुकुल के माध्यम से बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत गुरुओं द्वारा बच्चों को उनके प्रारंभिक जीवन से बड़े होने तक सभी तरह की शिक्षा दी जाती थी जिसमें आध्यात्मिक शिक्षा, सामाजिक शिक्षा, विज्ञान की शिक्षा और इसी तरह से खेलकूद की शिक्षा, अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या, योग विद्या और मनोविज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। इसके अलावा उन्हें अलग-अलग तरह के कार्यों से संबंधित शिक्षाएँ भी दी जाती थीं ताकि वे गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने के बाद अपने कामकाज और अपना जीविकोपार्जन कर सकें, इस व्यवस्था को तोड़ने का काम अंग्रेज सरकार ने और उससे पहले मुस्लिम बादशाहों ने बड़े योजनाबद्ध तरीके से किया।

हिंदी बाल साहित्य में हिंदी बाल कहानी, बाल कविता, बाल नाटक, बाल हास्य-व्यंग्य रचनाएँ, चित्र कथाएँ, पहेलियाँ आदि की रचनाएँ करने में प्रत्येक रचनाकार तथा कलाकार बच्चों को बेहतर साहित्य उपलब्ध करने में अपने दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं और इसे और भी बेहतर रूप और शैली के साथ कर सकते हैं। इनके अथक प्रयासों और श्रम का परिणाम है कि बाल साहित्य हिंदी जगत को पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ कहानी संग्रह और कविता संग्रह तथा इसके साथ ही साथ अन्य विधाओं में भी लिखा जा रहा है, प्रकाशित हो रहा है तथा पढ़ने को मिल रहा है। बच्चों के लिए लिखे और छापे जा रहे साहित्य में से काफी साहित्य ऐसा भी है जो कीमत की दृष्टि से बच्चों और उनके अभिभावकों की पहुँच से काफी दूर रहता है। फलतः बच्चों के लिए छपे होने के बावजूद भी बच्चों को पढ़ने के लिए यह साहित्य केवल पुस्तकालयों के माध्यम से ही मिल पाता है परंतु कई प्रकाशन ऐसे भी हैं जहाँ से काफी कम कीमत पर यानी लगभग लागत मूल्य पर बहुत अच्छी पुस्तकें बच्चों को उपलब्ध कराई जा रही हैं।

बाल रचनाएँ जैसेः- बाल कविताएँ, बाल कहानियाँ, नैतिक मूल्य, सकारात्मक ज्ञान की शिक्षा, सामाजिक चेतना को विकसित करने वाली होनी चाहिए और बच्चों में वास्तविकता की समझ और तर्कशीलता विकसित करने में मदद करने वाली होनी चाहिए। कई प्रकाशकों के पुस्तक-कैटलॉग छान मारने के बाद और पूरे वर्ष बाल कविताओं, बाल कहानियाँ, बाल उपन्यास, बाल पत्र-पत्रिकाओं आदि पर नजर रखने के बाद भी वर्ष 2019 के दौरान बाल साहित्य के नाम पर प्रथम संस्कारण के रूप में छपी रचनाएँ कम ही प्रकाशित हुईं और बच्चों को पढ़ने को मिल पाईं।

बाल पत्रिकाओं और उनसे संबंधित विभिन्न रचनाओं को देखने के बाद महसूस होता है कि वर्ष 2019 के दौरान बाल साहित्य के रचनाकारों ने बहुत कुछ ऐसा नहीं दिया जो बच्चों के विकास में बहुत बड़ी भूमिका निभा सके, यह एक निराशाजनक स्थिति है कि हम आज भागती-दौड़ती इस दुनिया में जहाँ एक ओर तकनीकी माध्यम मनुष्य समाज के ऊपर पूरी तरह से हावी हो गया है और लेखन, प्रकाशन और पठन-पाठन की स्थिति में काफी बदलाव आया है। ऐसे में इस भाग-दौड़ में लेखक वह लिख रहे हैं जो उन्हें लगता है कि आज सामाजिक परिस्थितियों, परिवेश और बच्चों की मानसिकता की माँग के अनुरूप हो अर्थात् बच्चे उसे पसंद भी करें। कुछ बाल साहित्य रचनाकारों ने इस वर्ष बच्चों के लिए काफी सार्थक, ज्ञानवर्धक और उपयोगी रचनाएँ दी हैं, और बच्चे वह सब पसंद करते हैं जो आज का पूरा परिवेश है इसमें कल्पना के स्वप्नगत और आश्चर्यगत विषयों और शैलियों से भरपूर रोचक रचनाएँ उपलब्ध हैं और उन्हें नए-नए कल्पना लोक के साथ भी उनका परिचय कराया गया है। साथ में यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि बच्चे इस रचना को पढ़ते समय यह महसूस भी करें कि उनकी तर्कशक्ति पर यह विषय और कथ्य तथा शिल्प दोनों ही खरे उतरे हैं। जहाँ ऐसी स्थिति होती है कि बच्चे की पसंद और उसकी सोच के साथ अगर रचनाकार के कथ्य और शिल्प का मेल नहीं होता है तो ऐसे हालात में बच्चे उस रचना को कम ही पसंद करते हैं। वैसे भी अगर हम देखें तो बच्चों के लिए हिंदी भाषा में रचनाओं

की हर वर्ष कमी ही रहती है क्योंकि यह देखने में अनेक वर्षों से आ रहा है कि जो पत्र पत्रिकाएँ हिंदी में बच्चों के लिए छापी जा रही हैं वे परंपरागत रूप से ही हैं और उसी रूप में छपती चली जा रही हैं। उनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं आया है और उनके जो स्तंभ हैं जिनके अंतर्गत कहानी, लघु कहानी, लघु कविता, चित्र कथाएँ आदि के माध्यम से बच्चों को कुछ नया पढ़ने और समझने के लिए देने की कोशिश नहीं करते हैं।

आज समय की माँग यह है कि तकनीकी परिवेश में बच्चों की सोच काफी परिपक्व हो गई है क्योंकि वे केवल बच्चे के मानसिक स्तर पर न रहकर, ज्ञान के स्तर पर वे बड़ों के मानसिक स्तर पर काफी हद तक आ चुके हैं। मोबाइल, लैपटाप और टीवी से मिलने वाला ज्ञान अनेक विषयों पर पिता (उसके व्यवसाय/कर्मक्षेत्र को छोड़कर) और उसके बच्चे के स्तर में कम ही अंतर पाया जा रहा है अर्थात् अब बच्चे अपने जन्म के कुछ ही वर्षों के बाद अर्ध-परिपक्व मनोदशा में आ जाते हैं। पत्रिका में छपा साँप-सीढ़ी का खेल अब उसके लिए चुनौती भरा नहीं रहा है। अब घुटनों चलने वाला बच्चा मोबाइल फोन और लैपटॉप की ओर न केवल जिज्ञासा भरी नजर से देखता है बल्कि उन तक अपनी पहुँच बनाने के लिए झपटता भी है।

बच्चों के मन और उसकी मनोदशा की स्थिति को जानने और समझने के लिए हमें कई बार बाल-मनोविज्ञान का सहारा भी लेना पड़ता है क्योंकि बच्चों के मनोविज्ञान को समझने के लिए मनोविज्ञान और साथ में उनके सामाजिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश और उनके विद्यालय के परिवेश को साथ में रखकर समग्र रूप से विचार करने की जरूरत है। आज भले ही कुछ पत्रिकाएँ, कुछ कहानी संग्रह, कुछ उपन्यास बच्चों के लिए छप रहे हैं लेकिन वे न तो उनके अर्थात् बच्चों के लिए बहुत सार्थक हैं और न ही बहुत उपयोगी। इस बात पर काफी विचार-विमर्श और चिंतन-मनन करने की आवश्यकता है क्योंकि प्राय: बच्चे अपने परिवेश से बहुत कुछ सीखते हैं और उस सीख से उनके मन में जो नया जानने की एक इच्छा और नए शब्दों और विषयों की जो संकल्पना उभरकर सामने आती है, उस संकल्पना के अनुरूप और उनके मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर उस नए साहित्य में (जो बच्चों को विभिन्न विधाओं में हिंदी भाषा में परोसा जा रहा है) वह बच्चों को मिलना चाहिए, ऐसी बच्चों की अपेक्षा रहती है और इससे एक और नई स्थिति उभरकर सामने आती है कि जब बच्चों को उच्च स्तर के विषय और साथ में उनके प्रश्नों के उत्तर तर्क संगत रूप में इन रचनाओं में मिलते हैं तो उन्हें यह उपयोगी लगते हैं, सार्थक लगते हैं और उनका रुझान इन रचनाओं के प्रति और इन रचनाओं के जो रचनाकार हैं, उनके द्वारा लिखी जाने वाली और प्रकाशित होने वाली पुस्तकों और रचनाओं का बच्चों को इंतजार रहता है। ऐसी कुछ रचनाएँ हर वर्ष देखने को मिलती हैं और बच्चों को पढ़ने को मिलती हैं। इस स्थिति को देखकर निश्चित रूप से यह उम्मीद जगती है कि हमारे बच्चों के लिए कुछ उपयोगी और उनके बाल मन और परिपक्व मन पर सार्थक प्रभाव छोड़ती हैं।

इस संदर्भ में यहाँ यह कहना भी सार्थक प्रतीत होता है कि बच्चों के लिए हिंदी में रचनाएँ रचने वाले रचनाकारों द्वारा जो रचनाएँ लिखी जा रही हैं वह काफी हद तक अपर्याप्त हैं क्योंकि बच्चों के लिए लिखने वाले रचनाकारों की संख्या कम ही है। इसका एक कारण यह भी है कि जो स्थापित बाल रचनाकार पहले से ही लगातार लिखते आ रहे हैं। उन्होंने भी समय और परिस्थितियों की माँग के साथ-साथ बच्चों की रुचि को देखते हुए रचनाओं की शैली और विषयों में परिवर्तन किए और उनकी रचनाएँ आज भी बच्चों द्वारा पढ़ी जा रही हैं लेकिन नए रचनाकार बाल साहित्य और बच्चों की रचनाएँ रचने के लिए सामने नहीं आ रहे हैं।

यह अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि नए रचनाकार इस क्षेत्र में पदार्पण नहीं कर रहे हैं। यहाँ यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि बच्चों के लिए रचना करने में और विभिन्न विधाओं में लिखने में नए रचनाकारों की रुचि नहीं बन पा रही है। यह बात सच है कि रचनाकार अपनी रचनाओं के लिए अपनी पसंद, मानसिकता और सोच के आधार पर यह तय करता है कि वह किस वर्ग

के लोगों के लिए और किस विधा में अपनी रचना करेगा, यह किसी भी रूप में ना तो निर्धारण की, स्थिति है और ना ही किसी रचनाकार को किसी खास वर्ग के लिए लिखने के लिए प्रेरित ही किया जा सकता है। यह अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है, फिर भी यह आवश्यक है कि आज इस कमी को दूर करने के लिए इस ओर सक्षम और स्थापित रचनाकार जो बच्चों के लिए लगातार लिख रहे हैं, वे नए रचनाकारों से विचार-विमर्श करके इस ओर एक सकारात्मक स्थिति पैदा कर सकते हैं।

हम अपने बच्चों को किस प्रकार की साहित्यिक दुनिया सौंपने का दंभ भर रहे हैं। वह कौन सा साहित्य है जो बच्चों को अपनी ओर लुभाने वाला है। इसमें कोई दो राय नहीं कि हम सब का बचपन कोई न कोई बाल पत्रिका को उलटते-पलटते बीता है। कभी साबू, चाचा चौधरी, कभी कोई और पत्रिका।

'रचनाकार' यूनीकोडित हिंदी की लोकप्रिय ई-पत्रिका एवं वर्ष 2019 में प्रकाशित अन्य रचनाएँ बहुत ज्ञानवर्धक हैं। इनमें संजय कुमार श्रीवास्तव की बाल-कहानी 'गरीबों की पहचान' अच्छी रचना है। डॉ. आर बी भंडारकर की रचनाओं में कविताएँ- 'सब दिन एक समान', हम अच्छे तो सब हैं अच्छे', 'आलू', शेरू' तथा बाल कहानी 'शाकाहारी' अच्छी तथा ज्ञानवर्धक रचनाएँ हैं। वीरेंद्र खरे 'अकेला' की कथात्मक बाल-कविता 'स्वच्छता' साफ सफाई के महत्व को दर्शाने वाली बालोपयोगी कविता है।

खेमकरण 'सोमन' की दस बाल कविताएँ: 1. पहेलियाँ, 2. माँ-बाप भी गरीब बेचारे, 3. अब आएँगे कल, 4.आम, 5. नाचे मन मोरा, 6. शेर सिंह का भांजा, 7. ऐसे में कैसे, 8. बनूँगा मैं अच्छा इनसान, 9. रामू, 10. मेरी कोठरी में आजा जी अच्छी रचनाएँ हैं। सार्थक देवांगन की बाल कहानी 'आलस', अहंकार का फल', हरीश कुमार 'अमित' की बाल सुलभ और सहज बाल कहानी -(मिंकी बंदर की होली) - गुडविन मसीह की दो बाल कहानी: 'शिक्षा का धन', 'दीपू ने भी खेली होली'। हरीश कुमार 'अमित की चर्चित बाल कहानी - 'यादगार होली'। ज्ञानदेव मुकेश की बाल कहानी - 'पढ़ाई की भूख' प्रेरक और प्रतिबद्धता की रचनाएँ हैं।

हरीश कुमार 'अमित' की बाल कहानी 'एम. के. सर', गुलाब चंद पटेल की बाल कहानी 'बरगद का पेड़' अच्छी, प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक रचनाएँ हैं जो बच्चों के लिए उपयोगी हैं। प्रभात गोस्वामी की बालसुलभ व्यंग्य रचना 'बिना पाँव झूठ कैसे दौड़ता है?' सुरेश सौरभ की हास्य-व्यंग्य रचना 'लाठी खाने वाले सौभाग्यशाली', पतरस बुखारी का हास्य निबंध 'अब और तब', प्रभात गोस्वामी की रचना 'लोकतंत्र की भीष्म प्रतिज्ञा' तथा उनकी व्यंग्य रचना 'चंदा रे चंदा' गुदगुदाने वाली अच्छी रचनाएँ हैं। प्रभात गोस्वामी की ही एक और व्यंग्य रचना, 'लिंचिंग बनाम पिंचिंग' अच्छी कृति है।

इनके अलावा कुछ आनलाइन तथा गैर आनलाइन बाल पत्रिकाएँ भी बच्चों के लिए उपलब्ध हैं। 'शारदायतन', अलीगढ़ (उ.प्र)- से जारी। बाल रचनाकारों की अपनी पत्रिका 'अभिनव' बालमन संपादन' : निश्चल बच्चों के लिए बेहतर प्रयास है। श्री गांधी पुस्तकालय, शाहजहाँपुर-242001 से प्रकाशित 'बालप्रभा' (वार्षिक) पत्रिका संपादन : डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' अच्छी पत्रिका है। 'बाल प्रहरी' (त्रैमासिक), संपादक- उदय किरौला, उत्ताराखंड। 'बालभारती' (मासिक), संपादक: वेदपाल एवं सीमा ओझा, नई दिल्ली। 'बालवाटिका' (मासिक), संपादक: भैरूलाल गर्ग भीलवाड़ा (राजस्थान), 'बालवाणी' (द्वैमासिक), संपादक: अनिल मिश्र, लखनऊ।

कुछ और पत्रिकाएँ जैसे 'बालहंस' (पाक्षिक), मुख्य संपादक: गुलाब कोठारी, जयपुर (राजस्थान), 'बाल बिगुल' (मासिक), संपादक - लक्ष्मण सिंह नेगी, चमोली, 'चंपक' (पाक्षिक), संपादक: परेशनाथ, नई दिल्ली, 'चकमक' (मासिक), संपादक: सुशील शुक्ल, संपर्क: एकलव्या प्रकाशन, भोपाल, 'चंदामामा' (मासिक), संपादक: प्रशांत मुलेकर, अँधेरी (ईस्ट), मुंबई, 'देवपुत्र' (मासिक), संपादक: कृष्ण कुमार अष्ठाना, इंदौर (मध्य प्रदेश), 'लोटपोट' (पाक्षिक), संपादक: प्रमोद कुमार बजाज, 'नंदन' (मासिक), संपादक शशि शेखर, कार्यकारी' संपादक: क्षमा शर्मा, 'नन्हे सम्राट' (मासिक), संपादक: आनंद दीवान, नई दिल्ली, 'सुमन सौरभ' (मासिक), संपादक: परेशनाथ, नई दिल्ली, 'स्नेह' (मासिक), संपादक: कमलाकांत

अग्रवाल, भोपाल। 'टाबर टोली' (पाक्षिक), संपादक: दीनदयाल शर्मा, हनुमानगढ़ - 335512 ((राजस्थान) आदि बालोपयोगी उपयुक्त रचनाएँ हैं।

वर्ष 2019 में प्रकाशित अन्य हिंदी बाल पत्रिकाएँ

'चाचा चौधरी', 'हँसती दुनिया', 'विज्ञान प्रगति', 'बच्चों का देश', 'बाल प्रहरी', 'बाल भास्कर', 'बालवाणी' आदि के विभिन्न अंकों में उपयोगी सामग्री बच्चों को पढ़ने को मिली है। इन पत्रिकाओं की संपादन योजना के अनुसार विभिन्न स्तंभों के अंतर्गत अलग-अलग विधाओं में ज्ञानवर्धक, मनोरंजक तथा दिमागी कसरत, समस्या समाधान के लिए प्रश्नों के माध्यम से बच्चों के मानसिक विकास के लिए पर्याप्त रचनाएँ वर्षभर प्रकाशित की गई हैं। स्कूली किताबों को पीछे धकियाते हुए बच्चों को ये पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए उपलब्ध रहीं हैं। वहीं आज हमारे बच्चे टैबलेट, मोबाइल फोन में स्क्रीन को सरकाते खेल में अपना वक्त गुजार रहे हैं। इन ऑनलाइन व स्मार्ट फोन में कैद गेम्स में बच्चों की सृजनात्मकता कितनी बढ़ती है, मालूम नहीं किंतु हमारे बच्चे हिंसक जरूर हो रहे हैं। उन्हें यदि फोन न मिले तो आसमान सिर पर उठा लेते हैं। उनके हाथों में किताबें होनी थीं लेकिन गैजेट्स की इतनी लत लग चुकी है कि किताबों को महज अपने स्कूली बैगों में कैद रखा करते हैं।

बाल पत्रिकाओं का सफल प्रकाशन किया जा रहा है। कम संसाधनों में ही सही किंतु बाल साहित्य में अपनी भूमिका और जिम्मेदारी तय कर रहे हैं। एक ओर हमारा ध्यान कौशल विकास की ओर है वहीं दूसरी ओर हमारे बच्चे बिना बेहतर बाल साहित्य के पढ़ रहे हैं। बाल साहित्य सृजन में लगे कुछेक लोगों के कामों को जब नजरअंदाज किया जाता है तब एक टीस उठती है कि कम से कम इनके कामों की सराहना तो की जाए।

हरिकृष्ण देवसरे, विभा देवसरे, दिविक रमेश, रमेश तैलंग, शेरजंग गर्ग, पंकज चतुर्वेदी, बलराम अग्रवाल, मनोहर चमोली, महेश पुनेठा, प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा, देवेंद्र मेवाडी जैसे लोग तमाम उपेक्षाओं के बावजूद बाल साहित्य सृजन में लगे हुए हैं। इन पंक्तियों के लेखक से प्रसिद्ध शिक्षाविद् और लेखक कृष्ण कुमार ने तकरीबन बीस वर्ष पहले कहा था कि बाल लेखन क्षेत्र में सूखा पसरा है। कोई इस क्षेत्र में आना चाहता है तो उसे कम से कम अपनी पहचान बनाने में बीस वर्ष तो लग ही जाते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में बहुत कम लेखक आना चाहते हैं। ज्यादा लेखक जल्दी प्रसिद्ध होना चाहते हैं किंतु बच्चों की दुनिया में उतनी तेजी से प्रसिद्धि नहीं मिलती। दम साधकर जिसने भी समय दिया है उसकी पहचान तय है। शायद यही कारण है कि वयस्कों की दुनिया को लुभाने के लिए रोज कविताएँ, कहानी, उपन्यास आदि की रचना तो होती है लेकिन बाल कहानियाँ, कविताएँ आदि कम ही लिखी जाती हैं। जो लिखी जाती हैं उन्हें प्रकाश में लाने के प्रयास शिद्दत से नहीं किए जाते हैं।

कुछ बाल पत्रिकाओं के बारे में जान लेने में कोई हर्ज नहीं है। इन पत्रिकाओं को कुछेक पाठक वर्ग तक सीमित कर देना कहीं न कहीं बाल साहित्य को कमतर करके आँकना है। 'देवपुत्र', इंदौर से निकलने वाली इस पत्रिका को देखना पढ़ना दिलचस्प है। वहीं 'आविष्कार' पत्रिका पूरी तरह से विज्ञान की समझ और तर्कशीलता को बढ़ावा देने वाली बाल पत्रिका है। दिल्ली से निकलने वाली यह पत्रिका 'प्लूटो', अपनी चित्रात्मकता और कंटेट के लिए खासी प्रसिद्ध है। 'स्नेह यूँ' तो भोपाल से निकलती है लेकिन यह देशभर में पढ़ी जाने वाली पत्रिका है। 'उजाला', 'इंडिया लिटरेसी बोर्ड' लखनऊ से प्रकाशित होती है। यह पत्रिका खासकर नवाक्षरों और ताजा-ताजा अक्षर पढ़ने वाले पाठकों के लिए है। 'बाल किलकारी', पटना से निकलने वाली बाल पत्रिका है जो बिहार तो बिहार पूरे राज्य से बाहर निकलकर अपने कंटेंट के लिए जानी जाती है। वहीं 'बाल साहित्य की धरती', ऊधमसिंह नगर, उत्तराखंड़ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका अपने नए मिजाज के लिए बच्चों में लोकप्रिय है। 'चकमक', भोपाल से प्रकाशित बाल पत्रिका अपने नवाचार और नए-नए आलेखों, चित्रों आदि के लिए दिलचस्पी से पढ़ी जाती है। वहीं लखनऊ से प्रकाशित होने वाली 'प्रारंभ' पत्रिका बाल साहित्य के सरोकारों को शिद्दत से उठाती है। ये बातें कुछ उन

बाल पत्रिकाओं के बारे में थी जो किसी न किसी माध्यम से हमारे बीच आने में सफल हो पाती हैं। वहीं कुछ ऐसी भी बाल पत्रिकाएँ हैं जो अपनी चौहद्दी नहीं पार कर पातीं। किंतु स्थानीय स्तर पर ही सही लेकिन बच्चों और वयस्कों में पढ़ी जाती हैं।

बहुत तेजी से बदलते परिवेश में इतना ही विनम्र निवेदन है कि बालपन, बचपन को प्रफुल्लित, प्रमुदित और सहज विकसित होने देने की ऊर्जा देने के उद्देश्य से बाल साहित्य को बचाने में लेखकों, संपादकों, पत्रकारों और कवियों आदि को और भी आगे आना होगा। नहीं तो एक वक्त ऐसा भी आने वाला है जब बच्चा बड़ा होकर प्रेमचंद से निकलकर किसी और लेखक को पहचान तक न पाए। बाल साहित्य को इसलिए भी बचाने और संजोने तथा बच्चों तक पहुँचाने की आज और भी अधिक आवश्यकता है क्योंकि इनमें न केवल कल्पनालोक सुरक्षित रहता है बल्कि इन्हें पढ़ने से बच्चों की दुनिया सृजनमना रहती है और उनके तर्कपूर्ण चिंतन को बढ़ावा मिलता है।

– एम-401, अजनारा लेंडमार्क, सेक्टर-4, वैशाली, ग़ाज़ियाबाद- 201010

❑❑❑

28

हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य

डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त

भाषाविज्ञान के अंतर्गत भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास आदि का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। भाषा के दस्तावेजीकरण तथा विवेचन का सबसे प्राचीन कार्य छठी शताब्दी के महान भारतीय वैयाकरण पाणिनि ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टाध्यायी में किया है। भाषाविज्ञान व्याकरण से भिन्न है। व्याकरण में किसी भाषा का कार्यात्मक अध्ययन किया जाता है। जबकि भाषाविज्ञानी इसके आगे जाकर भाषा का अत्यंत व्यापक अध्ययन करता है। अध्ययन के विभिन्न विषयों में भाषाविज्ञान आधुनिक युग का सर्वाधिक चर्चित, नवीन तथा समाज, संस्कृति, साहित्य, इतिहास और भूगोल आदि की दृष्टि से सर्वथा उपयोगी विषय क्षेत्र है।

19वीं शताब्दी तक व्याकरण तथा भाषा विषयक अध्ययन को प्राय: एक ही समझा जाता था। अत: विद्वानों ने इसे कम्परेटिव ग्रामर नाम भी दिया। फ्रांस में इसको लैंगिस्तीक (लिंग्विस्टिक) कहा गया। फ्रांस में भाषा संबंधी कार्य अधिक होने के कारण 19वीं शताब्दी में संपूर्ण यूरोप में ही लिंग्विस्टिक अथवा लिंग्विस्टिक्स नाम ही प्रचलित रहा। इसके अतिरिक्त साइंस ऑफ लैंग्वेज, ग्लौटोलोजी आदि नाम भी दिए गए। आज लिंग्विस्टिक्स अथवा फिलोलॉजी नाम ही प्रयोग में लाए जाते हैं।

भारतवर्ष में इन यूरोपीय नामों के अतिरिक्त भाषा शास्त्र, भाषाविज्ञान तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान आदि नाम भी प्रचलित हैं। यद्यपि भाषाविज्ञान नाम सर्वाधिक प्रयुक्त है क्योंकि इस नाम में प्राचीन तथा नवीन नाम रूप गुण एवं विषय व्यापकता का समाहार-सा प्रतीत होता है। एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापना के साथ ही इसके अंतर्गत अनेक अध्ययन क्षेत्रों का समावेश भी होता गया। कारण यह है कि मानव की भाषा का जो-जो क्षेत्र है वही भाषाविज्ञान का भी क्षेत्र है। भाषा एक व्यावहारिक विषय है अत: भाषाविज्ञान का भी व्यावहारिक पक्ष अधिक प्रखर एवं महत्वपूर्ण हो जाता है। इस व्यावहारिक पक्ष को अनुप्रयुक्त रूप कहते हैं। अत: भाषाविज्ञान का अनुप्रयुक्त रूप अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान कहलाता है। इसका संबंध व्यावहारिक क्षेत्रों में भाषाविज्ञान के अध्ययन के विविध उपयोग से है। 'भाषाविज्ञान' का सर्वाधिक उपयोग भाषा शिक्षण आशुलिपि की व्यवस्थित पद्धति के निर्माण में, टाइपराइटर के कीबोर्ड की क्रम व्यवस्था में, स्वचालित या यांत्रिक अनुवाद में, सूचना प्रौद्योगिकी में तथा इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटरों की सहायता से अनुवाद करने में और ऐसे ही अनेक व्यावहारिक क्षेत्रों में भाषाविज्ञान का प्रयोग होता है।

भाषा के वर्तमान प्रचलित स्वरूप को छोड़ दें तो शेष संपूर्ण अध्ययन सामग्री भाषाविज्ञान को साहित्य से ही उपलब्ध होती है। हम संस्कृत ग्रीक अवेस्ता आदि भाषाओं के साहित्य को देखकर ही यह जान जाते हैं कि यह तीनों भाषाएँ किसी एक मूल भाषा

से ही निकली हैं। इसी प्रकार आदिकाल से लेकर आधुनिककाल तक के हिंदी साहित्य के आधार पर ही हम भाषाविज्ञान के द्वारा हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन कर पाते हैं। किसी भी प्रकार से भाषा का अध्ययन करने के लिए भाषाविज्ञान को हर कदम पर साहित्य की सहायता लेनी ही पड़ती है। साहित्य भी भाषाविज्ञान की सहायता से अपनी अनेक समस्याओं का समाधान खोजने में सफल हो जाता है। जायसी कृत पद्मावत, तुलसीकृत रामचरितमानस तथा अन्य अनेक प्राचीन से अर्वाचीन साहित्य का अनुशीलन भाषाविदों एवं अन्य विद्वानों ने भाषाविज्ञान की सहायता से ही किया है। ध्वनि, शब्द, रूप वाक्य, अर्थ आदि भाषिक तत्व का विवेचन विश्लेषण भाषाविज्ञान की सहायता से ही संभव है। अत: साहित्य और भाषाविज्ञान अन्योन्याश्रित हैं। भाषा, साहित्य और भाषाविज्ञान के सम्मिश्रित अध्ययन लेखन की निष्णात परंपरा नित नवीन रूपों में हमारे समक्ष प्रस्तुत होती रही है। इसी क्रम में 2019 में प्रकाशित हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य निम्नवत है। अनेक नवीन पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही कई पूर्व प्रकाशित पुस्तकों का नवीनीकरण भी हुआ है। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी प्रकाशित हुए हैं।

लेकिन वर्ष 2018 से ही वीडियो के द्वारा पढ़ाई करने कराने का क्रम शुरू हो गया था। अब इस पद्धति का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। 7 सितंबर 2019 का एक वीडियो भाषाविज्ञान की दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कारण यह कि भाषाविज्ञान एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थी के लिए अन्य विषयों की तुलना में कुछ तकनीकी दुरूह और गंभीर होता है। वर्तमान में परीक्षा प्रणाली भी ऑब्जेक्टिव अधिक हो गई है। इसका लाभ यह है कि इसमें पूरे पाठ्यक्रम को कवर करने का अवसर अधिक होता है और विद्यार्थी को पूरा सिलेबस पढ़ना पड़ता है। प्रश्न के चार विकल्प होते हैं। उनमें से एक सही उत्तर छाँटकर टिक करना होता है। जितने सही उत्तर होंगे उनका नंबर तुरंत काउंट हो सकता है। यह पद्धति अधिक व्यावहारिक होती है। उपर्युक्त उल्लिखित यूट्यूब वीडियो में पीजीटी और टीजीटी के लिए भाषाविज्ञान में ऑब्जेक्टिव प्रश्नों के द्वारा भाषाविज्ञान के व्यापक ज्ञान को समाहित किया गया है जैसे-टकसाली भाषा क्या है?

देवनागरी लिपि का पहला प्रयोग कहाँ हुआ? अल्पप्राण ध्वनियाँ किसे कहते हैं? रोमन लिपि का सुझाव किसने दिया? देवनागरी लिपि का विकास किस लिपि से हुआ? शब्दानुशासन के रचनाकार कौन हैं? ग्रिम नियम का संबंध किस भाषिक तत्व से है? पारिवारिक वर्गीकरण का आधार क्या है? इत्यादि ऐसे अनेक प्रश्न और उनके विकल्पों के द्वारा भाषाविज्ञान के विविध पक्षों को स्पष्ट रूप से बताने की दिशा में यूट्यूब वीडियो एक प्रगतिशील तथा आधुनिक शिक्षा पद्धति है। भाषाविज्ञान की परिभाषा, अंग, महत्व और उपयोगिता पर चंद्र देव त्रिपाठी अतुल की तीन टिप्पणियाँ ब्लॉग के रूप में प्रकाशित हुई हैं। त्रिपाठी जी श्रीमंत परमहंस संस्कृत महाविद्यालय टीकरमाफी में हिंदी प्रवक्ता हैं। संस्कृत महाविद्यालय की पुस्तकें वाराणसी के अतिरिक्त अन्यत्र बहुत कम मिलती हैं। सूचना क्रांति के प्रसार के चलते अब पठन-पाठन के साधन में भी बदलाव आ रहा है। इंटरनेट के इस युग में ई-लर्निंग एक महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है। अत: ब्लॉग लेखन भी एक महत्वपूर्ण विधा बन गई है जो किताबों का भी विकल्प है। अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा का पूरा हिंदी एम ए पाठ्यक्रम और पुस्तकें ऑनलाइन ही अपलोडेड रहती हैं इसके अंतर्गत ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान आदि का व्यापक विवेचन विश्लेषण किया गया है। शैली विज्ञान, भाषिक भूगोल, भू भाषाविज्ञान, समाज भाषाविज्ञान तथा मनोभाषाविज्ञान जैसे गंभीर विषयों पर भी ऑनलाइन स्टडी मैटेरियल कई विश्वविद्यालय और महाविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया है। ई-पुस्तकालय के रूप में हिंदी साहित्य संसार नई सड़क, दिल्ली द्वारा प्रोफेसर भारत भूषण सरोज एवं श्रीमती सरोज वर्मा की पुस्तक भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा का इतिहास (प्रश्नोत्तर रूप में) प्रकाशित की गई है। इसी प्रकार भारत भूषण की ही 'आधुनिक भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा संवर्धन', 'हिंदी का सरल भाषाविज्ञान', 'हिंदी भाषा का संक्षिप्त इतिहास' आदि पुस्तकें भी ई-बुक के रूप में प्रकाशित हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी

की पुस्तकें 'भाषाविज्ञान', 'शब्द विज्ञान चित्रमय बाल कोश', 'शब्दों का अध्ययन काव्यानुवाद की समस्याएँ', 'शब्दों का जीवन', 'अनुवाद विज्ञान' आदि पुस्तकें किताब महल की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसी प्रकार यूनियन पीडिया एक विश्वकोश या शब्दकोश की तरह आयोजित एक अवधारणा या नेटवर्क है। यह प्रत्येक अवधारणा और अपने संबंधों की एक संक्षिप्त परिभाषा देता है। यह एक क्रिएटिव कॉमन्स रोपण अलाइक लाइसेंस के तहत उपलब्ध है। इसके द्वारा भोलानाथ तिवारी और पारिभाषिक शब्दावली, भोलानाथ तिवारी और प्लेटो, भोलानाथ तिवारी और भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी और भाषाविज्ञान का इतिहास, भोलानाथ तिवारी और रूपिम, भोलानाथ तिवारी और स्वनिक परिवर्तन, भोलानाथ तिवारी और हिंदी पुस्तकों की सूची, भोलानाथ तिवारी और अरस्तू आदि का विवरण एवं विश्लेषण देखा जा सकता है। इनकी पुस्तकें यूट्यूब पर भी उपलब्ध हैं। हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित नए संस्करण में बाबूराम सक्सेना की पुस्तक 'सामान्य भाषाविज्ञान', साहित्य रत्नालय द्वारा प्रकाशित सुधाकर शंकर कलवडे की पुस्तक 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा', परिचय प्रकाशन द्वारा नारायण दास की पुस्तक 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा', मीनाक्षी प्रकाशन द्वारा द्वारिका प्रसाद सक्सेना की पुस्तक 'भाषाविज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा', हिंदी बुक सेंटर द्वारा अशोक के शाह प्रतीक की पुस्तक 'सरल भाषाविज्ञान', सस्ता साहित्य भंडार द्वारा रणजीत शर्मा की पुस्तक 'शब्दों का व्युत्पत्ति मूलक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन', हिंदी प्रचारक संस्था द्वारा सतीश कुमार रोहरा की पुस्तक 'भाषा एवं हिंदी भाषा', नेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा कृपाशंकर सिन्हा की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान', ग्रंथायन प्रकाशन द्वारा केशव दत्त रूबाली की पुस्तक 'हिंदी भाषा और नागरी लिपि', नेशनल पब्लिशिंग हाउस द्वारा महेंद्र चतुर्वेदी और भोलानाथ तिवारी की पुस्तक 'व्यावहारिक हिंदी अंग्रेजी कोश', डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा गिरिराज सरन अग्रवाल और बलजीत सिंह की 'हिंदी इंग्लिश डिक्शनरी', वाणी प्रकाशन द्वारा प्रेम प्रकाश रस्तोगी की पुस्तक 'हिंदी भाषा उद्भव और विकास', अशोक प्रकाशन द्वारा देवदत्त कौशिक की पुस्तक 'भाषाविज्ञान', लिपि प्रकाशन द्वारा शंकरदेव अवतरे की पुस्तक 'काव्यांग प्रक्रिया', हिंदी साहित्य संसार द्वारा मनमोहन गौतम की पुस्तक 'सरल भाषाविज्ञान', विनोद पुस्तक मंदिर द्वारा राजकिशोर सिन्हा की पुस्तक 'संस्कृत भाषाविज्ञान', वाणी प्रकाशन द्वारा राजमणि शर्मा की पुस्तक 'आधुनिक भाषाविज्ञान', विनोद पुस्तक मंदिर द्वारा गुनन्दा जुयाला की पुस्तक 'हिंदी भाषा का उद्भव और विकास', बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा रामदेव त्रिपाठी की पुस्तक 'भाषाविज्ञान की भारतीय परंपरा' और 'पाणिनि' आदि पुस्तकों में अधिकांश का नया संस्करण और कुछ नवीन प्रकाशन भी हुआ है। कुछ प्रकाशन और पुस्तकें किन्हीं कारणों से प्रकाश में नहीं आ पाती अतः भाषाविज्ञान जैसे नवीन और वैज्ञानिक विषय के संदर्भ में उनका भी उल्लेख यहाँ कर दिया गया है ताकि लोगों को जानकारी हो। साथ ही ई-बुक के रूप में उपलब्ध होना भी उनका नवीनीकरण ही है।

यह आधुनिकता की माँग है। वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा डॉ. श्रावणी भट्टाचार्य की पुस्तक 'हिंदी भाषाः दक्षिण भारत में हिंदी', प्रो. नरेश मिश्र की पुस्तक 'मानक हिंदी और हरियाणवी का व्यतिरेकी अध्ययन', डॉ. सुरेंद्र गंभीर की पुस्तक 'भाषा चिंतन हिंदी', अरुण कुमार की पुस्तक 'हिंदी साहित्य परंपरा और प्रयोग' तथा 'ग्रियर्सनः भाषा और साहित्य चिंतन' का प्रकाशन हुआ। साहित्य संगम प्रकाशन इलाहाबाद द्वारा डॉ. मंजू यादव की पुस्तक 'महाकवि देव की काव्य भाषा' का प्रकाशन हुआ। राजपाल एंड संस प्रकाशन दिल्ली द्वारा डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा संपादित 'शब्दकोशों का नवीन संस्करण' प्रकाशित हुआ जिनमें शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, संक्षिप्त हिंदी शब्दकोश, पॉकेट हिंदी शब्दकोश प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त अर्थशास्त्र शब्दकोश, अंग्रेजी-हिंदी समानार्थी शब्दकोश, शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश, बृहत शिक्षार्थी हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश,अंग्रेजी-हिंदी पारिभाषिक शब्दकोश, शब्द परिवार कोश, व्यावहारिक हिंदी शुद्ध प्रयोग, संस्कृत स्वयं शिक्षक शब्दार्थ-विचार कोश, हिंदी-अंग्रेजी थिसॉरस, राजभाषा प्रयोग कोश, मुहावरा कोश, सुभाषित कोश, कहावत कोश, लोकोक्ति

कोश, उर्दू-हिंदी शब्दकोश, विद्यार्थी हिंदी शब्दकोश आदि का प्रकाशन भी हुआ। उपर्युक्त शब्दकोशों के संपादन में डॉ. बद्रीनाथ कपूर, डॉ. ए के शोरी, डॉ. ओम प्रकाश, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, आचार्य रामचंद्र वर्मा, गोपीनाथ श्रीवास्तव, हरिवंश राय शर्मा, समर सिंह, डॉ. सैयद असद अली के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के कई महत्वपूर्ण लेख अनुवाद तथा स्वतंत्र पुस्तकें आदि प्रकाशित हुईं जिनमें विकल्प प्रकाशन दिल्ली द्वारा जॉर्ज बर्नार्ड शा के नाटक 'द एप्पल कार्ट' का अनुवाद पासा पलट गया, 'गरिमा हिंदी व्याकरण', 'आलोचना के प्रतिमान' और 'नई समीक्षा' (संपादित) पुस्तकें प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राजभाषा भारती के जुलाई-दिसंबर 2019 के अंक में राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रभाषा तथा पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल कनाडा के प्रवासी विशेषांक अक्तूबर-दिसंबर 2019 के अंक में प्रकाशित प्रवासी हिंदी साहित्य अस्मिता का प्रश्न विषयक लेख महत्वपूर्ण है। किताबघर प्रकाशन दिल्ली द्वारा जयंती प्रसाद नौटियाल की पुस्तक 'बैंकों में द्विभाषी कम्प्यूटरीकरण दशा और दिशा', भोलानाथ तिवारी की पुस्तक 'अनुवाद विज्ञान' सिद्धांत और प्रविधि (नया संस्करण), 'अनुवाद विज्ञान' (नया संस्करण), 'भाषाविज्ञान प्रवेश एवं हिंदी भाषा' (नया संस्करण), पूरन चंद टंडन और विनीता कुमारी की पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास', पूरन चंद टंडन और मुनीष शर्मा की पुस्तक 'वस्तुनिष्ठ हिंदी' का प्रकाशन 2019 में हुआ।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा 'भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा का नया संस्करण' 2019 में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त 'भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा का समाजशास्त्र' का प्रकाशन हुआ। हिंदी भाषा में दक्षता पाठ्यक्रम 2019-20 के अंतर्गत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा में भाषा प्रौद्योगिकी के सहायक प्रोफेसर डॉ. धनजी प्रसाद का एक महत्वपूर्ण ऑनलाइन पोस्ट प्रकाश में आया है जिसमें उन्होंने भाषा की आधारभूत मान्यताएँ, भाषा की अवधारणा, भाषा के रूप, हिंदी भाषा का उच्चारण एवं ध्वनि व्यवस्था, वाचन अभ्यास, हिंदी भाषा का मानकीकरण, हिंदी वर्तनी, हिंदी शब्द निर्माण, वाक्य रचना, औपचारिक पत्राचार एवं लेखन, प्रेस विज्ञप्ति, विज्ञापन लेखन आदि के संबंध में सम्यक विवेचना प्रस्तुत की है। 2019 में भारतीय भाषा परिषद कोलकाता द्वारा 'हिंदी साहित्य ज्ञानकोष' का प्रकाशन हुआ। यह हिंदी साहित्य एवं उससे संबंधित विविध विषयों का विश्वकोश (एन साइक्लोपीडिया) है। सात भागों में प्रकाशित इस कोश के प्रधान संपादक शंभूनाथ हैं। इसमें अनेक लेखकों का सहयोग प्राप्त है। अप्रैल 2014 से इस पर काम हो रहा था। इसके संपादक मंडल में राधावल्लभ त्रिपाठी, जबरी मल्ल पारख, अवधेश प्रधान, अवधेश कुमार सिंह तथा अवधेश प्रसाद सिंह सम्मिलित हैं। इसके भाषा-संपादन का कार्य राजकिशोर ने किया है। इस कार्य का संयोजन कुसुम खेमानी द्वारा हुआ है।

शिवना प्रकाशन के अंतर्गत सुधा ओम ढींगरा एवं संपादक पंकज सुधीर के संपादन में वैश्विक हिंदी चिंतन की अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका 'विभोम स्वर' (त्रैमासिक) के अक्तूबर-दिसंबर 2019 के अंक के वेब संस्करण में मंशायाद की कहानी 'अपना घर' का अनुवाद 'शहादत' प्रकाशित हुआ। अनुवाद मोहिनुद्दीन ने किया। इसके अतिरिक्त संजय द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत अनुवाद कार्यशाला एवं हिंदी दिवस समारोह का समाचार सार प्रकाशित हुआ। अनुवाद, भाषाविज्ञान की एक व्यावहारिक विधा है। अतः अनुवाद विषयक साहित्य अथवा कार्यशाला आदि का अपना अलग महत्व है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस से अनेक हिंदी ई-पत्रिकाएँ प्रकाशित हैं जो हिंदी भाषा एवं साहित्य से बहुविध जुड़ी हैं यथा 'सिंगापुर संगम', 'अनुभूति', 'अनुरोध', 'हिंदी नेस्ट', 'अभिव्यक्ति', 'पुस्तक भारती रिसर्च जर्नल', 'भारत सौरभ पत्रिका', 'गीत पहल', 'भारत दर्शन', 'शब्दांकन', 'सृजन गाथा', 'स्वर्ग विभा', 'पूर्वाभास', 'साहित्य कुंज', 'समयांतर', 'हिंदी चेतना' और 'गर्भनाल' ऐसी कुल 17 ई-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं।

विदेशों में बसे भारतीय भारत की मिट्टी से जुड़े रहने के लिए अपनी भाषा में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। हिंदी में भिन्न-भिन्न देशों से निकलने वाली

विविध पत्रिकाएँ इसका प्रमाण हैं यथा- न्यूजीलैंड से प्रकाशित, 'भारत दर्शन', कनाडा से 'सरस्वती', यूके से 'हेल्म' और 'क्षितिज', अमरीका स्थित भारत के मित्रों द्वारा प्रकाशित 'कर्मभूमि (त्रैमासिक) हिंदी जगत', 'ई-विश्वा' (त्रैमासिक, अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति सेलम) 'प्रवासी टुडे', (अक्षरम नामक अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था की पत्रिका) 'पुरवाई' आदि। ये सभी पत्रिकाएँ भाषा और साहित्य से जुड़ी हैं जिनमें अनेक बहुविध भाषिक सामग्री प्रकाशित होती है। वास्तव में हिंदी जन-जन की भाषा है। हिंदी ने सार्वदेशिकता और सार्वभौमिकता के कारण विश्व पटल पर अपना स्थान बनाया है। हिंदी भाषाविज्ञान साहित्य के रूप में हिंदी, भाषाविज्ञान और साहित्य की समावेशी विधा है जो भाषा के अनेक व्यावहारिक रूपों में अभिव्यक्त होती है।

– फ्लैट नं.-212, ब्लॉक-आई सिलवर लाइन अपार्टमेंट (बी.बी.डी.), फैजाबाद रोड, लखनऊ-226028

❑❑❑

29

हिंदी विज्ञान साहित्य

डॉ. शिवगोपाल मिश्र
बलराम यादव

वर्ष 2019 का प्रारंभ जहाँ 'गंगातट' पर लगने वाले 'प्रयागराज संगम' के भव्य 'कुंभ' आयोजन से प्रारंभ हुआ वहीं 'विज्ञान' जगत में भी वर्ष 2019 कम कौतूहलपूर्ण नहीं रहा। मिशन चंद्रयान-2 की सफलता से मात्र दो कदम पीछे रह जाने से देश के आम नागरिक को गर्व एवं वैज्ञानिकों को पूर्ण सफलता के लिए फिर से प्रयास करने की तरफ अग्रसर होना देश के लिए गौरव की बात है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दी। साथ ही 'मेक इन इंडिया' और 'मेड इन इंडिया' की सफलता हेतु वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं बुद्धिजीवियों को और तेजी से वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवाचार करने की सलाह दी।

राष्ट्रभाषा हिंदी को 'विज्ञान साहित्य' ने समुन्नत बनाया है, आज हिंदी में प्रचुर मात्रा में 'विज्ञान साहित्य' लिखा-पढ़ा जा रहा है। 'विज्ञान शब्दावली कोश', 'विज्ञान परिभाषा कोश' के साथ-साथ 'विज्ञान' विषयक सामग्री साहित्य की विविध विधाओं में लगातार प्रकाशित हो रही है। इसी प्रकाशित सामग्री को हम वार्षिकी 2019 में प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगें। ज्ञानपिपासु पाठकों की सुविधा के लिए वर्ष 2019 के विज्ञान लेखन की सुविधा के लिए वर्ष 2019 के विज्ञान लेखन का विवरण निम्नांकित खंडों में प्रस्तुत किया जा रहा है-

1. प्रकाशित पुस्तकें (अनूदित पुस्तकें भी)
2. विज्ञान पत्रिकाएँ
3. वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ और सेमिनार
4. वैज्ञानिक सम्मान/पुरस्कार
5. क्षतियाँ/निधन

प्रकाशित पुस्तकें

राष्ट्रभाषा हिंदी में विज्ञान लेखन की परंपरा की जो नींव 20वीं शताब्दी में पड़ी थी, वह आज इक्कीसवीं सदी में अपना पूर्ण विस्तार ले चुकी है, इस शताब्दी के विगत दो दशकों से जो नवीन ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी का विस्तार हुआ, उसे हिंदी में 'विज्ञान' के सामान्य से गूढ़ विषयों तक का ज्ञान आमजन तक पहुँचाने का भगीरथ प्रयास हुआ।

1.'भारत के गौरवशाली अंतरिक्ष अभियान- लेखक- विजय चितौरी, प्रकाशक- अनंत प्रकाशन, नई दिल्ली-110086

भारत की अंतरिक्ष संबंधी गतिविधियों की संक्षिप्त और संपूर्ण जानकारी समेटे यह पुस्तक चितौरी जी की वैज्ञानिक जानकारियों को पठनीय बनाने की कला को उजागर करती है। इस पुस्तक को मात्र आठ अध्यायों और सात परिशिष्टों में न केवल भारतीय अपितु विश्व के प्राय: सभी अंतरिक्ष अभियानों के विषय में 224 पृष्ठों के विस्तार में संपूर्ण जानकारियों को समेट दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में समाहित सामग्री प्रकरणों के नाम से ही स्पष्ट है। यथा- भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रम: उद्‌भव एवं विकास, स्वदेशी राकेट प्रौद्‌योगिकी: शून्य से शिखर तक, स्वदेशी उपग्रह और उपग्रह शृंखलाएँ, गौरवशाली चंद्र मिशन और मंगल मिशन, हमारी भावी अंतरिक्ष योजनाएँ, हमारे जीवन में अंतरिक्ष प्रौद्‌योगिकी, हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिक एवं विश्व के ऐतिहासिक अंतरिक्ष अभियान।

पुस्तक में लेखक ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धियों की संक्षिप्त रूपरेखा देते हुए 1962 से 2017 तक विस्तृत समयावधि के 40 प्रकरणों का तिथि सहित विवरण दिया है। इसमें प्राय: परीक्षणों, परीक्षण स्थलों, उपग्रहों के नाम और स्वदेशी अंतरिक्ष इतिहास के गौरव को भी अंकित किया है। पुस्तक में विवरणों को अधिक ग्राह्य और सटीक बनाने के लिए हर संदर्भ से जुड़े चित्र और सारणियाँ दी गई हैं। यद्‌यपि सभी चित्र श्वेत श्याम हैं किंतु सब स्पष्ट हैं।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है कि भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों- डॉ. विक्रमसाराभाई, प्रो. शतीश धवन, डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, डॉ. ब्रह्मप्रकाश, डॉ. बसंत गोविकर, प्रो. यू.आर. राव, डी.के. कस्तूरीरंगन तथा डी. के राधाकृष्णन का जीवन परिचय भी दिया गया है। भारतीय अंतरिक्ष अभियान के वर्णन में गैर भारतीय विश्वविख्यात अंतरिक्ष वैज्ञानिकों केपलर, न्यूटन, कीसैटिन, सिवोल्कोस्की आदि 19 लोगों का विवरण भी संगृहीत है। पुस्तक शोधार्थियों एवं जिज्ञासु पाठकों व बच्चों का ज्ञानवर्धन करने में सफल होगी।

2. 'विश्व के प्रसिद्‌ध बीजगणितज्ञ', लेखक-महेश दूबे। प्रकाशक-निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली-110070

भारत के महान गणितज्ञों आर्यभट्‌ट, श्री धराचार्य तथा महावीराचार्य के तेजस्वी गणितीय काल (5वीं से छठी शताब्दी) से पूर्व प्रसिद्‌ध मूतानी गणतीय संस्कृति का अवसान हो चुका था। समस्त यूरोप उस समय ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से अंधकार में था। ईसा की 5वीं से 13वीं शताब्दी तक गणित का विकास मुख्यत: एशियाई देशों में ही हुआ। एशियाई देशों में परस्पर व्यावहारिक गतिविधियों के साथ-साथ परस्पर ज्ञान का भी विनिमय हो रहा था। ग्यारहवीं और 12वीं सदी में अरबी विज्ञान द्‌वारा यूरोप में ज्ञान-विज्ञान और गणित की ज्योति पुनर्प्रज्वलित हुई। यह जागृति इटली से शुरू हुई और पीसा के लियोनार्डो फिबोनाची बारहवीं शताब्दी के अंत में यूरोप के सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ हुए। आगे यह गणितीय विकास यूरोप की बौद्‌धिक एवं वैज्ञानिक चेतना के साथ द्रुत गति से विकसित हुई। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत पुस्तक के विद्‌वान लेखक ने प्रखर गणितज्ञों का काल यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड से प्रारंभ किया है। यूक्लिड और पाइथागोरस विख्यात ज्यामितज्ञ थे। इनके पहले ही भारतवर्ष में बोधायन आदि शुल्व सूत्रों के माध्यम से बीजगणितीय समस्याओं का हल निकालते रहे, ऐसे में यह स्थापना कुछ विचारणीय है।

पुस्तक में ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के महान गणितज्ञ यूक्लिड से आरंभ करके आर्यभट्‌ट आदि भारतीय बीजगणितज्ञों का गौरवपूर्ण विवरण देते हुए बीसवीं शताब्दी के मूर्धन्य बीजगणितज्ञों आंद्रे वायल, नाथ जेकाब्सन तथा सर्वदमन चावला तक के कार्यों, उपलब्धियों एवं जीवन का परिचय दिया गया है। पुस्तक के अंत में 31 संदर्भ ग्रंथों की एक उपादेय सूची भी दी गई है।

पुस्तक अपनी विषय सामग्री और लेखकीय क्षमता के प्रभाव के कारण गणित के इतिहास में रुचि रखने वालों एवं गणित के शोधार्थियों एवं विद्‌यार्थियों के लिए उपयोगी होगी।

3. 'अद्‌भुत जीवन विलक्षण गणित', लेखक-महेश दुबे। प्रकाशक-निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली-110070

यह पुस्तक लेखक की 'गणित के इतिहास' से संबंधित दूसरी पुस्तक है। लेखक द्‌वारा एतद्‌विषयक- 'विश्व के प्रसिद्‌ध बीजगणितज्ञ' बीजगणित से संबंधित गणितज्ञों को केंद्रस्थ करके लिखी गई थी। उस पुस्तक को लिखते समय लेखक के मन में उठने वाले रचनात्मक विचार और प्रस्तुतिकरण की योजना इस पुस्तक में सुधार ढंग से मुखरित हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक 13 अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय अपने-आप में स्वतंत्र लेख जैसे हैं। लेखों के क्रम स्थापन में कालक्रम की अनदेखी की गई है। प्रत्येक लेख की अपनी उत्कृष्टता पाठक को बाँधने की शक्ति रखता है।

लेखक ने पुस्तक का आरंभ ग्रीक गणितज्ञ थालेस (थेल्स) के जीवन परिचय और उनकी कुछ विशिष्ट गणितीय उपलब्धियों के ब्योरे के साथ किया है। दूसरा अध्याय - एक विस्तृत गणितज्ञ और उनका तरुण प्रतिद्वंदी है, इसमें ब्रिटिश गणितज्ञ जॉन स्टिफेन स्मिथ (58 वर्ष की आयु में निधन) के कार्यों को उजागर करते हुए उनके समान और समानांतर आदर देकर जर्मन निवासी 18 वर्षीय विद्यार्थी हरमन मिंकोवस्की को एक साथ साझा रूप में 'ग्रांसि पुरस्कार' दिए जाने को लेकर योग्यता, उम्र और उपलब्धियों संबंधी विवाद का स्पष्ट वर्णन किया है।

प्राचीन भारत का गणितज्ञ विषयक उल्लेख तृतीय अध्याय - 'ज्ञाने प्रताप मिहिर प्रकाशी' के अंतर्गत वराह मिहिर के विषय में तथा इसके बाद के अध्यायों में संख्या सिद्धांत के महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन के बारे में दो पृथक अध्यायों- 'भारतीय विज्ञान का दुखांत नायक- रामानुजन' और 'रामानुजन का गणित' में बताया गया है।

प्रख्यात घुमंतू गणितज्ञ पॉल इरडोस के विषय में लेख- 'जिनके पास सपने हैं, उन्हींके पास सच भी आएगा : पोल ईरडोस' रोचक और संज्ञानात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। दो रूसी गणितज्ञों इगोरॉव और उसिन के विषय में शायद हिंदी में प्रथम बार जानकारी दी गई है। एतद्विषयक लेख है- 'दुखांतों का अभिसरण : इगोरॉय और लूसिन'। इनके अतिरिक्त लारांक्वाटर्ज हेनरी कार्तान केरोलिन हर्शल, जार्ज पोल्या, मेरी फेयरफेक्स सोमरविल, मीनास्थाइल, रीस, रेने-मारिस फ्रेचेट और अलेक्जेंडर ग्रोबांडिक के जीवन और कार्य के विषय में रोचक ढंग से बताया गया है। पुस्तक के अंत में फिबोनाची संख्याओं के विषय में यथासंभव सरल तरीके से बताया गया है। पुस्तक शोधार्थियों, गणित प्रेमियों एवं छात्रों के लिए उपयोगी है।

4. 'पर्यावरण सतत विकास एवं जीवन', लेखक- डॉ. दीनानाथ तिवारी, प्रकाशक- ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली।

इस पुस्तक के लेखक डॉ. दीनानाथ तिवारी जी हैं। आपने पर्यावरण संरक्षण एवं गरीबी उन्मूलन संबंधी कार्य लंबे समय से 'उत्थान' नामक संस्था द्वारा करते आ रहे हैं। पुस्तक को 8 अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में 'पर्यावरण : सतत विकास एवं जीवन' में पर्यावरण को विस्तार से समझाया गया है। पर्यावरण की परिभाषा, पर्यावरण और परितंत्र, पर्यावरण प्रदूषण यथा वायु, जल-मृदा, ध्वनिप्रदूषण, कचरा प्रदूषण, ई-प्रदूषण, पर्यावरण खतरे, जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता को प्रभावित करने वाले तत्व, आपदाएँ एवं संघर्ष और जल-आंदोलन द्वारा पर्यावरण में सुधार तथा बचाव हेतु सुझाव भी दिए गए हैं। दूसरे अध्याय में वन, वन्य जीव,वनवासी एवं गरीबी उन्मूलन, तीसरे अध्याय में 'जैव विविधता का संरक्षण एवं उपयोग, चौथे अध्याय में- भूमि-मृदा-प्रदूषण एवं उपचार, पाँचवें अध्याय में टिकाऊ, सेहतमंद और पर्यावरण, छठे अध्याय में जल पेयता, जल प्रदूषण तथा जलजन्य रोग एवं सातवें अध्याय में 'वायु प्रदूषण', 'प्राकृतिक आपदाएँ एवं उनका प्रबंधन' जैसे विषयों पर चिंतनपरक एवं सुधार के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

पुस्तक के अंतिम अध्याय- 'मरुस्थलीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव' में मरुस्थलीकरण का अर्थ, विश्व में मरुस्थलों का प्रसार, मरुस्थलों के निर्माण तथा विस्तार के कारण का विवरण देते हुए लेखक ने मरुस्थलीय परितंत्र, मरुस्थल के वन्य जीव मरुस्थल को विकसित करने के कार्यक्रम, वायु द्वारा अपरदन रोकना, टिब्बाकरण, सिल्वी पेस्टोरल, वृक्षारोपण, ग्रामीण ईंधन वृक्षारोपण, कृषि वानिकी, सामाजिक वानिकी, शहरी वानिकी जैसे कुछ कार्यक्रमों के द्वारा मरुस्थलीकरण के विस्तार को रोका जा सकता है। पुस्तक के सभी अध्याय सामयिक और जीवन से जुड़े हैं।

5. 'न्यूट्रीनों की दुनिया', लेखक- डॉ. के.एम. जैन, आइसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल।

हम सभी जानते हैं कि आदिकाल से धरती के लिए प्रकाश का स्रोत सूर्य ही रहा है। मानव सभ्यता के विकास में सोलर एनर्जी का महत्व काफी रहा है किंतु इसका किस प्रकार उपयोग होता है। इसकी जानकारी लंबे समय तक मानव को नहीं हो पाई थी। इसीलिए सूर्य को वह देवता के रूप में पूजता रहा।

धरती के आकाश पर रात के समय तारे टिमटिमाते हैं लेकिन ऊर्जा की दृष्टि से इससे मिलने वाला प्रकाश इतना कम होता है कि वह मनुष्य के लिए महत्वहीन रहा। फिर भी उसने कई तारों को प्रकृति के समय संकेत और दिशा के ज्ञान हेतु चुना। धीरे-धीरे मनुष्य को यह समझ में आने लगा कि प्रकृति को समझने के लिए हमें उससे मिलने वाले विभिन्न संकेतों को पकड़कर उनके निहितार्थों को जानना-बूझना होगा। धरती पर फैली विविधता और उसमें अंतर्निहित सौंदर्य को समझने के लिए भले ही नाना प्रकार के संकेत उपलब्ध हो लेकिन सुदूर आकाश में विचरण कर रहे तारों, ग्रहों आदि को देखने और समझने के लिए प्रकाश के रूप में ही एकमात्र संकेत नजर आता है। अत: प्रकाश का अध्ययन आवश्यक है।

हम सभी जानते हैं कि प्रकाश तरंग और पार्टिकल दोनों ही तरह से व्यवहार करता है। इसके पार्टिकल रूप को 'फोटॉन' कहते हैं। प्रकाश का वेग नियत और निरपेक्ष होता है। इसे प्रकृति का सच मानते हुए आईंस्टीन ने सापेक्षता का विशिष्ट सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसने दिक और काल को एक ही सिक्के के दो पहलू बना दिए। अपने इसी अध्ययन के दौरान मिले समीकरण $E = mc^2$ से उन्हें ऊर्जा और द्रव्यमान में तुल्यता के दर्शन भी हो गए। भौतिकी में आए इन क्रांतिकारी परिवर्तनों ने अपने ब्रह्मांड सहित अपने परिवेश को देखने का नजरिया ही बदल दिया।

प्रकाशरूपी संकेतों के तर्कपूर्ण विश्लेषण से ही वैज्ञानिकों को स्पेक्ट्रम के रूप में पदार्थों के परिचय पत्र मिले तथा इनके विश्लेषण से सूर्य और तारों तक पहुँचे बिना ही उनकी संरचनाओं के बारे में बहुत कुछ जाना। सोलर सिस्टम के अस्तित्व का पता लगाकर जाना कि पृथ्वी सूर्य के अन्य ग्रहों के साथ एक ग्रह है न कि ब्रह्मांड का केंद्र। वैज्ञानिकों को तारों और निहारिकाओं से मिलने वाले प्रकाश के अध्ययन से हबल और हमासान को ब्रह्मांड लगातार फूलता हुआ मिला। जार्ज गैमों ने ब्रह्मांड के जन्म की कहानी गढ़ना आरंभ किया जिसके अनुसार ब्रह्मांड का जन्म इस बिंदुवत ब्रह्मांड में महाविस्फोट होने से हुआ होगा। इस तरह ब्रह्मांड के जन्म का बिगबैंक मॉडल सामने आया। स्टीफन हाकिंग ने बिंदुवत ब्रह्मांड पर क्वांटम यांत्रिकी के लागू होने की बात कही जिससे क्वांटम कॉस्मोलॉजी अस्तित्व में आई।

स्टेस्ट्रोस्किोपिक अध्ययन से सूर्य और तारों में हाइड्रोजन की प्रचुरता तथा हीलियम की उपस्थिति के संकेत मिले। हंस वैथे ने अपनी तार्किक बुद्धि का परिचय देते हुए भविष्यवाणी की कि तारों में हाइड्रोजन के हीलियम में संलयित होने के कारण ही ऊर्जा मिलती है। इस तरह तारों की असीम ऊर्जा के समीकरण $E = mc^2$ में छिपा नजर आया। भारत के युवा वैज्ञानिक एस. चंद्रशेखर ने किसी तारे में ऊर्जा उत्पन्न करने का स्रोत समाप्त होने के बाद क्या होगा जैसे प्रश्न का उत्तर खोजते हुए तार्किक यात्राएँ कीं और तारे के जीवन की गाथाएँ लिख डालीं।

6 'भौतिकी की विकास यात्रा', लेखक-डॉ.के. एम.जैन, प्रकाशक-आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल।

भौतिक विज्ञान के नियम परावर्तन सममिति दर्शाते हैं निकाय की परावर्तन सममिति से संबंधित राशि को पेंरिटी कहते हैं। सामान्यत: भौतिक परिवर्तनों और अभिक्रियाओं के दौरान पेरिटी संरक्षित रहती है। अत: पेरिटी मूल-कणों को परिभाषित करने वाली एक महत्वपूर्ण भौतिक राशि है। एंडरसन ने डिरॉफ की भविष्यवाणी के अनुरूप पॉजीट्रान की खोजकर प्रकृति में प्रतिपदार्थ होने का प्रमाण दिया। इसके बाद कास्मिक किरणों और प्रयोगशालाओं में अनेक मूलकण खोजे जाने का सिलसिला शुरू हुआ। लेकिन जहाँ तक परमाणु की बात रही उसके मूल कण इलेक्ट्रॉन, पोटॉन तथा न्यूट्रॉन की भी कोई आंतरिक संरचना है।

प्राकृतिक सीमाओं में 'रेडियोधर्मी नाभिक' से विभिन्न प्रकार के ऊर्जावान कण उत्सर्जित होते हैं। इनमें कुछ नाभिक 'अल्फाकण' का उत्सर्जन करते हैं तो कुछ वीटा कणों का। इन कणों की ऊर्जा नाभिक से ही नियंत्रित होती है। अत: इस प्रकार से यह प्राकृतिक त्वरक है। इसी प्राकृतिक त्वरक से मिले अल्फाकणों की सहायता से ही रदरफोर्ड ने परमाणु के गर्भ गृहनाभिक का पता लगाया था। रदरफोर्ड की सफलता से अभिभूत वैज्ञानिक मूलकणों के अध्ययन हेतु विभिन्न प्रकार के शक्तिशाली कृत्रिम त्वरकों के विकास में पहले से ही जुटे हुए थे। अल्फाकणों के

महत्वपूर्ण प्रयोग में उन्होंने बता दिया कि नॉभिक में धनावेशित कण पोटॉन होते हैं।

रदरफोर्ड इसी प्रयोग के दौरान नाइट्रोजन के नाभिक को ऑक्सीजन के नाभिक में बदल लेने में भी सफल हो गए। इस तरह भौतिक विज्ञान की विकास यात्रा का कारवाँ आगे बढ़ चला। आज भौतिक विज्ञान अन्य विज्ञान की शाखाओं से कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहा है।

7. 'प्राचीन भारत में वैज्ञानिक चिंतन', लेखक- डॉ. पुरुषोत्तम चक्रवर्ती, प्रकाशक- आइसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल (म.प्र.)

विज्ञान मानव के संपूर्ण ज्ञान का योग है जो विशिष्ट होता है। आज के वैज्ञानिक और उच्च तकनीकी के युग में पग-पग पर हमें वैज्ञानिक उपलब्धियों, उपकरणों से वास्ता पड़ता है। चाहे हम घर में हो, ऑफिस में हो या यात्रा में। आज हमारा संपूर्ण जीवन, जीवन की हर गतिविधि विज्ञान और उससे अर्जित तकनीक पर निर्भर हो गई है। आज कुकिंग गैस, मोबाइल या टेलीफोन, बिजली का पंखा या सामान्य जरूरत की वस्तु बन गए हैं। ऐसे में कोई भी समझदार व्यक्ति विज्ञान से अनभिज्ञ रहने की गलती कैसे कर सकता है?

कल्पना कीजिए जब सामान्य व्यक्ति को विज्ञान और वैज्ञानिक गतिविधि, आश्चर्यजनक और रहस्यमयी लगती थी। पर आज विज्ञान और तकनीकी उपलब्धियाँ सामान्य व्यक्ति को भी रहस्यमयी नहीं लगती। चाहे वह हवा में उड़ते पक्षियों की तरह उड़ते जहाज देखे या पानी के अंदर मछलियों सी तैरती पनडुब्बियाँ।

8. 'भारतीय दर्शन में पर्यावरण'- लेखक : डॉ. अंबिका प्रसाद उनियाल, प्रकाशक- विनसर पब्लिशिंग कंपनी, देहरादून।

प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय दर्शन, धर्म, अध्यात्म संस्कृति को विद्वान लेखक ने पर्यावरण से जोड़ा है और पर्यावरण की क्षति का मूल कारण हमारी जीवन शैली में बदलाव और प्राचीन जीवन दर्शन में गिरावट है।

संपूर्ण पुस्तक 12 खंडों में विभाजित है यथा- विषय प्रवेश, भारतीय दर्शन में पर्यावरण चिंतन की पृष्ठभूमि, वेदों में पर्यावरण चिंतन, उपनिषद् पर्यावरण के आध्यात्मिक स्वरूप का उत्कर्ष, जैन एवं बौद्ध दर्शन, न्याय एवं वैशेषिक दर्शन, सांख्य एवं योग दर्शन, मीमांसा दर्शन, नैतिक पर्यावरण : पाश्चात्य एवं भारतीय विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कर्ष, परिशिष्ट, संदर्भ ग्रंथ सूची में विभक्त है।

पुस्तक को आद्योपांत पढ़ने के बाद इस तथ्य का अनुमान होता है कि लेखक ने कितनी अधिक शोध सामग्री का उपयोग अपनी थीसिस तैयार करने में किया है।

9.'मोटा दाना : पोषण का खजाना', लेखिका- राधिका मिश्रा, प्रकाशक-विज्ञान परिषद् प्रयाग, प्रयागराज।

प्रस्तुत पुस्तक 'मोटा दाना : पोषण का खजाना' सामयिक और अत्यंत उपयोगी पुस्तक है। समीक्ष्य पुस्तक मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है- 'मोटा दाना', 'मोटा दाना : पारंपरिक व्यंजन'। पुस्तक का प्रथम भाग- मोटा दाना के अंतर्गत बाजरा, ज्वार, मक्का, सांवा, कोदो-काकुन, मकरा, रामदाना, जौ, चना, मटर, बेर्रहिया, मटर, मूंग, उड़द, अरहर, अलसी, महुआ, गोजई, गन्ना, अनाज का चोकर और घी के गुणों एवं पोषकता के विषय में अत्यंत सरल तरीके से बताया गया है। पुस्तक में एक तालिका दी हुई है जिसमें पोषक तत्वों में चौलाई, बाजरा, रागी, पीना, काठ कंगनी, चावल गेहूँ के दानों में कितने ग्राम प्रोटीन, रेशा, खनिज, लौह तत्व और कैल्शियम पाए जाते हैं।

पुस्तक में मोटा दाना की पोषकता एवं गुणवत्ता के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है।

10. 'काँच विज्ञानी डॉ. आत्माराम', लेखक-डॉ. शिवगोपाल मिश्र, प्रकाशक- ज्ञान-विज्ञान एजूकेयर, नई दिल्ली-110002

प्रस्तुत पुस्तक पुरानी पीढ़ी के सिद्धहस्त विज्ञान लेखक डॉ. शिवगोपाल मिश्र द्वारा रचित है जिसमें डॉ. मिश्र ने प्रख्यात गांधीवादी वैज्ञानिक, सी एस आई आर के पूर्व महानिदेशक डॉ. आत्माराम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

सामान्य ग्रामीण परिवार में जन्म लेकर अपनी कुशाग्रबुद्धि के बल पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिक रसायन के जनक डॉ. नीलरत्न धर के निर्देशन में डॉ. आत्माराम ने उच्चतम शोध उपाधि डी एस सी प्राप्त की और कोलकाता जाकर ग्लास एंड

सेरेमिक्स रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक बने। आगे चलकर वे देश की सर्वोच्च विज्ञान संस्था-वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी एस आई आर) के महानिदेशक बने।

भारतीयता के सच्चे सेवक डॉ. आत्माराम जी सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श व्यक्ति थे। उनकी सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता तथा सरलता बेजोड़ थी। वे एक तरह से गांधीवादी वैज्ञानिक थे। वे हिंदी के पुजारी थे। डॉ. आत्माराम जी ने विज्ञान की सेवा में अपने लंबे सेवाकाल में उपयोगी अनुसंधान के क्षेत्र में भारत का नाम ऊँचा किया है। उन्होंने ऑप्टिकल काँच, जो सामयिक महत्व का एक महत्वपूर्ण पदार्थ है ऐसे समय में तैयार किया जिसकी निर्माण संबंधी जानकारी विश्व के थोड़े से देशों को थी। सी एस आई आर की नीतियों को आर्थिक दिशा देने का कार्य भी इनका दूसरा योगदान था।

आत्माराम जी ने 1931 से 1971 तक एक सक्रिय वैज्ञानिक का जीवन बिताया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग में शोध छात्र बनने से लेकर सी एस आई आर, नई दिल्ली के महानिदेशक के पद से अवकाश प्राप्त करने तक के 40 वर्ष उनके सक्रिय जीवन के गवाह हैं। विज्ञान परिषद् प्रयाग के संपर्क में आने से उन्होंने हिंदी में विज्ञान लेखन शुरू किया।

'वेल्थ ऑफ इंडिया' का हिंदी अनुवाद 'भारत की सम्पदा' के नाम से उपलब्ध कराना आत्माराम जी की दूरदृष्टि एवं हिंदी के प्रति अगाध निष्ठा का परिचायक कहा जाएगा। इस महत्वपूर्ण कार्य के संपादन में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती एवं डॉ. शिवगोपाल मिश्र के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हिंदी के विद्वान साहित्य प्रणयन की दिशा में यह अति महत्वपूर्ण अनुष्ठान की भाँति चिरस्मरणीय है।

प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. मिश्र ने डॉ. आत्माराम जी के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डालने के अलावा उनके कृतित्व से संबंधित विस्तृत विवरण उपलब्ध कराया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में समय-समय पर आत्माराम जी द्वारा दिए गए दीक्षांत भाषणों एवं कतिपय वैज्ञानिक सोसायटियों के समक्ष दिए गए भाषणों के अंश को पुस्तक में समाहित किया गया है। डॉ. मिश्र ने 'बिंदु-बिंदु विचार' के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण विषयों और समस्याओं के संदर्भ में डॉ. आत्माराम जी द्वारा व्यक्त विचारों को समावेशित किया है। डॉ. मिश्र द्वारा रचित यह पुस्तक विज्ञान में अभिरुचि रखने वाले सभी पाठकों के लिए उपयोगी होगी।

11. 'नोबेल पुरस्कृत : डॉ. हरगोविंद खुराना', लेखक- प्रो. दिनेश मणि, प्रकाशक- ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, नई दिल्ली-2

आनुवांशिक गुप्त लिपि (जेनेटिक कोड) संबंधित रहस्यों को उद्घाटित करने में डॉ. हरगोविंद खुराना का महत्वपूर्ण योगदान है। आप सुप्रसिद्ध जीवविज्ञानी के रूप में जाने जाते हैं, डॉ. खुराना का जीवन पूर्ण रूप से विज्ञान को समर्पित रहा है, जो किसी भी युवा वैज्ञानिक के लिए प्रेरणास्रोत है। डॉ. खुराना ने दुनिया को बताया कि माता-पिता के गुण संतान में उनके शरीर की कोशिकाओं के केंद्र में स्थित क्रोमोसोम अर्थात् गुणसूत्र के जरिए आ जाते हैं। उन्होंने अपने सहयोगी वैज्ञानिकों के साथ मिलकर प्रयोगशाला में एक ऐसे जीन का निर्माण भी कर डाला, जिसमें परिवर्तन करके संतान के गुणों में बदलाव लाया जा सकता है।

डॉ. खुराना और उनके सहयोगियों ने 1960-65 के बीच चार न्यूक्लियोटाइड को परस्पर क्रमबद्ध कर देने के लिए विलक्षण रासायनिक विधियों का आविष्कार किया। इस आविष्कार से डॉ. खुराना के हाथों में अभूतपूर्व एवं चमत्कारिक शक्ति आ गई। अब उन्होंने चारों न्यूक्लियोटाइडों को मनचाहें क्रमों में संलग्न करके भिन्न-भिन्न न्यूक्लियोटाइड क्रम वाले डी एन ए अणुओं का परखनली में संश्लेषण किया। उसके बाद सूक्ष्म जीवियों (बैक्टीरिया) में पाए जाने वाले डी एन ए संश्लेषक नामक एंजाइम की सहायता से रसायनिक विधियों द्वारा बनाए गए प्रत्येक डी एन ए अणु की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं। इन्हीं डी एन ए अणुओं के आधार पर उन्होंने आनुवांशिक कूट (जेनेटिक कोड) जैसी आधारभूत और चुनौतीपूर्ण समस्या का मौलिक विधियों द्वारा समाधान किया। इस सफलता के कारण ही उन्हें

नोबल पुरस्कार समिति ने 1968 में मार्शल नीरेनवर्ग और रॉबर्ट हॉली के साथ नोबेल पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया।

प्रस्तुत पुस्तक को प्रो. दिनेश मणि ने कुल 12 अध्यायों में बाँटकर पुस्तक लेखन किया है यथा- विषय-प्रवेश, जीवनवृत्त एवं शिक्षा, डॉ. खुराना का अनुसंधान, आनुवांशिकी और डॉ. खुराना, आणविक जैविकी और डॉ. खुराना, डी एन ए की व्याख्या में डॉ. खुराना का योगदान, गुणसूत्र संवद्धता और डॉ. खुराना, आणविक जैविकी और डॉ. खुराना, जीनोमिकी और डॉ. खुराना, मानव जीनोम परियोजना और डॉ. खुराना का शोधकार्य, आनुवांशिक अभियांत्रिकी और डॉ. खुराना, उपसंहार आदि मुख्य हैं।

लेखक का कहना है कि वर्तमान पीढ़ी को डॉ. खुराना के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया गया है। भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. हरगोविंद खुराना की जीवनी प्रेरक एवं पठनीय है।

12. 'भारत को बदलता भारतीय विज्ञान', लेखक- डॉ. अदिता जोशी, दिनेश सी. शर्मा, डॉ. कविता तिवारी एवं डॉ. निम्मी नेविल। अनुवाद- डॉ. चंद्रमोहन नौटियाल एवं डॉ. विचार दास। प्रकाशक- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'भारत को बदलता भारतीय विज्ञान' स्वतंत्र भारत पर विज्ञान की छाप की 70 वर्षीय यात्रा का सिंहावलोकन है। अब तक इस तरह की पुस्तकें कम ही आई जो विगत 70 वर्ष में किए गए अनुसंधानों को एकत्र करके जो लेखा-जोखा मिलता है उनमें यह पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है। संपूर्ण पुस्तक को 12 अध्यायों में बाँटकर लिखा गया है। प्रथम अध्याय 'नियंत्रण की बैंगनी रेखा : अमिट स्याही', इसकी लेखिका अदिता जोशी ने अपनी तर्जनी पर लगे चुनाव में मतपत्र देने से पूर्व लगाए गए चिह्न को देखकर उनके पुत्र ने जो जिज्ञासा प्रकट की और एक प्रश्न के उत्तर के बाद दूसरे प्रश्न, तीसरे प्रश्न और स्वयं बनाए प्रश्नोत्तरों के माध्यम से काली स्याही के इतिहास और उसकी अब तक की यात्रा को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार कुल 12 लेख विभिन्न विषयों को केंद्र में रखकर लिखे गए हैं जिसमें 'सूचना प्रौद्योगिकी : कैसे एक क्रांति का अंकुरण हुआ', 'जेनेटिक औषधियों के विषय में भोजन की टेबल पर परिवारजनों के साथ चर्चा से', 'परखनली में हरियाली : पादप ऊतक संवर्धन प्रौद्योगिकी', 'भारत में दूध उत्पादन क्रांति', 'भारत के हीरा प्रसंस्करण उद्योग की उज्ज्वल कहानी', 'ब्लड बैंक', 'भारत के जल जीवन संवर्धन की उत्ताल तरंग', 'अंतः प्रेरणा पूर्ववर्तिता और नवोन्मेश': 'जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य संवारा', 'परख फिर चखः', 'वासमती की पहचान, 'सौभाग्य के बीज', 'उन्नत सांबा मैसूरी की कहानी' आदि मुख्य लेख हैं।

सभी लेख नई जानकारियों के साथ ज्ञानवर्धक हैं और अत्यंत रोचक ढंग से कहानी की विधा में लिखे गए हैं। प्रत्येक लेख में इसकी जानकारी है।

13. 'नवाचार-पथ के पथिक की दास्तान', लेखक- विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद, प्रकाशक- विज्ञान परिषद् प्रयाग, प्रयागराज-2

विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद जी की यह पुस्तक उनकी सद्यः प्रकाशित पुस्तक है। इसमें अपने जीवन भर के कार्यों एवं नवाचारों संबंधित विशिष्ट योगदान का लेखा-जोखा तो प्रस्तुत किया ही है साथ ही साथ उनके द्वारा नवाचारों से क्या लाभ हुआ है उसकी भी चर्चा की है। वास्तव में इस पुस्तक में उनके जीवन दर्शन और त्याग तपस्या की भी झलक मिलती है।

पुस्तक के अनुक्रम के अनुसार 22 अध्याय हैं। प्रारंभ के तीन अध्याय आविष्कारों के संक्षिप्त इतिहास से संबंधित है। इसके बाद अध्याय 4 के कुल 4 भागों में आविष्कारक बनने के नुस्खे बताए गए हैं। आठवाँ अध्याय समाज में पुस्तकों द्वारा वैज्ञानिक/ आविष्कारी/ नवाचारी चेतना जाग्रत करने से संबंधित है। इस अध्याय में विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद जी द्वारा रचित हिंदी व अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण है।

यह पुस्तक ज्ञानवर्धन होने के साथ-साथ उन छात्र-छात्राओं के लिए जो नवाचार के क्षेत्र में कुछ योगदान करना चाहते हैं उन्हें यह पुस्तक अनुप्रमाणित करेगी।

विज्ञान पत्रिकाएँ

विगत वर्षों से प्रकाशित हो रही मुख्य विज्ञान पत्रिकाएँ 'विज्ञान प्रगति', 'विज्ञान मासिक', 'आविष्कार', 'पर्यावरण डाइजेस्ट', 'वैज्ञानिक', 'नेहा',

'ड्रीम 2047' एवं 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' और 'आयुर्वेद महासम्मेलन' पत्रिका पूर्व की भाँति वर्ष 2019 में भी नियमित प्रकाशित होती रही।

संप्रति बच्चों के लिए दो मुख्य विज्ञान की पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है।-

1 'चकमक' (भोपाल)

2 'शैक्षिक संदर्भ' (भोपाल)

दोनों ही वैज्ञानिक पत्रिकाएँ मुख्य रूप से बच्चों की उम्र और उनके मनोवैज्ञानिक व तार्किक विकास को ध्यान में रखते हुए सामग्री प्रकाशित करते हैं।

पूर्व में प्रकाशित होने वाली अनेक वैज्ञानिक पत्रिकाओं को अब -'ई. विज्ञान' के नाम से इंटरनेट संस्करण प्रकाशित होने लगे हैं, इनमें विज्ञान कथा, आंचलिक पत्रकार व अन्य बहुत सी पत्रिकाएँ हैं जो प्रकाशन विभाग की संस्थाओं द्वारा अपनी वेबसाइट के पोर्टल पर 'विज्ञान' संबंधी सभी सामग्री हर माह संपादित कर डाल रहे हैं।

'जिज्ञासा-17' पत्रिका का एक अंक काफी महत्वपूर्ण प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका के संपादक हैं- डॉ. राकेश के. मिश्र, प्रकाशक-कोशिकीय एवं आण्विक जीव विज्ञान केंद्र (सी.सी.एम.बी.), हैदराबाद

वैज्ञानिक पत्रिका 'जिज्ञासा' का प्रस्तुत अंक 'ओमिक्स के बीस वर्ष' अत्यंत महत्वपूर्ण सामग्री को समावेशित किए हुए है। ओमिक्स के अंतर्गत जीनोमिक्स, मेटाबोलिक्स, प्रोटिओमिक्स आते हैं। इससे जीवन के विभिन्न प्रश्नों को आण्विक स्तर पर समझने और उपयोग में लाने का काम शुरू हुआ था। जीनोमिक्स के द्वारा हमें किसी भी जीव के संपूर्ण जीनोम को जानने में सफलता मिली है। हम आज हर एक व्यक्ति के जीनोम की पूरी जानकारी को हासिल करके, उसके माध्यम से व्यक्ति विशेष की जीवन शैली, बीमारियों की संभावना, चिकित्साग्रस्त और विशेष किस्म की दवा की जरूरत की सटीक सलाह दे सकते हैं।

जीनोमिक्स के अतिरिक्त दो और ओमिक्स तकनीकें सामने आई हैं वह हैं-प्रोटिओमिक्स और मेटाबोलिक्स। इन तकनीकों द्वारा हम जीवन प्रक्रिया को अत्यंत सूक्ष्म स्तर पर बहुत ही फायदे के साथ समझ सकते हैं। इस तरह की जानकारी चिकित्सा के क्षेत्र में भी बहुत ही कारगर सुधार ला रही है। ओमिक्स तकनीक का उपयोग प्रयोगशाला में जीवन के रहस्यों को समझने के साथ-साथ आज अस्पतालों में मरीजों को सहायता प्रदान कर रहा है।

प्रस्तुत अंक में ओमिक्स उपक्षेप, अनुक्रमण प्रौद्योगिकियाँ, बिग डाटा विश्लेषण-मशीन लर्निंग, एकल कोशिका विश्लेषण, प्रोटिओमिक्स, ग्लाइकोमिक्स, लिपिडोमिक्स, मानव स्वास्थ्य में मेटाबोलिक्स की भूमिका, फार्माजेनोमिक्स, सीक्रोटोम, इम्यूनोम, फूडोमिक्स, स्टेम कोशिकाएँ और बहुओमिक्स, ओमिक्स-वन्य जीव संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए हैं। इन आलेखों के प्रकाशन से प्रस्तुत अंक एक संग्रहणीय अंक बन गया है।

वैज्ञानिक संगोष्ठी/व्याख्यान/सेमिनार

1. विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित प्रथम प्रो. चंद्रिका प्रसाद स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के महासचिव एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक एच आर आर, प्रयागराज डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी ने 'गणित में सबूतों का महत्व' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि- गणित की आत्मा उसके प्रमाण में निहित है। किसी भी सवाल के समाधान से अधिक महत्वपूर्ण उसकी उत्पत्ति है। उन्होंने हिलवर्ट के 23 सवालों तथा सेवेन मिलेनियम प्रॉब्लंस के बारे में जानकारी दी और चार रंग वाले प्रश्न की विवेचना की।

2. प्रो. एम.एल.माथुर स्मृति व्याख्यान (जोधपुर) में मरुस्थलीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र के निदेशक एवं उत्कृष्ट पोषण वैज्ञानिक डॉ. जी.एस. टोटेजा ने बताया कि "स्वतंत्रता के पश्चात् देश के बहुमुखी विकास में बढ़ोत्तरी हुई है। हरित क्रांति के बाद यद्यपि देश में अनाज का पर्याप्त भंडार है परंतु कुपोषण की समस्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसका समय पर निदान होना आवश्यक है।" डॉ. टोरोजा ने बताया कि "विकास की दौड़ में हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो चुका है तथा खाद्य पदार्थों में अधिक पीड़कनाशी के अपशिष्ट मिलने के कारण नए-नए रोग उत्पन्न हो रहे हैं। वर्तमान में जंक फूड का सेवन भी स्वास्थ्य को प्रतिकूल रूप में प्रभावित कर रहा है। दूषित वायु एवं जल से श्वसन एवं जलजन्य रोग बढ़ रहे हैं।"

3. राष्ट्रीय संगोष्ठी– 'विज्ञान संचार एवं लेखन की चुनौतियाँ और सरोकार' : विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार और विज्ञान परिषद् प्रयाग, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में प्रयागराज में 31 मई और 1 जून 2019 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संपन्न हुआ जिसका विषय था– 'विज्ञान संचार और लेखन की चुनौतियाँ और सरोकार।' इस संगोष्ठी का उद्घाटन 31 मई 2019 को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज के सभागार में सी एस आई आर– निस्केयर के निदेशक डॉ. मनोज कुमार पटेरिया ने किया।

विज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बी.के. त्यागी ने संगोष्ठी के उद्देश्यों और महत्व पर प्रकाश डाला। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. मनोज पटेरिया ने कहा कि विज्ञान संचार के अनेक आयाम हैं। अधिकांश लोग स्वांत: सुखाय हेतु विज्ञान संचार के क्षेत्र में लगे है किंतु अब इसे समाजोन्मुखी बनाए जाने की आवश्यकता है। निस्केयर, विज्ञान प्रसार व विज्ञान परिषद् प्रयाग आदि संस्थाएँ वर्षों से इस कार्य में लगी हैं।

इस अवसर पर विज्ञान परिषद् प्रयाग की अलीगढ़ शाखा द्वारा प्रकाशित 'विज्ञानरत्न' श्री लक्ष्मण प्रसाद जी की पुस्तक 'स्वामी विवेकानंद वैज्ञानिक सोच और आर्थिक समृद्धि के प्रबल समर्थक', विज्ञान परिषद् प्रयाग द्वारा प्रकाशित 'महिला स्वास्थ्य', डॉ. शारदा सुंदरम की पुस्तक 'नैनो टेक्नोलॉजी' तथा डॉ. रोली श्रीवास्तव की पुस्तक 'ग्लोबल वार्मिंग' का लोकार्पण किया गया।

संगोष्ठी समापन सत्र में विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. नकुल पाराशर ने विज्ञान परिषद् का आभार ज्ञापित करते हुए परिषद् के ऊपर एक डाक्यूमेंटरी बनाने का सुझाव दिया तथा विज्ञान संचार की विभिन्न विधाओं में विज्ञान परिषद् एवं विज्ञान प्रसार द्वारा मिल–जुलकर कार्य करने की बात कही। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों से आए हुए तीस बाह्य वक्ताओं सहित लगभग सौ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

4. महावीर प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति व्याख्यानमाला–

2 फरवरी, 2019 को विज्ञान परिषद् में आयोजित महावीर प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा आयोग के अध्यक्ष प्रोफेसर ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने भारतीय काल गणना की वैज्ञानिकता विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. विश्वकर्मा ने कहा कि –काल का अनुसंधान भारतीय मनीषियों ने अपना सब कुछ न्योछावर करके किया। उज्जैन के महाकाल मंदिर में विश्व की काल गणना का केंद्र था। सृष्टि के आरंभ से आज तक जितने वर्ष व्यतीत हो चुके हैं उनकी गणना भारतीय वाङ्मय में मिलती है, हमें अपनी काल गणना के बाद का अनुप्रयोग करना होगा। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. पांडेय ने कहा कि हम अपने देश के प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के प्रति उदासीन हैं। यह चिंता का विषय है।

5. 2019 का राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली–20 फरवरी 2019 को विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रो. आशुतोष शर्मा को अकादमी द्वारा मेघनाथ शाहा पदक के लिए चुने जाने पर व्याख्यान के लिए 'दिल्ली' के प्रांगण में आमंत्रित किया गया था। प्रो. शर्मा ने इस अवसर पर सहज बुद्धि के उपयोग से जटिलताओं से पार पाने की कला को पॉलिमर के विलयन के पृष्ठ तनाव के घटने की चुनौती के उदाहरण से समझाया। उनका मत था कि प्रौद्योगिकी नहीं, हमारी सोचने की क्षमता हमारी प्रगति की सीमाएँ तय करती है। प्रौद्योगिकी वाला माहौल पहले मूलभूत विज्ञान की अधिकता नहीं थी क्योंकि किसी भी खोज का अनुप्रयोग होने में समय लगता था परंतु आज परिस्थिति की माँग है कि अनुप्रयोग को दृष्टि में रखकर भी शोध करना होगा।

प्रो. शर्मा ने बच्चों से अपारंपरिक चिंतन करने का आवाह्न करते हुए कहा कि बहुत समय तक एक ही क्षेत्र में रहने वाले कभी दूसरी संभावनाओं की कल्पना नहीं कर पाते। विद्यार्थियों के लिए विज्ञान प्रौद्योगिकी विभाग की विविध योजनाओं का परिचय देते हुए कहा कि 'बच्चों को नवोन्मेषी विचारों को पहचानने तथा पुरस्कृत करने से देश में यह संस्कृति और पल्लवित होगी और देश का विकास होगा।

6. प्रो. सालिगराम भार्गव स्मृति व्याख्यानमाला– विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित प्रोफेसर सालिगराम भार्गव स्मृति व्याख्यानमाला के

अंतर्गत 2 मई 2019 को एअर लिक्विड इलेक्ट्रॉनिक यू एस ए के चीफ टेक्नोलाजी ऑफिसर डॉ. आशुतोष मिश्र ने 'आगामी दशक में अर्धचालक उद्योग का भविष्य' विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. आशुतोष मिश्र ने बताया कि आगामी दिनों में इंटरनेट ऑफ थिंग्स, बिग डाटा, आटोमेटिक व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और स्मार्ट कम्युनिकेशन (50) आदि तकनीकों का प्रयोग बढ़ेगा। आज विश्व में 600 करोड़ स्मार्ट फोन हैं। आने वाले दिनों में प्रत्येक व्यक्ति के पास 7 से 26 स्मार्ट उपकरण होंगे।

उन्होंने बताया कि अर्ध चालक उद्योग में आवृत्ति बढ़ाने, ऊर्जा की खपत कम करने, आकार कम करने और मूल्य कम करने के प्रयास किए जा रहे हैं। भविष्य में न्यूरोमार्फिक कम्प्यूटर, क्वांटम कम्प्यूटर और बायलाजिकल कम्प्यूटर प्रचलन में आएँगें।

7. प्रो. नंदलाल सिंह स्मृति व्याख्यानमाला- 1 अगस्त, 2019 को विज्ञान परिषद् में आयोजित प्रो. नन्दलाल सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग के प्रो. डॉ. के एन उत्तम ने -'स्पेक्ट्रोस्कोपी के नए आयाम : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ' विषय पर व्याख्यान दिया।

8. प्रो. हीरालाल निगम स्मृति व्याख्यानमाला- 17 अगस्त, 2019 को आयोजित प्रथम प्रोफेसर हीरालाल निगम स्मृति व्याख्यानमाला के शुभारंभिक व्याख्यान में प्रो. कृष्ण बिहारी पांडेय ने 'तस्मै श्री गुरुवे नमः' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. निगम को केमिस्ट विद ग्रीन फिंगर्स कहा जाता था। वे पी सी रे और एन आर धर की परंपरा के रसायन विज्ञानी थे। उनके शिष्य आज सारे देश में फैले हुए हैं।

9. डॉ. कलाम स्मृति व्याख्यानमाला- विज्ञान परिषद् के सभापति डॉ. दीनानाथ तिवारी ने विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में 15 अक्तूबर, 2019 को डॉ. कलाम की जयंती के अवसर पर आयोजित प्रथम डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'भारत के विकास में डॉ. कलाम का योगदान' विषय पर व्याख्यान देते हुए व्यक्त किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. के पी मिश्रा ने बताया कि डॉ. कलाम दूरदर्शी थे और उन्होंने बीस साल बाद के भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मिशन 2020 पर काम किया।

10. 'जीवन और जल संरक्षण में राजभाषा हिंदी की भूमिका' पर संगोष्ठी- विज्ञान परिषद् प्रयाग की जोधपुर शाखा एवं भारतीय जीवन बीमा निगम मंडल कार्यालय जोधपुर के तत्वावधान में हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर 13 सितंबर, 2019 को 'जीवन और जल संरक्षण में राजभाषा हिंदी की भूमिका' पर संगोष्ठी आयोजित की गई। वक्ता सुधांशु मोहन मिश्र 'आलोक' ने अपने उद्बोधन में राजभाषा हिंदी में देवनागरी लिपि की विशेषताओं, राजभाषा अधिनियम का उल्लेख करते हुए बताया कि हमारे देश में विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का अभी आशान्वित प्रयोग नहीं हुआ है। इसी के साथ 'वर्षा जल संचयन की महत्ता', पर प्रकाश डालते हुए वैज्ञानिक डॉ. राजेश कुमार गोयल ने पौराणिक जल स्रोतों के अनुरक्षण एवं गुणवत्ता को बरकरार करने की जरूरत पर बल दिया।

11. तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के रसायन विज्ञान विभाग की केमिकल सोसाइटी एवं विज्ञान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में 'इन्नोवेटिव फ्रंटियर्स इन एप्लाइड साइंसेज' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन विज्ञान परिषद् के सभागार में हुआ।

रसायन विज्ञान के बिना कोई भी विषय अधूरा है ग्रीन केमिस्ट्री पर्यावरण की दृष्टि से बहुत उपयोगी है इसलिए ग्रीन सालवेंट का उपयोग करके ही ऐसा किया जा सकता है। डॉ. अर्चना पांडेय ने इस संगोष्ठी के दूसरे दिन सत्र का प्रारंभ किया। इस तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सतीश अवस्थी ने एंटी मलेरियल ड्रग्स के ऊपर किए गए अपने शोध को विस्तार से बताया। प्रख्यात रसायनशास्त्री प्रो. कृष्णा मिश्रा ने विकास में तकनीकी योगदान विषय पर बोलते हुए कहा कि तकनीकी का उपयोग करके ही अशिक्षा, कृषि एवं स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याओं से निपटा जा सकता है।

बी एच यू के प्रोफेसर के के उपाध्याय ने नैनो पार्टिकल पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि

साइज में अत्यंत छोटे होते हुए भी ये अपने में अनेक तरह के गुणधर्म समेटे हुए हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय में क्रीमोसेंसिंग से लेकर दवाओं के क्षेत्र में एवं अन्य प्रकार के उपयोग इन कणों में हो रहे हैं।

तृतीय दिवस 28 सितंबर को संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. के बी पांडेय ने कहा कि मेडिसिनल प्लांट के बारे में जब दुनिया जानती नहीं थी उस समय हमारे यहां के ऋषियों मनीषियों ने आयुर्वेद में पेड़-पौधों से औषधीय गुणों की खोजकर इलाज में प्रयोग कर रहे थे। उन्होंने बताया कि नीम के अंदर लगभग 150 फाइटो केमिकल्स निकाले जा चुके है जिसके अंदर एंटीबायोटिक, एंटीऑक्सीडेंट, एंटीवायरल, ऐनालजेसिक, एंटीफंगल आदि औषधीय गुण विद्यमान हैं।

12. प्रो. रामदास तिवारी स्मृति व्याख्यान- विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित प्रो. रामदास तिवारी स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के पूर्व डीन, प्रोफेसर जगदंबा सिंह ने 'रामदास तिवारी : एक संस्मरण' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. कृष्ण बिहारी पांडेय ने कहा कि प्रोफेसर रामदास तिवारी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में केवल रसायन शास्त्र नहीं पढ़ाया अपितु छात्रों की पीढ़िया तैयार की। शिष्यों को प्रयोगशाला में कार्य करने के संस्कार दिए।

पुरस्कार/सम्मान

1. साहित्य मंडल नाथ द्वारा, राजस्थान द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर सी एम पी डिग्री कॉलेज प्रयागराज की रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ विज्ञान लेखिका डॉ. अर्चना पांडेय को 'हिंदी भाषा भूषण' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

2. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा घोषित वर्ष 2018 के पुरस्कारों में विज्ञान परिषद् प्रयाग के उपसभापति डॉ. कृष्ण बिहारी पांडेय की पुस्तक 'किसान का बेटा' को रुपए 75000/- के 'पांडेय बेचन शर्मा' 'उग्र' पुरस्कार से तथा विज्ञान परिषद् प्रयाग की अंतरंग समिति के सदस्य डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र की पुस्तक 'गहराता जल संकट' को रुपए 75000/- के 'के एन भाल' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

मुहम्मद खलील को साहित्य अकादमी पुरस्कार- चालीस वर्षों से हिंदी और उर्दू में विज्ञान लेखन कर रहे मुहम्मद खलील को 'अदब अटफाल' (उर्दू) का इनाम दिया गया। साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी श्री निवास राव की तरफ से जारी एक बयान में 'साइंस की दुनिया के साबिक मदीर और बच्चों के लिए बेशुमार साइंस मजामीन तहरीर करने वाले साइंटिस्ट मुहम्मद खलील को उनकी किताब 'साइंस के दिलचस्प मजामीन' को अदबअतफाल (उर्दू) का इनाम दिया गया।

क्षतियाँ/निधन

1. डॉ. वशिष्ट नारायण सिंह- आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धान्त को चुनौती देने वाले प्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह ने एक लंबी अवधि तक सीजोफ्रेनिया से पीड़ित रहते हुए गुरुवार 14 नवंबर, 2019 को पटना में अंतिम सांस छोड़ते हुए इहलीला समाप्त की। आप का जन्म 2 अप्रैल, 1942 को बिहार के भोजपुर जिला के बसंतपुर गाँव में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। जब वे साइंस कॉलेज पटना के छात्र थे तब कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी से पी.एच.डी. किया था। वे वाशिंगटन विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर रहे। वे आई. आई.टी. कानपुर, टी.आई.एफ. आर मुंबई, आई एस आई कोलकाता में भी प्रोफेसर रहे। कुछ समय तक उन्होंने नासा में भी सेवाएँ प्रदान की थी।

2. डॉ. कपूर मल जैन-प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी हिंदी विज्ञान लेखक और विज्ञान संचारक डॉ. कपूर मल जैन ने 28 अक्तूबर, 2019 को अपने जीवन की आखिरी सांस ली। उनका जन्म 1 जुलाई, 1950 को धार जिले के नागदा गाँव में हुआ था। महाविद्यालय आण्टा के प्राचार्य रहते हुए उन्होंने कई नवाचारी प्रयोग किए। आप उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश में संयुक्त संचालक भी रहे। भौतिकी में उनके सौ से अधिक शोधपत्र देश विदेश की प्रतिष्ठित शोध जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने भौतिकी और लोकप्रिय विज्ञान से संबंधित कई पुस्तकें लिखी हैं।

3. श्री विजय प्रकाश बेरी- 'हिंदी प्रचारक' पत्रिका के सम्पादक तथा हिंदी प्रचारक प्रा. लि. वाराणसी के स्वामी श्री विजय प्रकाश बेरी जी का 10 मार्च 2020 को निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे।

4. स्मृति शेष आचार्य पूर्णचंद्र गुप्त – प्रो. पूर्ण चंद्र गुप्त का प्रयागराज में 13 दिसंबर, 2019 को देहांत हो गया। प्रो पूर्णचंद्र गुप्त जी का जन्म उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के डकोर गाँव में 19 नवंबर, 1926 (प्रमाणपत्र में 4 जनवरी 1927) को हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में प्राप्त करने के बाद बी. एन. एस. डी. कॉलेज कानपुर से आपने इंटरमीडिएट की शिक्षा पूर्ण करके इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और क्रमशः बी एस सी, एम एस सी और डी फिल की उपाधियाँ प्राप्त की। आपने प्रो. जमुनादत्त तिवारी के निर्देशन में 'नेचुरल प्रोडक्ट्स' (प्राकृतिक उत्पादों) पर शोध कार्य किया। शोध कार्य पूर्ण होते ही आपकी नियुक्ति इलाहाबाद विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान विभाग में लेक्चरर पद पर हो गई। बाद में क्रमशः रीडर, प्रोफेसर पद पर पदोन्नति होकर 1986 में विभागाध्यक्ष बने और 1987 में अवकाश प्राप्त कर लिया। 1972 में आप एक रिसर्च फेलोशिप हेतु आस्ट्रेलिया गए थे। आप विश्वविद्यालय के चीफ प्रॉक्टर डीन, छात्र कल्याण भी रहे। अपने कार्यकाल में आपने विश्वविद्यालय में अनुशासनप्रियता का एक अनुकरणीय वातावरण निर्मित किया। आप पी बी सी हॉस्टल के कई वर्षों तक वार्डन भी रहे।

5. इंडियन साइंस कांग्रेस एशोसिएशन के 76वें अधिवेशन (1989) में आप सेक्शनल प्रेसीडेंसी निर्वाचित हुए। विज्ञान परिषद् प्रयाग के प्रधानमंत्री (1987–89) के रूप में परिषद् में आपने 'भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन' (11–13 दिसंबर 1988) विषय एक अत्यंत महत्वपूर्ण अखिल भारतीय संगोष्ठी आयोजित कराई थी। प्रो. गुप्ता कुशल अध्यापक, अच्छे शोधकर्ता एवं निर्भीक प्रशासक थे। आपके 125 से अधिक शोधपत्र विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध जर्नलों में प्रकाशित हुए हैं।

– विज्ञान परिषद् प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश–211002

❑❑❑

संपर्क–सूत्र

1. डॉ. अनुशब्द, सी 93, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय कैंपस, तेजपुर, नपाम, असम–784028
2. डॉ. अरुण होता, 2एफ, धर्मतल्ला रोड, कस्बा, कोलकाता– 700042
3. डॉ. जुबेदा एच. मुल्लाँ, 'बैतुल हाशमी', मकान नं.–152, ताजनगर, हुबली, धारवाड़, कर्नाटक–580031
4. डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, III लेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बेंगलूरू–560079
5. डॉ. महाराजकृष्ण भरत 'मुसा', शारदा कॉलोनी, विद्याधर निवास, पटोली ब्राह्मणा, मूठ्ठी, जम्मू–181205
6. डॉ. चंद्रलेखा डिसौज़ा, 4, शशिसदन, प्रथम तल, मंडवेल, वास्को–द–गामा, गोवा–403802
7. डॉ. वर्षा सोलंकी, डी.–7, इनकम टैक्स कॉलोनी, न्यू सिविल हॉस्पिटल के सामने मजूरागेट, सूरत, गुजरात–395001
8. श्री ओम गोस्वामी, 181 पहाड़िया स्ट्रीट, जम्मू तवी, जम्मू–180001
9. डॉ. बी. संतोष कुमारी, एच–410, द रॉयल कैसल पल्लावरम् टू थिरुमुडिवक्कम् रोड, थिरुमुडिवक्कम्, चेन्नई–600044
10. श्री ज्ञानबहादुर छेत्री, चानमारी, तेजपुर, गुवाहाटी, असम–784001
11. प्रो. फूलचंद मानव, साहित्य संगम 239, दशमेश एन्क्लेव, ढकौली (जीरकपुर के समीप), चंडीगढ़– 160104,
12. डॉ. सुब्रत लाहिड़ी, 63–ए, साउथ सिंथी रोड, कोलकाता–700030
13. डॉ. दामोदर खड़से, बी–503–504, 'हाई ब्लिस', निकट कैलाश जीवन, सर्वे नं.–23, नर्द्रे राडे, धायरी, पुणे–411014
14. डॉ. बी अशोक, 'साकेत' दर्शन नगर, 225, कुडप्पनक्कुन्नु पी. ओ., त्रिवेंद्रम, केरल–695043
15. डॉ. संगीता कुमारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत एवं वेदाध्ययन विभाग, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार
16. डॉ. रेखा, मकान नं.–2340, हाउसिंग बोर्ड सेक्टर–3, रोहतक, हरियाणा–124001
17. डॉ. अजय कुमार मिश्र, फ्लैट न. 2/802, ईस्ट एंड अपार्टमेंट, मयूर विहार, फेज–1 एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110096
18. डॉ. सुरेश बबलाणी, ए–239, प्रेमप्रकाश कुंज, पंचशील नगर, अजमेर–305004
19. डॉ. आलोक रंजन पांडेय, डब्लू ज़ैड–250 बी, निकट इंद्रपुरी एम टी एन एल, नई दिल्ली–110019

20. डॉ. तरसेम गुजराल, 444-ए, राजा गार्डन, पो. ओ. बस्ती बाबा खेल, जालंधर-144020
21. डॉ. अवध किशोर प्रसाद, द्वारा कुमार राजेश, V-सी. आई. ए. ई. कैंपस, नबीबाग बैरासिया रोड़, भोपाल, मध्य प्रदेश-462038
22. प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय, 'वृंदावन', मनोरम नगर, एल. सी. रोड, धनबाद, झारखंड-826001
23. डॉ. रोहिताश्व कुमार अस्थाना, निकट बावन चुंगी चौराहा, 802, आलू थोक उत्तरी हरदोई, उत्तर प्रदेश-241001
24. डॉ. अनुराग सिंह चौहान, विभागाध्यक्ष (हिंदी), वेदांता स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रींगस, सीकर, राजस्थान
25. डॉ. विदुषी शर्मा, एल-108, कृषि नगर, रानी बाग, दिल्ली-110034
26. डॉ. सी. जय शंकर बाबु, सहायक प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी-605014
27. डॉ. पुष्पेंद्र कुमार शर्मा, एम-401, अजनारा लेंडमार्क, सेक्टर-4, वैशाली, ग़ाज़ियाबाद- 201010
28. डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त, फ्लैट नं.-212, ब्लॉक-आई सिलवर लाइन अपार्टमेंट (बी.बी.डी.), फैजाबाद रोड, लखनऊ-226028
29. डॉ. शिवगोपाल मिश्र, बलराम यादव, विज्ञान परिषद् प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, प्रयागराज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश-211002

❑❑❑

© Govt. of India
Controller of Publication

ISSN 0523-1418

पी. ई. डी. नं. 1023.
450 - 2019 (DSK-II)

हिंदी

केंद्रीय निदेशालय

वार्षिकी 2019

मूल्य :

देश में	Inland	` 220/-
विदेश में	Foreign	$ 3.01
		£ 2.16

mPprj f'k{kk foHkkx
f'k{kk e=ky;] Hkkjr ljdkj
if'peh [kM&7] jkeÑ".kiqje] ubl fnYyh&110066
www.chdpublication.mhrd.gov.in
प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित